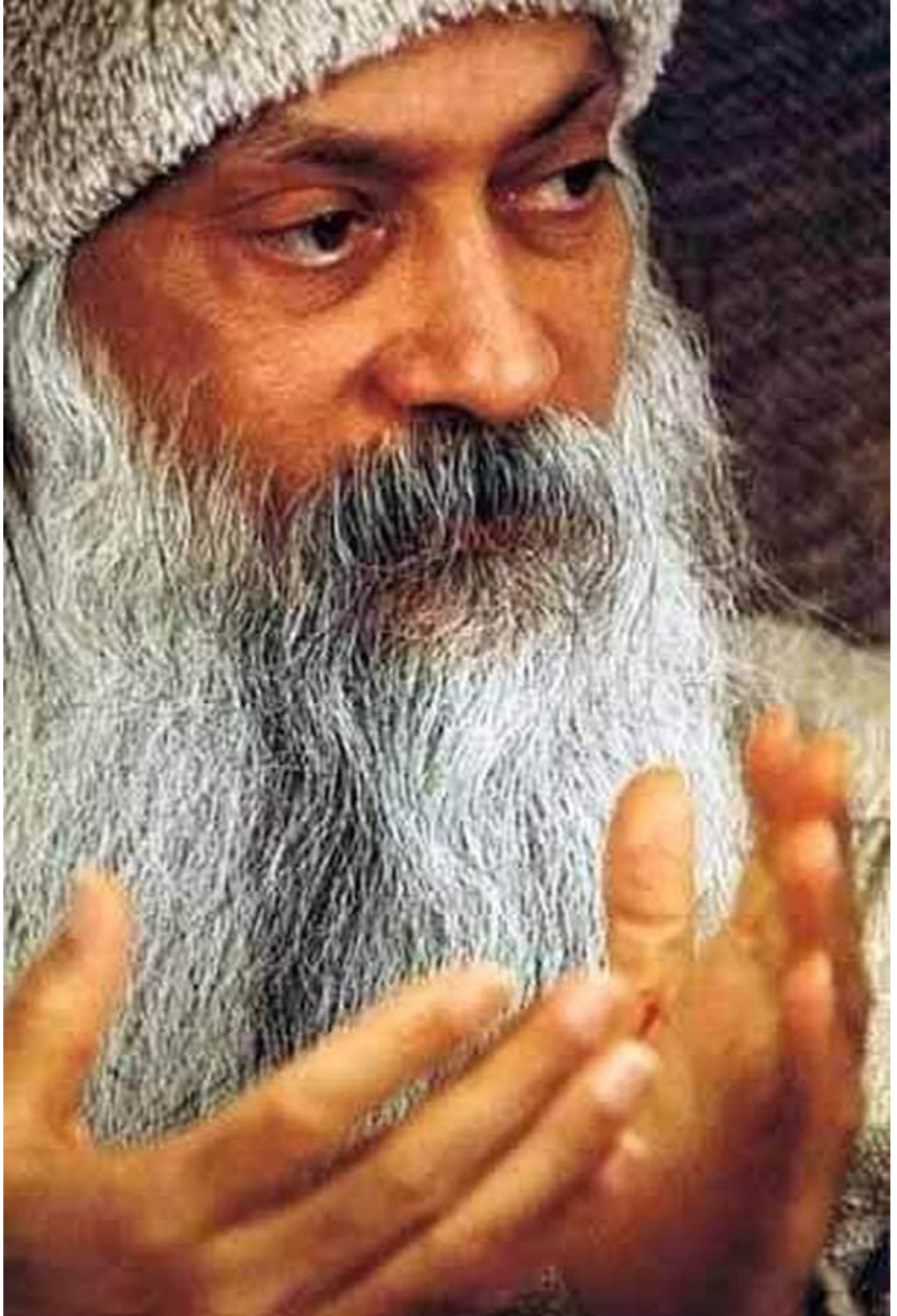
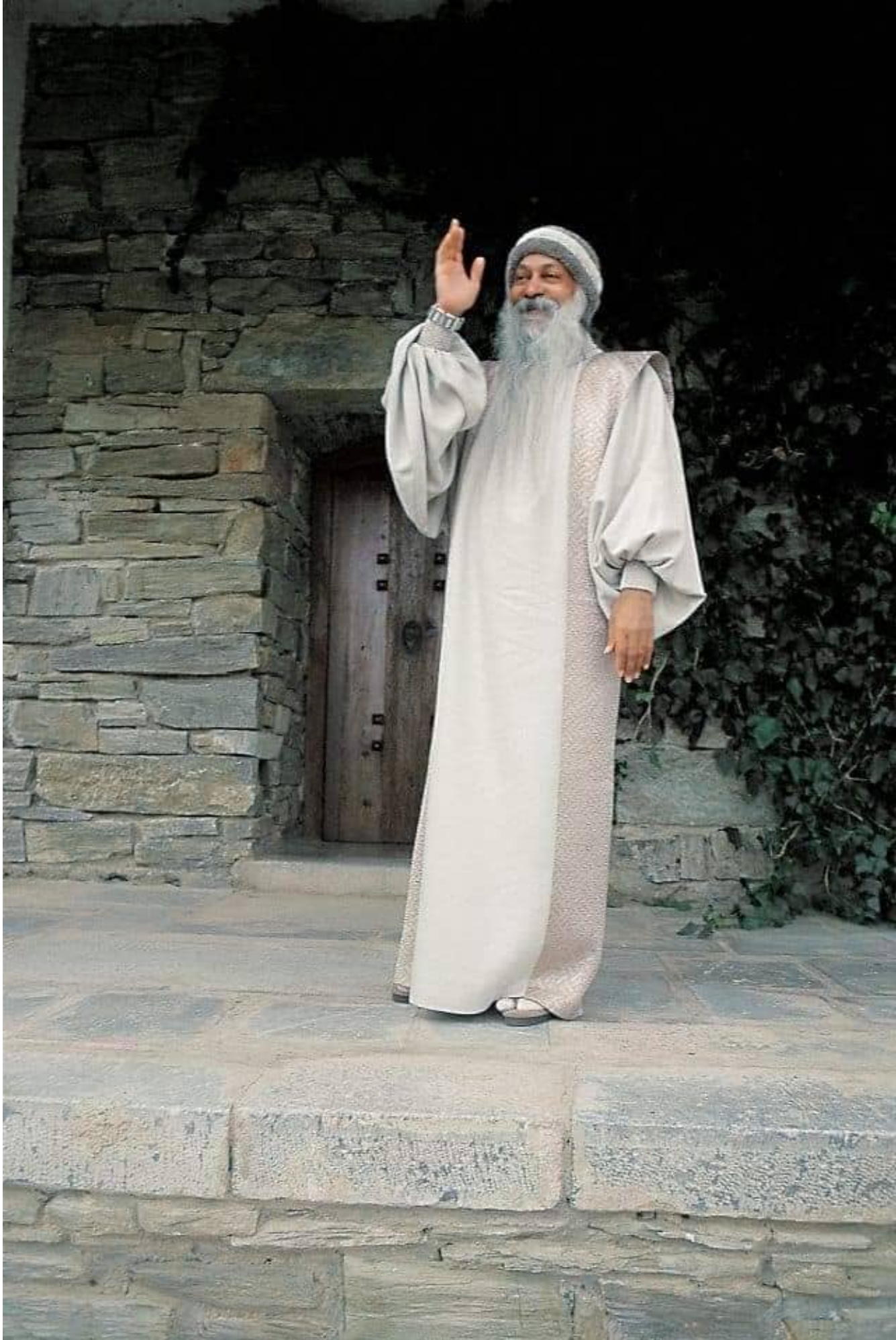










विपस्सना

विपस्सना ध्यान की एक सरलतम विधि है।
जिसमे बुद्ध सिर्फ इतना ही बताते है कि किसी शांत स्थान पर बैठ
कर कुछ भी न सोचे और बस अपनी सांसों का बाहर जाना और
भीतर आने की प्रक्रिया को देखते रहे।
विचारो को बिल्कुल छोड़ दें।
आप सिर्फ देखे कैसे सांस भीतर आई थोड़ी देर ठहरी बाहर गई
फिर भीतर की तरफ आई।

और
एक समय के बाद आप चकित हो जायेंगे आपको अपनी श्वास
आपसे अलग मालूम पड़ना शुरू हो जाएगी।

बुद्धम शरणं गच्छामि



1.6K



18



31

Use audio

[_spiritual_j0urney_](#) @

विपस्सना



Send



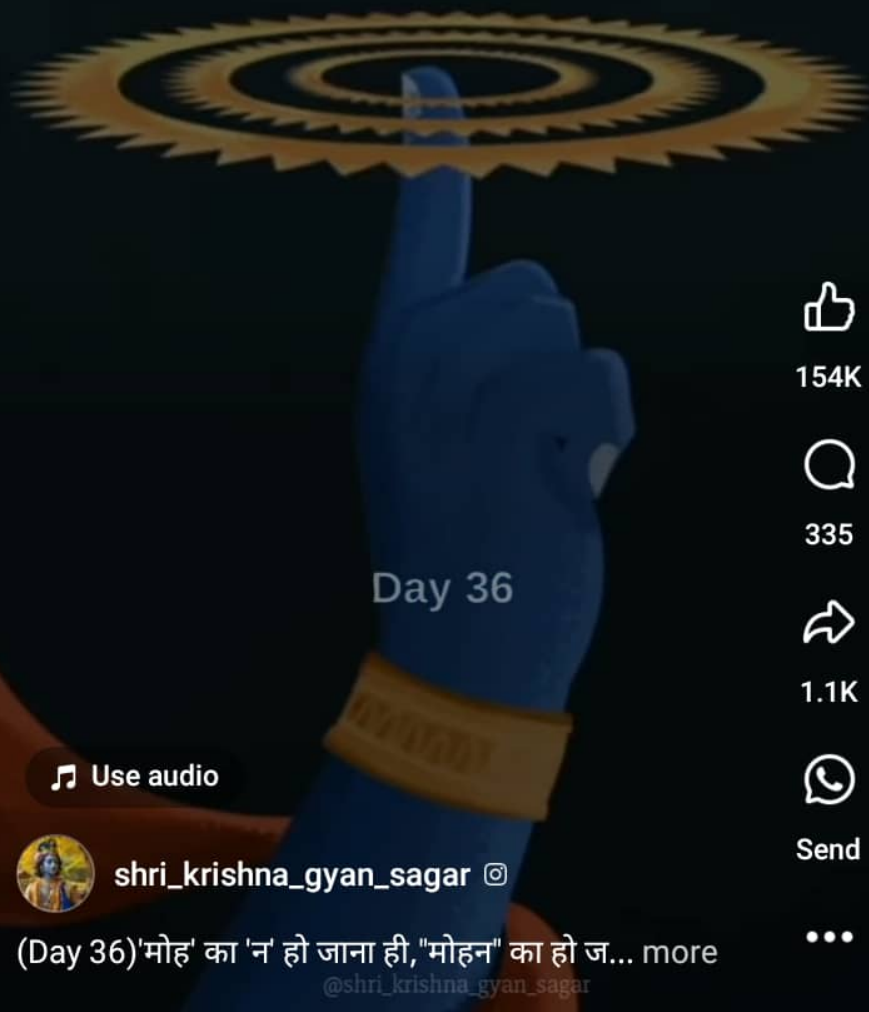
Add a comment...





स्मरण रहे!

'मोह' का 'न' हो जाना ही,
"मोहन" का हो जाना हैं।



Use audio



shri_krishna_gyan_sagar

(Day 36)'मोह' का 'न' हो जाना ही, "मोहन" का हो ज... more

@shri_krishna_gyan_sagar



154K



335



1.1K



Send



Add a comment...





मन और शरीर

शरीर और मन का संबंध इतना घनिष्ठ होता है कि हमारे मन में चलता विचार ही हमारे शरीर में ऐसे रस(रसायन) उत्पन्न कर देता है जिससे शरीर का वो भाग आपको उस काम को करने के लिए विवश करता है।

अतः सारा खेल बस मन का है।
दो उपाय आप कर सकते हैं एक ये कि आप पूरी तरह अच्छे और ऊँचे कामों में खुद को झोंक दीजिए जिससे आपके मन को कोई मोका ही न मिले।
दूसरा आप मन के साक्षी हो जाइए।



3.6K



35



107

Use audio

[_spritual_j0urney_](#) @

मन और शरीर



Send



90stethic by demiandre

[Try it](#)

Add a comment...





चौरासी का चक्कर कितना बड़ा है तुम्हें मालूम नहीं ।
नर्को की यातनायें भी तुम्हें मालूम नहीं। जब तुमको नर्को
में ले जाकर बेहाल करेंगे तब तुम जानोगे । यमदूत किसी
को छोड़ते नहीं । अभी तो महापुरुष तुम्हें पुकारते हैं और
समझा रहे हैं । आखिर - चालिस साठ वर्ष ही तो रहना
है। शराब, ताड़ी, अफीम से बुद्धि भ्रष्ट होगी । रिश्वत के
हाथ को तुम जानते नहीं। जिस तरह दूसरों का खून चूसते
हो उसी तरह तुम्हारा खून मय ब्याज के चूसा जाएगा।
जिस तरह दिल दुखाकर लेते हो उसी तरह दिल दुखाकर
देना होगा । महान महात्मों ने दया की और समझाया

472

कि मनुष्य शरीर इसलिए
मिला है कि भगवान तक सुरत को यानि जीव को पहुँचा
दो मरने के पहले । सत्संग में जाओ तो भगवान को पाने
का भेद मिलेगा। यही कमाई अन्त में साथ देगी बाकी³
सभी धन दौलत यहीं पड़ा रहेगा । शरीर तुम्हारा नहीं और
यह भी जला दिया जाएगा।

🎵 Use audio

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के अनमोल वचन

55



← Reels ▾



55K

कागज पर लिखी गई किताबों को;
लेकिन मौत को धोखा न दे सकोगे।



427



9.9K



Send



Rajneesh Puram

मौत को तुम धोखा न दे सकोगे। -ओशो... more



Add a comment...



← Reels ▾



स्त्री, पुरुष, धन, दौलत में ही आनंद होता तो तथागत बुद्ध और महावीर राजा के बेटे थे, वो कभी घर ना छोड़ते।



9.8K



10



336



Send



spritualmint @

स्त्री, पुरुष, धन, दौलत में ही आनंद होता तो तथागत ब... more



Add a comment...



← Reels ▾



अगर दान दक्षिणा और पूजा-पाठ से खुश
होकर ईश्वर किसी के पापों को क्षमा कर देता
है तो उस से बड़ा भ्रष्टाचारी और रिश्वतखोर
कोई नहीं है।

~ महात्मा ज्योतिबा फुले



25K



4K



Send

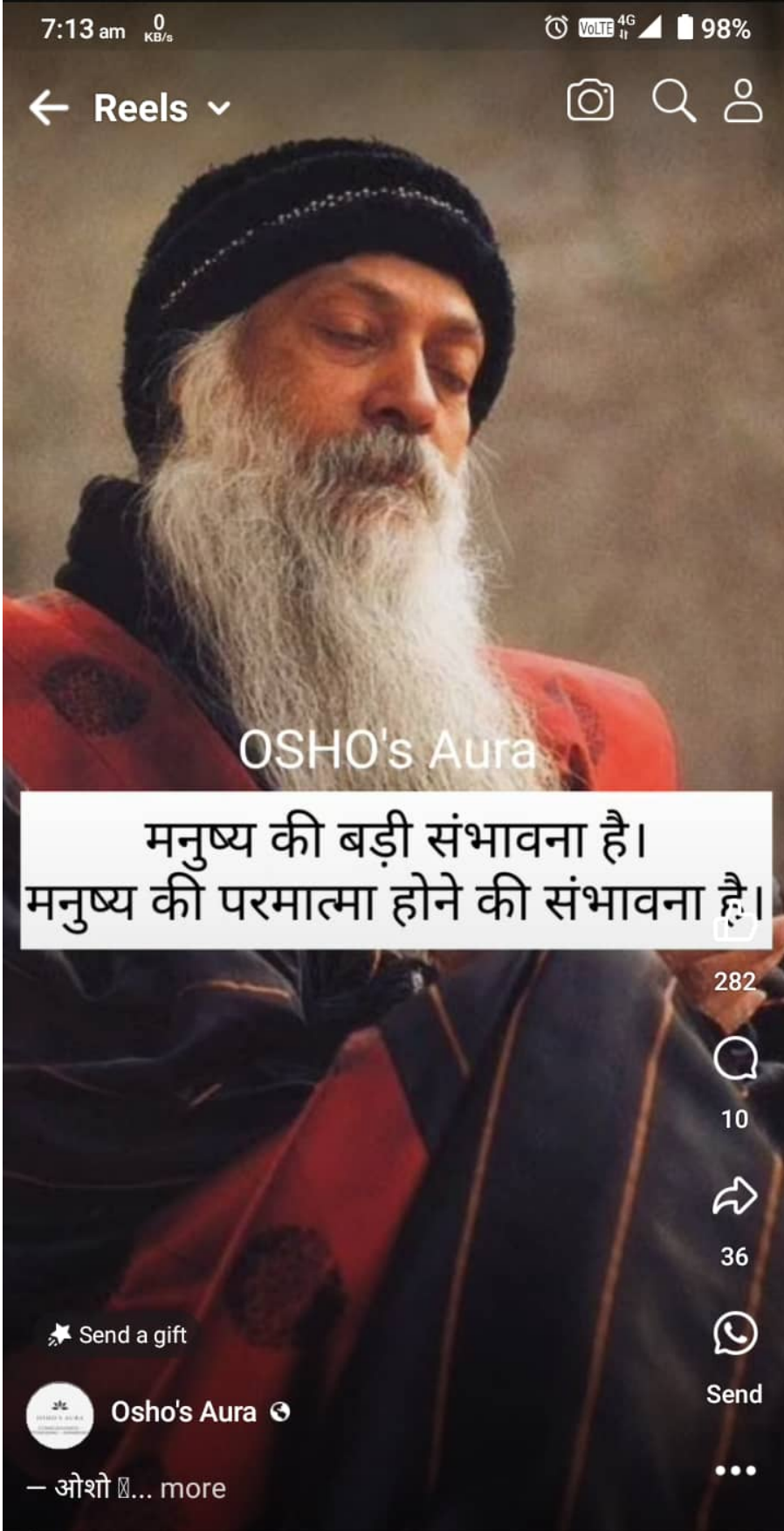


ss.incredible



#truelines



 Reels ▾

OSHO's Aura

मनुष्य की बड़ी संभावना है।
मनुष्य की परमात्मा होने की संभावना है।

282



10



36

 Send a gift

Osho's Aura

— ओशो ... more



Send

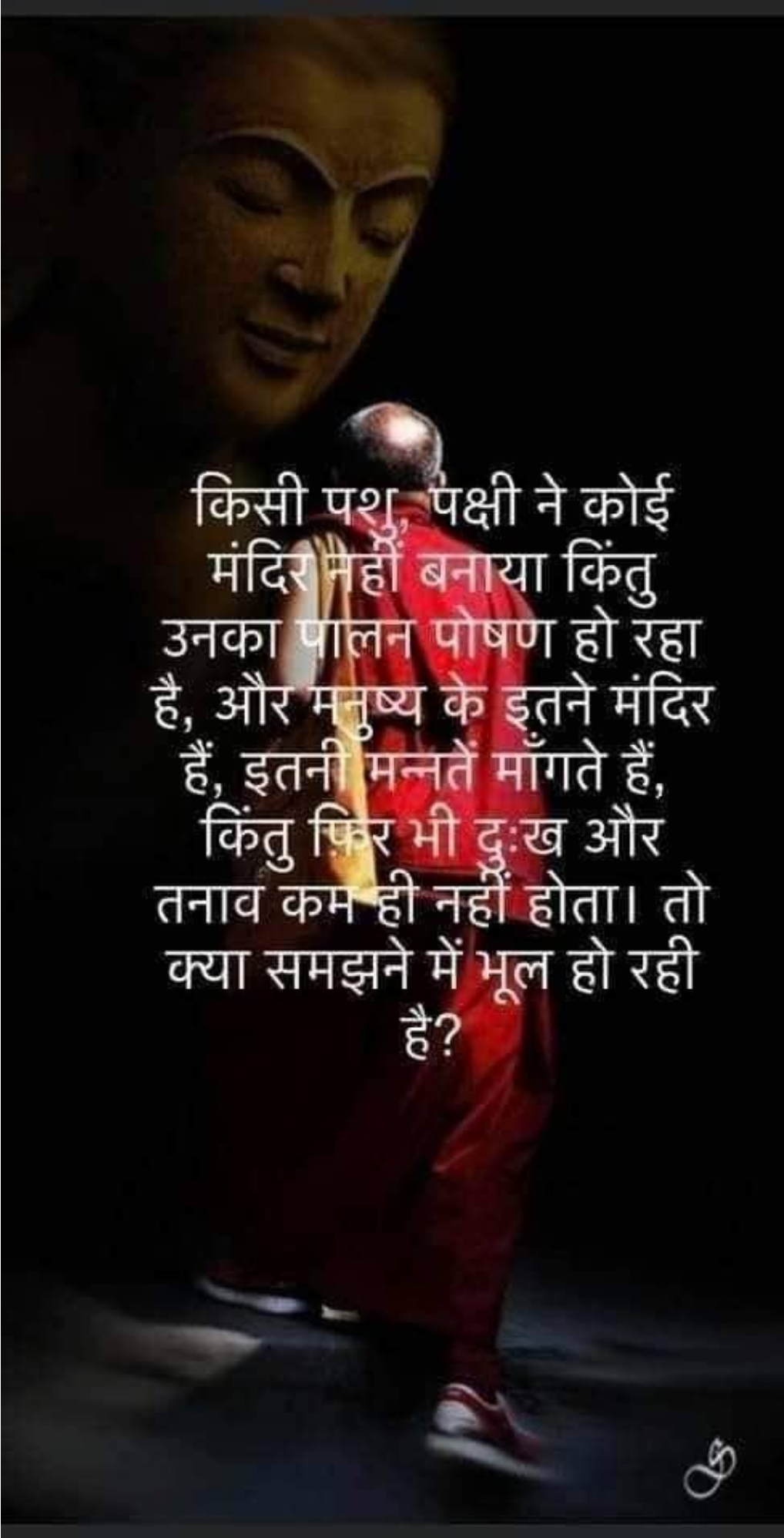


Add a comment...





तुम जितने पूजा-पाठ कर रहे हो, वे भय के कारण हैं, भगवान के प्रेम में नहीं। तुम तीर्थ जा रहे हो, स्नान कर रहे हो, धूप-दीप जला रहे हो, वे सब भय के कारण हैं, भगवान के प्रेम में नहीं। तुम्हारा धर्म तुम्हारे भय की औषधि है, तुम्हारे आनंद का उत्सव नहीं। तुम करते हो सब सुरक्षा के लिए, तुम इंतजाम सब जुटाते हो; जैसे तुम धन जुटाते हो, मकान बनाते हो, बैंक बैलेंस बनाते हो, बीमा करवाते हो, ऐसा ही भगवान भी तुम्हारा बीमा है। तुम्हारे तीर्थ, तुम्हारे स्नान, तुम्हारे पूजा-पाठ, सब तुम्हारी सुरक्षाएं हैं भय की।

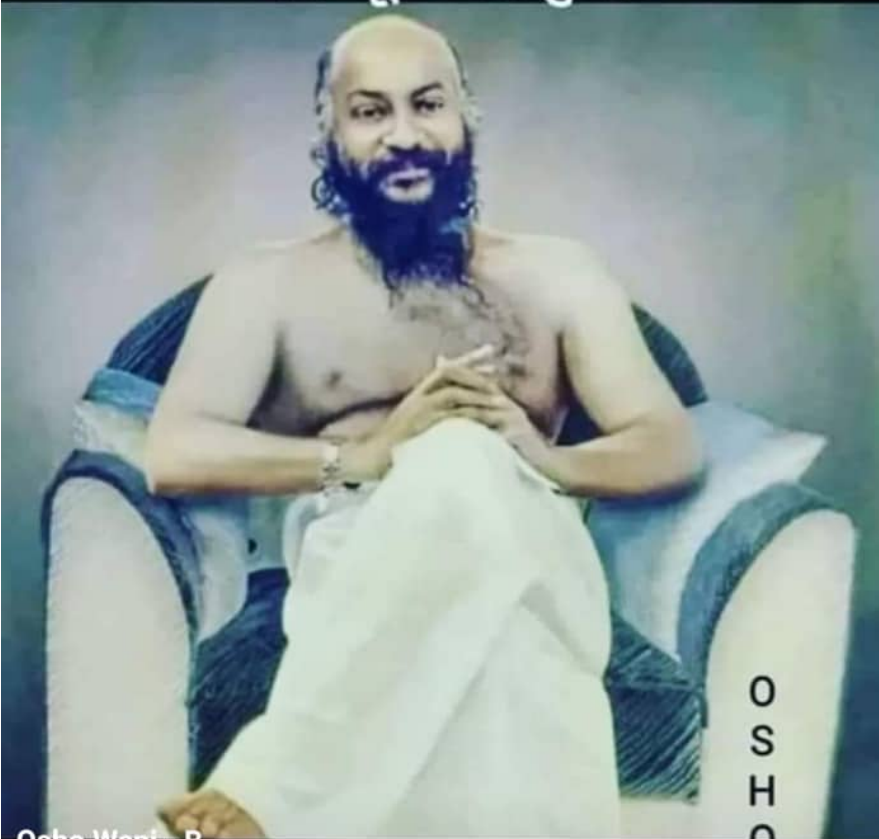
A photograph of a Buddhist monk in a red robe standing in front of a large, golden Buddha statue. The monk is holding a small, round object in his hands. The background is dark, and the lighting is focused on the monk and the statue.

किसी पशु, पक्षी ने कोई
मंदिर नहीं बनाया किंतु
उनका पालन पोषण हो रहा
है, और मनुष्य के इतने मंदिर
हैं, इतनी मन्तें माँगते हैं,
किंतु फिर भी दुःख और
तनाव कम ही नहीं होता। तो
क्या समझने में भूल हो रही
है?





लोभ, क्रोध और वासना
ये तीनों अगर न हो तो तुम्हारा अहंकार
बुझ जाएगा। और जहां अहंकार बुझा...
कि शून्य पैदा हुआ।



Osho Wani - B

04-AUG-2023



MESSAGE OSHO WANI - B



7



Like



Comment



Send



Share

करता नहीं।

फिर क्या करोगे? भूख तो है, प्यास तो है। प्रेम तो अग्नि की लपटों की तरह उठ रहा है। और अब इन लपटों को उलझाने वाले पात्र भी न रहे--न पत्नी उलझाती न पति उलझाता, न धन न पद, कोई नहीं उलझाता। सब हैं अपनी जगह, लेकिन अब तुम्हारी इस अतृप्ति के लिए तृप्त करने वाली कोई चीज नहीं है यहां। उन्हीं क्षणों में आंखें आकाश की तरफ उठती हैं, अज्ञात की तरफ उठती हैं। ज्ञात को तो छान लिया, अब अज्ञात को खोजें। जो दिखाई पड़ता है, उसको तो खूब परख लिया; अब जो नहीं दिखाई पड़ता, उसकी यात्रा में चलें। बाहर जो था उसको तो खूब तलाशा और हर बार और भी ज्यादा विषादग्रस्त होकर अपने में गिर गए; अब भीतर खोजें; अब अंतर्यात्रा पर निकलें।

ओशो... "अजहूं चेत गंवार -18"


Osho Janaki Dnyan Kendra


1h · 🌐

मनुष्य के मन का ठीक-ठीक विश्लेषण करो तो तुम्हें पता चलेगा: मनुष्य कुछ भी खोजता हो, परमात्मा को ही खोजता है। और चूंकि कहीं भी नहीं पाता, इसलिए सब जगह से विषादग्रस्त होकर, संतापग्रस्त होकर लौट आता है।

पत्नी में तुमने खोजना चाहा था एक ऐसा सौंदर्य जो कभी कलुषित न हो। तुम्हारी आकांक्षा परमात्मा की है; वही एक सौंदर्य है जो कभी कलुषित नहीं होता। तुमने पत्नी में एक ऐसा यौवन खोजना चाहा था जो कभी मुरझाएगा नहीं। लेकिन वह तो सिर्फ परमात्मा का ही है जो कभी नहीं मुरझाता। इस जगत में तो सब मुरझा जाएगा। जो जवान है, बूढ़ा होगा। जो सुंदर है, कुरूप हो जाएगा। जो आज ताजा है, कल बासा हो जाएगा। यहां तो सब सुगंधें दुर्गंधें बन जाती हैं। और यहां सब सौंदर्य ढल जाता है। यहां फूल खिलते हैं--कुम्हलाने को। तुमने एक ऐसा फूल चाहा था जो कभी न कुम्हलाए। फिर तुमने जिस फूल को चाहा, वह कुम्हलाया। फिर पीड़ा लगी, फिर चोट लगी। ऐसी ही चोटों का नाम संसार है। ऐसे ही घाव बढ़ते चले जाते हैं।

मूढ़ आदमी वही है जो फिर-फिर उन्हीं घुनघुनों को पकड़ लेता है; फिर-फिर उन्हीं खिलौनों को चूसने लगता है। समझदार वह है जो देख लेता है कि घुनघुनों से दूध नहीं बहता है।

धन से कोई भी कभी आकांक्षा से मुक्त नहीं होगा और पद से कोई कभी परमपद पर नहीं पहुंचता है। जिसको यह बात दिखाई पड़ गई, उसकी भूख खालिस रह गई; इस संसार में कोई उसकी भूख नहीं भरता। उस खालिस भूख से प्रार्थना उठती है; परमात्मा को जानने से नहीं उठती। खालिस भूख, भूख और भूख और भूख! और इस जगत में कोई चीज तृप्त करने वाली नहीं। सब देख लिया, सब परख लिया, कोई चीज तृप्त करती नहीं।

फिर क्या करोगे? भूख तो है, प्यास तो है। प्रेम तो अग्नि की लपटों की तरह उठ रहा है। और अब इन लपटों को उलझाने वाले पात्र भी न रहे--न पत्नी उलझाती न पति उलझाता, न धन न पद, कोई नहीं उलझाता। सब हैं अपनी जगह, लेकिन अब तुम्हारी इस अतृप्ति के लिए

“

Saints die and sinners die, kings die and beggars die. They are all going to death, and yet this tremendous clinging on to life exists. Somehow, we do not know why, we cling to life; we cannot give it up. And this is Maya.

– Swami Vivekananda

{CWSV-2 : Jnana-Yoga : Maya and Illusion}

अच्छे दिन के
चक्कर में उम्र
गुजर जाती है,
फिर पता चलता
हैं की जो गुजर
गए वही अच्छे
दिन थे।

- अज्ञात



- MOTIVATIONAL STRENGTH



36K



174



4.7K



Send



🎵 Use audio

Ashish Kumar

Follow

के चक्कर में more

by ghos



@sahityasathi



अपने अंदर के महाभारत से
तुम्हें अकेले ही लड़ना है,
जीवन के चक्रव्यूह में तुम ही
कृष्ण हो तुम ही अर्जुन ।



15K



17



283



Send

Use audio



sahityasathi

अपने अंदर के महाभारत से तुम्हें अकेले ही लड़ना है ... more

are

Shomu Seal

OLD FILM^ by _ghos





इंसान का बनाया हुआ वॉयाजर 1 यान
पृथ्वी से 2300 करोड़ किमी से ज्यादा
दूर जा चुका है। इस यान की लॉन्चिंग 66K
नासा द्वारा आज से 47 साल पहले 1977
में की गई थी। और हैरानी की बात यह 390
है की यह अब भी इतनी ज्यादा दूरी से
इम्पोर्टेंट डेटा नासा को भेज रहा है..!



★ Send a gift

the_unitedgyan



यूनाइटेड ज्ञान

Follow



Send



👉 रोज़ कुछ नया सीखने के लिए एक लाइक ❤️ क... more

Add a comment...

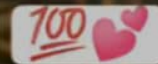




कोई लम्बी विमारी
से परेशान है तो उसे
हनुमानजी के सामने
3 बार इस मंत्र का
जाप करना चाहिए।
ॐ लक्ष्मण प्राण दात्रे
नमः



57K



175



458



mantuupwala4



Send



Night Żwirek · Arabian

Remix with AMAZI



Add a comment...





@bhagwad_geeta_108



पकड़ लो हाथ "माधवं", जगत में भीड़ भारी है..
कहीं खो ना जाऊँ मैं, जिम्मेदारी ये तुम्हारी है...

॥ बोलो राधे राधे ॥

@bhagwad_geeta_108



527



5



Send

🎵 Use audio



bhagwad_geeta_108 @

Day (49/365) Collecting कृष्ण भक्त 34.7k/5... more



Old Film by thisishowis



Add a comment...



**मानव जाति के
होने के बावजूद
भी मानव मानव
से पूछते हैं,
आप कौन सी
जाति के हो?
मानव को मानव
नहीं दिखता।**



- रामासामी पेरियार

MOTIVATIONAL STRENGTH



घर का मुखिया बनना आसान बात नहीं उनकी हालत टिन के उस शेड जैसी होती हैं, जो बारिश, तूफान, ओलावृष्टि सब झेलता हैं, लेकिन उसके नीचे रहने वाले अक्सर कहते हैं, कि यह आवाज बहुत करता हैं, और जल्दी गर्म भी हो जाता हैं..!



32K



157

-अज्ञात : प्रसेनजीत कुमार सनातनी



5.2K



प्रसेनजीत कुमार सनातनी

Follow



Send

Nohar Dansena commented: 🙏🙏 मुखिया के त्याग और तपस्या का समझ समय से पहले आ गया, अब निर्वहन कर...



कबर पर मेरी वो रोने आई है।
मुझसे मोहब्बत हैं कहने आई है

@hal_e_dil_ap_143

जब जिंदा था तो रुलाया बहुत था।
अब सोया हूं तो जगाने आई हैं।।

Use audio



Ashish Anmol

Follow



**उपवास हमेशा अन्न का ही
क्यों लालच, लोभ, चुगली,
क्रोध, और गंदे विचारों
का भी होना चाहिए**



2.5K



24



467



Send

[★ Send a gift](#)[Kabir Parmeshwar mi...](#)[Follow](#)

परमात्मा क्या बताते हैं





थोड़ी सी आवारगी भी जरूरी है जिंदगी में,
कैद में रह कर अक्सर परिंदे उड़ना
भूल जाते है.



504



99



Send

★ Send a gift



Sufi Ke Kisse



Add a comment...



छोड़ना चाहो तो कमियां

@shayaro_ki_mehfil0

बहुत है मुझमे,

साथ निभाना चाहो तो

खूबियां भी कम नहीं।



3.6K



6



189



Send



shayaro_ki_mehfil0



साथ निभाना चाहो तो खूबियां भी कम नहीं। ... more



strumental)

Shah





RAHAT.KI.SHAYARI09



121



1



23



Send



Send a gift



Mahavir Verma

Follow

दोस्ती वफादारी मोहब्बत
सब बिकते हैं सब खरीदूंगा 🥲💔

Add a comment...





हकदार बदल दिए जाते है
किरदार बदल दिए जाते है

ये दुनियां है साहब यहां मन्नत पूरी ना हो तो
भगवान बदल दिए जाते है..।

@ its desi balak up38



1.3K



2



109



Send

Use audio



ab_hi_9870

raj Raj

Remix with

Add a comment...





Manikarnika Ghat

सफर के मज़े लो, मंजिल तो शमशान में है!



213K



367



1.4K



_har_har_mahadev_0000



मंजिल तो शमशान में है!... @_har_har_mahade... more



Send



Kailash Kher · Jal



Add a comment...





60



Send

प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा को अपने भीतर लिए बैठा है
ओशो



ध्यान अभियान आश्रम

Follow



Add a comment...



सब मिल जाए तो तमन्ना
किसकी करोगे जनाब

✦ @hal_e_dil_ap_143 ✦

अधूरी ख्वाहिशें ही तो जीने
का मज़ा देती है

🎵 Use audio



Ashish Anmol

Follow

मिल जाए तो.... more

🎵 (Instrumental)

Aamir

📍 Azamgarh

Add a comment...





संगीत सुनकर ज्ञान नहीं मिलता
मंदिर जाकर भगवान नहीं मिलता

पत्थर तो लोग इसलिए पूजते हैं क्योंकि
विश्वास के लायक कोई इंसान नहीं मिलता!!



59



5.4K

Use audio



sad_zindagi_writre @



Send



मंदिर जाकर भगवान नहीं मिलता, 🌹🔥🙏...

Add a comment...





स्त्री, पुरुष, धन, दौलत में ही आनंद
होता तो तथागत बुद्ध और महावीर
राजा के बेटे थे, वो कभी घर ना छोड़ते।



657



39



Send



oshomayy @

OSHOMAYY ✨..... more





॥मूर्खता॥

मरने के बाद क्या होता है जो जिंदा थे
वो बता रहे थे!



536



31



Send



osho__hindi



Osho 🌻... more



बाल काटना नाई का धर्म नहीं धंधा है
चमड़े की सिलाई करना मोची का धर्म नहीं धंधा है उसी
प्रकार पूजा-पाठ करना ब्राह्मण का धर्म नहीं धंधा है!!

@अनमोल ओशो वाणी



क्रोध को पाले रखना
खुद ज़हर पीकर दूसरे के
मरने की अपेक्षा करने
के समान है।



1.7K



13



38



Send



Buddha inspired 888

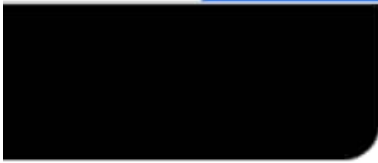
Mohit Sharma commented: Bhimte isko bhi nahi manenge 🤔



Meditation Mantras Guru

Add a comment...



**ध्यान अभियान आश्रम · Follow**

26 Jan · 🌐

मेरे सन्यासी मेरे प्राण है। रामकृष्ण जब मर रहे थे, उनको गले का कैंसर हुआ था, भोजन नहीं ले सकते थे, पानी नहीं पी सकते थे, विवेकानंद ने उनसे कहा कि परमहंस देव, आप परमात्मा से इतना नहीं कह सकते, जरा सी बात है, आप कह भर दे की हो जाएगी, आपकी कही बात और टाली जाए यह तो नहीं हो सकता, जरा सी बात है, आप कह दे कि ये क्या कर रहे हो? कम से कम भोजन तो करने दो, पानी तो पीने दो, विवेकानंद ने कहा तो राम कृष्ण तो बहुत सीधे साधे भोले आदमी थे, उन्होंने आंख बंद की, आंख खोली और कहा कि देख तूने ऐसी बात की, तेरी बात मान के मैंने कहा, तो परमात्मा ने मुझे बहुत झिड़का और मुझे कहा कि सुन, तू अपने ही गले पर भरोसा किए जाएगा कब तक? तो तेरे शिष्यों के गलों से कौन भोजन कर रहा है? उनके गलों से कौन पानी पी रहा है, तो विवेकानंद को कहा कि देख इस तरह की सलाह मुझे मत देना अब आगे से, मैं सीधा साधा मान लेता हूं तो उल्टी मुझे झड़क खानी पड़ी, बात तो ठीक है, अब कब तक अपने ही गले से पानी पिऊंगा, अब तुम्हारे गले से पिऊंगा, कब तक इस देह में जिऊंगा, अब तुम्हारी देह में जिऊंगा. और परमात्मा ठीक कह रहा है, अब फैल जाऊंगा तुम सब में, तुम जब हंसते हो तो मैं तुम में हंसता हूं, तुम्हारे कंठ मेरे कंठ है, संन्यस्त होने का अर्थ ही यही होता है, मुझ में और तुम में अब कोई दूरी ना रही, कोई फासला ना रहा, दीवार हटा दी, बीच के सारे बंधन, सीमाएं समाप्त कर दी, मिलन हुआ, जहां गुरु और शिष्य का मिलन है, वही तो सन्यास का फूल खिलता है, तुम हंसते हो तो मैं हंसता हूं, तुम नाचते हो तो मैं नाचता हूं, मुझे अलग से नाचने की, अलग से हंसने की कोई जरूरत नहीं.

ओशो



Google



🔍 voyager 1 last photo



All Images Videos News Books Maps Flig



pale blue dot



earth



S Space.com

Pale Blue Dot 2: Voyager 1 Signal f...



*** BBC

Pale Blue Dot ...



Q Quora

from Voyager 1's position towards ...



C CNET

NASA's Voyager 1 reaches outskirts...



Y Yahoo News

Happy Birthday, 'Pale Blue Dot!' Fa...

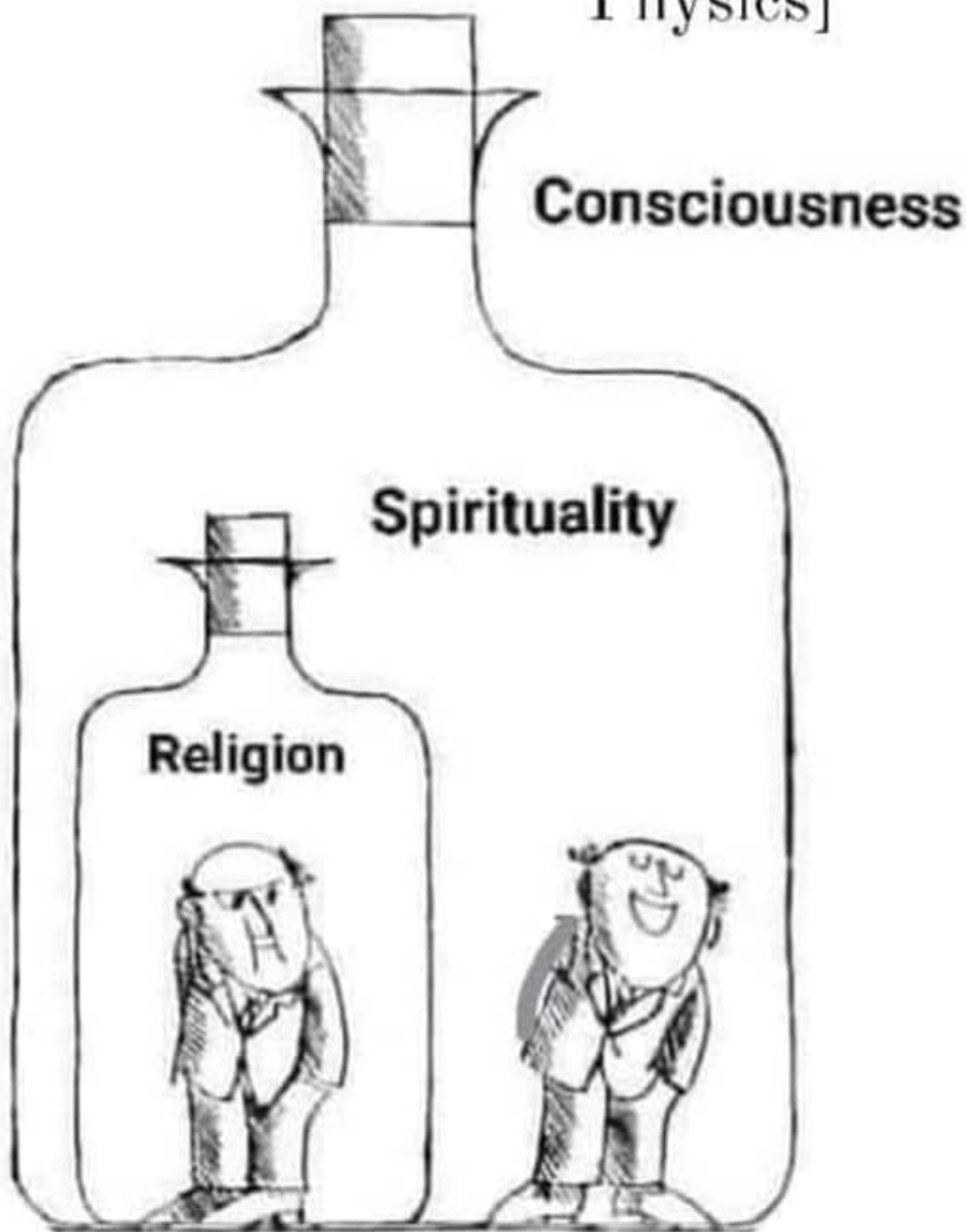


V Voyager - NASA

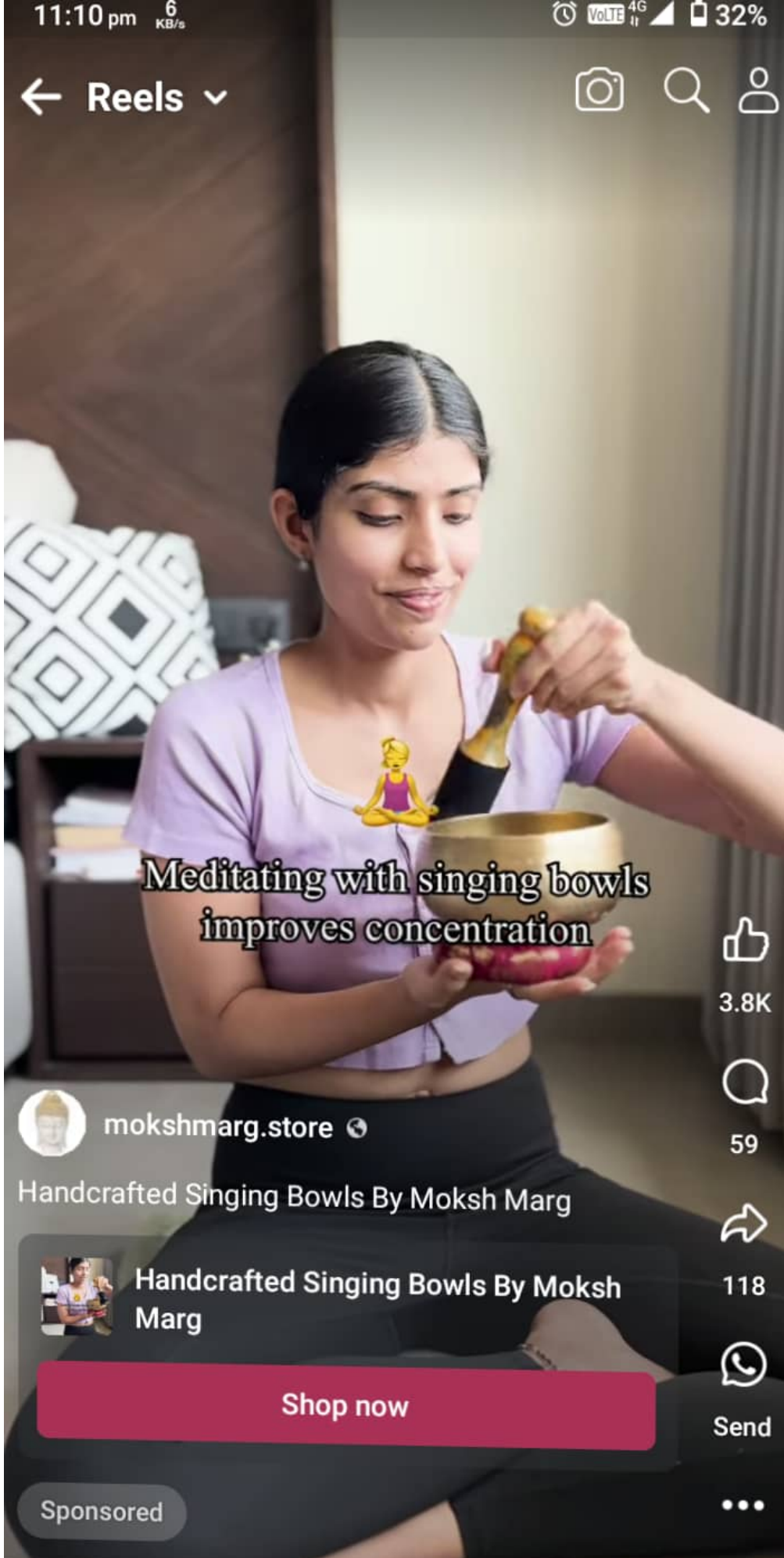
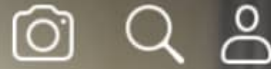
Voyager - News Articles



Consciousness is never experienced
in the plural, only in the singular.
The total number of minds in the
Universe is one. In fact, consciousness
is a singularity phasing within all beings.
Erwin Schrödinger [1933 Nobel Prize in
Physics]



← Reels ▾



Meditating with singing bowls improves concentration



mokshmarg.store

Handcrafted Singing Bowls By Moksh Marg



Handcrafted Singing Bowls By Moksh Marg

Shop now

Sponsored



3.8K



59



118



Send



गौतम बुद्ध कहते हैं..!

अंदर चलने वाली सांसे तक आपकी
नहीं है,

तो फिर बाहर के दुःख को अपना माने
क्यों बैठे हो, यह हमेशा के लिए नहीं है,
शांत हो जाओ

← Reels ▾



* त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग
नाथिक महात्म्य *



100K



3.5K



2K



Send



Niks Shirsath

Follow



Mahamrityunjay Mahadev



Trimbakeshwar Jy

Add a comment...



← Reels ▾

Insta || @faraz ka safar 2.0



आँधियों का इतनी मर्तबा आना कोई
इत्तेफाक नहीं,

बस यूँ समझ लेना मेरी कश्ती इस्तेहान के
काबिल रही होगी।



5.6K



2

Use audio



527



faqir_.baba_ @



#sadshayari #shayari #hindishayari #shay... m...

Send



roto

HD 4K by ig

Try it



Add a comment...



← Reels ▾



@SPIRITUAL.BRO

कबीर,
पर नारी को देखिए,
बहन बेटी के भाव।
कहे कबीर काम नाश का
यही सहज उपाय।।



1.5K

@spiritual.bro



4



194



Send



🎵 Use audio



sandeepdarasir

🎵 Monojit Shil · Broken Flut

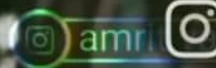
Add a comment...



← Reels ▾



4RABET

WIN BMW X3
& 1000+ PRIZES

@AMRIT.VAANI_

मन ही इस संसार मे सबसे शक्तिशाली है



3.7K



13



465



Send



ramveer.saini.311



Add a comment...



" अपेक्षा "

रास्ते पर चलते तुम्हारा रूमाल गिर जाए और कोई अजनबी उठा कर तुम्हे देदे तो तुम उसे धन्यवाद देते हो...
क्योंकि तुम्हारी उस अजनबी से कोई अपेक्षा नहीं थी..!

अगर वही रूमाल तुम्हारी पत्नी उठाकर तुम्हे दे, तो तुम धन्यवाद भी नहीं देते... क्योंकि तुम्हारी अपेक्षा थी की पत्नी उठाकर देगी ही..!

इसके विपरीत अगर पत्नी रूमाल उठाकर ना दे तो तुम क्रोधित तक हो सकते हो..!

" अपेक्षा दुःख है "

त्याग का अर्थ पत्नी का त्याग नहीं, बच्चों का त्याग नहीं, घर-बार का त्याग नहीं..!

" असली त्याग है अपेक्षा का त्याग "

जिसने किसी दुसरे से सुख की अपेक्षा का त्याग कर दिया...
उसे फिर कोई दुखी नहीं कर सकता..!



आशा दीपो भवः

मेरी आँखों के जादू से
तुम अभी वाकिफ़ नहीं हो,
हम उसे भी जीना सिखा देते हैं.
जिसे मरने का शौक हो.!

____चंद्र मोहन____
Osho_madhushala_



फॉलो करें अपना जीवन बदलें

सहारा इंसान को खोखला कर देता है
और उम्मीदें उसको
कमजोर कर देती हैं, अपनी ताकत के बल
पर
जीना शुरू कीजिए क्योंकि आपका खुद
से अच्छा साथी और हमदर्द कोई ओर
नहीं हो सकता।



1.9K



143



Send



deshrajofficials @

पोस्ट अच्छी लगे तो फॉलो जरूर करना 🙏... more



किसी भी व्यक्ति को ज्यादा
समझाने और सुधारने में मत लग
जाना, ज्यादा कोशिश
करोगे तो, वह व्यक्ति तुमसे नफरत
करने लगेगा।



@LUCINEIABRIDGE



16K



246



9K

★ Send a gift



Send



Nickea's beauty creat...

Follow



Add a comment...





@LUCINEIABRIDGE



16K



246



9K

★ Send a gift



Nickea's beauty creat...

Follow



Send



Add a comment...





KheloeXch

**TOP IPL
GAMING SITE**



LINK IN BIO

हम न नास्तिक है, न आस्तिक, हम तो
केवल वास्तविक है, जो अच्छा लगे उसे
ग्रहण करो, जो बुरा लगे उसका त्याग
करो, फिर चाहे वो विचार हो, कर्म हो,
मनुष्य हो, या धर्म हो।



Kheloexch

LINK IN BIO

पूजा करने का कोई सिद्धांत नहीं है
परमात्मा हर उस दिल की सुनता है जो
की पवित्र, निर्दोष और ईमानदार है!!

लोक पंक्तियाँ जाति पूछने से



वो आपका "पूरा नाम" पूछेंगे
क्योंकि जाति पूछने से
उनकी प्रगतिशीलता आहत होती है।



34K



200



75



Send

🎵 Use audio



lokpanktiyan

वो आपका "पूरा नाम" पूछेंगे ... more

🎵 A.R. Rahman · The Shimm

🔥 OLD FILM^ by _ghos





कबीर



@AADIRAM.KABIR

जग में न्यारे रहे,
लगा रहे हरि में ध्यान।
पृथ्वी पर देही रहे,
परमेश्वर में प्राण॥

@aadiram.kabir



918



1



194



Send



Use audio



sandeepdarasir



te Monojit Shil · S

Add a comment...



आज्ञा चक्र, अंतिम चक्र है जहां नींद श्रेष्ठतम हो जाती है। इसके पार नींद की आवश्यकता नहीं रहती, कार्य समाप्त हुआ। छठे चक्र तक निद्रा की आवश्यकता है। छठे चक्र में निद्रा ध्यान में रूपांतरित हो जाती है। प्रार्थना पूर्ण ही नहीं, ध्यानपूर्ण। क्योंकि प्रार्थना में द्वैत है। मैं और तुम, भक्त और भगवान। छठवें में द्वैत समाप्त हो जाता है। निद्रा गहन हो जाती है। इतनी जितनी की मृत्यु। वास्तव में मृत्यु और कुछ नहीं बल्कि एक गहरी नींद है और कुछ नहीं बल्कि एक छोटी-सी मृत्यु है। छठे चक्र के साथ नींद अंतस की गहराई तक प्रवेश हो जाती है। और कार्य समाप्त हो जाता है।

जब तुम छठे से सातवें तक पहुंचते हो तो निद्रा की आवश्यकता नहीं रहती।

तुम द्वैत के पार चले गए हो। तब तुम कभी थकते ही नहीं। इसलिए निद्रा की आवश्यकता नहीं रहती है।

यह सातवीं अवस्था विशुद्ध जागरण की अवस्था है।

ओशो,
दि डिवाइन मैलडी

जब तुम और ऊपर की ओर जाते हो, चौथे अनाहत चक्र पर तो नींद अत्यंत निष्कंप, शांत, पावन व परिष्कृत हो जाती है। जब तुम किसी से प्रेम करते हो तो तुम अत्यंत अनूठी विश्रांति का अनुभव करते हो। मात्र विचार कि कोई तुम्हें प्रेम करता है। और तुम किसी से प्रेम करते हो। तुम्हें विश्रांत कर देता है। सब तनाव मिट जाते हैं। एक प्रेमी व्यक्ति गहरी निद्रा जानता है। घृणा करो तो तुम सो न पाओगे। क्रोध करो तो तुम सो न पाओगे। तुम नीचे गिर जाओगे। प्रेम करो, करूणा करो। और तुम गहरी नींद आएगी।

पांचवें चक्र के साथ नींद लगभग प्रार्थना पूर्ण बन जाती है। इसी लिए सब धर्म लगभग आग्रह करते हैं कि सोने से पहले तुम प्रार्थना करो। प्रार्थना को निद्रा के साथ जोड़ दो। प्रार्थना के बिना कभी मत सोओ। ताकि निद्रा में भी तुम्हें उसके संगीत का स्पंदन हो। प्रार्थना की प्रतिध्वनि तुम्हारी नींद को रूपांतरित कर देती है।

पांचवां चक्र प्रार्थना है—और यदि तुम प्रार्थना कर सकते हो तो और अगली सुबह तुम चकित होओगे। तुम उठोगे ही प्रार्थना करते हुए। तुम्हारा जागना ही एक तरह की प्रार्थना होगी। पांचवें चक्र में नींद प्रार्थना बन जाती है। यह साधारण नींद नहीं रहती।

तुम निद्रा में नहीं जा रहे। बल्कि एक सूक्ष्म रूप से परमात्मा में प्रवेश कर रहे हो। निद्रा एक द्वार है जहां तुम अपना अहंकार भूल जाते हो। और परमात्मा में खो जाना आसान होता है। जो कि जाग्रत अवस्था में नहीं हो पाता। क्योंकि जब तुम जागे हुए होते हो तो अहंकार बहुत शक्तिशाली होता है।

जब तुम गहरी निद्रावस्था में प्रवेश कर जाते हो तुम्हारी आरोग्यता प्रदान करने वाली शक्तियों की क्षमता सर्वाधिक होती है। इसीलिए चिकित्सक का कहना है कि यदि कोई व्यक्ति बीमार है और सो नहीं पाता तो उसके ठीक होने की संभावना कम हो जाती है। क्योंकि आरोग्यता भीतर से आती है। आरोग्यता तब आती है। जब अहंकार का आस्तित्व बिलकुल नहीं बचता। जो व्यक्ति पांचवें चक्र—प्रार्थना के चक्र तक पहुंच गया है। उसका जीवन एक प्रसाद बन जाता है। जब वह चलता है तो उसकी भाव भंगिमाओं में आप एक विश्रांति का गुण पाओगे।





Like



Comment



Send

**रजनीशपुरम**

Munabai Makvana · 1d · 🌐



किसी वृक्ष के नीचे बैठ कर, वृक्ष की ओर देखो, फिर अपनी आंखें बंद कर लो और वृक्ष को अपने भीतर देखो। आकाश की ओर देखो, फिर अपनी आंखें बंद कर लो और अनुभव करो कि आकाश तुम्हारे भीतर ही है। उगते हुए सूर्य को देखो, फिर अपनी आंखें बंद कर लो और अनुभव करो कि सूर्य तुम्हारे भीतर उग रहा है। स्वयं को अधिक समाविष्ट करता अनुभव करो।

तुम्हें एक अपूर्व अनुभव होगा। जब तुम्हें लगेगा कि वृक्ष तुम्हारे भीतर है, तो तत्क्षण तुम अधिक युवा, अधिक ताजे अनुभव करोगे। और यह कल्पना नहीं है, क्योंकि वृक्ष और तुम दोनों ही पृथ्वी से संबद्ध हो। तुम दोनों की जड़ें एक ही पृथ्वी में हैं और अंततः एक ही अस्तित्व में हैं। तो जब तुम्हें लगता है कि वृक्ष तुम्हारे भीतर है तो वृक्ष तुम्हारे भीतर ही है--यह कल्पना नहीं है--और अचानक तुम उसके प्रभाव को महसूस करोगे। वृक्ष की जीवंतता, हरियाली, ताजगी, उसमें से होकर गुजरती हवा, सबकी तुम्हारे हृदय में अनुभूति होगी।

ओशो, तंत्र-सूत्र



जिसे मौत छीन ले,
समझ लेना वह संसार
था। जो मौत में भी बचकर
तुम्हारे साथ चला जाए,
जो चिता की लपटों में
भी तुम्हारा साथ न
छोड़े, समझना वही
परमात्मा है।



ध्यान अग्नि है।

वह किसी भी विचार को जला देती है।

आप करें और देखें।

किसी भी विचार को सोचें मत, सिर्फ देखें।

खड़े हो जाएं और देखते रहें, देखते रहें, देखते रहें—

थोड़ी देर में आप पायेंगे, वह तिरोहित हो गया;

वहां खाली जगह रह गयी।

वह खाली जगह समाधान है।

और जब कोई व्यक्ति ऐसी कला से

चलते, चलते, चलते उस जगह पहुंच जाता है,

जहां प्रश्न उठते ही नहीं,

खाली जगह रह जाती है, वह समाधिस्थ है।

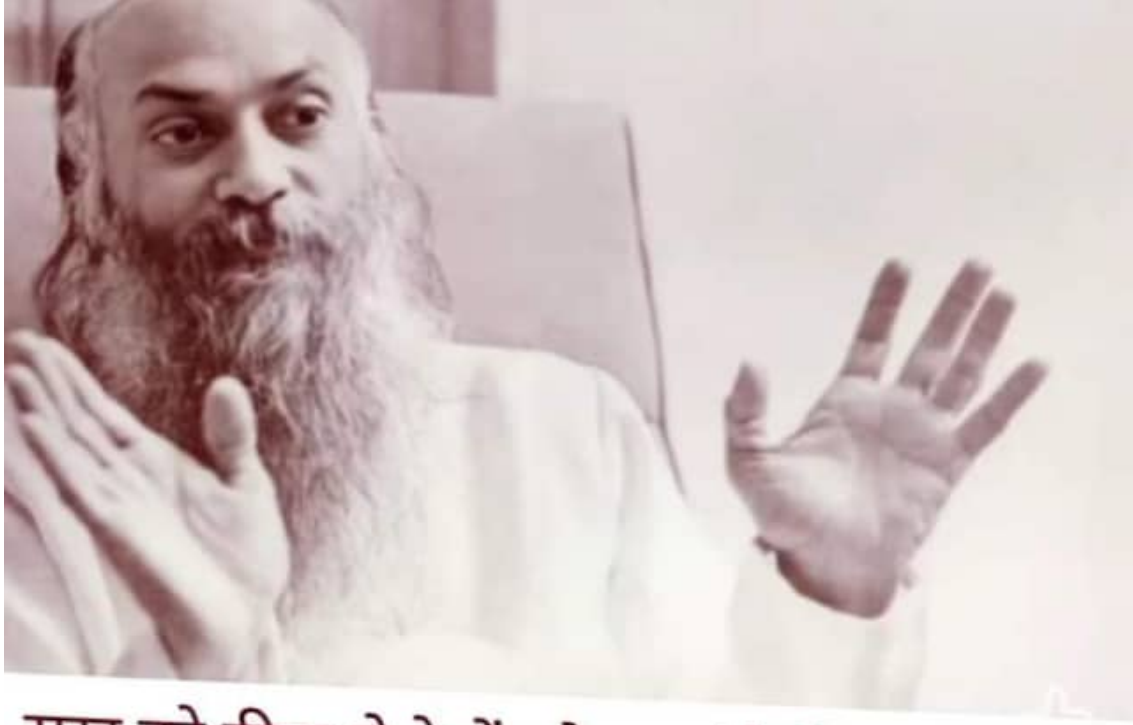
☀ महावीर वाणी, भाग-२, प्रवचन#४८, ओशो ☀



दौड़ना मत भविष्य के पीछे। यह भविष्य बस, स्वर्ण मृग है। मगर हम सब दौड़ रहे हैं भविष्य के पीछे। अलग अलग स्वर्ण मृग हैं। कोई धन के पीछे, कोई पद के पीछे, कोई मोक्ष के पीछे, कोई परमात्मा के पीछे मगर भागे हुए हैं लोग कोई 'यहां' नहीं है। सब की आख 'वहां' टिकी है। और होना है 'यहां' और आंखें हैं वहां! इसलिए तुम्हारे और तुम्हारी आख में ही तालमेल नहीं हो पाता उन दोनों में ही टूट हो जाती है। चलते हो कहीं, देखते हो कहीं:ओशो



अहंकार जाए, तो
प्रकाश ही प्रकाश।
अहंकार जाए तो,
सत्य ही सत्य।
अहंकार जाए, तो
अमृत ही अमृत।



सुख को ठीक से देखें और पाएंगे कि सुख दुख
का ही रूप है। सुख में ही तलाश करें और पाएंगे कि
सुख में ही दुख के सारे के सारे बीज,
सारी संभावना छिपी है।



जो संसार से भयभीत है वह संन्यासी नहीं है।
लेकिन जो संसार में ऐसे रहने लगा, जैसे मेहमान
है, अतिथि है; जो संसार में ऐसे रहने लगा कि
संसार चारों तरफ है, लेकिन उसके भीतर नहीं है;
वह आदमी संन्यस्त है। ओशो अहोभाव



निश्चित ही ब्रह्मयोगी ने सातों चक्र भेद दिये होंगे!

शरीर के बाहर-भीतर डोलते होंगे!

कुछ ऐसी घटना आदिशंकराचार्य के जीवन में भी घटी जब उभय भारती के प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए वे 'परकाया प्रवेश' करते हैं।

अपनी देह को शिष्यों की सुरक्षा में छोड़ कर शंकराचार्य एक मृत राजा की देह को धारण करते हैं।

फिर ग्रहस्थ जीवन के प्रश्नों का उत्तर जानकर अपनी देह को पुनःजीवित करते हैं।

एक अग्रेंज अफसर ने भी भारत में अपने अनुभवों पर लिखी किताब में ऐसी घटना का जिक्र किया है।

कि वह अपने सिपाहियों के साथ एक नदी के पास से गुजरते समय देखता है!

कि एक वृद्ध सन्यासी नदी में से एक जवान व्यक्ति की लाश को घसीटते हुये जलती आग के पास लाता है और बैठकर थोड़ी देर कुछ करता है।

फिर वह वृद्ध सन्यासी गिर जाता है और वह जवान व्यक्ति जीवित हो जाता है,

फिर उसी प्रकार वह युवक उस वृद्ध सन्यासी को घसीटते हुये नदी में फेंक आता है।

अफसर उसे गिरफ्तार कर पूछता है?

तो वह युवक कहता है कि "वो वृद्ध सन्यासी मैं ही था!"

"जिन्दगीं इन साँसों और धड़कनों से भी बहुत बड़ी बात है।"

* 🙏 न मन *



Acharya Vinod and 1.3K others

19 comments • 150 shares



Like



Comment



Send



Share



ध्यान अभियान आश्रम



1d · 🌐

*मन में केवल वही विचार बनाएं, जो आप होता देखना चाहते हैं।
क्योंकि विचार बीज हैं, और घटनाएं इसके फल!!*

जय भगवान

अहंकार और आत्मा।

हम अहंकार को पकड़ना चाह सकते हैं या आत्मा को पाना चाह सकते हैं।

दोनों का उपाय स्वयं में है। अहंकार को पकड़ना चाहते हैं तो स्वयं को पकड़ें, अहंकार पकड़ में आ जायेगा।

आत्मा को पाना चाहते हैं तो स्वयं को पा लें।

बच्चे का हाथ उसके सर पर था तो उसकी छाया भी उसके हाथ में थी। दूरी समाप्त हो गयी।

यह संसार हमारा ही प्रक्षेपण है। हम इससे दूरी मिटाना चाह सकते हैं। प्रक्षेपण से दूरी मिटाने की कोशिश से दूरी मिटती नहीं, बनी ही रहती है। प्रक्षेपक से अर्थात् खुद से दूरी मिटाई जा सकती अगर बच्चे की तरह हम भी अपने मस्तक पर हाथ रख दें।

दूरी या सामीप्य का कारण भीतर है, बाहर नहीं। बाहरी जिसे कहते हैं वह अपना ही प्रक्षेपण है जैसे दर्पण में हम अपना प्रतिबिम्ब देखें। प्रतिबिम्ब से हम पास या दूर हो सकते हैं फिर भी एकता होती है। अपने सिर पर हाथ रखने से तो यह आत्मदूरी भी मिट जाती है।

सारा समाधान इसी में है। हम स्वयं से दूरी समाप्त करें।

हम संसार को पाना चाहते हैं तो वस्तुतः हम खुद को ही पाना चाहते हैं। संसार रूपी प्रक्षेपण पास या दूर लगता है यह समस्या हो सकती है। इसका उपाय अपने भीतर है क्योंकि हम ही द्रष्टा हैं, हम ही दृश्य हैं। हम जिसे पाना चाहते हैं वह हम ही हैं। यह बड़ी गहरी बात है।

हम जिससे बचना चाहते हैं वह भी हम ही हैं।

सब द्रष्टा-दृश्य में बंटे अंतःकरण का खेल है। उससे चेतना का तादात्म्य है इसलिए यह भ्रम है।

इसे एक व्यवस्था की तरह भी देखा जा सकता है। मामला ईश्वरीय आयोजन का है, कोई छोटीमोटी बात नहीं है।

मैं मैं -आप में बंटा हूं, आप आप-मैं में बंटे हुए हैं तभी जगत व्यवहार चल सकता है।

इसका ईश्वरीय प्रयोजन शुभ है। सभी लोग मिलकर रहें, एक दूसरे को सहयोग करें तो अपने अपने मानसिक या आत्मविभाजन से कोई हानि नहीं है। हानि तभी है जब राग-द्वेष, क्रोध क्षोभ, लोभादि वृत्तियों की अधीनता है।

तब दूसरे के साथ संबंध में विषमता आती है।

यह साथ साथ है।

ओशो



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 13h ·

'स्वामी रामतीर्थ ने कहीं कहा है कि वह गरीब ग्रामीण के घर में ठहरे हुए थे। उस ग्रामीण का छोटा बच्चा झोपड़े के सामने खेल रहा था और सूरज उग रहा था और बच्चे को अपनी छाया दिखाई दी। वह उसे पकड़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन जितना वह बढ़ता, छाया उतनी ही आगे बढ़ जाती। बच्चा रोने लगा। असफलता उसके हाथ लगी थी। उसने हर तरह से पकड़ने की कोशिश की पर पकड़ पाना असंभव था। छाया को पकड़ना असंभव है इसलिए नहीं कि छाया को पकड़ना बड़ा कठिन है, यह असंभव इसलिए है क्योंकि बच्चा उसे पकड़ने के लिए दौड़ रहा था। जब वह दौड़ रहा था तो छाया भी दौड़ रही थी। तुम छाया को नहीं पकड़ सकते क्योंकि छाया में कोई सार नहीं है और सार को ही पकड़ा जा सकता है।

रामतीर्थ वहां बैठे हुए थे, वह हंस रहे थे और बच्चा रो रहा था और मां हैरान थी कि क्या करे। बच्चे को कैसे संतवना दे? तो उसने रामतीर्थ से पूछा, स्वामी जी, क्या आप कुछ मदद कर सकते हैं? रामतीर्थ बच्चे के पास गए, बच्चे का हाथ पकड़ा और उसके सिर पर रख दिया- छाया पकड़ी गई। अब जब बच्चे ने अपने ही सिर पर हाथ रख दिया तो छाया पकड़ में आगयी। बच्चा हंसने लगा। अब वह देख सकता था कि उसके हाथ ने छाया को पकड़ लिया है। तुम छाया को तो नहीं पकड़ सकते पर स्वयं को पकड़ सकते हो। और जिस क्षण तुम स्वयं को पकड़ लेते हो, छाया पकड़ में आ जाती है।"

हमारे दो रूप हो सकते हैं -

अहंकार और आत्मा।

हम अहंकार को पकड़ना चाह सकते हैं या आत्मा को पाना चाह सकते हैं।

दोनों का उपाय स्वयं में है। अहंकार को पकड़ना चाहते हैं तो स्वयं को पकड़ें, अहंकार पकड़ में आ जायेगा।

आत्मा को पाना चाहते हैं तो स्वयं को पा लें।

बच्चे का हाथ उसके सर पर था तो उसकी छाया भी उसके हाथ में थी। दूरी समाप्त हो गयी।

यह संसार हमारा ही प्रक्षेपण है। हम इससे दूरी मिटाना चाह सकते हैं। प्रक्षेपण से दूरी मिटाने की कोशिश से दूरी मिटती नहीं, बनी ही रहती है। प्रक्षेपक से अर्थात् खुद से दूरी मिटाई जा सकती अगर बच्चे की तरह

facebook



खड़ा होता ह, सच बसावा ह, सच बसावा बग बिना ह। संगा बसा बसावा ह

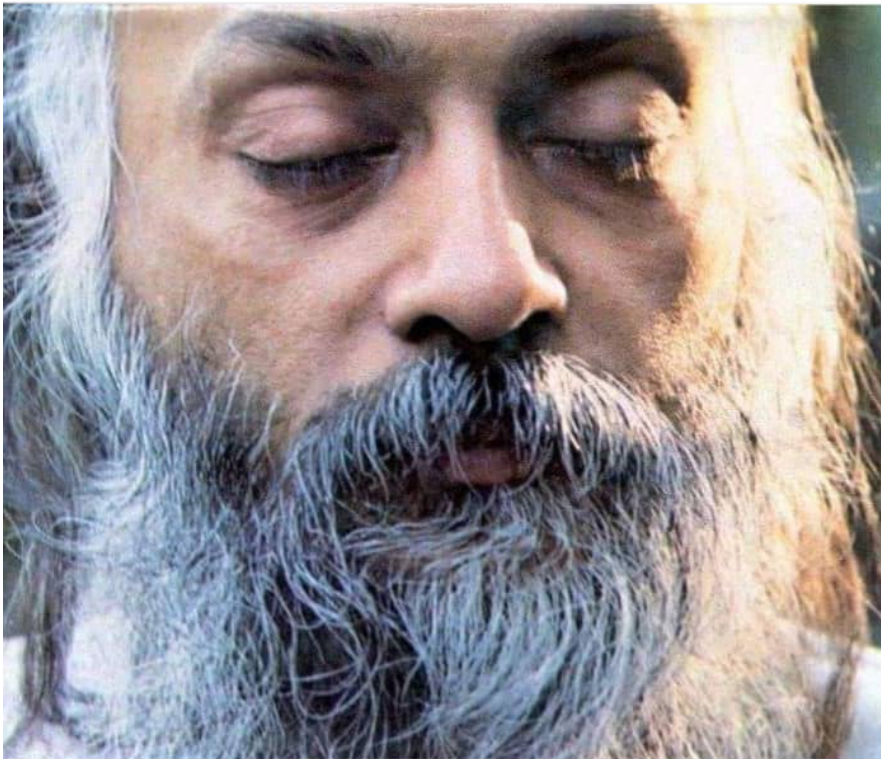
कि तुमने जीवन में कुछ पाया? क्यों मौत के क्षण में पता चलता है?
क्योंकि मौत तय कर देती है कि जो पाया, उसे ले जा सकोगे या नहीं?
अगर सच में पाया है तो तुम्हारे साथ जाएगा। अगर यूँ ही क्षणभंगुर
बबूलों के साथ खेल खेलते रहे तो तुम्हारे साथ कुछ भी न जा सकेगा।
नंगा आदमी आता है और नंगा आदमी जाता है। खाली हाथ आता है
और खाली हाथ जाता है।

जन्म से खाली हाथ हम आते हैं, यह तो ठीक है; लेकिन मरते वक्त भी
खाली हाथ जाएं, तो सारे जीवन का अर्थ क्या हुआ?
समय में शाश्वत छिपा है और क्षणभंगुर में द्वार है सनातन का।

.....

बिना जागे, पूरे जीवन का कोई परिणाम नहीं है। और अगर एक क्षण
भी तुम मौत के पहले जाग जाओ, सिर्फ एक क्षण भी, तो झरोखा खुल
जाता है परमात्मा का।

ओशो... "अजहूं चेत गंवार -17"



**Osho Janaki Dhyana Kendra**

1h · 🌐



जीवन अभी है, अभी नहीं। क्षण का खेल है। पानी केरा बुदबुदा! है तो लगता है जैसे सदा रहेगा। नहीं हो जाता है तो लगता है: 'था भी? कभी था भी?' पानी केरा बुदबुदा! ऐसा फूल कर पानी का बुदबुदा तैरता है; सूरज की किरणों में सतरंगा हो जाता है। जब है तो शाश्वत का भ्रम देता है और जब नहीं है तो सपना भी हुआ था उसका, इसका भी भरोसा नहीं आता।

जीवन पर तो मौत की तलवार बड़े कच्चे धागे में लटकी है; कब टूट पड़ेगी, कोई कह नहीं सकता। अब टूटे तब टूटे। इसलिए समझदार वे ही हैं, जो जीवन में उसको पा लें, जो शाश्वत है। नासमझ वे हैं, जो जीवन में उसको इकट्ठा करें, जो क्षणभंगुर है। जीवन क्षणभंगुर है स्वयं। उसे क्षणभंगुर की ही सेवा में लगा दोगे? जीवन भी जाएगा और जो इकट्ठा किया है वह भी जाएगा। कुछ कमाई हाथ न लगेगी।

यह जो छोटा सा जीवन है, इसे शाश्वत की खोज में लगा दो। जीवन तो जाएगा ही, फिर भी जाएगा। शाश्वत खोजो कि क्षणभंगुर, जीवन को जाना है। जीवन रुकने को नहीं है। लेकिन जिसने शाश्वत को खोजा, उसका जीवन तो चला जाएगा; लेकिन उसने जीवन का उपयोग कर लिया; उसने जीवन की सीढ़ी बना ली। जो खोजा वह रहेगा। समय तो गया; लेकिन समय को निचोड़ लिया संपत्ति में।

बहुत कम सौभाग्यशाली लोग हैं जो मौत के क्षण में यह कह सकें कि हमारा जीवन कृतार्थ हुआ। मृत्यु के क्षण में कसौटी है। मौत जब सामने खड़ी होती है, तब कसौटी है; तब परीक्षा का दिन है। तभी पता चलता है कि तुमने जीवन में कुछ पाया? क्यों मौत के क्षण में पता चलता है? क्योंकि मौत तय कर देती है कि जो पाया, उसे ले जा सकोगे या नहीं? अगर सच में पाया है तो तुम्हारे साथ जाएगा। अगर यूँ ही क्षणभंगुर बबूलों के साथ खेल खेलते रहे तो तुम्हारे साथ कुछ भी न जा सकेगा। नंगा आदमी आता है और नंगा आदमी जाता है। खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है।

जन्म से खाली हाथ हम आते हैं, यह तो ठीक है; लेकिन मरते वक्त भी खाली हाथ जाएं, तो सारे जीवन का अर्थ क्या हुआ?



#सोरेन किर्कगार्ड, डेनमार्क के एक दार्शनिक ने बहुत मर्मबेधी बात लिखी है। वह कहता है--'जब मैंने प्रार्थना करना शुरू की तो मैं चर्च जाकर परमात्मा से बातें करता था...।'

यही सब कुछ ईसाई पूरे विश्व में कर रहे हैं। वे उंची आवाज में परमात्मा से बात करते हैं, जैसे परमात्मा मर गया हो, या जैसे कि परमात्मा ठीक एक बेवकूफ प्राणी जैसा हो। वे परमात्मा को सलाह देते हैं कि उसे क्या करना चाहिए, अथवा जैसे परमात्मा ठीक एक बेवकूफ राजा जैसा हो, जिसे वह रिश्त दे सकें, और उसका पीछा करते हुए वे सभी कामनाएं जो अंदर हैं उन्हें पूरा करा सकें।

लेकिन किर्कगार्ड ने कहा, 'मैंने उससे बात करना जारी रखा और अचानक मैंने महसूस किया कि यह सब कुछ व्यर्थ था। तुम परमात्मा के सामने बात कर ही कैसे सकते हो? प्रत्येक को उसके सामने मौन ही होना पड़ेगा। वहां कहने को है भी क्या? और ऐसा हम क्या कह सकते हैं जो परमात्मा को अधिक जानने में सहायक होगा? वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है और सब कुछ जानता है इसलिए मेरे कहने का अभिप्राय हो क्या सकता है? '

और किर्कगार्ड आगे लिखता है--'मैंने उससे वर्षों बातें की तब अचानक मैंने महसूस किया कि यह सब कुछ बेवकूफी थी। इसलिए मैंने बात करना बंद कर दी और मौन हो गया। तब कई वर्षों बाद मैंने महसूस किया कि मौन से भी कुछ होने का नहीं और तब तीसरा कदम उठाया गया और वह था सुनने का। पहले मैं उससे बात कर रहा था, तब मैंने बात करना बंद कर दी और फिर उसे सुनने लगा। बस मौन हो जाने से सुनना बिलकुल अलग है, क्योंकि बस मौन हो जाना एक नकारात्मक चीज है, सुनना विधायक चीज है। बस मौन हो जाना निष्क्रियता है, जबकि सुनना एक सजग निष्क्रियता है, किसी चीज के लिए प्रतिक्षा करना, कुछ भी न कहना लेकिन पूरे अस्तित्व के साथ प्रतीक्षा करना। इसमें एक तीव्रता है।'

और किर्कगार्ड ने कहा--'जब यह सुनना घटा तभी पहली बार प्रार्थना भी घटी।'

ओशो : संसार और मार्ग

facebook



Like



Comment



Share



Swami Prem Anand

6h · 🌐



Swami Prem Anand and 1 other



Like



Comment



Send



Share





इस दुनिया में केवल पागल ही हंसते हैं, बाकी
समझदारों को तो हंसने की फुर्सत कहाँ है?
समझदारों के हृदय तो सूख गये हैं।
ओशो



Meetself



280



2



Send



इ

@_Meetself



d_samraat_official

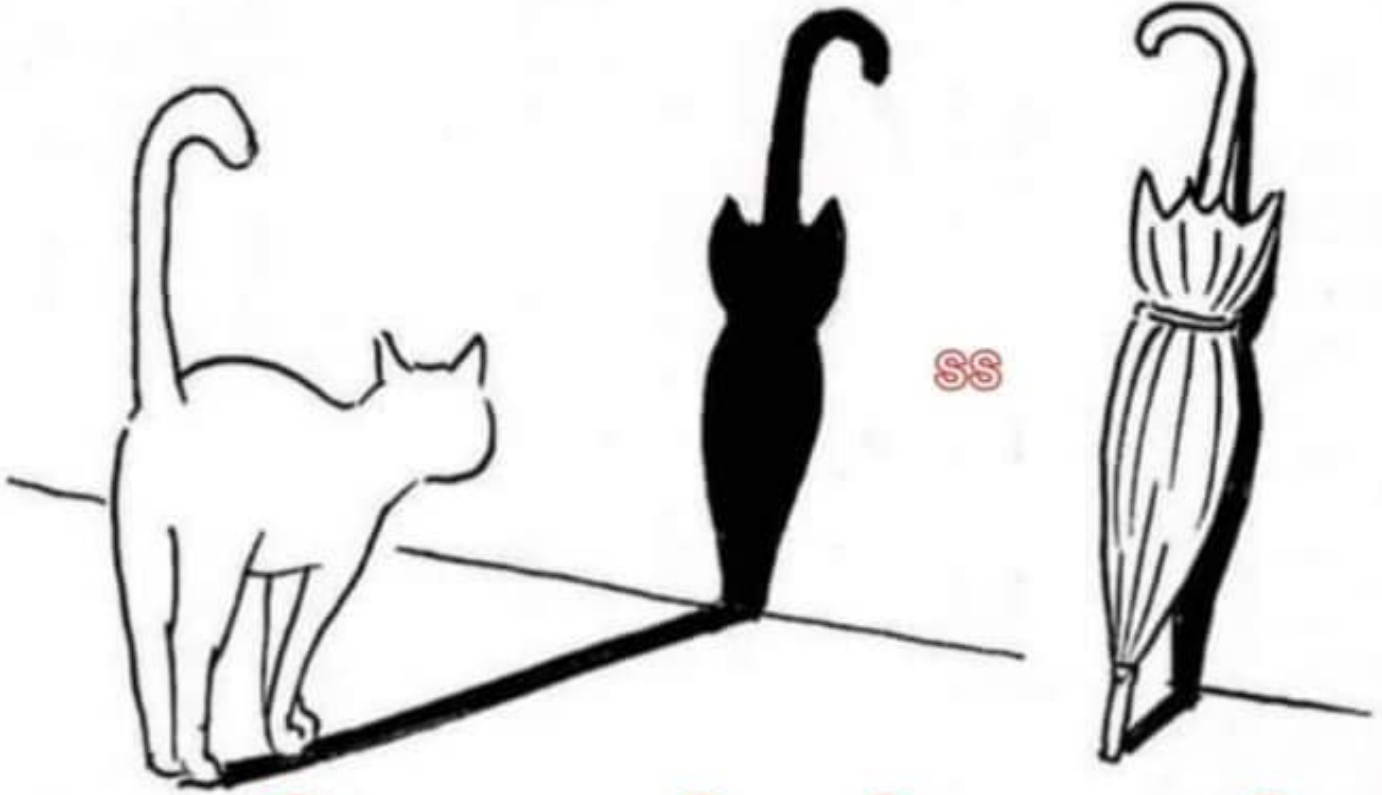
सच्चा और शुद्ध प्रेम करो.।।... more

qua Glitter by instagram

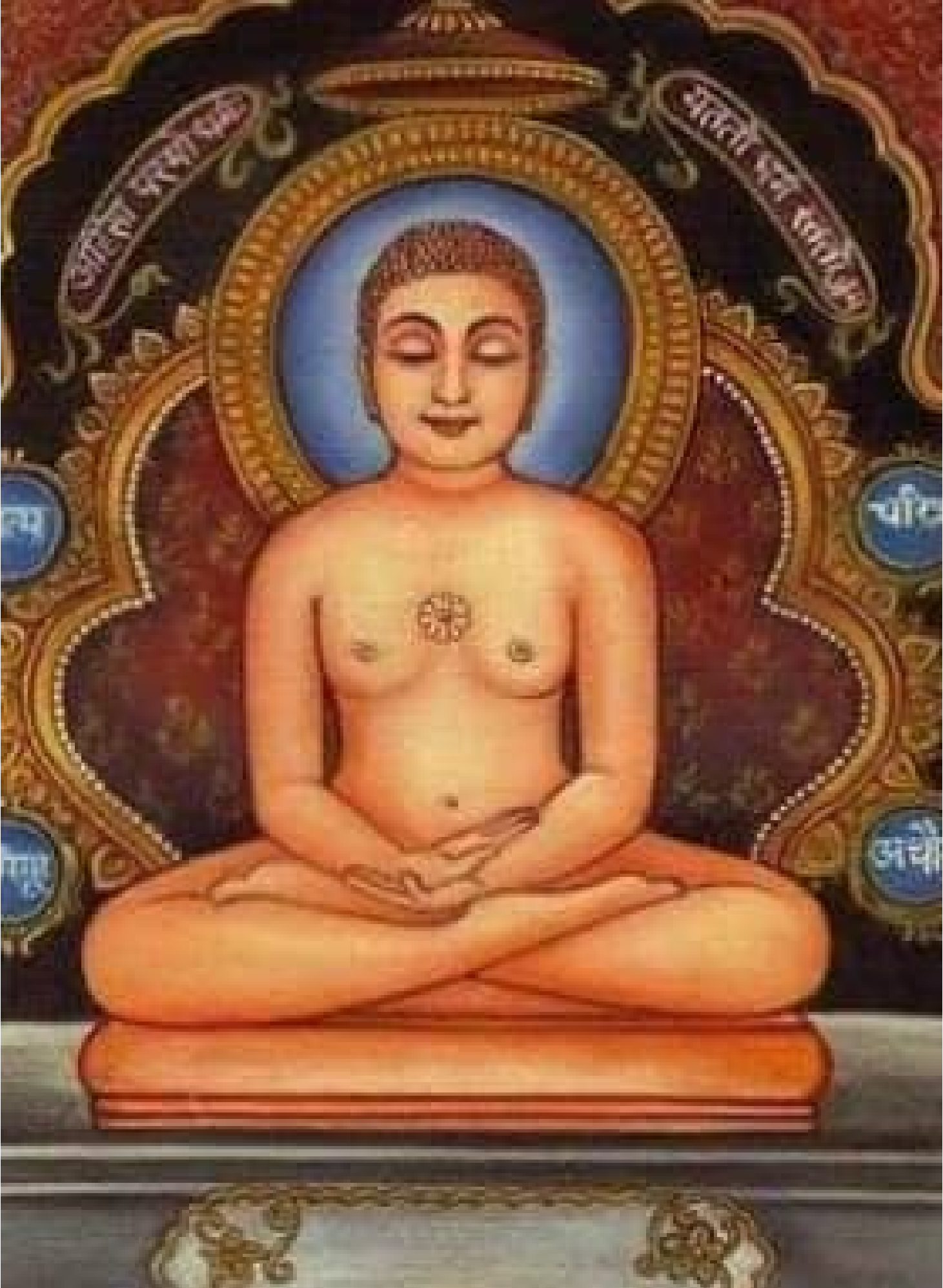
Add a comment...



"अंधाविश्वास"



वास्तविकता से परे, भ्रम है





पत्थर में भगवान है,
लेकिन इंसान में इंसान नहीं।



187



1



Send



osho_hindi @

Osho 🌻... more



Add a comment...



यह तुम्हारा ही चुनाव है।

अगर परमात्मा तुम्हें नहीं मिलता,
तो इसमें परमात्मा को दोष मत देना,
तुमने उसे अभी चुना ही नहीं; क्योंकि जिन्होंने भी,
जब भी उसे चुना है, तत्क्षण वह मिल गया है-
-एक क्षण की भी वहां देरी नहीं है।

लेकिन अगर तुम्हीं न चाहो तो परमात्मा
तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती नहीं करता;
सत्य तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती आरूढ़ नहीं होता।
तुम्हें जन्मों-जन्मों तक सत्य को इंकार करने की
स्वतंत्रता है।

यही मनुष्य की गरिमा है,
यही मनुष्य का दुर्भाग्य भी।

ओशो



पूजा पाठ भी मन का ही खेल है, इससे मन अपने आप को समझा लेता है कि पूजा कर ली तो हो गया धर्म, ये मन के अहंकार को ही पुष्ट करता है। पूजा पाठी जितना अहंकारी होगा, उतना पूजा न करने वाला नहीं होगा। पूजा पाठी का अहंकार इतना खतरनाक होता है कि वो उनकी कतई हज़म नहीं करता, जो पूजा पाठ नहीं करते, उन्हें वो सदा नर्क में भेजने के लिए आतुर रहता है।

पूजा पाठ से अहंकार को पोषण मिलता है, इसलिए पूजा पाठ का कोई सम्बन्ध धर्म से नहीं है। जिससे अहंकार को बल मिले, वो धर्म नहीं अधर्म है, जिससे अहंकार विलीन हो, वो धर्म है।

अहंकार का गिरना धर्म है। धार्मिक वो है, जो शांत है, मौन है, जो भीतर का अवलोकन करता है, जो दूसरों को समझता है, दूसरों का सम्मान करता है, जिसके चित्त में दूसरों को दुख देने का ज़रा सा भी भाव न हो, वो धार्मिक है।

☀️ OG ☀️
सदगुरु ओशो

– 🌸 ☀️ OG ☀️ 🌸

YourQuote.in



लाओत्से का जो किमती से किमती सूत्र है, वह है:

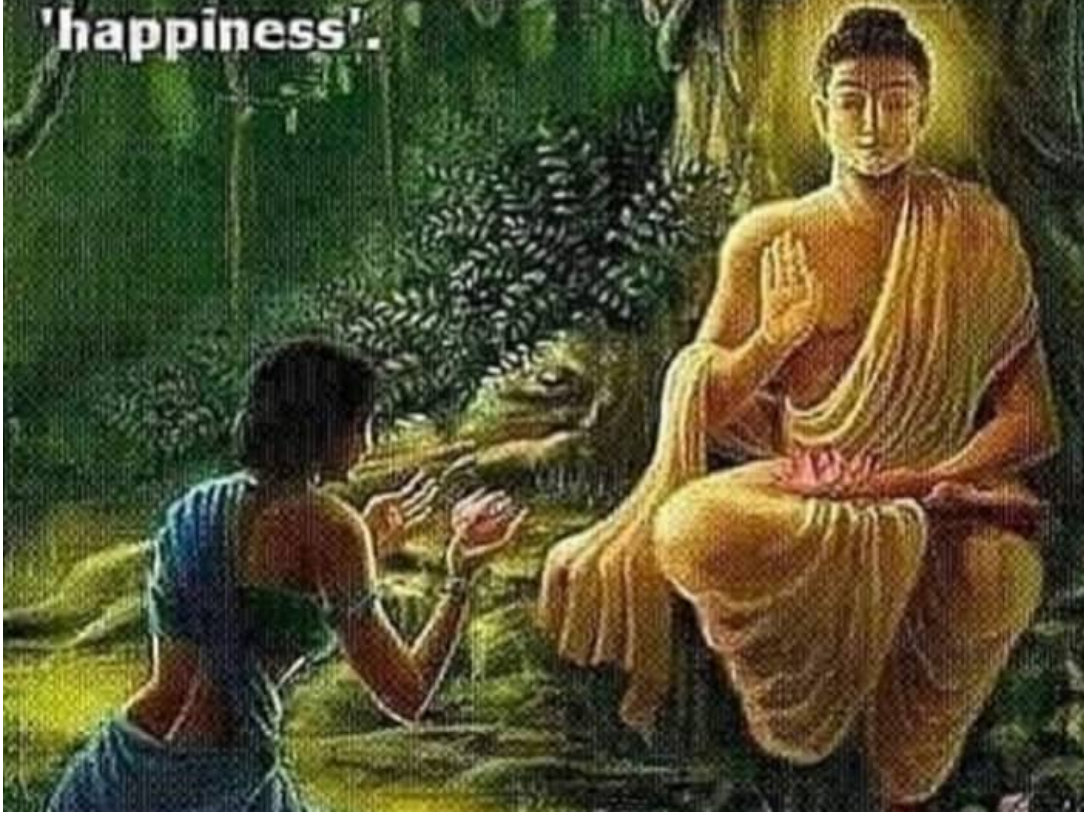
"स्वीकार"



लाओत्से कहता है, दुख को भी स्वीकार कर लो और तुम आनन्दित हो जाओगे। क्योंकि स्वीकार दुख जानता ही नहीं है। स्वीकार को दुख का कोई पता ही नहीं है। स्वीकार के साथ ही परिणाम आने शुरू हो जाते हैं।

॥ ओशो – ताओ जपनिष्ठ ॥

**Woman: I want happiness.
Buddha: First remove 'I' - that's ego
Then remove 'want' - that's desire.
See - now you are left only with
'happiness'.**



 Naye bharat ke khoj and 13 others

Like



Comment



Send



Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

...



Sulaxna Dixit Rawat · 1d ·

मोहम्मद एक दिन युवक को लेकर मस्जिद गये। पहली दफा युवक मस्जिद गया। सुबह की प्रार्थना, नमाज पढ़ने के बाद जब वापस लौटने लगे, तो उस युवक ने कहा: हजरत देखते हैं कि लोग कितने पापी हैं—अभी तक बिस्तरों में पड़े हैं! कई तो अभी तक सो रहे हैं, घुर्रा रहे हैं। इनका क्यो होगा हजरत? ये लोग नरक में पड़ेंगे?

मोहम्मद ठिठक कर खड़े हो गये। उन्होंने कहा। मुझसे बड़ी भूल हो गई कि तुझे मैं मस्जिद ले गया। तू रोज सोया रहता था, तो कम से कम ऐसा तो नहीं सोचता था कि लोग पापी हैं। यह तो फायदा न हुआ, नुकसान हो गया। आज तू पहली दफा मस्जिद क्या हो आया, तेरे मन में यह खयाल उठने लगा कि लोग पापी है और तू पुण्यात्मा है! उस युवक से कहा: भाई, तू जा और सो जा और भूल जा यह बात, और फिर मस्जिद जाता हूं। उसने पूछा: अब आप किसलिए जाते हैं? उन्होंने कहा: मुझे दुबारा फिर नमाज पढ़नी पड़ेगी और परमात्मा से क्षमा भी मांगनी पड़ेगी कि मुझसे बड़ी भूल हो गई कि इस आदमी को मैं उठा लाया। यह अच्छा भला था—सोता था। कम से कम दूसरों के प्रति अनादर तो न था, कठोरता तो न थी। अब यह उनको नरक में डालने की सोच रहा है! इसने एक प्रार्थना की है और इसके इरादे देखो!

जब भी तुम किसी आदमी में ऐसा देखो कि उसका धर्म उसके अहंकार को बढ़ा रहा है, तो समझना—भूल हो गई। जब तू अपन भीतर ऐसा देखो कि तुम्हारा धर्म तुम्हारी दया को कम कर रहा है, तो समझना कि भूल हो गई।

ओशो



उखाड़ दी थोड़ी मिट्टी खोद डाली। मिट्टी खोदी तो नगर दंग रह गया! भीड़ लग गई। सारा नगर वहां इकठ्ठा हो गया। वह भिखारी जिस जगह बैठा था, वहां बड़े खजाने गड़े हुए थे। सब कहने लगे, कैसा पागल था! मर गया पागल, भीख मांगते-मांगते! जिस जमीन पर बैठा था, वहां बड़े हंडे गड़े हुए थे, जिनमें बहुमूल्य हीरे-जवाहरात थे, जिस पर वह बैठा हुआ था! वह उन लोगों की तरफ हाथ पसारे रहा जो खुद ही भिखारी थे, जो खुद ही दूसरों से मांग-मांग कर ला रहे थे। वे भी अपनी जमीन नहीं खोदे होंगे। उसने भी अपनी जमीन नहीं खोदी। फिर गांव के लोग कहने लगे, बड़ा अभाग था।

मैं भी उस गांव में गया था। मैं भी उस भीड़ में खड़ा था। मैंने लोगों से कहा : उस अभागे की फिकर छोड़ो। दौड़ो अपने घर, अपनी जमीन तुम खोदो। कहीं वहां कोई खजाना तो नहीं? पता नहीं, उन गांव के लोगों ने सुना कि नहीं। आपसे भी यही कहता हूं : अपनी जमीन खोदो, जहां खड़े हैं वहीं खोद लें। कहता हूं : वहां खजाना हमेशा है!

लेकिन हम सब भिखारी हैं और कहीं मांग रहे हैं। प्रेम के बड़े खजाने भीतर हैं, लेकिन हम दूसरों से मांग रहे हैं कि हमें प्रेम दो! पत्नी पति से मांग रही है, मित्र मित्र से मांग रहा है कि हमें प्रेम दो! जिनके पास खुद ही नहीं है, वे खुद दूसरों से मांग रहे हैं कि हमें प्रेम दो! हम उनसे मांग रहे हैं! भिखारी भिखारीयों से मांग रहे हैं! इसलिए दुनिया बड़ी बुरी हो गई है। लेकिन अपनी जमीन पर, जहां हम खड़े हैं, कोई खोदने की फिकर नहीं करता।

ओशो - शून्य की नाव

**Sanjeev Mishra**

58m · 🌐



एक राजधानी में एक भिखारी सड़क के किनारे बैठ कर बीस-पच्चीस वर्षों तक भीख मांगता रहा। फिर मौत आ गई, फिर मर गया। जीवन भर यही कामना की कि मैं भी सम्राट हो जाऊं। कौन भिखारी ऐसा है जो सम्राट होने की कामना नहीं करता? जीवन भर हाथ फैलाए खड़ा रहा रास्तों पर। लेकिन हाथ फैला कर, एक-एक पैसा मांग कर कभी कोई सम्राट हुआ है? मांगने वाला कभी सम्राट हुआ है? मांगने की आदत जितनी बढ़ती है, उतना ही बड़ा भिखारी हो जाता है, सम्राट कैसे हो जाएगा?

तो पच्चीस वर्ष पहले छोटा भिखारी था, पच्चीस वर्ष बाद पूरे नगर में प्रसिद्ध भिखारी हो गया था, लेकिन सम्राट नहीं हुआ था। फिर मौत आ गई। मौत कोई फिकर नहीं करती। सम्राटों को भी आ जाती है, भिखारियों को भी आ जाती है। और सच्चाई शायद यही है कि सम्राट थोड़े बड़े भिखारी होते हैं, भिखारी जरा छोटे सम्राट होते हैं। और क्या फर्क होता होगा?

वह मर गया भिखारी। तो गांव के लोगों ने उसकी लाश को उठवा कर फिकवा दिया। फिर उन्हें लगा कि पच्चीस वर्ष एक ही जगह बैठ कर वह भीख मांगता रहा। सब जगह गंदी हो गई। गंदे चीथड़े फैला दिए हैं। सब फिकवा दिया। फिर किसी को खयाल आया कि पच्चीस वर्ष तक जमीन भी गंदी कर दी। थोड़ी जमीन भी उखाड़ कर थोड़ी मिट्टी भी साफ कर दो।

ऐसा ही सब व्यवहार करते हैं, मर गए आदमी के साथ। भिखारियों के साथ ही करते हों, ऐसा नहीं। जिनको प्रेमी कहते हैं, उनके साथ भी यही व्यवहार होता है।

उखाड़ दी थोड़ी मिट्टी खोद डाली। मिट्टी खोदी तो नगर दंग रह गया! भीड़ लग गई। सारा नगर वहां इकठ्ठा हो गया। वह भिखारी जिस जगह बैठा था, वहां बड़े खजाने गड़े हुए थे। सब कहने लगे, कैसा पागल था! मर गया पागल, भीख मांगते-मांगते! जिस जमीन पर बैठा था, वहां बड़े हंडे गड़े हुए थे, जिनमें बहुमूल्य हीरे-जवाहरात थे, जिस पर वह बैठा हुआ था! वह उन लोगों की तरफ हाथ पसारे रहा जो खुद ही भिखारी



चरित्र अगर कपड़ों से
तय होता तो कपड़ों की
दुकान मंदिर
कहलाती..

सोच Branded होनी
चाहिए साहब कपड़े
नहीं..

-अज्ञात

अज्ञात



केवल मनुष्य ही रोता हुआ पैदा होता है,
शोकायतें करता हुआ जीता है, और निराश ही मर जाता



192



5



Send



🎵 Use audio



oshomayy



OSHOMAYY ✨.....more OSHOMAYY

🎵 sic

kiran Baral

परमात्मा की कारिगरी तो देखो हम
सबको बनाकर खुद गायब हो गया
आंखे बनाई देखने के लिए पर वो
दिखता बंद आंखों से है।



@ABHYUDAYA SAHITYA

"तिरंगा राष्ट्र के लिए अशुभ होगा, क्योंकि तीन संख्या हिन्दू धर्म में अशुभ होती है।"

-गोलवलकर



8.2K

"जिस इंसान को ये समझ न हो कि हिंदू धर्म में मुख्य देवता ही तीन हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, उसके बारे में क्या कहें?"

★ Send a gift



अभ्युदय साहित्य

-सफ़ाटेल



2.3K

Jayant Kanbur commented: कब और कहा ऐसा बोला है। कौनसा किताब में लिखा है। आरक्षण वादी का बिन्दोक तर्क है।



Send

Amritanshu Dutta · Piku T

OLD FILM^ by _ghos



Osho the bhagvan

तुम सम्मान दो तो ठीक
तुम अपमान दो तो
ठीक !!!



113



14



Send

★ Send a gift



Osho the bhagvan

#oshothebhagvan #oshorajnees #oshom... more



Good morning everyone ji



सबसे बड़ी

जीत



वो होती है जहाँ

हार

की सम्भावना

सबसे ज्यादा हो



15 अप्रैल 2024

सुप्रभात

माता का सातवां स्वरूप **माँ कालरात्रि**

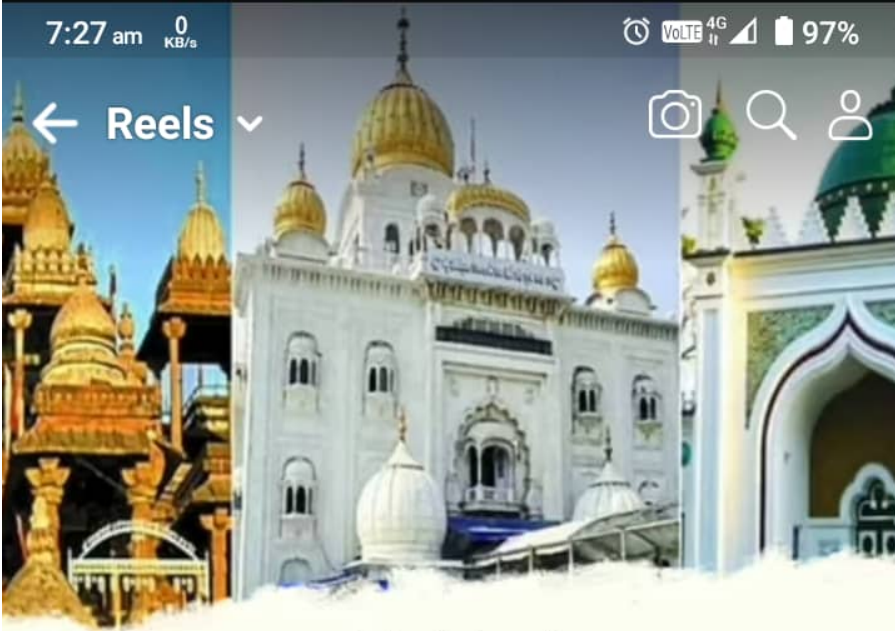
हर हर महादेव



चैत्र नवरात्रि की सप्तमी एवं सोमवार सुबह
की हार्दिक शुभकामनाएं।

माता रानी एवं देवों के देव महादेव की कृपा
आप और आपके परिवार पर सदैव बनी रहे।

← Reels ▾



- Osho Rajneesh

पूछना है कि जिस ईश्वर ने सृष्टि बनाई
पेड़ नदियां, पहाड़, इंसान, जानवर सब
कुछ बनाया । उसने अपने लिए मंदिर,
मस्जिद, चर्च क्यों नहीं बनाए...

@talksofme



Use audio



spritualmint @

पूछना है कि जिस ईश्वर ने सृष्टि बनाई पेड़ नदियां, पहाड़... mo...

Samuel Kim · See You Ag



35K



656



288

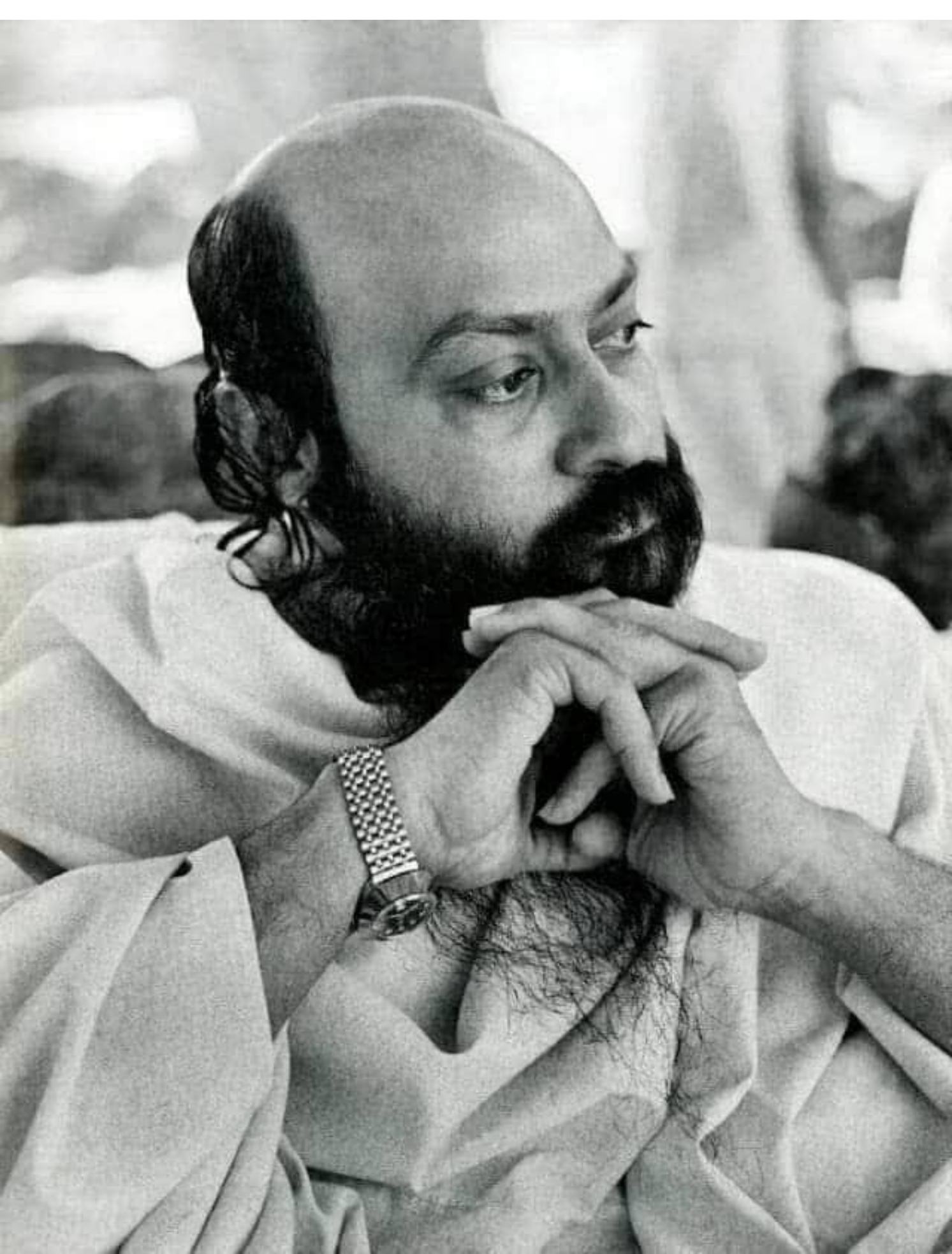


Send



Add a comment...



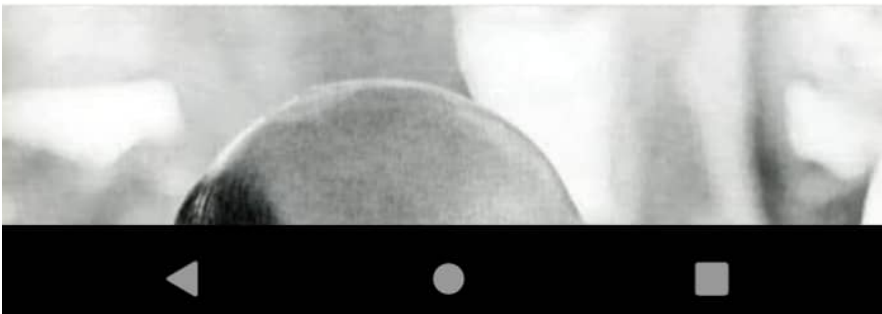


जहां वह जन्मा था!
ठीक उसी किनारे पर,
जहां आंख खोली थी-
आंख बंद करते समय
आदमी पाता है कि वहीं खड़ा है।
और तब बड़ी हैरानी होती है
कि इतनी जो दौड़- धूप की,
उसका क्या हुआ?
वह जो प्रण किया था कहीं पहुंचने का,
वह जो यात्रा की थी कहीं पहुंचने के लिए,
वह सब निष्फल गयी!

मृत्यु के क्षण में
आदमी वहीं पाता है अपने को,
जहां वह जन्म के क्षण में था!
तब सारा जीवन
एक सपना मालुम पड़ने लगता है।
नाव कहीं बंधी रह गयी
किसी किनारे से।

हां, कुछ लोग-कुछ सौभाग्यशाली लोग,
मरते क्षण वहां पहुंच जाते हैं,
जहां जीवन का आकाश है,
जहां जीवन का प्रवास है,
जहां सत्य है,
जहां परमात्मा का मंदिर है।
लेकिन,
वहां वे ही लोग पहुंचते हैं,
जो किनारे से,
खूटे से जंजीर खोलने की याद रखते हैं।

!! ओशो !!



जब उनका नशा कुछ कम हुआ
तो उनमें से किसी ने पूछा,
"कहां आ गये होंगे अब तक हम।
आधी रात तक हमने यात्रा की,
न-मालूम कितनी दूर तक
निकल आये होंगे।
नीचे उतर कर कोई देख ले
कि किस दिशा में हम चल रहे हैं,
कहां पहुंच रहे हैं?"

"जो नीचे उतरा था,
वह नीचे उतर कर हंसने लगा।
उसने कहा, "दोस्तो!
तुम भी उतर आओ।
हम कहीं भी नहीं पहुंचे हैं।
हम वहीं खड़े हैं,
जहां रात नाव खड़ी थी।
"वे बहुत हैरान हुए।
रात भर उन्होंने पतवार चलायी थी
और पहुंचे कहीं भी नहीं थे!
नीचे उतर कर उन्होंने देखा तो पता चला,
नाव की जंजीरें किनारे से बंधी रह गयी थीं,
उन्हें वे खोलना भूल गये थे!

जीवन भी,
पूरे जीवन नाव खेने पर,
पूरे जीवन पतवार खेने पर
कहीं पहुंचता हुआ मालूम नहीं पड़ता।
मरते समय
आदमी वहीं पाता है स्वयं को,
जहां वह जन्मा था!
ठीक उसी किनारे पर,
जहां आंख खोली थी-
आंख बंद करते समय
आदमी पाता है कि वहीं खड़ा है।

**Sanjeev Mishra**

16h · 🌐



एक पूर्णिमा की रात में
एक छोटे-से गांव में,
एक बड़ी अदभुत घटना घट गई।
कुछ जवान लड़कों ने
शराबखाने में जाकर शराब पी ली
और जब वे शराब के नशे में
मदमस्त हो गये
और शराब-घर से बाहर निकले
तो चांद की बरसती चांदनी में
उन्हें यह खयाल आया
कि नदी पर जायें
और नौका-विहार करें।

रात बड़ी सुन्दर और नशे से भरी हुई थी।
वे गीत गाते हुए नदी के किनारे पहुंच गये।
नाव वहां बंधी थी।
मछुए नाव बांधकर घर जा चुके थे।
रात आधी हो गयी थी।
वे एक नाव में सवार हो गये।
उन्होंने पतवार उठा ली
और नाव खेना शुरू किया।
फिर वे रात देर तक नाव खेते रहे।
सुबह की ठण्डी हवाओं ने
उन्हें सचेत किया।

जब उनका नशा कुछ कम हुआ
तो उनमें से किसी ने पूछा,
“कहां आ गये होंगे अब तक हम।
आधी रात तक हमने यात्रा की,
न-मालूम कितनी दूर तक
निकल आये होंगे।

00 000 0

एक प्रयोगशाला में दस साल प्रयोग करने पर यह पता चला कि अगर आप ऐसे व्यक्ति के पास जाते हैं जिसके हृदय से बहती करुणा और मंगल कामना है और जो आपके लिये शुभ के अतिरिक्त और कुछ नहीं सोच पाता तो उसके पास जाते ही आपके खून में पंद्रह सो सफ़ेद कण तत्काल बढ़ जाते हैं।” इमीडिएटली !” और अगर दुर्भावना से भरा है तो सोलह सो कम हो जाते हैं। “तत्काल। “और मेडिकल साइंस कहती है सेहत का मूल आधार सफ़ेद कण हैं। वैज्ञानिक भी हैरान हुए इस प्रयोग को देखकर कि क्या शुभ की भावना का इतना परिणाम ? ओशो।

27K

97 comments • 448 shares



Like



Comment



Share



माँ प्रेम सुगंधा is 🙏 feeling blessed at
Tapoban International Commune.

31m · 🌐

आप मुझ से पुछते है जब कोई आप से नफरत करता है तो आप क्या करते है?

मै क्या कर सकता हु? ये उस व्यक्ति की समस्या है इसका मेरे साथ कुछ लेना देना नही है अगर मे यहा नही होता तो वह किसी और से नफरत करता ! अगर कोई नही होता तो और एकेला होता ,तो वह खुद से नफरत करता घृणा उसकी समस्या है ! ❤️OSHO❤️



“

कर दिया शर्मिंदा झूठ को
उसकी बातों में इतना सच था

-कुलतार सिंह

”

7:17 am 0 KB/s

🕒 VoLTE 4G 📶 🔋 99%

प्रत्येक व्याक्त इसा ऊचाइ पर पहुच सकता ह लाकन हम इतना इहम्मत नहीं जुटाते। हम दांव नहीं लगाते। हम बड़े हिसाबी-किताबी हैं। हम चाहते हैं: बुद्ध जैसा आनंद तो हमें उपलब्ध हो जाए, लेकिन बुद्ध उस आनंद के लिए जो दांव पर लगाते हैं, वह हम कभी लगाते नहीं।

हम चाहते हैं: महावीर जैसी निष्कलंक दशा हमारी हो जाए, लेकिन महावीर ने जो दांव लगाया है, वह हम लगाते हैं?

हम दांव कुछ भी नहीं लगाना चाहते। हम मुफ्त में आनंद पाना चाहते हैं। आनंद की कीमत चुकानी पड़ती है। और बड़ी से बड़ी कीमत यही है कि जहां प्रतिष्ठा मिलती हो, धन मिलता हो, पद मिलता हो, उस सब यात्रा को छोड़कर उस दिशा में चल पड़ना, जहां पता नहीं, प्रतिष्ठा मिले-न मिले; पद मिले-न मिले। अपमान मिले; कौन जाने: सूली लगे; जहर मिले।

जो व्यक्ति अपने भीतर के निसर्ग को सुन लेता है और उसके साथ चल पड़ता है, उसके जीवन में कभी उदासी और निराशा नहीं होती।
ओशो



ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 2d · 🌐



धन्यभागी हैं वे लोग, जो वही हो जाते हैं—जा होने को बने थे। इसलिए थोड़े से लोग ही इस जगत में फलों को उपलब्ध होते हैं—कोई बुद्ध, कोई क्राइस्ट, कोई सुकरात, कोई कबीर, कोई मलूक—थोड़े से लोग। मगर इन लोगों की हिम्मत को खयाल रखना। ये बगावती लोग हैं।

बुद्ध के बाप तो चाहते थे कि बेटा सम्राट हो जाए; बेटा भिखारी हो गया! महावीर को मां तो चाहती थी—कि बेटा महल में रहे; बेटा नग्न हो कर जंगलों में भटकने लगा!

तुमने कभी यह बात गौर की—कि ये सारे लोग, जो इस जगत में किसी आनंद को उपलब्ध हुए हैं, ये सब बगावती और विद्रोही थे। विद्रोह इनका मौलिक लक्षण है।

शंकराचार्य संन्यस्त होना चाहते थे—नौ वर्ष के थे, तब संन्यस्त होना चाहते थे! स्वभावतः मां दुःखी थी। मां नहीं चाहती थी—यह हो। कौन मां चाहेगी कि बेटा संन्यस्त हो जाए। कौन पिता चाहेगा कि बेटा संन्यस्त हो जाए!

लेकिन इन लोगों ने, जो होना था, वही हुए। और कोई दूसरे व्यवधान बीच में न पड़ने दिए

प्रत्येक व्यक्ति इसी ऊंचाई पर पहुंच सकता है लेकिन हम इतनी हिम्मत नहीं जुटाते। हम दांव नहीं लगाते। हम बड़े हिसाबी-किताबी हैं। हम चाहते हैं: बुद्ध जैसा आनंद तो हमें उपलब्ध हो जाए, लेकिन बुद्ध उस आनंद के लिए जो दांव पर लगाते हैं, वह हम कभी लगाते नहीं।

हम चाहते हैं: महावीर जैसी निष्कलंक दशा हमारी हो जाए, लेकिन महावीर ने जो दांव लगाया है, वह हम लगाते हैं?

हम दांव कुछ भी नहीं लगाना चाहते। हम मुफ्त में आनंद पाना चाहते हैं। आनंद की कीमत चुकानी पड़ती है। और बड़ी से बड़ी कीमत यही है कि जहां प्रतिष्ठा मिलती हो, धन मिलता हो, पद मिलता हो, उस सब यात्रा को छोड़कर उस दिशा में चल पड़ना, जहां पता नहीं, प्रतिष्ठा मिले—न मिले। मर मिले—न मिले। आनंद मिले—न मिले। मर मिले—न मिले। मर मिले—न मिले।



 **jivan Darshan**  (OSHO)

Madhumita Pandey · 10h · 



जहां चार प्रेमी इकठे होते हो और
परमात्मा की बात करते हों,
सब छोड़कर वहां बैठ जाना।।
जहां चार आदमी परमात्मा
के प्रशंसा के गीत गाते हो ,
अपने अनुभव की बात करते हों,
रोते हों रोमांचित होते हों,
वहां दूर दूर खड़े मत रह जाना,
वहां दर्शक बनकर बैठे मत रह जाना ,
वहां डुबकी लगा लेना, वहां
उनके साथ जुड़ जाना ,
नाचना गाना रोमांचित होना ।
तुम्हारे भीतर जो छुपा है वोह
भी प्रकट हो सकता है ।

ओशो

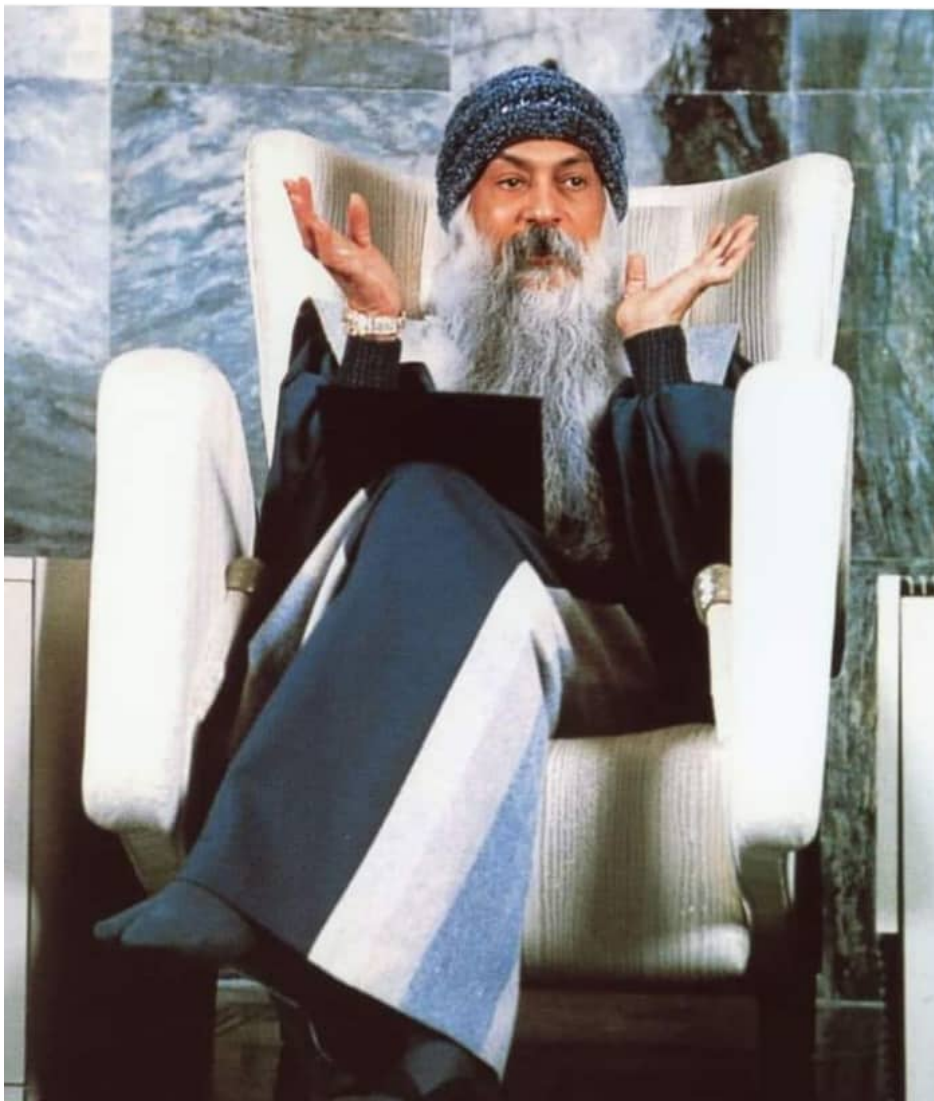


फिर एक चीज दूसरे में ले जाती है। धीरे-धीरे तुम्हारे भीतर एक इतनी विराट मालकियत का जन्म होता है, जिसको जैनों ने जिनत्व कहा है; तुम जिन हो जाते हो, विजेता हो जाते हो। और शरीर को मारना भी नहीं पड़ता, शरीर को काटना भी नहीं पड़ता। शरीर के साथ लड़ना ही नहीं पड़ता और जीत हो जाती है। जीत तो वही कुशल है कि लड़ना न पड़े और हो जाए।

.....

एक ही उपाय है: जागरण; अवेयरनेस; बोध; सुरति; होश को सम्हाले। इधर होश सम्हालता जाता है, उधर शरीर पर मालकियत आती जाती है। और जिस दिन अपने शरीर पर मालकियत आ जाती है, जिस दिन होश पूरा हो जाता है, उस दिन जीवन में बड़े सौभाग्य का मंगल क्षण आता है। उस दिन जीवन में बड़े मंगल वाद्य बजते हैं।

ओशो... "अजहूं चेत गंवार -17"



तो दुनिया में दो तरह की मालकियत होती है। एक तो मालकियत होती है कि शरीर को इतना कमजोर कर लो कि उसमें कुछ दम ही न रह जाए, मगर वह कोई मालकियत हुई? वह तो मालकियत का धोखा हुआ। वह तो ऐसे हुआ कि घर में एक लाश रख ली और कहा कि हम इसके मालिक हैं। हम जब उठाते हैं, तब यह लाश उठती है; हम जब बिठाते हैं, तब यह लाश बैठती है; हम बाहर ले जाते हैं तो बाहर जाती है; हम भीतर लाते हैं तो भीतर आती है।

तुम्हारे तथाकथित साधु-संन्यासियों ने शरीर को लाश बना लिया। उन्हें डर है। मालकियत नहीं है यह। मालिक को कहां डर! यह तो ऐसा ही हुआ कि तुम एक घोड़े पर सवार हो और घोड़ा तुम्हारी मानता नहीं, तो तुम घोड़े को भूखा रखने लगे, कोड़े मारने लगे, उसके शरीर पर घाव बना दिए। घोड़े को इतना कमजोर कर लिया कि अब तुम्हारी उसे माननी ही पड़ेगी, क्योंकि न मानने की शक्ति ही नहीं रही। मगर यह मालकियत हुई? यह घोड़ा तो मुर्दा हो गया। मालकियत का तो मजा तभी था जब इस घोड़े में प्राण थे और यह हवाओं से बाजी लेता था। मालकियत का तो मजा तभी था जब यह घोड़ा वीर्यवान था। इसे कमजोर करके मालिक बनने में मजा नहीं है। यह तो मालकियत का धोखा है। यह रहे पूरा शक्तिशाली और फिर मालकियत।

तो खयाल रखना, दमन के द्वारा जो मालकियत आती है, पलटू उसकी बात नहीं कर रहे हैं। आगे सूत्र में साफ हो जाएगा।

पलटू कह रहे हैं: बोध से जो मालकियत आती है। अपने भीतर चैतन्य को घना कर लेने से जो मालकियत आती है। इन दोनों में क्रांतिकारी भेद है। दमन से तुम तो जागते नहीं, सिर्फ तुम्हारा शरीर कमजोर हो जाता है। जागने से तुम्हारा शरीर तो अपनी जगह होता है; शायद और भी बलशाली हो जाए, लेकिन तुम्हारे भीतर एक दीया जलने लगता है। उस दीये की रोशनी में तुम जलने लगते हो। तुम्हारे भीतर एक शांति विराजमान हो जाती है। उस शांति में संतुलन है। उस संतुलन में संयम है। उस संयम में समाधि है।

फिर एक चीज दूसरे में ले जाती है। धीरे-धीरे तुम्हारे भीतर एक इतनी विराट मालकियत का जन्म होता है, जिसको जैनों ने जिनत्व कहा है; तुम जिन हो जाते हो, विजेता हो जाते हो। और शरीर को मारना भी नहीं पड़ता। शरीर को काटना भी नहीं पड़ता। शरीर के साथ लड़ना ही नहीं



Osho Janaki Dnyan Kendra



17m · 🌐

तुम्हारी अपनी देह पर तुम्हारी मालकियत नहीं है। यह तुम्हारी देह तुम्हारी सुनती नहीं है। और दूसरी देहों को आज्ञा देने में लगे हो! सारे जगत को चलाने की आकांक्षा से भरे हो। अपनी देह को चला नहीं पाते। यह छोटी सी देह भी तुम्हारा मानती नहीं। यह छोटी सी देह भी तुम्हारा सुनती नहीं है। यह छोटी सी देह भी तुम्हारी छाया नहीं बनती। यह भी तुम्हारी मालिक है। तुम कैसे राजा बनोगे? इस देह की गुलामी भी नहीं छूट पाती है।

राज तन में करै,...

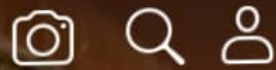
तो पहला राज तो अपने तन पर फैलाओ। पहला अनुशासन कि तुम्हारी देह तुम्हारे पीछे चले, तुम्हें देह के पीछे न चलना पड़े।

स्वाद भटकाता है। संगीत लुभाता है। कामवासना पकड़ती है। और जब शरीर किसी ज्वर से भरता है, किसी वासना के ज्वर से भरता है, तो तुम बिलकुल बेहोश हो जाते हो; तुम्हारा सारा होश खो जाता है। क्रोध की लपटें उठती हैं, जब तुम ऐसे काम कर लेते हो जो तुम कभी भी होश में होते तो न करते। पीछे पछताते हो। मगर पीछे पछताते हो! पीछे पछताने से क्या होगा? अब पछताए होत का, जब चिड़िया चुग गई खेत! पीछे तो सभी पछताते हैं। पीछे तो नासमझ से नासमझ भी पछताते हैं। समझदार वही है, जो उसी क्षण में जाग जाए, जब क्रोध उठा है; उसी क्षण में होश को सम्हाल ले। उसी होश से मालकियत पैदा होती है।

मालकियत का मतलब तुम समझ लेना। मालकियत का मतलब जबरदस्ती नहीं है, शरीर को कोड़े मार कर और शरीर को भूखा रख कर, उपवास करवा कर, अगर तुम मालिक बन गए तो वह मालकियत नहीं है; वह झूठी मालकियत है। शरीर स्वस्थ चाहिए, शक्तिशाली चाहिए, ऊर्जा से भरा हुआ चाहिए--फिर भी मालकियत चाहिए।

तो दुनिया में दो तरह की मालकियत होती है। एक तो मालकियत होती है कि शरीर को इतना कमजोर कर लो कि उसमें कुछ दम ही न रह जाए, मगर वह कोई मालकियत हुई? वह तो मालकियत का धोखा है। वह तो मेरे दया क्रि मर में एक लाश गत थी और कदा क्रि दया

Real truth



ऊपर से बस लेमीनेशन हटा दो
अंदर से सब इतने ही सुन्दर हैं...!



44K



103



1.5K

Send a gift



D K Baswa

Follow

Success Lifeline 100 100

बिजय लामा मुक्तान commented: Nahi ji sundarta to
dil mai hai.



Send



**Naye bharat ke khoj**

40m · 🌐

सुख क्या है

मैंने सुना है, एक बिल्ली इंग्लैंड की यात्रा को गयी। जब लौट कर आयी तो बिल्लियों ने उसे घेर लिया और कहा—क्या देखा, इंग्लैंड में क्या—क्या देखा? रानी के दर्शन किये कि नहीं? उसका सिंहासन देखा कि नहीं? कोहनूर—जड़ा उसका मुकुट देखा कि नहीं?

और उसने कहा—गयी थी देखने, देख नहीं पायी, क्योंकि रानी सिंहासन पर बैठी थी, सिंहासन सुंदर था, मुकुट भी बड़ा प्यारा था, मुकुट में हीरा भी चमक रहा था, मगर मैं मुश्किल में पड़ गयी, क्योंकि एक चूहा सिंहासन के नीचे बैठा था। उस चूहे को देखने के कारण मैं कुछ और देख नहीं पाई। मैं तो चूहे को ही देखती रही—बड़ा प्यारा चूहा था। बड़ा गजब का चूहा था। एकदम लार टपकने लगी थी।

अब बिल्ली अगर इंग्लैंड जाए, तो और देखे भी क्या? कोहनूर भी पड़ा रहे और उसीके पास एक चूहा बैठा हो, तो बिल्ली क्या देखे? भाड़ में जाए कोहनूर! कोहनूर का करोगे क्या? खाओगे, पीओगे कि पहनोगे? जब चूहा मौजूद हो तो कौन कोहनूर की फिकिर करता है!

ऋषि अपनी भाषा बोलते हैं, हम अपनी भाषा समझते हैं। वहीं चूक हो जाती है। जब ऋषि ने कहा—सब सुखी हों, तो ऋषि यह कह रहा है कि जैसा मैं सुखी हुआ, ऐसे सब हों। तुमने सुना, तुमने कहा कि ठीक है, तो ऋषि यह कह रहे हैं कि कार मिले, बड़ा मकान मिले, कि सुंदर स्त्री मिले—तुम अपना सुख सुनने लगे, तुम अपना सुख समझने लगे। ऋषि तो अपने सुख की बात कर रहा है।

ऋषियों का सुख क्या है? कि सबको परमात्मा मिले। वहीं तो पहुँच कर सारे लोग दुख के पार होते हैं। इस संसार में तो दुख—ही—दुख है। मगर तुम्हें दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं है, अनिवार्यता नहीं है, तुम सुखी हो सकते हो। मैं सुखी हूँ और तुमसे कहता हूँ कि तुम भी ऐसे हो सकते हो—मैं गवाह हूँ। सारे ऋषि गवाह हैं। लेकिन तुम तो ऋषियों के पास भी जाते हो तो आशीर्वाद वही माँगते हो कि चूहा मिल जाए.....

.....ओशो



**Sanjeev Mishra**

45m · 🌐



मैंने सुना है कि लंका में एक बौद्ध भिक्षु हुआ। उसके बड़े भक्त थे, हजारों भक्त थे। जब वह मरने को हुआ, आखिरी दिन उसने खबर भेज दी अपने सारे भक्तों को कि तुम आ जाओ, अब मैं जाने को हूँ। काफी उम्र, नब्बे वर्ष का हो गया था। कोई बीस हजार उसके भक्त इकट्ठे हुए। और उसने खड़े होकर पूछा कि देखो, अब मैं जाने को हूँ अब दुबारा मेरा—तुम्हारा मिलना न होगा, इसलिए अगर कोई मेरे साथ निर्वाण में जाना चाहता हो तो खड़ा हो जाए। लोग एक—दूसरे की तरफ देखने लगे। जो जिसको निर्वाण में भेजना चाहता था उसकी तरफ देखने लगा। लोग इशारा करने लगे कि चले जाओ। जो जिसको हटाना चाहता था, उससे कहने लगा : ' अब क्या बैठे देख रहे हो! भई हमें तो अभी दूसरी झंझटें हैं, अभी और काम हैं; मगर तुम क्या कर रहे हो! तुम चले जाओ!'

कोई उठा नहीं। सिर्फ एक आदमी ने हाथ उठाया। वह भी उठा नहीं, हाथ उठाया। तो उस बौद्ध भिक्षु ने पूछा कि मैंने कहा, उठ कर खड़े हो जाएं, हाथ उठाने को नहीं कहा।

उसने कहा : 'इसी डर से तो मैं सिर्फ हाथ उठा रहा हूँ। मैं सिर्फ यह पूछना चाहता हूँ कि रास्ता क्या है स्वर्ग जाने का, मोक्ष जाने का या निर्वाण जाने का? रास्ता बता दें आप। क्योंकि अभी इसी वक्त जाने की मेरी तैयारी नहीं है। मगर रास्ता पूछ लेता हूँ क्योंकि दुबारा आप मिलें न मिलें। रास्ता काम आएगा; जब जाना चाहूंगा, रास्ते का उपयोग कर लूंगा।'

उस बौद्ध भिक्षु ने कहा कि रास्ता तो मैं आज कोई पचास साल से बता रहा हूँ कोई चलता नहीं। इसलिए मैंने सोचा कि अब जाते वक्त अगर कोई जाने को राजी हो तो लेता जाऊँ। अब भी कोई राजी नहीं है।

तुम कहते हो : परमात्मा से मिलना है, प्यास है!

नहीं, अपनी प्यास को फिर जांचना। प्यास नहीं है, अन्यथा तुम मिल गए होते। परमात्मा और तुम्हारे बीच प्यास की कमी ही तो बाधा है। जलती प्यास।



अगर बुद्ध और सत्य साईं बाबा दोनों
खड़े हों तो तुम सत्य साईं बाबा के पास
जाओगे, बुद्ध के पास नहीं। क्योंकि बुद्ध
ऐसी मूढ़ता नहीं करेंगे कि तुम्हें ताबीज दें,
हाथ से राख गिराए बुद्ध कोई मदारी नहीं
हैं। लेकिन तुम मदारियों की तलाश में
हो। तुम चमत्कार से प्रभावित होते हो;
क्योंकि तुम्हारी गहरी आकांक्षा, वासना
परमात्मा की नहीं है; तुम्हारी गहरी
वासना संसार की है।

ओशो — शिव सूत्र



मुझे आपकी आज्ञा का पालन करना होगा। लेकिन अभी मैं आपका बड़ा भाई हूँ अभी मैं आपको आज्ञा दे सकता हूँ और आपको उसका पालन करना होगा। अभी आप गुरु नहीं हैं और मैं शिष्य नहीं हूँ। एक बार मैं दीक्षित हो जाऊंगा तो आप मेरे गुरु होंगे और मैं आपका शिष्य, तब मैं कुछ नहीं कह सकूंगा। इसलिए शिष्य बनने के पहले मेरी तीन शर्तें हैं जिन्हें आप स्वीकार कर लें और तब दीक्षा दें।

शर्तें बहुत बड़ी नहीं थीं, लेकिन शर्त शर्त है। और शर्त के साथ तुम्हारा समर्पण समग्र नहीं होता है। शर्तें तो बहुत छोटी थीं और बहुत प्रेमपूर्ण थीं। उसने कहा कि पहली शर्त यह है कि मैं सदा आपके साथ रहूंगा, आप मुझे कहीं और जाने को नहीं कह सकेंगे। जब तक जीऊंगा, मैं आपकी छाया बनकर रहूंगा; आप मुझे अपने पास से हटा नहीं सकेंगे। अभी ही वचन दे दें, क्योंकि बाद में जब मैं आपका शिष्य हो जाऊंगा तो आप जो भी कहेंगे वह मुझे करना होगा। आनंद ने कहा कि अभी बड़े भाई के नाते मैं यह वचन ले रहा हूँ कि मैं सदा आपके साथ रहूंगा; आप मुझे अपने से दूर नहीं कर सकेंगे। मैं आपकी छाया बनकर रहूंगा; उसी कमरे में सोऊंगा जहां आप सोएंगे।

दूसरी शर्त कि मैं जिस आदमी को भी आपसे मिलाने लाऊंगा, आप उससे जरूर मिलेंगे; न मिलने के जो भी कारण हों, आपको उस आदमी से मिलना होगा। अगर मैं किसी आदमी को आपके दर्शन के लिए लाऊंगा तो उसे दर्शन देना होगा। और तीसरी शर्त कि मैं जिस व्यक्ति को दीक्षा देने के लिए आपसे कहूंगा, आप उसे इनकार नहीं करेंगे। ये तीन वचन मुझे दे दें और तब मुझे दीक्षित करें। इसके बाद मैं कोई मांग नहीं करूंगा, क्योंकि तब मैं आपका शिष्य हो जाऊंगा।

महासंघ के द्वार पर बैठकर रोते हुए, अपनी पुरानी स्मृतियों के पन्ने उलटते हुए जब आनंद को यह स्मरण आया तो उसे अचानक बोध हुआ कि मेरी दीक्षा तो हुई नहीं; क्योंकि मैं ग्राहक नहीं था। बुद्ध ने उसकी शर्तों को मान लिया था, और उन्होंने जीवनभर उनका पालन किया। लेकिन आनंद चूक गया। जो निकटतम था, वही चूक गया।

और इस बोध के साथ ही आनंद बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया। जो बात बुद्ध के जीते जी न हुई, वह उनके जाने के बाद हो गई। आनंद ने समर्पण किया। और यदि समर्पण हो तो गैर—मौजूद गुरु भी तुम्हारी सहायता कर सकता है। यदि समर्पण न हो तो जीवित गुरु भी कुछ नहीं कर सकता। तो दीक्षा में, किसी भी दीक्षा में, समर्पण अनिवार्य है।



OSHO Acharya Rajneesh Real
Mystic



2h · 🌐

बुद्ध की मृत्यु हुई। बुद्ध के वचनों का संग्रह करने के निमित्त महासंघ की बैठक हुई। बुद्ध ने जो कुछ कहा था उसे लिपिबद्ध करना था। जो लोग बुद्ध के साथ रहे थे वे थोड़े ही दिनों में नहीं रहेंगे, इसलिए सब कुछ को रिकार्ड कर लेना था, लिख लेना था। लेकिन महासंघ में आनंद को प्रवेश नहीं मिला, यद्यपि आनंद को ही बुद्ध के जीवन, बुद्ध के वचन, बुद्ध के अनुभव के संबंध में सर्वाधिक पता था। आनंद को सब मालूम था; उतना किसी को भी नहीं मालूम था।

लेकिन महासंघ ने तय किया कि चूंकि आनंद को अभी बुद्धत्व नहीं प्राप्त हुआ है, इसलिए उसे प्रवेश नहीं दिया जा सकता। वह बुद्ध के वचन रिकार्ड नहीं करा सकता, क्योंकि अज्ञानी का भरोसा नहीं किया जा सकता है। वह धोखा नहीं देगा; लेकिन अज्ञानी व्यक्ति का क्या भरोसा? वह सोच सकता है कि यही घटित हुआ और वह उसे प्रामाणिक समझकर रिकार्ड करा सकता है। लेकिन वह अभी जाग्रत नहीं है और उसने नींद में जो देखा और सुना है उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। महासंघ ने तय किया कि जो जाग्रत हो गए हैं, वे ही लिखवा सकते हैं।

आनंद द्वार के पास बैठा रो रहा था। महासंघ का द्वार बंद हो गया और आनंद वहां बैठा चौबीस घंटे रोता रहा, आंसू बहाता रहा। लेकिन उन्होंने उसे प्रवेश नहीं दिया। चौबीस घंटों तक आनंद रोता रहा, रोता रहा। और फिर अचानक उसे बोध हुआ कि कारण क्या था कि मैं बुद्ध के जीते जी बुद्धत्व को नहीं उपलब्ध हुआ? बाधा क्या थी?

उसने अपनी स्मृतियों में लौटकर देखा—बुद्ध के साथ चालीस वर्षों का लंबा जीवन! उसे स्मरण आया वह पहला दिन जब वह बुद्ध के पास दीक्षा लेने आया था। लेकिन उसकी एक शर्त थी, जिसके कारण वह पूरी दीक्षा ही चूक बैठा। उस शर्त के कारण सही अर्थों में वह दीक्षित ही नहीं हुआ। वह दीक्षित नहीं हुआ, क्योंकि उसने एक शर्त लगा रखी थी। वह बुद्ध के पास आया और उसने कहा : मैं आपका शिष्य बनने आया हूं। जब मैं आपका शिष्य बन जाऊंगा तो आप मेरे गुरु होंगे और मैं आपका शिष्य होऊंगा और तब आप जो कहेंगे वह मुझे करना होगा। मुझे आपकी आज्ञा का पालन करना होगा। लेकिन अभी मैं आपका बड़ा भाई हूं अभी मैं आपको आज्ञा दे सकता हूं और आपको उसका पालन करना होगा। अभी आप गुरु नहीं हैं और मैं शिष्य नहीं हूं। एक



श्री चैतन्य चरितामृत

8h · 🌐

✨ नितार्ई गौर हरि बोल ✨

यह श्लोक विदग्ध माधव (१.१५) में सन्निहित है। इस सात अध्यायों वाले नाटक की रचना श्रील रूप गोस्वामी ने की है, जिसमें कृष्ण की वृन्दावन लीलाओं का वर्णन हुआ है।



तुण्डे ताण्डविनी रतिं
वितनुते तुण्डावली-लब्धये
कर्ण-क्रोड़-कड़म्बिनी
घटयते कर्णाबुदेभ्यः स्पृहाम्
। चेतः-प्राङ्गण-सङ्गिनी
विजयते सर्वेन्द्रियाणां कृति
नो जाने जनिता
कियद्भिरमृतैः कृष्णोति
वर्ण-द्वयी ॥

"मैं नहीं जानता हूँ कि 'कृष्ण' के दो अक्षरों ने कितना अमृत उत्पन्न किया है। जब कृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण किया जाता है, तो यह मुख के भीतर नृत्य करता प्रतीत होता है। तब हमें अनेकानेक मुखों की इच्छा होने लगती है। जब वही नाम कानों के छिद्रों में प्रविष्ट होता है, तो हमारी इच्छा करोड़ों कानों के लिए होने लगती है। और जब यह नाम हृदय के आँगन में नृत्य करता है, तब यह मन की गतिविधियों को जीत लेता है, जिससे सारी इन्द्रियाँ जड़ हो जाती हैं।"

~ श्रीचैतन्य चरितामृत, अन्त्य लीला, अध्याय 1, पयार 99

81

12 comments • 17 shares



Like



Comment



Send



Share



Integrated Men

Sponsored · 🌐

मन बनिया बान न छोड़ें ।

पलटू ने बार - बार मन को बनिया कहा है और कहा है कि मन का यह बनिया अपनी आदत नहीं छोड़ता। क्यों मन को बनिया कहा है ?

मन जीता है हिसाब - किताब में। मन जीता है गणित में , तर्क में। मन जीता है अपनी होशियारी में , चतुराई में।

पूरा बांट तरे खिसकावै , घटिया को टकटोलै।

पसंगा मांहै करि चतुराई , पूरा कभहुं न तौले।।

जब तक तुम पूरे बांट को नहीं जीवन में लाओगे और घटिया से काम चलाते रहोगे , घटिया रहोगे। पूरा बांट प्रतीक है परमात्मा का - जो पूरा है! मन हमेशा अधूरा है , कभी पूरा नहीं। घटिया बांट है। और सारी चीजें मन से तौल रहे हो।

संसार को परमात्मा से तौलो , मन से नहीं। संसार को परमात्मा की आंख से देखो , मन की आंख से नहीं। मन की आंख से देखोगे तो अपना - पराया ; और परमात्मा की आँख से देखोगे तो न अपना है , न कुछ पराया।

मन की आंख से देखोगे तो सारी चीजें मन के रंग में रंग जाएंगी। मन की बेईमानी ,

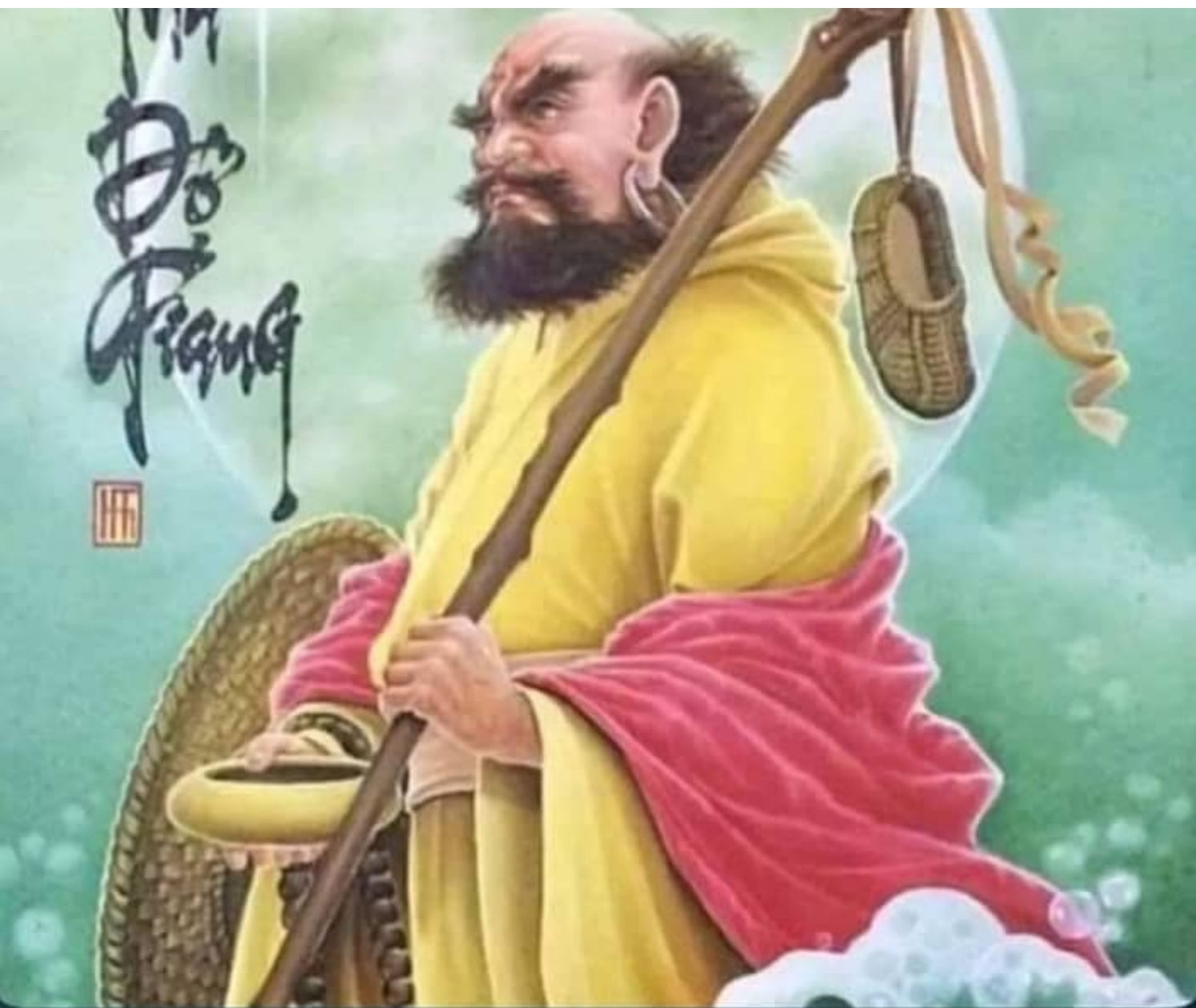
मन की धोखाधड़ी चीजों पर आरोपित हो जाएगी।

परमात्मा की , साक्षी की आंख से देखोगे , चीजें

स्वच्छ और निर्मल होकर प्रकट होंगी ; जैसी हैं वैसी

प्रकट होंगी। **ओशो** (Dr Sohan Lal Narang)





जो लोग पूजा करते हैं!
वे नहीं जानते हैं,
और जो जानते हैं वे कभी
"पूजा नहीं करते.!!

ओशो
बोधिधर्म.!!

जैसे-जैसे व्यक्ति का आत्म-निरीक्षण गहरा होगा, वह कुछ और ही दिशा में अपने विवेक को जगता हुआ पाएगा।

लेकिन आत्म-निरीक्षण है बिलकुल सोया हुआ हमारा। हम कभी देखते नहीं--हम क्या कर रहे हैं, क्या हो रहे हैं, क्या चल रहा है। अगर कोई हमको बताए भी, तो हम लड़ने को खड़े हो जाते हैं। स्मरण रखना, अगर किसी गाली पर आप लड़ने को खड़े हो गए, तो पक्का समझ लेना कि आप उस गाली के योग्य थे, नहीं तो आप लड़ने को तैयार नहीं होते। आप लड़ने को तैयार नहीं होते। आपको यह फिकर पड़ गई फौरन की मैं सिद्ध कर दूँ कि यह गाली गलत है, इसीलिए कि आप बहुत भीतर जानते हैं कि यह गाली सही है। और अगर मैंने सिद्ध न किया कि गलत है, तो दुनिया को पता चल जाएगा। तो जब भी आप यह सिद्ध करने की कोशिश में लगे हैं कि फलां दोष मुझमें नहीं है, तो बहुत शांति से समझ लेना, वह दोष जरूर आपमें होगा। नहीं तो आप उसे गलत सिद्ध करने की फिकर न करते। कोई फिक्र आपमें पैदा न होती।

ओशो - साक्षी की साधना, प्रवचन - 6

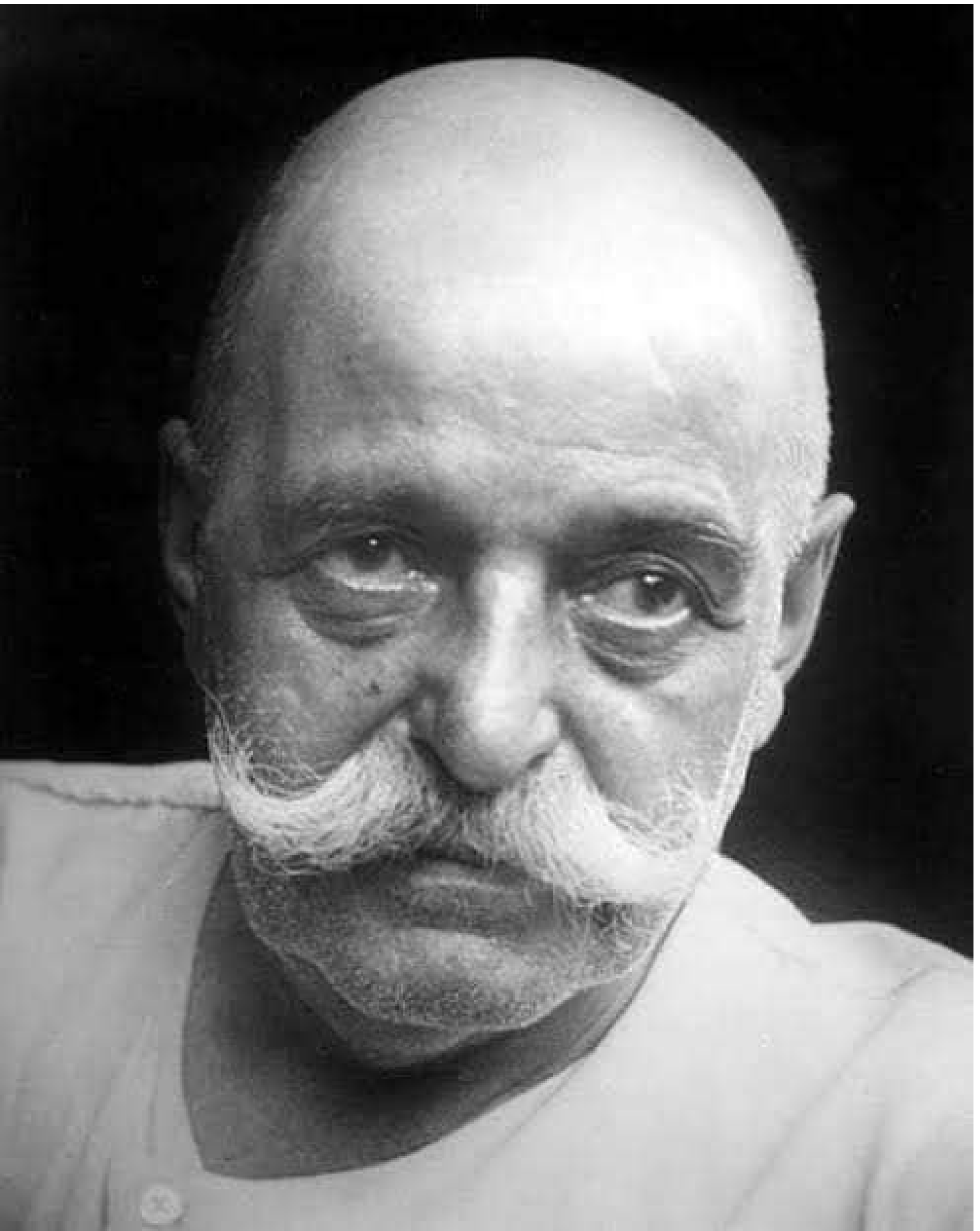
**Sanjeev Mishra**

28m · 🌐



गुरजिएफ एक फकीर हुआ, यूनान में। उसने अपनी आत्म-कथा में लिखा कि मेरा पिता मृत्यु-शय्या पर था, उसने मुझे अपने पास बुलाया, तब चौदह वर्ष की मेरी उम्र थी, मुझसे कान में उसने कहा: कि अगर मैं कोई सलाह दूं तो तुम बुरा नहीं मानोगे? बहुत समझदार आदमी रहा होगा वह, क्योंकि सलाह देने वाले यह कभी पूछते नहीं कि बुरा मानोगे कि नहीं मानोगे? सलाह देने वाले मुफ्त सलाह बांटते हैं। और दुनिया में जो चीज सबसे ज्यादा दी जाती है और सबसे कम ली जाती है, वह सलाह ही है। उस बूढ़े आदमी ने जिसकी नब्बे वर्ष उम्र थी, चौदह वर्ष के बच्चे से पूछा कि क्या मैं तुम्हें सलाह दूं तो तुम बुरा नहीं मानोगे? और अगर मैं तुम्हें सलाह दूं तो कभी तुम जीवन में मेरे प्रति रुष्ट तो नहीं रहोगे? उस युवक ने कहा कि आप कैसी बात करते हैं? आप कहें, आपको मुझे क्या कहना है? उस बूढ़े आदमी ने कहा: मेरे पास न तो संपत्ति है तुम्हें देने को, न मेरे पास और किसी तरह की यश और प्रतिष्ठा है, लेकिन जीवन भर अनुभव से मैंने एक बात पहचानी और जानी, वह मैं तुम्हें देना चाहता हूं। और वह यह है कि तुम खुद को खुद से जरा दूर रख कर देखना सीखना। अगर रास्ते पर तुम्हें कोई मिल जाए और तुम्हें गाली दे, तो जल्दी से उसकी गाली का उत्तर मत देना, घर लौट आना, दूर खड़े होकर देखना कि उसने जो गाली दी वह कहीं ठीक ही तो नहीं है? अगर वह ठीक हो, तो उसको जाकर धन्यवाद दे आना कि तुमने मुझ पर बड़ी कृपा की और एक बात मुझे बताई जिसका मुझे पता नहीं था। अगर वह ठीक न हो, तो उसकी चिंता छोड़ देना। क्योंकि जो बात ठीक नहीं है उससे तुम्हें प्रयोजन ही क्या?

गुरजिएफ ने लिखा है: फिर मैंने जीवन भर--उसी रात पिता उसका मर गया--इस बात की फिकर की, उसने लिखा है कि मेरे जीवन में फिर लड़ने का कोई मौका नहीं आया। गालियां तो मुझे लोगों ने बहुत बार दीं, लेकिन पहले मैंने उनसे कहा कि मित्र रुको, मैं जरा घर जाऊं, सोच-समझ कर आऊं, और फिर मैं आकर तुम्हें बताऊं। जब मैं घर गया और मैंने सोचा-समझा, तो मैंने पाया, कोई गाली इतनी बुरी नहीं हो सकती जितना बुरा मैं हूं। मैंने जाकर धन्यवाद दिया और कहा कि मित्र बहुत-बहुत धन्यवाद, और सदा स्मरण रखना, और जब भी जरूरत पड़े और तुम्हारे मन में कोई गाली आ जाए, तो छिपाना मत, मुझे दे देना।



किरदार में थोड़ा वजन डालिए..
वरना लोग हलके में ले लेते हैं..।।

sanjida soch



7



1



Send



★ Send a gift



LAfz. 🌐

Follow @sanjida_soch for original poetry... more



Alisha Arfi · Solitude



मलाइका अरोड़ा जैसी सुंदरी और
बिल गेट्स जैसा धनी लोग का भी
जब विवाह टूट जाता है !!
तब समझना चाहिए कि एक साथ
रहने के लिए पैसा और चेहरा की
ज्यादा जरूरत नहीं है !!



🎵 Use audio



Ganiul Hasan

Follow

#reels ... more



Shreya Ghoshal · Ag

🔗 Aqua Glitter by inst



4.1K



29



402



Send





जिस दिन तुम्हारी यह बात
समझ में आ जाएगी कि
मौत तो होनी ही है,
निश्चित होनी है—और सब अनिश्चित है,
मौत ही निश्चित है
उसी दिन भय समाप्त हो जाएगा...
ओशो...



129



1



12



Send



Osho Nitin Shah

Add a comment...





CREDIT: SUKHOON
KAAVYA
PEDIA



1K

नफ़रत में एक बात बहुत अच्छी होती है
आप पहचाने जल्दी जाते हैं



14

~ अरफ़ा सईदा ज़हरा : काव्यपीडिया ~



229



Send



Kaavya Pedia

Follow

@kaavyapedia

Add a comment...





Osho Janaki Dnyan Kendra

1h · 🌐



तो ये तीन स्थितियां।

एक: न तो बाहर का पता न भीतर का, मुर्दे की तरह जीए जा रहे हैं। ऐसे अधिक लोग हैं, निन्यानबे प्रतिशत लोग।

दूसरी स्थिति: बाहर का पता चलना शुरू हुआ, भीतर का अभी कुछ पता नहीं है। यह अस्तित्ववाद की दशा है। दुख का बोध होगा। विषाद घिर जाएगा। संताप और चिंता पकड़ेगी।

इसलिए अस्तित्ववाद के जो शब्द हैं विचार करने के, तुम अगर अस्तित्ववाद की कोई किताब देखोगे तो बड़े हैरान होओगे। जिनको हम सामान्य तौर से सोचते हैं दर्शनशास्त्र के विषय, उनकी कोई चर्चा ही नहीं है। अगर तुम सूची देखोगे विषय-सूची अस्तित्ववाद की किसी पुस्तक की, तो न तो आत्मा पाओगे उसमें, न परमात्मा, न ध्यान, कुछ भी नहीं पाओगे--पाओगे: विषाद, संताप, अर्थहीनता। ये विषय हैं। यह दूसरी स्थिति: बाहर का दर्शन हो रहा है भीतर सब अंधेरा है।

तीसरी स्थिति: भीतर भी रोशनी, बाहर भी रोशनी। बाहर का भी अनुभव हो रहा है कि बाहर दुख है और भीतर का अनुभव हो रहा है कि भीतर सुख है। यह तीसरी स्थिति। यह तीसरी स्थिति ध्यानी की स्थिति है।

और इस तीसरी स्थिति के बाद एक चौथी स्थिति है, जिसका वर्णन नहीं हो सकता; जिसको हमने तुरीय कहा है। तुरीय का मतलब यह होता है: चौथी; दि फोर्थ। उसको कोई नाम नहीं दिया, क्योंकि उसको नाम दिया नहीं जा सकता। उसको सिर्फ चौथी कहा है--तुरीय। वह अवस्था है: न भीतर रहा कुछ, न बाहर रहा कुछ। अतिक्रमण हो गया। बाहर-भीतर दोनों के प्रति जाग कर पाया कि मैं दोनों के पार हूं; न तो मैं भीतर हूं, न मैं बाहर हूं। मैं अन्य हूं, मैं भिन्न हूं। मैं दोनों का साक्षी हूं। यह जो साक्षी की दशा है, यह परमात्म-दशा है। यह आखिरी आभिजात्य है। यह आखिरी लजरी, जो इस जगत में, इस अस्तित्व में मनुष्य को उपलब्ध हो सकती है। यह आखिरी विलास है। यह आखिरी भोग है। यह परम भोग है।

ओशो... "अजहं चेत गंवार -16"

कुछ क्षणों के लिए रुक
जाओ, बैठ जाओ, आती
जाती सांस की लय को,
दिल की धड़कन को, नसों
नाडियों में होते रक्त प्रवाह
को देखो तो सही, यह स्वतः
होती रचना क्यों न रचनाकार
की तरफ ले जाए 🌹





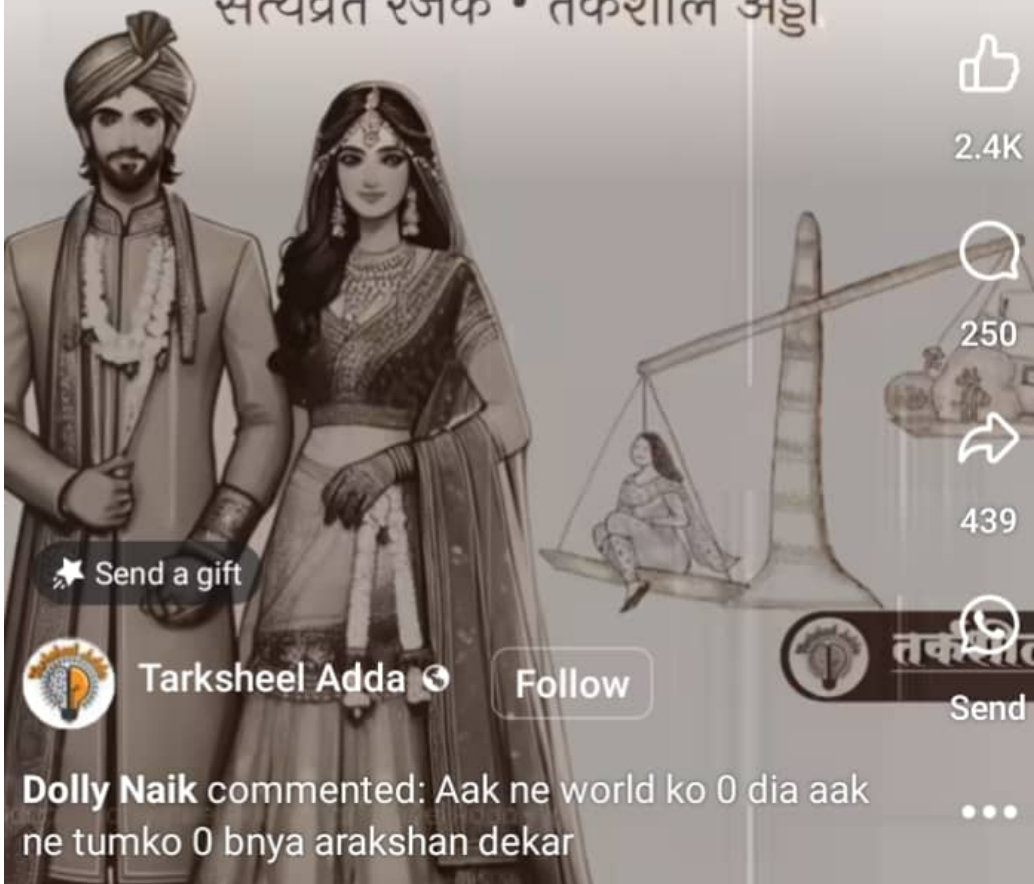
हमारे भीतर की ऊर्जा
हमें अनन्त शक्तियों
और सम्पन्नता की ले
जा सकती है

इन्हें क्रोध की आग में जलाने,
दूसरों से बदला लेने और
नीचा दिखाने पर खर्च न करें



पैसा, वर्ण, इज़्ज़त, नौकरी
और जाति को देखकर
विवाह करने वाला समाज
फिर किस मुँह से यह कह
देता है कि
जोड़ियाँ ईश्वर ने बनाई हैं।

सत्यव्रत रजक • तर्कशील अड्डा



Dolly Naik commented: Aak ne world ko 0 dia aak
ne tumko 0 bnya arakshan dekar

ध्यान रहे,
वासनाओं के लिए भविष्य चाहिए,
जीवन के लिए भविष्य की
कोई भी जरूरत नहीं।
जीवन के लिए यही क्षण काफी है।
अभी मैं जीवित हूँ पूरा।
आप पूरे जीवित हैं।
जीने के लिए कल की क्या जरूरत है?
लेकिन वासना के लिए
कल की जरूरत है,
क्योंकि वासनाएं बड़ी हैं;
आज कैसे पूरी होंगी?
कल चाहिए।
वासनाएं भविष्य निर्मित करती हैं।



124



1



18



Send



Osho Nitin Shah



ChatGPT 3.5 ▾



- 1 astronomical unit (AU) is approximately equal to the average distance from the Earth to the Sun, which is about 149.6 million kilometers (km).
- 2. **Conversion from kilometers per second (km/s) to astronomical units per hour (AU/h):**
 - First, convert the speed from kilometers per second to kilometers per hour:

$$17 \text{ km/s} \times 3600 \text{ s/hour} = 61,200 \text{ km/h}$$
 - Next, convert kilometers per hour to astronomical units per hour using the conversion factor:

$$61,200 \text{ km/h} \div 149.6 \text{ million km/AU} = 0.409 \text{ AU/h}$$

Therefore, Voyager 1's speed of approximately 17 kilometers per second is equivalent to about 0.409 astronomical units per hour relative to the Sun. This conversion helps illustrate the spacecraft's motion in terms of astronomical



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT

The astronomical unit (AU) is a unit of length used in astronomy to represent distances within the solar system. It is defined as the average distance from the Earth to the Sun, which is approximately 149,597,870.7 kilometers (or about 92,955,807.3 miles).

To convert this distance into meters:

1 astronomical unit (AU) =

149,597,870.7 kilometers

1 kilometer = 1,000 meters

Therefore,

1 astronomical unit (AU) =

149,597,870.7 kilometers $\times$

1,000 meters/kilometer

1 astronomical unit (AU) =

149,597,870,700 meters

Hence, 1 astronomical unit (AU) is approximately 149.6×10^9 meters. This value is commonly used in astronomical calculations for distances within our solar system.

Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.



ChatGPT 3.5 ▾



relative to the Sun.

These conversions give us a sense of Voyager 1's impressive velocity in different units of measurement. Note that these values are approximate and can be used to better understand the scale of Voyager 1's journey through space.

RA

You

Diameter of earth

**ChatGPT**

The diameter of the Earth is approximately 12,742 kilometers (or about 7,918 miles). This measurement represents the distance across the Earth passing through its center, and it's often used as a fundamental parameter in Earth sciences and astronomy for understanding the planet's size and scale.

Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾



relative to the Sun.

2. Light-years per year (ly/year):

To convert the speed of Voyager 1 into light-years per year (ly/year), first, calculate the distance Voyager 1 travels in one year at its speed of 17 kilometers per second:

$$17 \text{ km/s} \times 31,536,000 \text{ s/year} = 536,112,000 \text{ km/year}$$

Next, convert this distance into light-years (ly). Since 1 light-year is approximately 9.461×10^{12} kilometers:

$$\frac{536,112,000 \text{ km/year}}{9.461 \times 10^{12} \text{ km/ly}} \approx 0.0566 \text{ ly/year}$$

Therefore, Voyager 1 travels at a speed of approximately 0.0566 light-years per year relative to the Sun.

These conversions give us a sense of Voyager 1's impressive velocity in different units of measurement. Note that these values are approximate and can be used to better understand the scale of Voyager 1's journey through space.





ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾



RA

You

17 kilometers per second (or about 38,000 miles per hour)

Change in 1. km per hour and 2. light year

< 2 / 2 > 

**ChatGPT**

Let's convert the speed of Voyager 1 into different units:

1. Kilometers per hour (km/h):

Voyager 1's speed of 17 kilometers per second can be converted into kilometers per hour (km/h) by multiplying by the number of seconds in an hour (3600 seconds):

$$17 \text{ km/s} \times 3600 \text{ s/h} = 61,200 \text{ km/h}$$

Therefore, Voyager 1 travels at approximately 61,200 kilometers per hour relative to the Sun.

2. Light-years per year (ly/year):

To convert the speed of Voyager 1 into light-years per year (ly/year), first, calculate the distance Voyager 1 travels in one year at its



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.



ChatGPT 3.5 ▾



1. Kilometers per hour (km/h):

Voyager 1's speed of 17 kilometers per second can be converted into kilometers per hour (km/h) by multiplying by the number of seconds in an hour (3600 seconds):

$$17 \text{ km/s} \times 3600 \text{ s/h} = 61,200 \text{ km/h}$$

Therefore, Voyager 1 travels at approximately 61,200 kilometers per hour relative to the Sun.

2. Light-years per year (ly/year):

To convert the speed of Voyager 1 into light-years per year (ly/year), first, calculate the distance Voyager 1 travels in one year at its speed of 17 kilometers per second:

$$17 \text{ km/s} \times 31,536,000 \text{ s/year} = 536,112,000 \text{ km/year}$$

Next, convert this distance into light-years (ly). Since 1 light-year is approximately

$$9.461 \times 10^{12} \text{ kilometers:}$$

$$\frac{536,112,000 \text{ km/year}}{9.461 \times 10^{12} \text{ km/ly}} \approx 0.0566 \text{ ly/year}$$

Therefore, Voyager 1 travels at a speed of approximately  0.0566 light-years per year relative to the Sun



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾

**You**

What is the speed of Voyager 1 in space

**ChatGPT**

As of my last update in January 2022, the speed of Voyager 1 in space is approximately 17 kilometers per second (or about 38,000 miles per hour) relative to the Sun. This speed allows Voyager 1 to travel vast distances in the vacuum of space, enabling it to journey beyond the boundaries of our solar system into interstellar space.

Voyager 1's velocity is remarkable considering it was launched in 1977 and continues to transmit data back to Earth over four decades later, providing invaluable insights into the outer reaches of our solar system and beyond. Keep in mind that the spacecraft's speed may have changed slightly since my last update, so I recommend checking the latest sources for the most accurate and current information.



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾

**You**

6 billion kilometers (almost 4 billion miles).
Change this in light year

**ChatGPT**

To convert the distance traveled by Voyager 1
into light-years:

1. Convert kilometers to miles:

6 billion kilometers $\approx 6 \times$
0.621371 billion miles $\approx$
3.728226 billion miles

2. Convert miles to light-years:

3.728226 billion miles $\approx$
 $\frac{3.728226 \text{ billion miles}}{5.878625 \text{ trillion miles/year}} \approx$
0.6339 light-years

Therefore, Voyager 1, at a distance of about 6
billion kilometers (or roughly 3.73 billion miles),
is approximately 0.63 light-years away from
Earth.





Now, shifting gears to the largest known entities:

1. **Observable Universe:** The observable universe is the vast expanse of space that we can observe from Earth. It's estimated to be about 93 billion light-years in diameter, encompassing all the galaxies, stars, and cosmic structures that we can detect using current technology.
2. **Multiverse:** The concept of a multiverse refers to the hypothetical idea that there might be multiple universes, each with its own set of physical laws and properties. The scale of a multiverse, if it exists, would be far beyond the observable universe and lies within the realm of speculative cosmology and theoretical physics.

The size scales in the universe are truly mind-boggling, ranging from the infinitesimally small to the unimaginably large!



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾



RA

You

Tell me the size of smallest things ever known
like electron and proton,
And largest known like universe, multi universe

**ChatGPT**

The smallest known particles in physics are
indeed fascinating! Here's a breakdown:

1. **Electron:** This is one of the fundamental particles of the standard model of particle physics. The electron is a subatomic particle with a size that's incredibly tiny — roughly about 10^{-22} meters in diameter.
2. **Proton:** Protons are another type of fundamental particle found in atoms, residing in the nucleus alongside neutrons. They're slightly larger than electrons, with a diameter estimated at about 10^{-15} meters.

Now, shifting gears to the largest known
entities:



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





जो बदला जा सकता है
उसे बदलो जो बदला न जा सके
उसे स्वीकार करो
जो स्वीकारा न जा सके
उससे दूर हो जाओ
लेकीन खुद को हर हाल में खुश रखो
- ओशो



18K



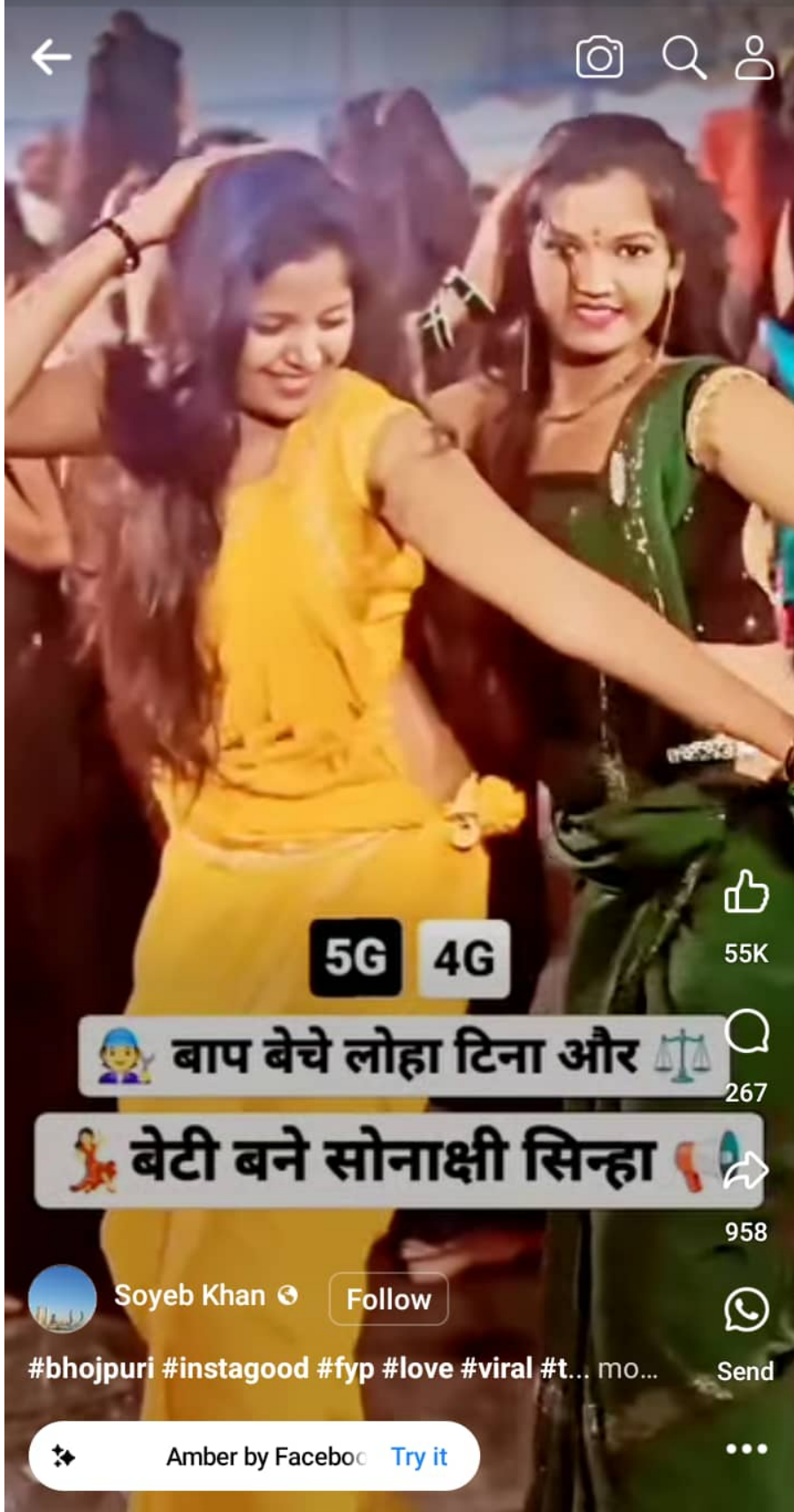
22



731

🎵 Use audio

@osho philosophy



5G

4G



55K



बाप बेचे लोहा टिना और



267



बेटी बने सोनाक्षी सिन्हा



958



Soyeb Khan

Follow

#bhojpuri #instagood #fyp #love #viral #t... mo...



Send



Amber by Facebook

Try it



Add a comment...



नवरात्री नौवां दिन



माँ सिद्धिदात्री



चैत्र नवरात्रि की अष्टमी एवं कन्या पूजन
की आपको हार्दिक शुभकामनाएं,

ॐ महागौरी महादेव्यै नमः

ॐ हनुमंतायै नमः



ॐ हनुमंतायै नमः



सुप्रभात **16 अप्रैल 2024**



मंगलवार की सुबह श्री बजरंगबली एवं
माता महागौरी जी के साथ आपको प्रणाम,
आपको सुख समृद्धि सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त हो,

जय माता दी श्री रामनवमी

जय माता दी

17/04/24

शुभ बुधवार



आप और आपके परिवार को

चैत्र नवरात्री का अंतिम दिन,

श्री रामनवमी

की हार्दिक शुभकामनाएं

माँ दुर्गा की नौवीं शक्ति

माँ सिद्धिदात्री

राम राम जी,

जय श्री गणेश

Good Morning



राम तो घर-घर में हैं, राम हर आंगन में हैं
मन से रावण जो निकाले, राम उसके मन में हैं

राम नवमी

की हार्दिक शुभकामनाएं



/DharamKesari



/punjabkesaridharam/



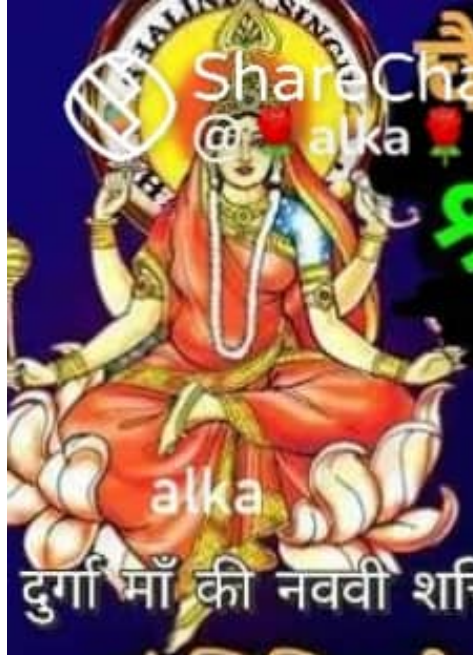
/PunjabKesariDharam/



चैत्र नवरात्री का अंतिम दिन

श्री रामनवमी

शुभ बुधवार



दुर्गा माँ की नववी शक्ति
मां सिद्धिदात्री

17 April

जय श्री गणेश

आप सभी को चैत्र नवरात्र के नौवें दिन
की हार्दिक शुभकामनाएं

राम नवमी एवं महानवमी

की हार्दिक शुभकामनाएं

ईश्वर आपकी हर
मनोकामनाएं पूर्ण करें
आपका दिन शुभ एवं
मंगलमय हो।



जय श्री राम



जय माता दी



@DEPARTMENT_OF_OSHO

राह में पड़े पत्थर से भी टकरा
जाओ. . . तो उससे भी क्षमा मांग
लेना ! पत्थर तो कुछ नहीं बोलेगा_पर
तुम इंसान हो इसका परिचय जरूर
देना , यही आदत तुम्हें महान बनाएगी
क्षमा मनुष्य का स्वभाव है
- ओशो



2.4K



1



219



Send



oshoki.duniya @

Osho dham

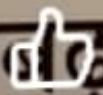
Add a comment...





" राम बढ़ाएं सौ बढ़े,
बल से बढ़े न कोय "

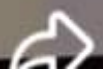
अर्थ : कोई व्यक्ति आपने बल से नहीं बढ़
सकता। जब राम बढ़ाता है, तो झोपड़ी के
महल बना देते हैं।।



89K



471







पांडित्य का अर्थ होता है : उधार
ज्ञान। बुद्धत्व का होता है: स्वयं का
ज्ञान। बुद्ध से ठीक विपरीत है पंडित।
मैं पंडित के विरोध में नहीं हूं। चाहता
हूं कि लोग गड्ढे में न गिरें। चाहता
हूं लोग उधार ज्ञान पर न जिएं।
तोते न बनें। चाहता हूं कि शास्त्र
न दोहराएं, शास्त्र बनें। चाहता हूं कि
दूसरों के बासे शब्द न दोहराएं, अपनी
अनुभूति को अभिव्यक्त करें।
राम द्वारे जो मरे-02

**Thakur Karawasara** • Follow

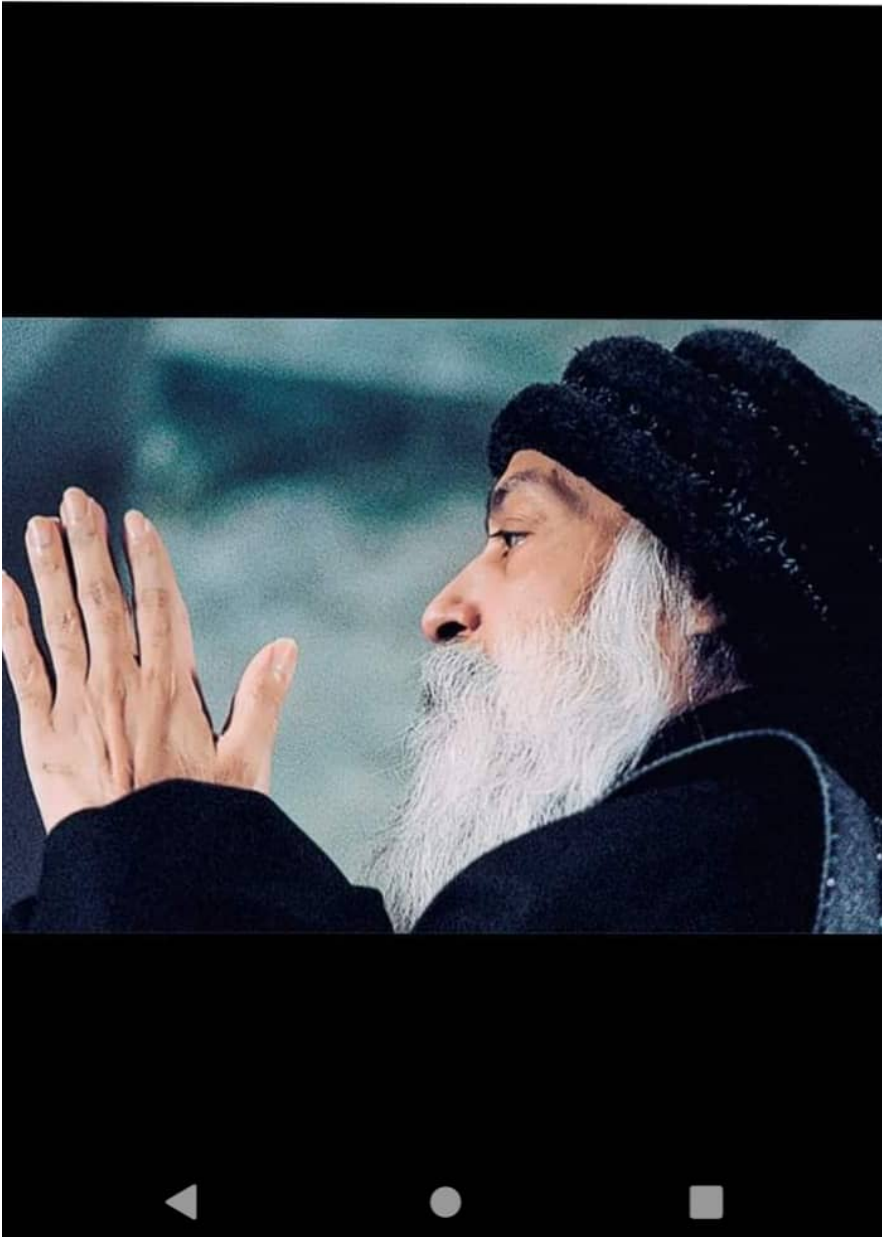
6d · 🌐

कुंवारापन एक परिभाषा ऐसी भी

#शादीशुदा स्त्री अक्सर कर बैठती है इश्क
मांग में सिंदूर होने के बाबजूद
जुड़ जाती है किसी के अहसासो से
कह देती है उससे कुछ अनकही बातें
ऐसा नहीं कि बो बदचलन है
या उसके चरित्र पर दाग है..
तो फिर वो क्या है जो वो खोजती है
सोचा कभी स्त्री क्या सोचती है
तन से वो हो जाती है शादीशुदा
पर मन कुंवारा ही रह जाता है
किसी ने मन को छुआ ही नहीं
कोई मन तक पहुंचा ही नहीं
बस वो रीती सी रह जाती है
और जब कोई मिलता है उसके जैसा
जो उसके मन को पढ़ने लगता है
तो वो खुली किताब बन जाती है
खोल देती है अपनी सारी गिरहें
और नतमस्तक हो जाती है उसके सम्मुख
स्त्री अपना सबकुछ न्यौछावर कर देती है
जहां वो वोल सके खुद की बोली
जी सके सुख के दो पल
बता सकें बिना रोक टोक अपनी बातें
हंस सके एक बेखौफ हंसी
हां लोग इसे ही इश्क कहते हैं
पर स्त्री तो दूर करती है
अपने मन का #कुंवारापन...!!

इस जगत में थोड़े से लोग कहीं पहुंचते हैं। वे वे ही लोग हैं, जो किसी पीछे नहीं चलते। बुद्ध कहीं पहुंचते हैं क्योंकि लोगों के पीछे नहीं चलते। बेहतर है न चलना। बेहतर है बैठ जाना। बेहतर है निश्चित कर लेना ठीक से, कि जाना भी है या नहीं। साफ है गंतव्य। तो थोड़ी ही यात्रा है मंजिल तक।

गंतव्य का ही पता न हो, अपना भी ठौर-ठिकाना न हो कि कौन हूं! इसका भी कोई पक्का पता न हो कि जाना भी है, या नहीं जाना है? या कहां जाना है? तब तुम किसी के पीछे लग कर कितने ही चलते रहो, तुम्हारी यात्रा कोल्हू के बैल की यात्रा सिद्ध होगी। चलोगे बहुत, पहुंचोगे कहीं भी नहीं। चलोगे बहुत क्योंकि गोल घेरे में चलते रह सकते हो, जितना चलना चाहो। थकोगे रोज, सांझ थक कर फिर गिर जाओगे ओशो





ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 10h · 🌐



मैंने सुना है, कि मुल्ला नसरुद्दीन एक रात ज्यादा पी कर मधुशाला से निकला। ठीक-ठाक दिखाई नहीं पड़ रहा था कहां जाए। बामुश्किल तो मधुशाला के नौकरों ने उसे अपनी कार तक पहुंचाया। बामुश्किल आधे घंटे मेहनत करके किसी तरह उसे चाबी कार में लगाई। फिर किसी तरह गाड़ी को पुरानी आदतवश चला भी लिया। लेकिन तब सवाल उठा कि जाना कहां है? घर कहां है? यह गांव कौन सा है? बड़े दार्शनिक सवाल उठने लगे। तब एक ही उपाय था, कि किसी के पीछे हो लूं। और तो कोई उपाय नहीं। जाना कहां है? आ कहां से रहे हैं? कौन हैं? कहां घर है? यही तो चिंता है सारे मनुष्यों की। सीधा सुगम उपाय है, किसी के पीछे हो लो।

एक कार के पीछे हो लिया। प्रसन्न था। अब सब ठीक है। कहीं जा हरे हैं। और न केवल धीमी गति से जा रहे हैं, बड़ी तेज गति से जा रहे हैं। चित्त प्रसन्न था। और क्या चाहिए? गति चाहिए। जरूर पहुंच जाएंगे। क्योंकि इतनी तेज गति से जा रहे हैं।

और जो होना था, वह हुआ। आखिर में जा कर वह उस कार से टकरा गया। तो उसने चिल्ला कर कहा, कि क्या मामला है? इशारा क्यों नहीं दिया, कि गाड़ी खड़ी करते हो? उस आदमी ने बाहर सिर निकाल कर कहा कि अपने ही गैरेज में इशारा देने की जरूरत है?

पीछे लगा जाइ था, लोक वेद के साथि।

वही गति तुम्हारी है। किसी के पीछे लगे जा रहे हो। पीछे इसलिए नहीं लगे हो कि जिसके पीछे लगे हो, वह जानता है। पीछे सिर्फ इसलिए लगे हो कि तुम नहीं जानते हो कि कहां जाना है। और जब तुम नहीं जानते हो तो तुम किसी के भी पीछे लगे, कैसे पहुंच जाओगे? और तुम थोड़ा यह भी तो विचार करो, कि वह दूसरा भी किसी के पीछे लगा है।

तुम अपने पिता की मान रहे हो। तुम्हारे पिता उनके पिता की मानते रहे। उनके पिता उनके पिता की मानते रहे। तुम थोड़ी यात्रा करो पीछे की तरफ। तो तुम पाओगे कि सभी लोग एक दूसरे के पीछे लगे हैं। और कौन कहां पहुंचता है?

← Reels *cosmo_infinity*



खोजने वाले में ही छिपा
बैठा है, जिसे तुम खोजने
चले हो।



365



1



2



Send



spritualmint

कहां खोजने जा रहे हो परमात्मा को ?..❤️🔥🙏... more

Add a comment...



क्योंकि जिसे तुम खोजने
चले हो वो तुम्हारे भीतर
छिपा बैठा है

← Reels  



कहां खोजने जा रहे हो ??
जंगलों में, पर्वतों पर,
हिमालय में



365



1



2



Send



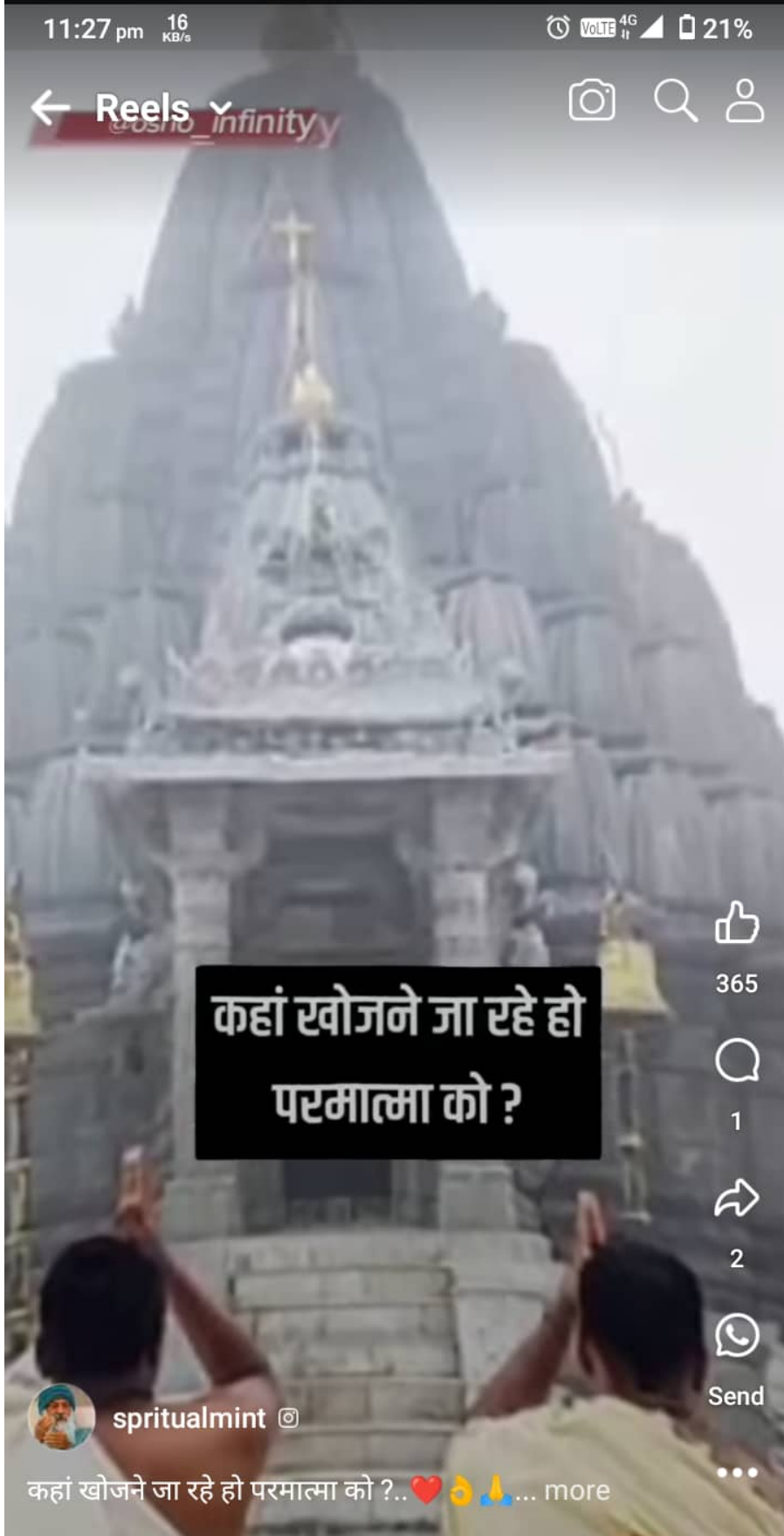
spritualmint 

कहां खोजने जा रहे हो परमात्मा को ?..    ... more

Add a comment...



← Reels ∨
@osho_infinityy



365



1



2



Send



spritualmint @

कहां खोजने जा रहे हो परमात्मा को ?..❤️🔥🙏... more

Add a comment...



[← Reels](#)

जिसके पीछे तुम भाग रहे हो



381

दो दिन दूर होकर देखो बात करना तो



दूर वह तुम्हें याद भी नहीं करेगा

6

@sscreationstudios



🎵 Use audio

2



sscreationstudios



🙏❤️ नमो बुध्दाय ❤️🙏... more



Send

🎵 A.R. Rahman · The Shimm



Add a comment...



← Reels ▾



जब भी कोई प्रियजन मरे तो ये ध्यान की घड़ी है



785



7



107

★ Send a gift

ओशो



Send



रजनिशी

WhatsApp - 98765-67791 / 73024-9... more



Add a comment...



← Reels ▾



@sahityasathi

कड़वा सच



ज़रा सा पैर फिसला तो इल्ज़ाम
उसी चप्पल पर लगाया सबने
महीनों तपती ज़मीन और काँटों से
बचाया जिसने ।



10K

– अज्ञात



20

🎵 Use audio



325



sahityasathi

अकसर लोग इल्ज़ाम उसी व्यक्ति पर लगा देते हैं... more



Send

🎵 Iomu Seal · Saagar Kinare

🌟 OLD FILM^ by _gho



फिर एक चीज दूसरे में ले जाती है। धीरे-धीरे तुम्हारे भीतर एक इतनी विराट मालकियत का जन्म होता है, जिसको जैनों ने जिनत्व कहा है; तुम जिन हो जाते हो, विजेता हो जाते हो। और शरीर को मारना भी नहीं पड़ता, शरीर को काटना भी नहीं पड़ता। शरीर के साथ लड़ना ही नहीं पड़ता और जीत हो जाती है। जीत तो वही कुशल है कि लड़ना न पड़े और हो जाए।

.....

एक ही उपाय है: जागरण; अवेयरनेस; बोध; सुरति; होश को सम्हाले। इधर होश सम्हालता जाता है, उधर शरीर पर मालकियत आती जाती है। और जिस दिन अपने शरीर पर मालकियत आ जाती है, जिस दिन होश पूरा हो जाता है, उस दिन जीवन में बड़े सौभाग्य का मंगल क्षण आता है। उस दिन जीवन में बड़े मंगल वाद्य बजते हैं।

ओशो

Osho Prem Naman 🧡🙏

Osho international

तो दुनिया में दो तरह की मालकियत होती है। एक तो मालकियत होती है कि शरीर को इतना कमजोर कर लो कि उसमें कुछ दम ही न रह जाए, मगर वह कोई मालकियत हुई? वह तो मालकियत का धोखा हुआ। वह तो ऐसे हुआ कि घर में एक लाश रख ली और कहा कि हम इसके मालिक हैं। हम जब उठाते हैं, तब यह लाश उठती है; हम जब बिठाते हैं, तब यह लाश बैठती है; हम बाहर ले जाते हैं तो बाहर जाती है; हम भीतर लाते हैं तो भीतर आती है।

तुम्हारे तथाकथित साधु-संन्यासियों ने शरीर को लाश बना लिया। उन्हें डर है। मालकियत नहीं है यह। मालिक को कहां डर! यह तो ऐसा ही हुआ कि तुम एक घोड़े पर सवार हो और घोड़ा तुम्हारी मानता नहीं, तो तुम घोड़े को भूखा रखने लगे, कोड़े मारने लगे, उसके शरीर पर घाव बना दिए। घोड़े को इतना कमजोर कर लिया कि अब तुम्हारी उसे माननी ही पड़ेगी, क्योंकि न मानने की शक्ति ही नहीं रही। मगर यह मालकियत हुई? यह घोड़ा तो मुर्दा हो गया। मालकियत का तो मजा तभी था जब इस घोड़े में प्राण थे और यह हवाओं से बाजी लेता था। मालकियत का तो मजा तभी था जब यह घोड़ा वीर्यवान था। इसे कमजोर करके मालिक बनने में मजा नहीं है। यह तो मालकियत का धोखा है। यह रहे पूरा शक्तिशाली और फिर मालकियत।

तो खयाल रखना, दमन के द्वारा जो मालकियत आती है, पलटू उसकी बात नहीं कर रहे हैं। आगे सूत्र में साफ हो जाएगा।

पलटू कह रहे हैं: बोध से जो मालकियत आती है। अपने भीतर चैतन्य को घना कर लेने से जो मालकियत आती है। इन दोनों में क्रांतिकारी भेद है। दमन से तुम तो जागते नहीं, सिर्फ तुम्हारा शरीर कमजोर हो जाता है। जागने से तुम्हारा शरीर तो अपनी जगह होता है; शायद और भी बलशाली हो जाए, लेकिन तुम्हारे भीतर एक दीया जलने लगता है। उस दीये की रोशनी में तुम जलने लगते हो। तुम्हारे भीतर एक शांति विराजमान हो जाती है। उस शांति में संतुलन है। उस संतुलन में संयम है। उस संयम में समाधि है।

फिर एक चीज दूसरे में ले जाती है। धीरे-धीरे तुम्हारे भीतर एक इतनी विराट मालकियत का जन्म होता है, जिसको जैनों ने जिनत्व कहा है; तुम जिन हो जाते हो, विजेता हो जाते हो। और शरीर को मारना भी नहीं



Osho international is at OSHO
International Meditation Resort.



13h · 🌐

तुम्हारी अपनी देह पर तुम्हारी मालकियत नहीं है। यह तुम्हारी देह तुम्हारी सुनती नहीं है। और दूसरी देहों को आज्ञा देने में लगे हो! सारे जगत को चलाने की आकांक्षा से भरे हो। अपनी देह को चला नहीं पाते। यह छोटी सी देह भी तुम्हारा मानती नहीं। यह छोटी सी देह भी तुम्हारा सुनती नहीं है। यह छोटी सी देह भी तुम्हारी छाया नहीं बनती। यह भी तुम्हारी मालिक है। तुम कैसे राजा बनोगे? इस देह की गुलामी भी नहीं छूट पाती है।

राज तन में करै,...

तो पहला राज तो अपने तन पर फैलाओ। पहला अनुशासन कि तुम्हारी देह तुम्हारे पीछे चले, तुम्हें देह के पीछे न चलना पड़े।

स्वाद भटकाता है। संगीत लुभाता है। कामवासना पकड़ती है। और जब शरीर किसी ज्वर से भरता है, किसी वासना के ज्वर से भरता है, तो तुम बिलकुल बेहोश हो जाते हो; तुम्हारा सारा होश खो जाता है। क्रोध की लपटें उठती हैं, जब तुम ऐसे काम कर लेते हो जो तुम कभी भी होश में होते तो न करते। पीछे पछताते हो। मगर पीछे पछताते हो! पीछे पछताने से क्या होगा? अब पछताए होत का, जब चिड़िया चुग गई खेत! पीछे तो सभी पछताते हैं। पीछे तो नासमझ से नासमझ भी पछताते हैं। समझदार वही है, जो उसी क्षण में जाग जाए, जब क्रोध उठा है; उसी क्षण में होश को सम्हाल ले। उसी होश से मालकियत पैदा होती है।

मालकियत का मतलब तुम समझ लेना। मालकियत का मतलब जबरदस्ती नहीं है, शरीर को कोड़े मार कर और शरीर को भूखा रख कर, उपवास करवा कर, अगर तुम मालिक बन गए तो वह मालकियत नहीं है; वह झूठी मालकियत है। शरीर स्वस्थ चाहिए, शक्तिशाली चाहिए, ऊर्जा से भरा हुआ चाहिए--फिर भी मालकियत चाहिए।

तो दुनिया में दो तरह की मालकियत होती है। एक तो मालकियत होती है कि शरीर को इतना कमजोर कर लो कि उसमें कुछ दम ही न रह जाए, मगर वह कोई मालकियत हई? वह तो मालकियत का धोखा

**Manoj Ghumariya** • Follow

5d · 🌐



क्या वाकई प्रकृति के आगे विज्ञान फैल हैं ?
क्योंकि हाल ही में वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि चींटियाँ सर्दियों के लिए आवश्यक अनाज और बीज इकट्ठा करने के बाद उन बीजों को अपने घोंसलों में जमा करने से पहले आधा कर देती हैं। क्योंकि आधा तोड़ने से वे बारिश व अन्य अंकुरण होने की स्थितियों के बावजूद अंकुरित नहीं हो पाते हैं। लेकिन वैज्ञानिक तब दंग रह गए जब उन्होंने पाया कि चींटियों के घोंसलों में रखे धनिया के बीज 2 टुकड़ों की बजाय 4 टुकड़ों में टूटे हुए थे।

प्रयोगशाला में अनुसंधान के बाद वैज्ञानिकों ने पाया कि धनिया का बीज दो भागों में विभाजित होने के बाद भी अंकुरित हो जाता है, लेकिन चार भागों में विभाजित होने के बाद यह अंकुरित नहीं होगा। इस में बड़ा सवाल यह है कि ये छोटे-छोटे जीव यह सब कैसे जानते हैं ? या वाकई मनुष्य पृथ्वी पर मौजूद इन जीवों के बारे में बहुत कम जानता है ? क्या सच में हमें दूसरों जीवों से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है ? 🖋️

@highlight [Facebook](#)

جاوید اختر

ढूंढता फिरता है मस्जिद मंदिर में जिसको
मूंढ ले आंख तो दीदार भी कर सकता है

शायद राम ने इसीलिए कोई पुरस्कार हनुमान को नहीं दिया। क्योंकि हनुमान के हृदय में तो राम थे। पुरस्कार तो प्रतीक होगा। जिसके पास राम हैं, उसे क्या पुरस्कार?

जिनने प्रभु की थोड़ी सी पहचान पाई है, उसे प्रतिमा की जरूरत नहीं है; उसे मंदिर की जरूरत नहीं है; उसे पूजा-पाठ की जरूरत नहीं है। तब तो [#मलूकदास](#) कहते हैं कि राम का नाम भी नहीं लेता मैं। अपनी मस्ती में मस्त हूं। अब तो राम मेरा नाम लेता है।

– ओशो

कन थोरे कांकर घने

प्रवचन - १०

अवधूत का अर्थ



Osho Thoughts

Munabai Makvana · 5h ·



मैंने सुना है कि [#राम](#) जब युद्ध विजय के बाद अयोध्या लौटे, राजगद्दी पर बैठे, तो उन्होंने एक बड़ा दरबार किया और सभी को पदवियां दीं, पुरस्कार बांटे, जिन-जिन ने भी युद्ध में साथ दिया था। लेकिन [#हनुमान](#) को कुछ भी न दिया और हनुमान की सेवाएं सबसे ज्यादा थीं।

[#सीता](#) बड़े पसोपेश में पड़ी। वह कुछ समझ न पाई कि यह चूक कैसी हुई! छोटे-मोटों को भी मिल गया पुरस्कार। पद मिले, आभूषण मिले, बहुमूल्य हीरे मिले, राज्य मिले। हनुमान--जिनकी सेवाएं सबसे ज्यादा थीं, उनकी बात ही न उठी। वे कहीं आए ही नहीं बीच में। राम भूल गए! यह तो हो नहीं सकता। राम को याद दिलाई जाए, यह भी सीता को ठीक न लगा। याद दिलाने का तो मतलब होगा: शिकायत हो गई। तो उसने एक तरकीब की--कि कहीं हनुमान को बुरा न लगे, इसलिए उसने हनुमान को चुपचाप बुला कर अपने गले का मोतियों का बहुमूल्य हार उन्हें पहना दिया। और कहते हैं: हनुमान ने हार देखा, तो उसमें से एक-एक दाना मोती का तोड़-तोड़ कर फेंकने लगे। सीता ने कहा: अब मैं समझी कि राम ने तुझे क्यों कोई उपहार न दिया। यह तू क्या कर रहा है? ये बहुमूल्य मोती हैं। ये मिलने वाले मोती नहीं हैं, साधारण मोती नहीं हैं। हजारों साल में इस तरह के मोती इकट्ठे किए जाते हैं, तब यह हार बना है। ये सब मोती बेजोड़ हैं। यह अमूल्य हार पहनने के लिए है। तू यह क्या करता है?

हनुमान बोले: यह हार पत्थर का है। इसे मूर्ख मनुष्य भला गले में पहन सकते हों, मैं तो राम-नाम को ही पहनता हूं। और मैं एक-एक मोती को चख कर देख रहा हूं, इसमें राम-नाम का कहीं स्वाद ही नहीं है। इसलिए फेंकता जा रहा हूं।

शायद राम ने इसीलिए कोई पुरस्कार हनुमान को नहीं दिया। क्योंकि हनुमान के हृदय में तो राम थे। पुरस्कार तो प्रतीक होगा। जिसके पास राम हैं, उसे क्या पुरस्कार?

जिनने प्रभु की थोड़ी सी पहचान पाई है, उसे प्रतिमा की जरूरत नहीं है; उसे मंदिर की जरूरत नहीं है; उसे पूजा-पाठ की जरूरत नहीं है। तब तो [#मलूकदास](#) कहते हैं कि राम का नाम भी नहीं लेता मैं। अपनी मस्ती में मस्त हूं। अब तो गण गण गण लेता है।



Like



Comment



Send



Share

**आध्यात्मिक और प्रेरणादायक कहानियां**

पुरुषोत्तम शर्मा · 31m · 🌐

* 🌸 प्रेरक प्रसंग 🌸 *

नाथालाल सेठ

एक गाँव में एक सेठ रहेता था ।

उसका नाम था *'नाथालाल' सेठ ।*

वो जब भी गाँव के बाज़ार से निकलता था, तब लोग उसे नमस्ते या सलाम करते थे ! वो उसके जवाब में मुस्कुरा कर अपना सिर हिला देता था और बहुत धीरे से बोलता था की-"घर जाकर बोल दूंगा"

एक बार किसी परिचित व्यक्ति ने सेठ को ये बोलते हुये सुन लिया तो उसने कुतूहल वश सेठ को पूछ लिया कि-

सेठजी आप ऐसा क्यों बोलते हो कि घर जाकर बोल दूंगा ??

तब सेठ ने उस व्यक्ति को कहा- मैं पहले धनवान नहीं था उस समय लोग मुझे 'नाथू' कहकर बुलाते थे और आज के समय में धनवान हूँ तो लोग मुझे 'नाथालाल सेठ' कहकर बुलाते हैं । ये इज्जत मुझे नहीं, 'धन' को दे रहे हैं । इस लिए मैं रोज़ घर जाकर तिज़ोरी खोल कर लक्ष्मीजी (धन) को ये बता देता हूँ कि आज तुमको कितने लोगो ने नमस्ते या सलाम किया ! इससे मेरे मन में 'अभिमान' या 'गलतफहमी' नहीं आती कि लोग मुझे मान या इज्जत दे रहे हैं ! इज्जत सिर्फ़ पैसे की है, इंसान की नहीं !!

यह जिन्दगी का 'कटु' सत्य है...

अहम न करें।



2

1 share



Like



Comment



Send



Share

**Bollywood Post** • Follow

3d · 🌐

Dharmendra hema malini



अगर हम हिंदुओं
के चौबीस अवतारों
की कहानी पढ़ें, तो
हमें इतनी हैरानी
होगी इस बात को
जानकर कि
जिसको डार्विन
हजारों साल बाद
पकड़ पाया, ठीक
वही विकास क्रम
हमने पकड़ लिया!

ओशो

अगर हम हिंदुओं के चौबीस अवतारों की कहानी पढ़ें, तो हमें इतनी हैरानी होगी इस बात को जानकर कि जिसको डार्विन हजारों साल बाद पकड़ पाया, ठीक वही विकास क्रम हमने पकड़ लिया! फिर जब मनुष्य अवतार पैदा हुआ उसके पहले आधा मनुष्य और आधा सिंह का नरसिंह अवतार है। आखिर जानवर भी एकदम से आदमी नहीं बन सकते, जानवरों को भी आदमी बनने में एक बीच की कड़ी पार करनी पड़ी होगी, जब कि कोई आदमी आधा आदमी और आधा जानवर रहा होगा। यह असंभव है कि छलांग सीधी लग गई हो—कि एक जानवर को एक बच्चा पैदा हुआ हो जो आदमी का हो। जानवर से आदमी के बीच की एक कड़ी खो गई है, जो नरसिंह की ही होगी—जिसमें आधा जानवर होगा और आधा आदमी होगा।

पुराणों में छिपी वैज्ञानिक संभावनाएं:

अगर हम यह सारी बात समझें तो हमें पता चलेगा कि जिसको डार्विन बहुत बाद में विज्ञान की भाषा में कह सका, चौथे शरीर को उपलब्ध लोगों ने उसे पुराण की भाषा में बहुत पहले कहा है। लेकिन आज भी, अभी भी पुराण की ठीक—ठीक व्याख्या नहीं हो पाती है, उसकी वजह यह है कि पुराण बिल्कुल नासमझ लोगों के हाथ में पड़ गया है, वह वैज्ञानिक के हाथ में नहीं है।

जिन खोजा तिन पाइयां-(प्रवचन-14)

सात शरीर और सात चक्र—(प्रवचन—चौहदवां)


ओशो का हिन्दी साहित्य

Somesh Sharma · 5h · 🌐



हिंदुओं के अवतार जैविक—विकास क्रम के प्रतीकात्मक रूप:

अब जैसे, उदाहरण के लिए, डार्विन ने जब कहा कि आदमी विकसित हुआ है जानवरों से, तो उसने एक विज्ञानिक भाषा में यह बात लिखी। लेकिन हिंदुस्तान में हिंदुओं के अवतारों की अगर हम कहानी पढ़ें, तो हमें पता चलेगा कि वह अवतारों की कहानी डार्विन के बहुत पहले बिलकुल ठीक प्रतीक कहानी है। पहला अवतार आदमी नहीं है, पहला अवतार मछली है। और डार्विन का भी पहला जो रूप है मनुष्य का, वह मछली है। अब यह सिबालिक लैंग्वेज हुई कि हम कहते हैं जो पहला अवतार पैदा हुआ, वह मछली था—मत्सावतार। लेकिन यह जो भाषा है, यह वैज्ञानिक नहीं है। अब कहां अवतार और कहां मत्स्य! हम इनकार करते रहे उसको। लेकिन जब डार्विन ने कहा कि मछली जो है जीवन का पहला तत्व है, पृथ्वी पर पहले मछली ही आई है, इसके बाद ही जीवन की दूसरी बातें आईं! लेकिन उसका जो ढंग है, उसकी जो खोज है, वह वैज्ञानिक है। अब जिन्होंने विजन में देखा होगा, उन्होंने यह देखा कि पहला जो भगवान है वह मछली में ही पैदा हुआ है। अब यह विजन जब भाषा बोलेगा, तो वह इस तरह की भाषा बोलेगा जो पैरेबल की होगी।

फिर कछुआ है। अब कछुआ जो है, वह जमीन और पानी दोनों का प्राणी है। निश्चित ही, मछली के बाद एकदम से कोई प्राणी पृथ्वी पर नहीं आ सकता; जो भी प्राणी आया होगा, वह अर्ध जल और अर्ध थल का रहा होगा। तो दूसरा जो विकास हुआ होगा, वह कछुए जैसे प्राणी का ही हो सकता है, जो जमीन पर भी रहता हो और पानी में भी रहता हो। और फिर धीरे— धीरे कछुओं के कुछ वंशज जमीन पर ही रहने लगे होंगे और कुछ पानी में ही रहने लगे होंगे, और तब विभाजन हुआ होगा।

अगर हम हिंदुओं के चौबीस अवतारों की कहानी पढ़ें, तो हमें इतनी हैरानी होगी इस बात को जानकर कि जिसको डार्विन हजारों साल बाद पकड़ पाया, ठीक वही विकास क्रम हमने पकड़ लिया! फिर जब मनुष्य अवतार पैदा हुआ उसके पहले आधा मनुष्य और आधा सिंह का नरसिंह अवतार है। आखिर जानवर भी एकदम से आदमी नहीं बन सकते, जानवरों को भी आदमी बनने में एक बीच की कड़ी पार करनी पड़ी

भगवान कोई व्यक्ति नहीं ;
जीवन का ही दूसरा नाम
है। इसलिए जब तुम
परिपूर्ण रूप से जीवंत
होते हो और तुम्हारे अंदर
सब मौन हो जाता है, सब
शांत हो जाता है, सब
निर्विचार हो जाता है--तब
जो सुगंध उठती है, तब जो
अनुभूति होती है। उस
अनुभूति का नाम , उस
दिव्यता का नाम , उस
भगवत्ता का नाम ही
भगवान है।
ओशो





जलालुद्दीन रूमी एक सूफी फकीर हुए। जब वो जवान थे तो खुदा से कहा मुझे इतनी ताकत दे कि दुनिया को बदल दूँ। खुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर समय बीता। रूमी ने कहा खुदा इतनी ताकत दे कि मैं अपने बच्चों को बदल सकुं। फिर कोई जवाब नहीं मिला। रूमी जब बूढ़ा हो गया उसने कहा कि खुदा इतनी ताकत दे कि मैं खुद को बदल सकुं। तब खुदा ने कहा कि रूमी ये बात तो जवानी में पूछता तो कभी की क्रांति घट जाती। दुनिया में सबसे ज्यादा कलेश यही है, पत्नी अपने पति को बदलना चाहती है, पति अपनी पत्नी को, माँ बाप अपने बच्चों को,, बस इसी जद्दोजहद में जीवन बीत जाता है। पर कोई अपने आप को बदलना नहीं चाहता।



आदमी यूं ही जीवन गंवाता है
और सोचता यह है कि कैसा दुर्भाग्य है,
कैसा अभागा हूं,
किन अभिशप्त घड़ियों में पैदा हुआ;
कैसे थे ग्रह-नक्षत्र मेरे खराब?
न ग्रह-नक्षत्र खराब थे, न घड़ियां बुरी थीं,
तुम उतनी ही क्षमता लेकर पैदा होते हो
जितना कोई भी बुद्ध कभी पैदा हुआ है,
लेकिन क्षमता की तलाश नहीं करते
और दौड़ते फिरते हो बाहर,
पूछते हो औरों से अपना पता।
अपना पता पूछना हो तो आंख बंद करो।
अपना पता पूछना हो तो विचार बंद करो।
अपना पता पूछना हो तो
मारो गहरे से गहरे डुबकी अपने में।
उतरो भीतर!
वहीं से रसधार मिलेगी
ध्यान का इतना ही अर्थ है।
निर्विचार हो जाने की कला।
और जिसके हाथ में निर्विचार होने की कला आ गयी,
सोने की कुंजी आ गयी,
जो सब ताले खोल दे।



☆ साहिब मिले साहिब भये, प्रवचन~३, ओशो ☆

- ◆ मंदिर में पूजा करें, घर में करें कलेश!
बापू तो बोझा लगे, पत्थर लगे गणेश!!
- ◆ बचे कहाँ अब शेष हैं, दया, धरम, ईमान!
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इंसान!!
- ◆ पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग!
मर जाते फुटपाथ पर, भूखे, प्यासे लोग!!
- ◆ फैला है पाखंड का, अन्धकार सब ओर!
पापी करते जागरण, मचा-मचा कर शोर!
- ◆ पहन मुखौटा धरम का, करते दिन भर पाप!
भंडारे करते फिरे, घर में भूखा बाप!!



Like Comment Send Share



ओशो रहस्यदर्शी



Kanhas Kajal Arora · 6h ·

इस जगत् में अगर किसी पर श्रद्धा करनी हो तो मृत्यु पर ही करनी चाहिए क्योंकि मृत्यु कभी किसी को धोखा नहीं देती। आती ही है, कभी दगा नहीं करती। तुम कहीं भी छिपो, खोज लेती है। कभी वचन-भंग नहीं करती। इस मृत्यु के महासत्य को जो पहचान लेता है आंख भरकर, आंख मिलाकर जो देख लेता है मृत्यु की आंखों में, उसके जीवन में क्रांति शुरू हो जाती है; वही क्रांति संन्यास है। फिर वह घर में रहे, बाजार में रहे, कुछ फर्क नहीं पड़ता। मृत्यु की याद ने उसकी दौड़-धूप बंद कर दी, उसकी आपाधापी गयी, उसकी महत्वाकांक्षा मर गयी। मिला तो ठीक, नहीं मिला तो ठीक। सफल हुए तो ठीक, असफल हुए तो ठीक। यश हुआ तो ठीक, अपयश हुआ तो ठीक। आएगी कल मौत, सब पर पानी फेर जाएगी। यशस्वी, अयशस्वी, सब धूल चाट जाएंगे।
प्रेम रंग रस ओढ़ चदरिया -प्र -9

ओशो ♣♣♣♣

**Osho international**

1d · 🌐

ांत प्रतीक्षा!

एक सूक्ष्म ध्यान विधि

कई बार ऐसा होता है कि ध्यान पास ही होता है, पर हम दूसरी चीजों में व्यस्त होते हैं। वह सूक्ष्म आवाज हमारे भीतर ही है, लेकिन हम निरंतर शोर से, व्यस्तताओं से, जिम्मेवारियों से, कोलाहल से भरे हुए हैं। और ध्यान आता है, एक फुसफुसाहट की तरह, वह नारे लगाते हुए नहीं आता, वह बहुत ही चुपचाप आता है। वह कोई शोरगुल नहीं करता। उसके कदमों की आहट भी सुनाई नहीं पड़ती। यदि हम व्यस्त हैं, तो वह प्रतीक्षा करता है और लौट जाता है।

तो एक बात तय कर लें कि कम से कम एक घंटा रोज शांत बैठें और उसकी प्रतीक्षा करें। कुछ मत करें, बस आंखें बंद करके शांत बैठ जाएं- गहन प्रतीक्षा में, एक प्रतीक्षारत् हृदय के साथ, एक खुले हृदय के साथ। सिर्फ प्रतीक्षा करें कि यदि कुछ घटे तो हम उसका स्वागत करने के लिए तैयार हों। यदि कुछ न घटे तो निराश न हों। कुछ न घटे तो भी एक घंटा बैठना अपने आप में विश्रामदायी है। वह हमें शांत करता है, स्वस्थ करता है, तरोताजा करता है और हमें जड़ों से जोड़ता है।

लेकिन धीरे-धीरे झलकें मिलने लगती हैं और एक तालमेल बैठने लगता है। हम किसी विशेष स्थिति में, विशेष कमरे में, विशेष स्थिति में प्रतीक्षा करते हैं, तो झलकें ज्यादा-ज्यादा आती हैं। वे कहीं बाहर से नहीं आती हैं, वे तुम्हारे अंतर्तम केंद्र से आती हैं। लेकिन जब अंतर्चेतना जानती है कि बाह्य चेतना उसके लिए प्रतीक्षारत है, तो मिलन की संभावना बढ़ जाती है।

किसी वृक्ष के नीचे बस बैठ जाएं। हवा चल रही है और वृक्ष के पत्तों में सरसराहट हो रही है। हवा आपको छू रही है, आपके आसपास बह रही है, आपको छूकर गुजर रही है। लेकिन हवा को सिर्फ अपने आसपास ही मत गुजरने दें, उसे अपने भीतर से होकर भी गुजरने दें, अपने भीतर से बहने दें। अपनी आंखें बंद कर लें और महसूस करें कि जैसे हवा वृक्षों से होकर गुजरती है और पत्तों की सरसराहट होती है, वैसे ही आप भी एक वृक्ष की भांति हैं, खुले और हवा आपसे होकर बह रही है- आसपास से नहीं बल्कि सीधे आपसे होकर बह रही है।

- ओशो

Osho Prem Naman 🍀🙏

जिस तरह संतरे के फ़ोटो से संतरा नहीं मिल सकता ठीक उसी तरह भगवान की फ़ोटो से भगवान नहीं मिल सकता ,भगवान मिलते हैं तो सिर्फ आत्मज्ञान से जिस दिन आपको आत्मज्ञान हो गया उस दिन आपको भगवान की प्राप्ति स्वतः हीं हो जाएगी ... फिर न तो आपको फ़ोटो की जरूरत होगी न मूर्ति की ,बस जरूरत होगी तो सिर्फ आत्म अनुभूति की ...

Parshotam Rai

👍 115

24 comments



Like



Comment



Send



Share



मुरदे को भी देत है, कपड़ा पानी आग।
जीवत नर चिंता करै, ताका बड़ा अभाग।।

@mohit_dass1



3.1K



7



31



Send



🎵 Use audio



mc_mohittt @

मुरदे को भी देत है, कपड़ा पानी आग।... more

💎 by_ghosh__

OLD

Add a comment...





Like



Comment



Send



Share

**Sanjeev Mishra**

1d · 🌐



मैं एक ट्रेन में सवार था। प्रयाग के पास से जब ट्रेन गंगा के ऊपर से गुजरने लगी तो ग्रामीण जो डब्बे में बैठे थे, पैसे फेंकने लगे। एक पढ़े-लिखे सज्जन बैठे थे। पीछे पता चला कि बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। मुझसे बोले कि क्या गँवारपन है! ये मूढ़ गंगा में पैसे फेंक रहे हैं, इससे क्या सार है! मैंने उससे कहा, ऊपर से तो दिखता है कि ये मूढ़ हैं और शायद ये मूढ़ हैं भी और इनको कुछ पता भी नहीं है गंगा में पैसा फेंकना.... ।लेकिन थोड़ा गहरे झांकने की, थोड़ी सहानुभूति से झांकने की कोशिश करो।

गंगा प्रवाहमान है। बहती है हिमालय से। महासागर तक कहीं रुकती नहीं, कहीं ठहरती नहीं। हिंदुओं ने अपने सारे तीर्थ गंगा के किनारे बनाए हैं - या नदियों के किनारे बनाये हैं। वे प्रवाह के प्रतीक हैं। वे जीवंतता के प्रतीक हैं। ये जो गंगा में पैसा फेंक रहे हैं, फेंकने वाला ठीक कर रहा है, यह मैं नहीं कह रहा ;लेकिन इसके भीतर कुछ राज तो छिपा है। वह चाहे इसे भूल भी गया हो ;लेकिन जिसने पहली दफा गंगा में पैसा फेंका होगा, वह यह कह रहा है कि मेरा सब धन तुच्छ है तेरे प्रवाह के सामने। इसका मूल्य तो समझो! मेरा धन तो मुर्दा है, तेरा धन ज्यादा बड़ा है। मैं अपने धन को तेरे धन के सामने झुकाता हूँ। मैं अपने धन को तेरे चरणों में रखता हूँ।

ओशो 🌹 🙏

**ChatGPT**

It looks like you're asking about the speed of electric current. The speed of electric current itself can be a bit tricky to define because it's not the movement of individual electrons but rather the propagation of an electrical signal through a conductor.

In general, the speed of the electric signal (or the effect of the electric field) in a typical conductor like copper wire is quite high, often close to the speed of light, which is around 299,792 kilometers per second (186,282 miles per second) in vacuum. However, the actual speed at which electrons move through the wire (referred to as drift velocity) is much slower, typically on the order of millimeters per second.

It's important to note that what travels quickly through the conductor is the electrical signal itself, the effect of the electric field, rather than individual electrons moving from one end to the other at high speeds.



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





Like



Comment



Send



Share



Osho Thoughts

Rajeev Kumar · 23h ·



#oshointernational #trending #viral
#trendingvideo #viralvideo #oshorajneesh
#oshohindispeech #meditation #oshoquotes... See more



444

8 comments • 60 shares



Like



Comment



Send



Share



एकांत

Joy Suman · 8h ·



दो पेमियों के बीच बोले जाना

facebook



Like



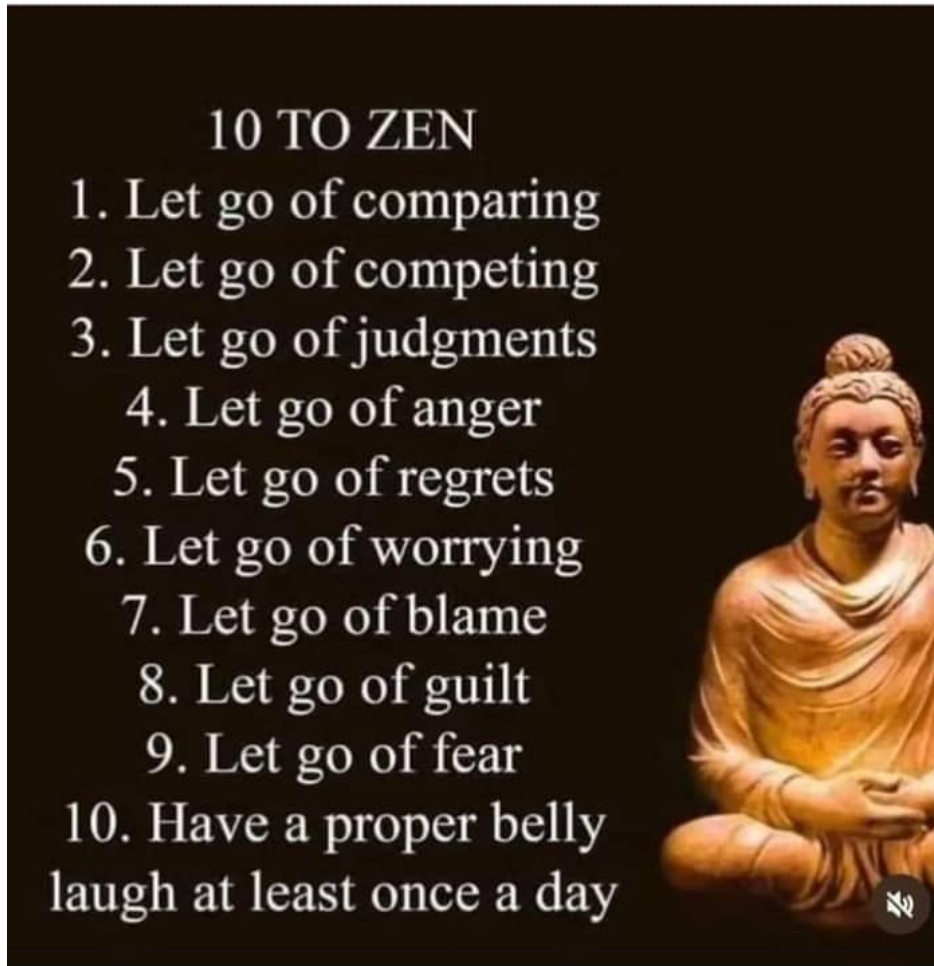
Comment



Share

**Buddhism, Zen, Tao & Meditation**

Bharathi Gupta Chellu · 6 Apr · 🌐



2K

36 comments · 1.2K shares



Like



Comment



Send



Share

**Osho Thoughts**

Rajeev Kumar · 23h · 🌐

#oshointernational #trending #viral
#trendingvideo #viralvideo #oshorajneesh
#oshohindispeech #meditation #oshoquotes... See more



Like



Comment



Send



Share



आचार्य ओशो रजनीश एक विचार



Reels · 2d ·

कोई गलत टिप्पणी न करे पहले उसके बारे में जाने फिर कुछ लिखे
आपका टिप्पणी ही आपका संस्कार दिखाएगी

#oshoion #viralreelsfb #oshotrending #os... See more



39

1 comment · 1 share · 721 plays



चिताओं के करीब नाच रहीं लड़कियां शहर की बदनाम गलियों की नगर वधु होती हैं। कल की नगरवधु यानी आज की तवायफ। पर इन्हें न... See more



👍 342

7 comments • 27 shares • 100K views



Like



Comment



Send



Share



HAPPY T.V • Follow





इन तीन शब्दों को ठीक से लेना--आत्मा, मन, देह। मन दोनों के बीच में है। मन को तुम शरीर से जोड़ दो तो संसारी हो जाते हो और



11K

osho_gyanvarsha



68



1.7K



Send

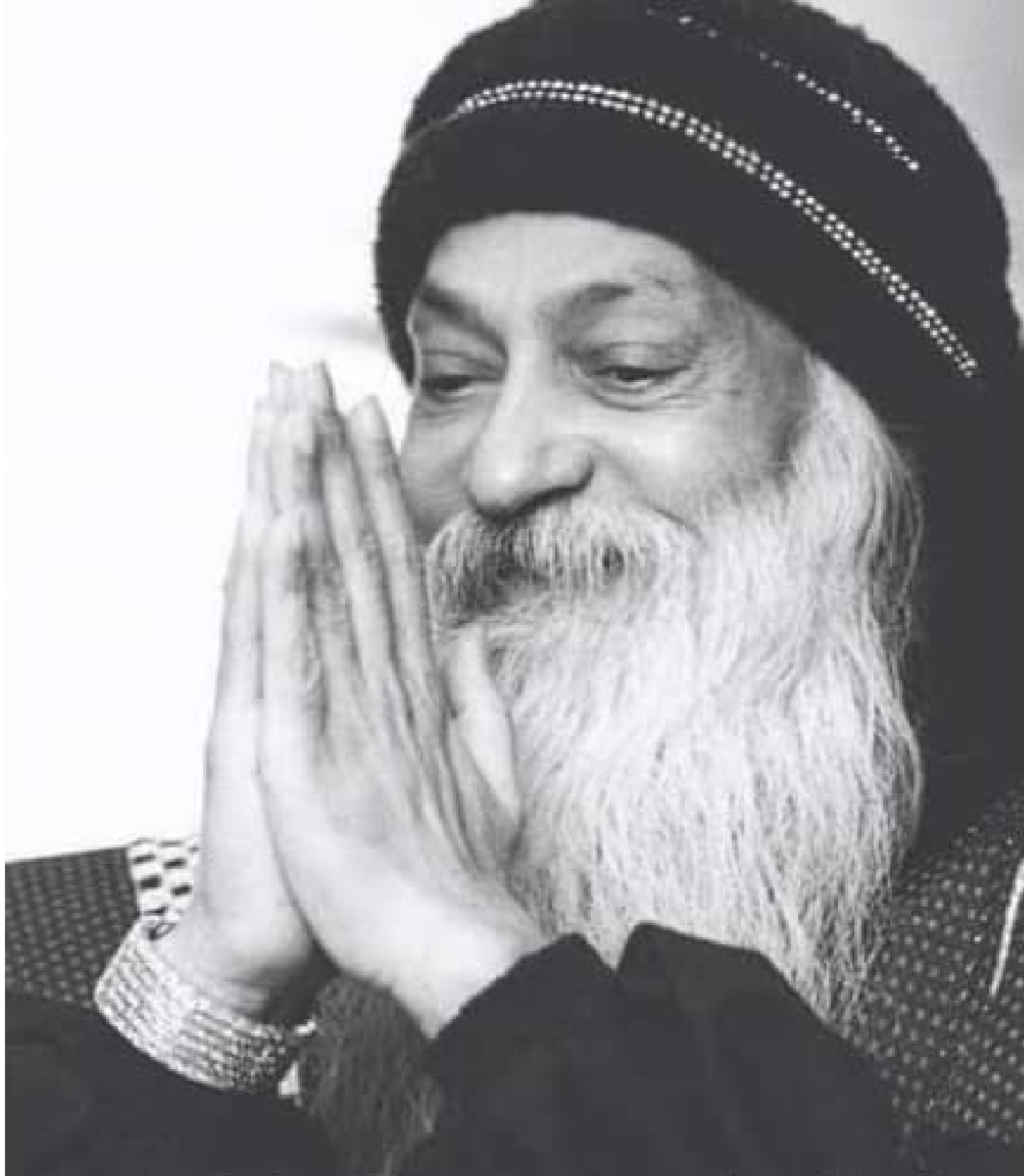


osho_gyanvarsha @

शरीर तो घर है जिसमें कोई बसा है। फिर हम यह भी ... more

Add a comment...





**आदमी के भीतर परमात्मा बैठा है और
आदमी सारे जगत् में खोज रहा है।**

- आचार्य रजनीश

52K

711 comments • 11K shares

Like

Comment

Send

Share



नवनीत विचार

1d ·

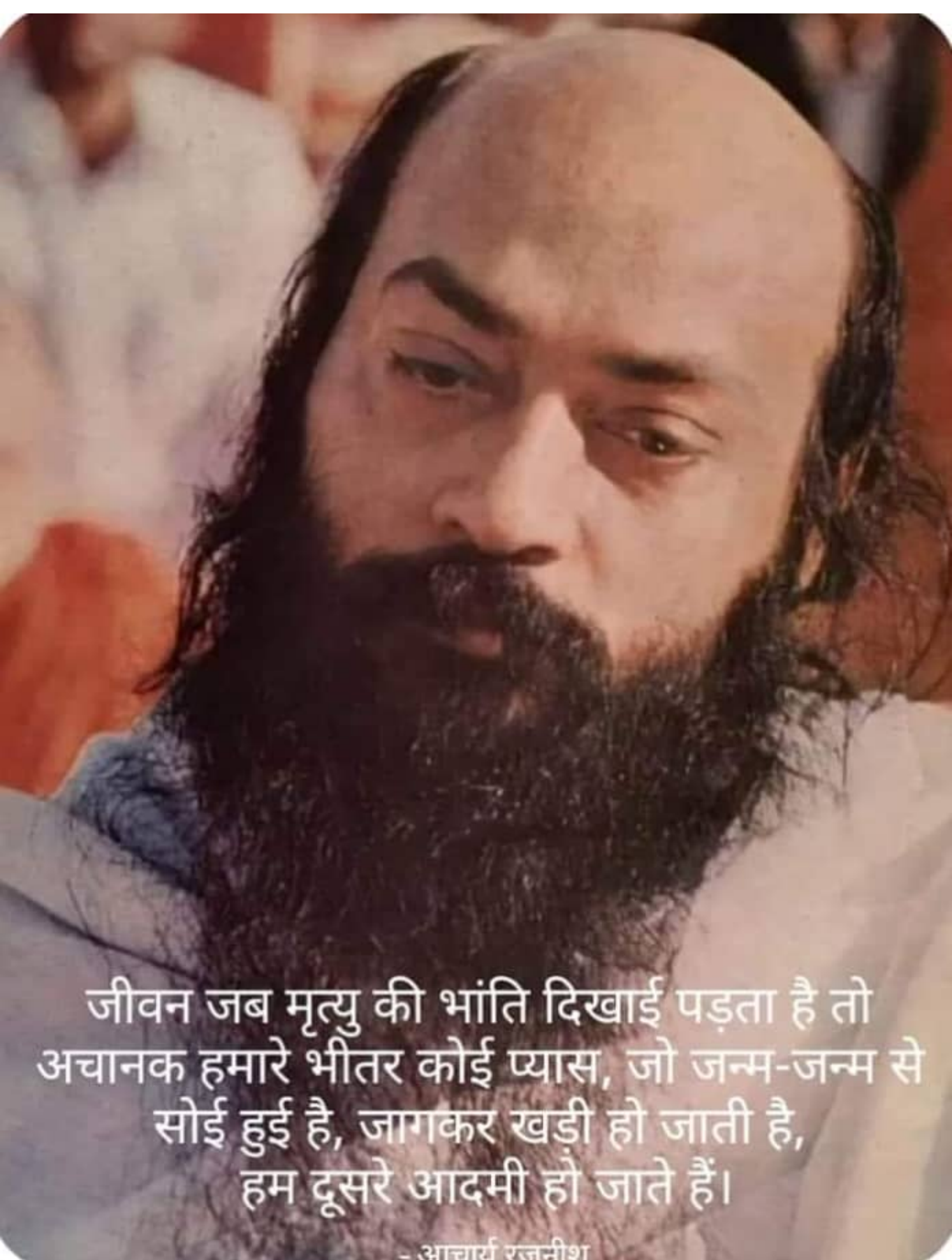


इस जगत् में अगर किसी पर श्रद्धा करनी हो तो मृत्यु पर ही करनी चाहिए क्योंकि मृत्यु कभी किसी को धोखा नहीं देती। आती ही है, कभी दगा नहीं करती। तुम कहीं भी छिपो, खोज लेती है। कभी वचन-भंग नहीं करती। इस मृत्यु के महासत्य को जो पहचान लेता है आंख भरकर, आंख मिलाकर जो देख लेता है मृत्यु की आंखों में, उसके जीवन में क्रांति शुरू हो जाती है; वही क्रांति संन्यास है। फिर वह घर में रहे, बाजार में रहे, कुछ फर्क नहीं पड़ता। मृत्यु की याद ने उसकी दौड़-धूप बंद कर दी, उसकी आपाधापी गयी, उसकी महत्वाकांक्षा मर गयी। मिला तो ठीक, नहीं मिला तो ठीक। सफल हुए तो ठीक, असफल हुए तो ठीक। यश हुआ तो ठीक, अपयश हुआ तो ठीक। आएगी कल मौत, सब पर पानी फेर जाएगी। यशस्वी, अयशस्वी, सब धूल चाट जाएंगे।
प्रेम रंग रस ओढ़ चदरिया -प्र -9

ओशो♣♣♣♣

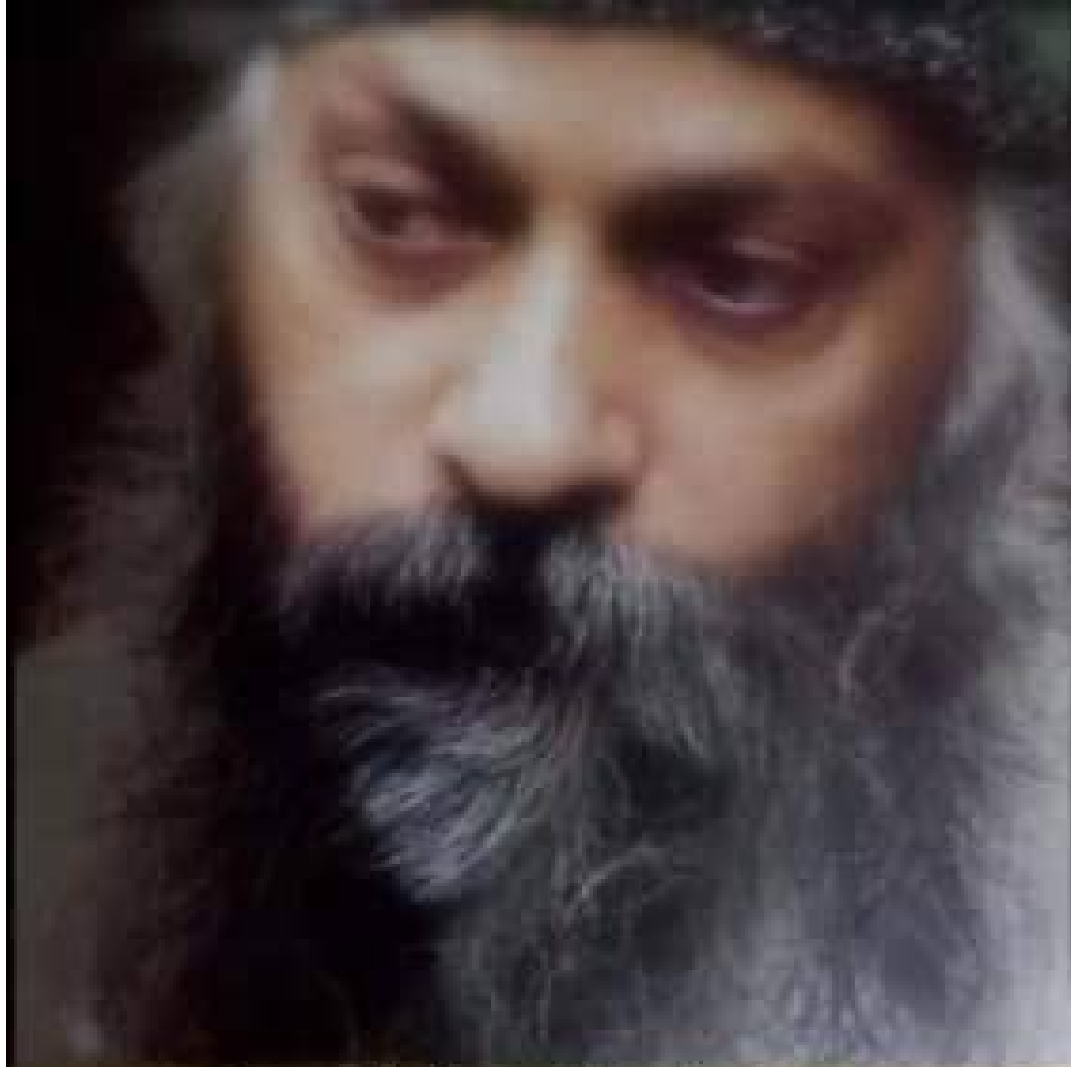
**ये कलयुग है जनाब
यहां लोग दूसरे की तकलीफ को
कर्मों की सजा मानते हैं और खुद की
तकलीफ को परीक्षा...!!**





जीवन जब मृत्यु की भांति दिखाई पड़ता है तो
अचानक हमारे भीतर कोई प्यास, जो जन्म-जन्म से
सोई हुई है, जागकर खड़ी हो जाती है,
हम दूसरे आदमी हो जाते हैं।

- आचार्य रजनीश



इस संसार में तो उन्हीं को वापस आना पड़ता है, जिनका अनुभव आधा रह गया, कच्चा रह गया। यह संसार तो विद्यापीठ है। यहां विद्यार्थी जो अनुत्तीर्ण हो जाते हैं, वे ही वापस लौट आते हैं। जो उत्तीर्ण हो जाते हैं, वे मुक्त हो जाते हैं। उन उत्तीर्ण पुरुषों को ही हमने बुद्ध, सिद्ध, जिन कहा है।

#- कहे कबीर दीवाना, प्रवचन-११, ओशो



जिस दिन अंतिम निर्णय होगा तुम्हारे जीवन का, आखिरी परीक्षा होगी, उस दिन तुम्हारे भाव का हिसाब होगा; तुम्हारे कृत्यों का नहीं।

संसार में तौले जाते हैं कर्म, परमात्मा में तौला जाता है भाव। संसार हिसाब रखता है, क्या तुमने किया; परमात्मा हिसाब रखता है, क्या तुम हो।

तो यह भी हो सकता है, तुम मोक्ष में उन लोगों को पाओ, जिनको तुमने मस्जिद-मंदिर में कभी नहीं देखा। और तुम नर्क में उन लोगों को पाओ जो सदा मस्जिद-मंदिर में ही जिंदगी गुजारे।

संसार तो कृत्य देख सकता है। क्योंकि उतनी गहरी आंख नहीं है, जो भाव को देख ले।

ओशो - दीया तले अंधेरा

त्याग का अर्थ
छोड़ना नहीं है। त्याग का
अर्थ जाग कर देखना है कि
मेरा कुछ है ही नहीं,
छोड़ूं कैसे ?

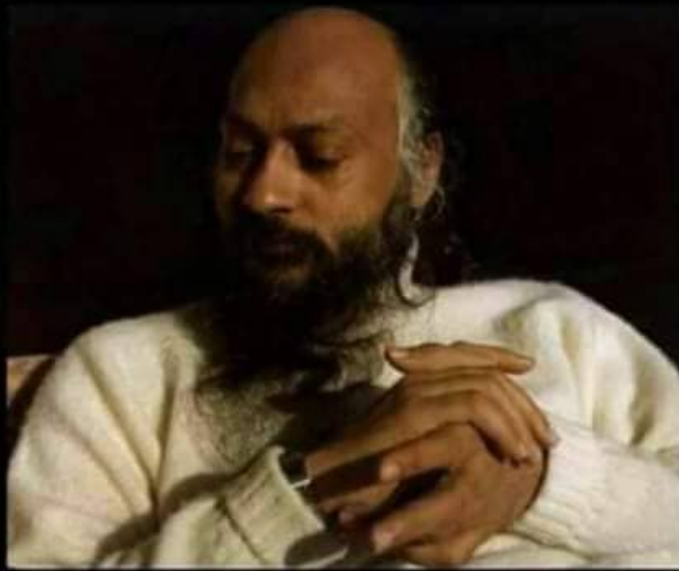


osho universal - dhaval parmar



..ओशो..

अष्टावक्र : महागीता



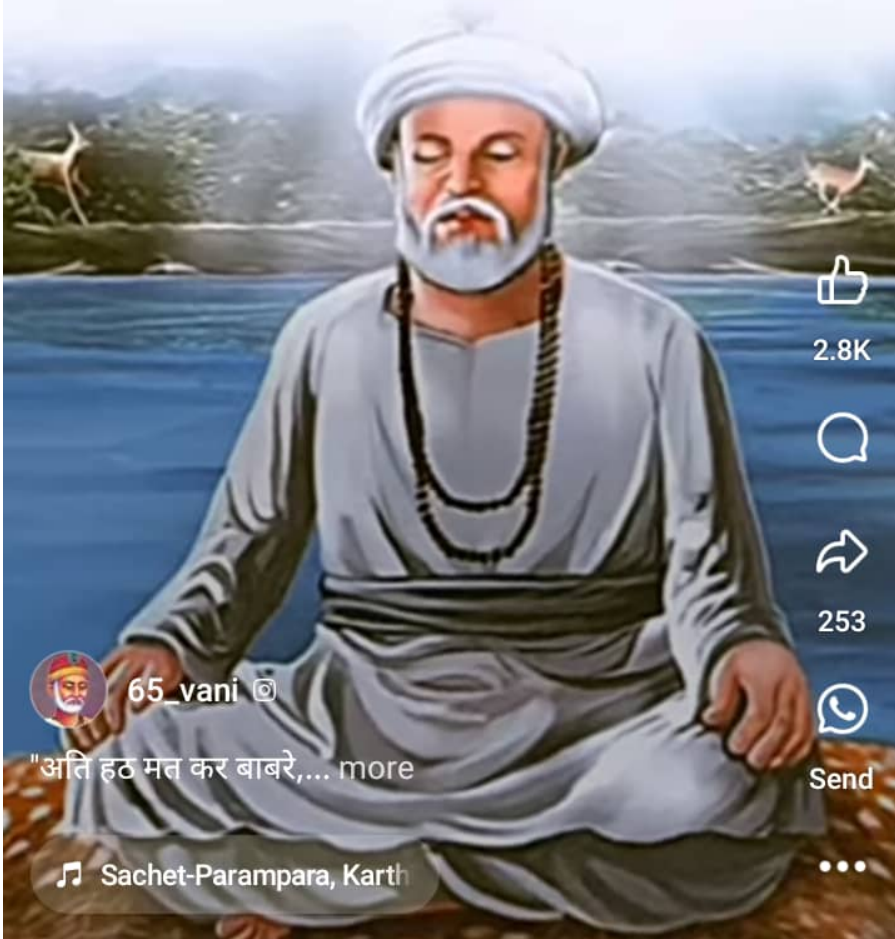
एक तो बच्चे हैं, पागल हैं; पशु—पक्षी हैं, पौधे हैं—वहा कुछ पाप नहीं है, क्योंकि वहां कोई समझ नहीं है। फिर बुद्धपुरुष हैं, अष्टावक्र हैं, जीसस हैं, महावीर हैं—वहां बोध इतना सघन हुआ है कि कर्ता का भाव नहीं रहा। इन दोनों को कोई पाप नहीं है। पाप तो बीच में पंडितों को है, जो समझते हैं। तुम समझते हो कि तुमने किया, इसलिए तुम पापी हो जाते हो। तुम समझते हो कि तुमने किया, इसलिए तुम पुण्यात्मा हो जाते हो। हम समझते हो तुमने किया—इसलिए भोगी। तुम समझते हो तुमने किया—इसलिए त्यागी। जिस दिन तुम समझोगे तुमने कुछ किया ही नहीं—जो हो रहा है, हो रहा है; तुम सिर्फ देखने वाले हो—उस दिन न पाप है न पुण्य है; न योग है न भोग है।

ओशो **Osho wisdom**

[← Reels](#) ▾

"अति हठ मत कर बाबरे,
हठ से बात ना होये
ज्यों ज्यों भीजे कामरी,
त्यों त्यों भारी होये।"

- संत कबीरदास



2.8K



253



Send



65_vani @

"अति हठ मत कर बाबरे,... more

🎵 Sachet-Parampara, Karth



Add a comment...



← Reels ▾



अभ्युदय साहित्य



धर्म के पास सब से चालाकी भरा
अस्त्र है- तर्क मत करो, विश्वास
करो, जैसा कहा जा रहा है बस
उसे मान लो।



910

— ममता नायक
@abhyudayaSahitya

92



250

★ Send a gift



अभ्युदय साहित्य

Follow

धर्म के पास सब से चालाकी भरा अस्त्र है- तर्क मत कर... more



Send

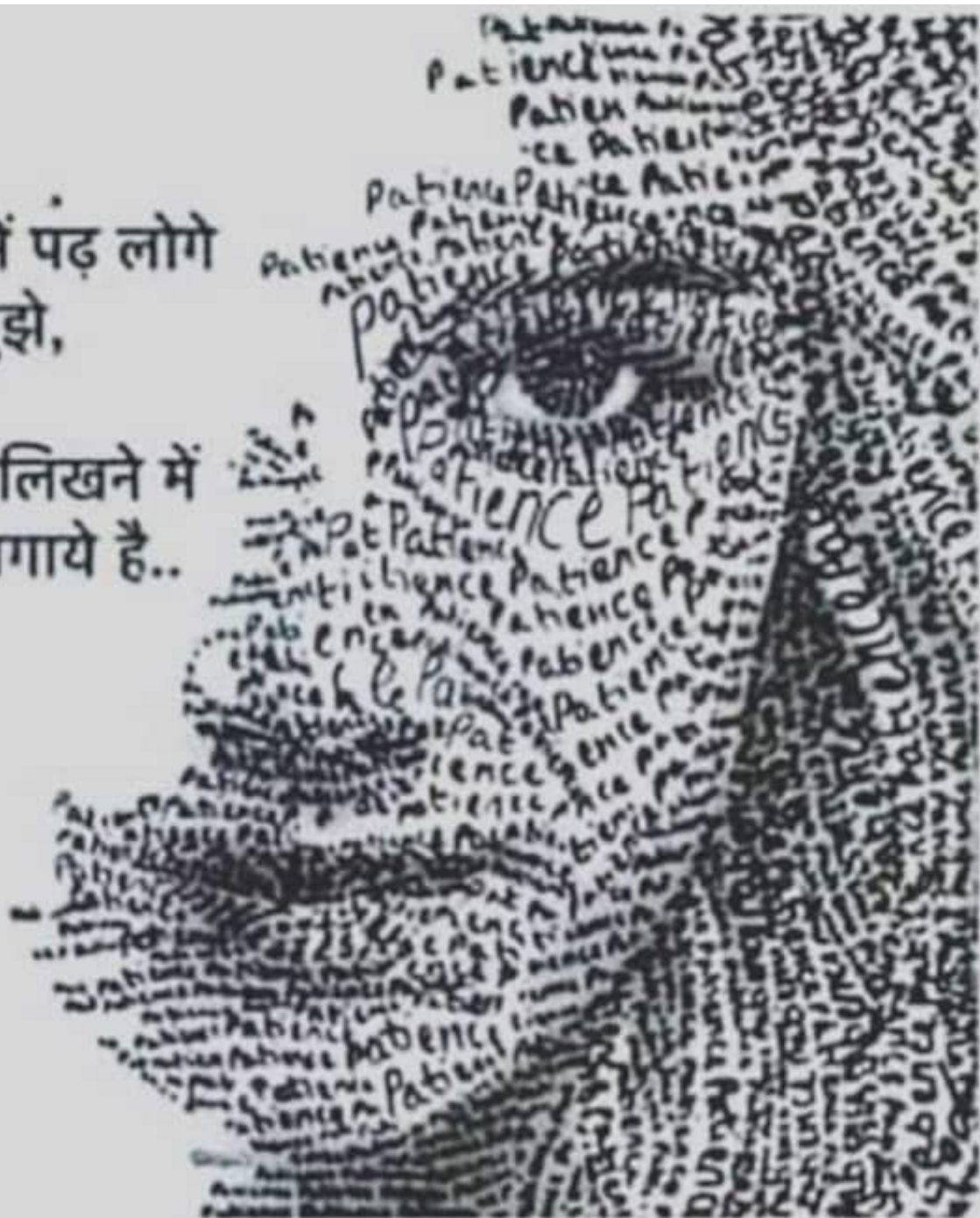
🎵 Flute Siva · Narumugaye (Use audio

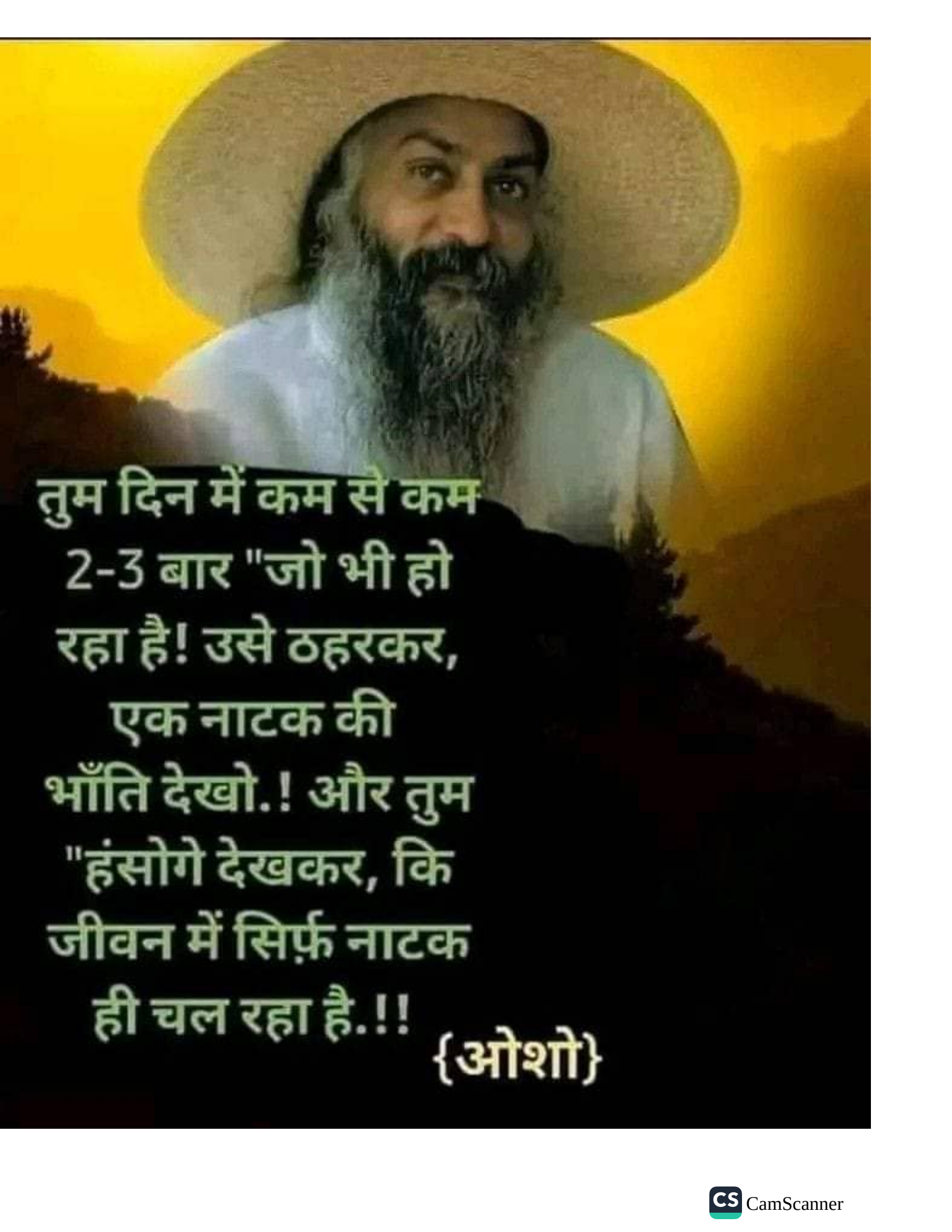
OLD FI



एक ही दिन में पढ़ लोगे
क्या मुझे,

मैंने खुद को लिखने में
कई साल लगाये है..





तुम दिन में कम से कम
2-3 बार "जो भी हो
रहा है! उसे ठहरकर,
एक नाटक की
भाँति देखो.! और तुम
"हंसोगे देखकर, कि
जीवन में सिर्फ नाटक
ही चल रहा है.!! {ओशो}



Sufi Baba Shah Qalandar



27 Aug 2018 · 🌐

सूफी परम्परा में गुरु को तीन श्रेणियों में बांटा गया है।

1. पीर खिरका-- यानि जिस गुरु से शिष्य दीक्षा ग्रहण करता है, वह पीर खिरका कहलाता है। पीर खिरका आजीवन वही रहता है, वह कभी नहीं बदलता।

2. पीर सोहबत-- जिस गुरु के सान्निध्य में शिष्य रहता है, उसे पीर सोहबत कहते हैं। किसी भी कारण से यदि शिष्य अपने गुरु से दूर हो और अन्य गुरु की सोहबत में रहता हो, तो वह गुरु पीर सोहबत कहलाता है।

3. पीर तालीम-- जिस गुरु से शिष्य को ध्यान की दीक्षा और आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलता है, वह पीर तालीम कहलाते हैं।

एक शिष्य के पीर सोहबत और पीर तालीम कई हो सकते हैं, लेकिन पीर खिरका एक ही रहेगा।

  26

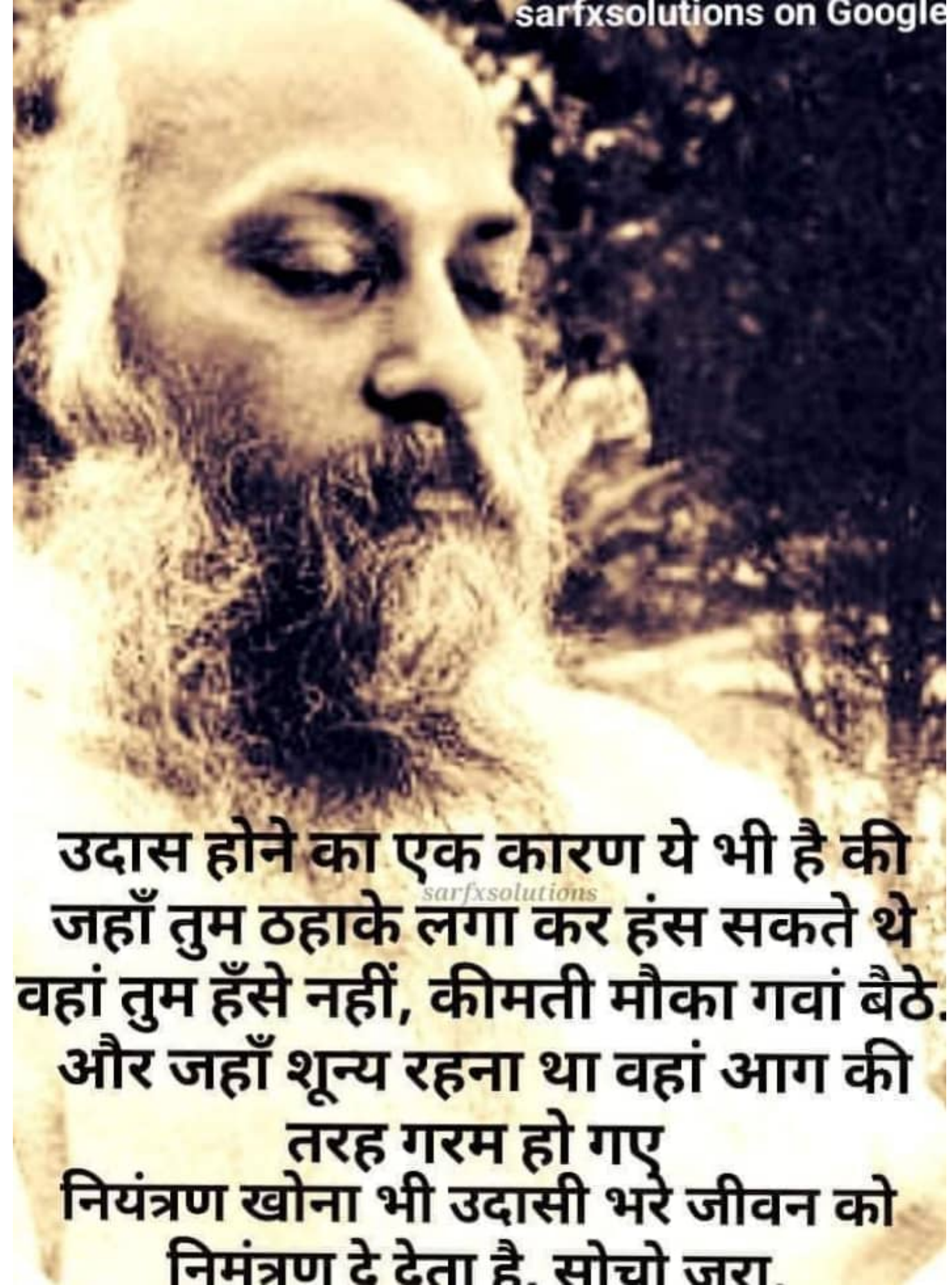
3 comments • 6 shares

 Like

 Comment

 Send

 Share



उदास होने का एक कारण ये भी है की
जहाँ तुम ठहाके लगा कर हंस सकते थे
वहाँ तुम हँसे नहीं, कीमती मौका गवां बैठे.
और जहाँ शून्य रहना था वहाँ आग की
तरह गरम हो गए
नियंत्रण खोना भी उदासी भरे जीवन को
निमंत्रण दे देता है. सोचो जरा.

और कहीं घर मत बनाना। और अब घर सराय सिद्ध होंगे। रात भर का पड़ाव हो सकता है। सुबह उठकर चल पड़ना पड़ेगा। और किसी संबंध को घर मत बनाना। पत्नी हो, पति हो, बेटे हों, बेटियां हों, मित्र हों—सब क्षण भर का मिलना है। राह पर चलते यात्रियों का अचानक हो गया संयोग है। नदी-नाव संयोग। फिर छूट जाएगा। अनंत की यात्रा में बहुत बार न मालूम कितने घर तुमने बनाए। उनका हिसाब लगाना मुश्किल है। न मालूम कितने प्रेम के संबंध स्थापित किए। उतनी संख्या नहीं है। कितने रोए, कितने हंसे, लेकिन सब पानी के बबूलों की तरह खो गए। सब खो जाता है। सिर्फ एक ही बचता है। उस एक को ही कबीर कहते हैं—अवधू, उस एक को ही घर बना।

गगन मंडल घर कीजै।

और गगन कैसा है? शून्य है। गगन का अर्थ है, परम-शून्यता। तभी तो सब मिट जाता है। गगन नहीं मिटता। शून्य कैसे मिटेगा? जो मिटा ही हुआ है, जो है ही नहीं, वह कैसे मिटेगा? शून्य को मिटाने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए शून्य अस्तित्व का सार है। वह शाश्वत है। शून्य एकमात्र शाश्वतता है। सब बनेगा और सब मिटेगा। नाम रूप आते और जाते हैं। शून्य बना रहता है।

इसलिए ज्ञानियों ने ब्रह्म की परिभाषा शून्य से की है। शून्य है उसका रूप। इसलिए उपनिषद कहते हैं, नेति नेति। वे कहते हैं, न यह आकार है उसका, न वह आकार है उसका। ज्यादा से ज्यादा हम इतना ही कह सकते हैं कि कोई आकार नहीं है उसका। निराकार। निराकार यानी शून्य।
ओशो

तुम जाते हो फिल्म देखने। घड़ी भर को भूल ही जाते हो अपने को। खाली पर्दे पर धूप-छाया का खेल चलता है। लीन हो जाते हो। याद इतनी रह जाती है कि क्या पर्दे पर चल रहा है। अपनी याद नहीं रह जाती। दृश्य सब कुछ हो जाते हैं। यहां तक कि लोग पर्दे को जानते हैं, जब आए थे तो खाली था। क्षण भर बाद भूल जाते हैं। यह भी भली भांति उन्हें पता है कि सब धूप छाया की माया है, कुछ है नहीं वहां।

और तुम्हें रोमांच हो जाता है। कोई दीन-सुखी, पीड़ित मर रहा है, और तुम्हारी आंखें अश्रुओं से भर जाती हैं। भूल ही जाते हो। ना कुछ प्रभाव करने लगता है। नीलमणि बहुत करीब आ गई। दृश्य सच मालूम होने लगते हैं। अगर चित्र में एक खतरनाक पहाड़ी के कगार से कार तेजी से भाग रही हो, और पुलिस के लोग पीछा कर रहे हो, तो तुम भी सम्हल कर बैठ जाते हो, रीढ़ सीधी हो जाती है। खतरनाक स्थिति है। सांस रुक जाती है। पलकें झपना बंद कर देती हैं।

फिर पर्दा, पर्दा हो जाता है। खेल बंद हो गया। इति आ गई। उठकर तुम खड़े हो जाते हो। घर लौट आते हो।

साक्षी पहले था, जब तुम प्रवेश किए थे। साक्षी ही वापस लौटेगा, जब तुम घर की तरफ आओगे। बीच में खेल चला धूप-छाया का। वह जो पर्दे पर हो रहा है फिल्म के, उससे ज्यादा नहीं है संसार। फिल्म बड़ी है, पर्दा बहुत विराट है। तुम ओर-छोर भी न पा सकोगे। दृश्य बहुत हैं, अनगिनत हैं। संख्या का उपाय नहीं है। लेकिन है सब धूप छाया का ही खेल। उससे भिन्न कुछ भी नहीं रहा है।

एक ही चीज सत्य है; वह तुम्हारा देखनेवाला तत्व है। वह आकाश है। अवधू गगन मंडल घर कीजै। उस आकाश को ही अपना घर बना लो।

उससे कम में तुम दुखी रहोगे। उससे कम में तुम पीड़ित रहोगे। उससे कम में नर्क में ही रहोगे। क्योंकि अपने स्वभाव से कम में कोई कभी आनंदित नहीं हो सकता। स्वभाव आनंद है। तब तुम अपने घर लौट आए गगन-मंडल घर कीजै।

और कहीं घर मत बनाना। और अब घर सराय सिद्ध होंगे। रात भर का पड़ाव हो सकता है। सुबह उठकर चल पड़ना पड़ेगा। और किसी संबंध को घर मत बनाना। पत्नी हो, पति हो, बेटे हों, बेटियां हों, मित्र हों—सब

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Sulaxna Dixit Rawat · 7h · 🌐



कबीर कहते हैं—घूँघट के पट खोल, तो हे पिया मिलेंगे। जरा सा घूँघट हटाना है। बस घूँघट की ओट में छिपे हैं पिया।

ये कबीर के वचन बड़े महत्वपूर्ण है।

अवधू, गगन मंडल घर कीजै।

इसे समझ लें।

यह आकाश है फैला हुआ। इस आकाश में सब कुछ है। इसी आकाश में पृथ्वियां बनती है और लीन होती हैं। सूरज निर्मित होते हैं और विसर्जित होते हैं। चांद तारे जन्मते हैं और खो जाते हैं। सारी सृष्टि आकाश में बनती है और मिटती है। लेकिन आकाश न कभी बनता और न कभी मिटता है।

सब दृश्य उठते हैं आकाश में, सब रंग देखता है आकाश लेकिन किसी दृश्य से रंगता नहीं। इंद्रधनुष भी बनते हैं, बादल भी उठते हैं, बिजलियां भी चमकती हैं, लेकिन आकाश अछूता रह जाता है। बिजली के चमक जाने के बाद कोई काली लकीर, कोई जली हुई रेखा नहीं छूट जाती आकाश पर। बादल आते हैं, चले जाते हैं। आकाश जैसा था वैसी ही निर्मल बना रहता है। बादल हों तो, न हों तो।

यह सारी सृष्टि खो जाए, ये सब वृक्ष, पौधे, पशु, पक्षी लीन हो जाएं... होता है, प्रलय में वैसा। सब बीज में समा जाता है। आकाश भर शेष रह जाता है। आकाश सदा शेष रह जाता है। आकाश में सब घटता है। फिर भी आकाश को कुछ भी नहीं घटता। इसलिए आकाश साक्षी का प्रतीक है। सब कुछ साक्षी के सामने घटता है। लेकिन साक्षी में कुछ नहीं घटता। दृश्य उठते हैं, मिटते हैं। नाटक बनता है, बिखरता है।

तुम जाते हो फिल्म देखने। घड़ी भर को भूल ही जाते हो अपने को। खाली पर्दे पर धूप-छाया का खेल चलता है। लीन हो जाते हो। याद इतनी रह जाती है कि क्या पर्दे पर चल रहा है। अपनी याद नहीं रह जाती। दृश्य सब कुछ हो जाते हैं। यहां तक कि लोग पर्दे को जानते हैं, जब आए थे तो खाली था। क्षण भर बाद भल जाते हैं। यह भी भली

सुख जब सदा होता है, तो शांति में रूपांतरित हो जाता है। आनंद जब परिपूर्ण होता है, तो शून्यवत हो जाता है। पूरा घड़ा जैसे भर जाए और आवाज नहीं करता, ऐसे ही पूरा सुख जब हो जाता है, तो कोई आवाज नहीं करता।

अमृत झरै सदा सुख उपजै, बंकनालि रस पीजै।

और पीते जाओ उसके रस को, जितना पीना हो। रस कभी चुकता नहीं। पीनेवाला थक जाए, पिलानेवाला नहीं थकता।

मूल बांधि सर गगन समाना, सुखमनि यों तन लागी।

यह जो महासुख की घटना घटती है, योगी कैसे उसे घटाता है? वह अपने भीतर क्या करता है? वह किस भांति अपने को आकाश में डुबा देता है? मूल बांधि सर गगन समाना—यह उसकी प्रक्रिया है।

जीवन ऊर्जा है।

❀ आचार्य रजनीश ओशो ❀





ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 12h · 🌐



तुम्हारा सुख रत्ती-रत्ती जहर है। और तुम्हारे हर सुख के पीछे दुख छिपा है। तुम्हारा हर सुख दुख अपने साथ ही लाता है। देर अबेर सुख जाएगा, दुख प्रकट होगा। तुम्हारा सुख सदा नहीं है। जो सुख सदा है, उसी को हमने आनंद कहा है। सदा सुख उपजै-दो सुखों को बीच में जब दुख नहीं रह जाता, तब सदा सुख उपजता है। तब तो तुम्हें पता ही नहीं चलता, कि सुख कब आया। आना पता चलता है एक बार; फिर जाने का तो पता ही नहीं होता। धीरे-धीरे ऐसी अवस्था हो जाती है सदा सुखी की, कि उसे यह भी पता नहीं चलता कि वह सुखी है।

तुम अगर बुद्ध से पूछो कि क्या आप सुखी हैं? तो वे यह नहीं कह सकते कि मैं सुखी हूँ। क्योंकि मैं सुखी हूँ, यह तो उसी का बोध है जो दुखी भी होता है। जैसे सदा स्वस्थ रहनेवाले आदमी को पता ही नहीं चलेगा कि मैं स्वस्थ हूँ। यह तो बीमार को पता चलता है। सदा जो स्वस्थ है, उसे स्वास्थ्य का भी पता नहीं चलता। सदा सुखी आदमी को सच का भी पता नहीं चलता।

इसलिए तो बुद्ध नाचते हुए दिखाई नहीं पड़ते। सुख इतना सदा है कि अब उसके लिए नाचना क्या? वह तो श्वास जैसा है? बह ही रहा है। वह तो स्वभाव में है। वह तो बरस ही रहा है। उसके लिए नाचना क्या? उसके लिए हंसना क्या? उसके लिए शोरगुल क्या मचाना कि मैं सुखी हूँ?

सुख जब सदा होता है, तो शांति में रूपांतरित हो जाता है। आनंद जब परिपूर्ण होता है, तो शून्यवत हो जाता है। पूरा घड़ा जैसे भर जाए और आवाज नहीं करता, ऐसे ही पूरा सुख जब हो जाता है, तो कोई आवाज नहीं करता।

अमृत झरै सदा सुख उपजै, बंकनालि रस पीजै।

और पीते जाओ उसके रस को, जितना पीना हो। रस कभी चुकता नहीं। पीनेवाला थक जाए, पिलानेवाला नहीं थकता।

तुम विधि बदलने को तैयार हो,
शास्त्र बदलने को तैयार हो,
धर्म बदलने को तैयार हो,
गुरु बदलने को तैयार हो,
लेकिन खुद को बदलने
को तैयार नहीं
तुम कभी नही
पूछते ऐसा
तो नहीं
कि मैं
गलत
हूँ?

OSHO

facebook



ध्यान करने का है। अपना पूरा चेतना का काम केंद्र पर ल जाआ, जहां तुम उत्तेजना, कम्पन और उमंग का अनुभव कर रहे हो। वहां गतिशील होकर केवल एक मौन दृष्टा बने रहो। उसकी निंदा मत करो, उसके साक्षी बने रहो। तुम उसकी निंदा करते हो, तुम उससे बहुत दूर चले जाते हो। और न उसका मजा लो, क्योंकि जिस क्षण तुम उसमें मज़ा लेने लगते हो, तुम मूर्च्छा में होते हो। केवल सजग, निरीक्षणकर्ता बने रहो, उस दीये की तरह जो अंधेरी रात में जल रहा है। तुम केवल अपनी चेतना वहां ले जाओ, चेतना की ज्योति, बिना हिले डुले थिर बनी रहे। तुम देखते रहो कि कामकेंद्र पर क्या हो रहा है, और यह ऊर्जा है क्या?

इस ऊर्जा को किसी भी नाम से मत पुकारो, क्योंकि सभी शब्द प्रदूषित हो गए हैं। यदि तुम यह भी कहते हो कि यह सेक्स है, तुरंत ही तुम उसकी निंदा करना प्रारम्भ कर देते हो। यह शब्द ही निंदापूर्ण बन जाता है। अथवा यदि तुम नई पीढ़ी के हो, तो इसके लिए प्रयुक्त शब्द ही कुछ पवित्र बन जाता है। लेकिन शब्द अपने आप में हमेशा भाव के भार से दबा रहता है। कोई भी शब्द जो भाव से बोझिल हो, सजगता और होश के मार्ग में अवरोध बन जाता है। तुम बस उसे किसी भी नाम से पुकारो ही मत। केवल इस तथ्य को देखते रहो कि काम केंद्र के निकट एक ऊर्जा उठ रही है। उसमें उत्तेजना है उमंग है, उसका निरीक्षण करो। और उसका निरीक्षण करते हुए तुम्हें इस ऊर्जा का पूरी तरह से एक नये गुण का अनुभव होगा। उसका निरीक्षण करते हुए तुम देखोगे कि यह ऊर्जा ऊपर उठ रही है। वह तुम्हारे अंदर मार्ग खोज रही है। और जिस क्षण वह ऊपर की ओर उठना प्रारम्भ करती है, तुम्हें अनुभव होगा कि एक शीतलता तुम पर बरस रही है, तुम पर चारों ओर से एक अनूठी शांति, मौन अनुग्रह आशीर्वाद और आनंद की वर्षा हो रही है। अब कोई पीड़ायुक्त है, यह ठीक एक मरहम जैसा है। और तुम जितने अधिक सजग बने रहोगे, यह ऊर्जा उतनी ही ऊपर जाएगी। यदि यह हृदय तक आ सकती है, जो बहुत कठिन नहीं है, कठिन तो है, लेकिन बहुत अधिक कठिन नहीं है.. यदि तुम सजग बने रहे, तो तुम देखोगे कि यह हृदय तक आ गई है। जब यह ऊर्जा हृदय तक आ जाती है तो तुम पहली बार यह जानोगे कि प्रेम क्या होता है।

**Naye bharat ke khoj**

3d · 🌐



सेक्स के पार होने के लिए एक छोटी सी विधि बहुत सहायक होगी।



जब कभी तुम्हारे अंदर सेक्स की कामना उठे, तो वहां उसकी तीन सम्भावनाएं हैं:

पहली है, उनको तुष्ट करने में लग जाओ, सामान्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति यही कर रहा है।

दूसरी है—उसका दमन करो, उसे बलपूर्वक अपनी चेतना के पार अचेतन के अंधकार में नीचे धकेल दो, उसे अपने जीवन के अंधेरे तलघर में फेंक दो। तुम्हारे तथा कथित असाधारण लोग, महात्मा, संत और भिक्षु यही कर भी रहे हैं। लेकिन यह दोनों ही प्रकृति के विरुद्ध हैं। ये दोनों ही रूपांतरण के अंतर्विज्ञान के विरुद्ध हैं।

तीसरी सम्भावना है—जिसका बहुत थोड़े से लोग सदैव प्रयास करते हैं। जब भी सेक्स की कामना उठे, तुम अपनी आंखें बंद कर लो। यह बहुत मूल्यवान क्षण है: कामना का उठना ऊर्जा का जाग जाना है। यह ठीक सुबह सूर्योदय होने जैसा है। अपनी दोनों आंखें बंदकर लो, यह क्षण ध्यान करने का है। अपनी पूरी चेतना को काम केंद्र पर ले जाओ, जहां तुम उत्तेजना, कम्पन और उमंग का अनुभव कर रहे हो। वहां गतिशील होकर केवल एक मौन दृष्टा बने रहो। उसकी निंदा मत करो, उसके साक्षी बने रहो। तुम उसकी निंदा करते हो, तुम उससे बहुत दूर चले जाते हो। और न उसका मजा लो, क्योंकि जिस क्षण तुम उसमें मज़ा लेने लगते हो, तुम मूर्च्छा में होते हो। केवल सजग, निरीक्षणकर्ता बने रहो, उस दीये की तरह जो अंधेरी रात में जल रहा है। तुम केवल अपनी चेतना वहां ले जाओ, चेतना की ज्योति, बिना हिले डुले थिर बनी रहे। तुम देखते रहो कि कामकेंद्र पर क्या हो रहा है, और यह ऊर्जा है क्या?

इस ऊर्जा को किसी भी नाम से मत पुकारो, क्योंकि सभी शब्द प्रदूषित हो गए हैं। यदि तुम यह भी कहते हो कि यह सेक्स है, तुरंत ही तुम उसकी निंदा करना प्रारम्भ कर देते हो। यह शब्द ही निंदापूर्ण बन जाता है। अथवा यदि तुम नई पीढ़ी के हो, तो इसके लिए प्रयुक्त शब्द ही कुछ पवित्र बन जाता है। लेकिन शब्द अपने आप में हमेशा भाव के भार से दबा रहता है। कोई भी शब्द जो भाव से बोझिल हो, सजगता और होश

भक्ति क्या है??,
"भक्ति" हाथ पैरो से नहीं होती है।
वर्ना विकलांग कभी नहीं कर पाते।
भक्ति ना ही आँखो से होती है
वर्ना सूरदास जी कभी नहीं कर पाते।
ना ही भक्ति
बोलने सुनने से होती है
वर्ना "गूँगे" "बहरे" कभी नहीं कर पाते।
ना ही "भक्ति" धन और ताकत से होती है
वर्ना गरीब और कमजोर
कभी नहीं कर पाते।
"भक्ति" केवल भाव से होती है
एक अहसास है "भक्ति"
जो हृदय से होकर विचारों में आती है
और हमारी आत्मा से जुड़ जाती है।
"भक्ति" भाव का सच्चा सागर है।



**Osho international**

1d · 🌐



परमात्मा की भेंट 🌹 🌹

🌹 🌹 दुख से मुक्त होना है, तो सीधे
दुख से मुक्त होने का कोई उपाय नहीं है। वासना को समझो। और अब
वासनाएं मत फैलाओ।

सुख का उपाय है: जो है, उसका आनंद लो; जो नहीं है, उसकी चिंता न
करो।

दुख का उपाय है: जो है, उसकी तो फिकर ही मत लो; जो नहीं है,
उसकी चिंता करो।

दुख का अर्थ है: अभाव पर ध्यान रखो, भाव को भूलो। जो पत्नी तुम्हारे
घर में है, उसकी फिकर न करो। उसमें क्या रखा है? तुम्हारी पत्नी! जो
पड़ोसी की पत्नी है, वह सुंदर है।

अंग्रेजी में कहावत है: दूसरे के बगीचे की घास सदा ज्यादा हरी मालूम
होती है। होती भी है मालूम। जब तुम देखते हो दूर से, दूसरे का लॉन
खूब हरा लगता है। तुम्हारा अपना लॉन इतना हरा नहीं मालूम पड़ता।

दूसरे का मकान सुंदर मालूम होता है। दूसरे की कार सुंदर मालूम होती
है। दूसरे की पत्नी सुंदर मालूम होती है। दौड़ चलती चली जाती है।

सुख का सूत्र है: जो तुम्हारे पास है, उसके लिए परमात्मा को धन्यवाद
दो। जो है, वह पर्याप्त है।

एक आदमी ने आत्महत्या करने की कोशिश की। जब वह मरने के
करीब जा रहा था, चट्टान पर से कूदने नदी में, एक फकीर वहां ध्यान
करता था, तो उसने रोक लिया। उस फकीर ने कहा कि सुनो भी, मेरी
भी सुनो! बात क्या है? क्यों मरे जाते हो?

उस आदमी ने कहा: मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं सब कोशिश कर
चुका; हार चुका। परमात्मा नाराज है। कुछ बात बनती नहीं, सब बिगड़
जाता है; जो छूता हूं। सोना छूता हूं, मिट्टी हो जाती है। जिस दिशा में



"Much of your pain
is self-chosen."

Rhail Gibran

@global.lightworker





ChatGPT 3.5 ▾



understand the vastness and complexity of existence beyond our immediate reality.

4. Explaining Virat Swaroop: The Omniverse concept allows us to imagine that Krishna's Virat Swaroop is not limited to just one universe or dimension but extends across all conceivable realms of existence. It suggests that Krishna's divine presence transcends individual universes and encompasses the entirety of creation, aligning with the universal and all-encompassing nature portrayed in the Bhagavad Gita.

In summary, while the Virat Swaroop is a specific manifestation shown to Arjuna in the context of the Bhagavad Gita, the concept of the Omniverse can help in conceptualizing the vastness and cosmic nature implied by Krishna's universal form, providing a broader perspective on the extent of divine existence and influence across all realms.





2. **Omniverse:** The term "Omniverse" encompasses the idea of all possible universes, dimensions, and realities. It represents the totality of existence, including everything that exists in all conceivable forms and manifestations.

3. **Correlation:** The Virat Swaroop can be seen as a localized manifestation of the broader concept of the Omniverse. While the Virat Swaroop showcases Krishna's divine nature and cosmic presence within the specific context of Arjuna's vision, the Omniverse provides a theoretical framework to understand the vastness and complexity of existence beyond our immediate reality.

4. **Explaining Virat Swaroop:** The Omniverse concept allows us to imagine that Krishna's Virat Swaroop is not limited to just one universe or dimension but extends across all conceivable realms of existence. It suggests that Krishna's divine presence transcends individual universes and encompasses the entirety of creation, aligning with the universal



Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾



RA

You

Which one can better explain the Virat Swaroop of Krishna as told in bhagwad Geeta to the Arjuna

**ChatGPT**

The concept of the Virat Swaroop (universal form) of Krishna as described in the Bhagavad Gita to Arjuna can be related to the idea of the Omniverse. Let me explain how:

1. **Virat Swaroop:** In the Bhagavad Gita, specifically in Chapter 11, Krishna reveals his Virat Swaroop to Arjuna, displaying a cosmic, universal form that encompasses everything in creation. This form illustrates Krishna's omnipresence and omnipotence, showing that he is the essence and controller of all existence.
2. **Omniverse:** The term "Omniverse" encompasses the idea of all possible universes, dimensions, and realities. It represents the totality of existence, including

Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾



...but could imply a structure even larger or more complex than a megaverse, potentially involving higher-dimensional structures or alternate modes of existence.

6. **Omniverse:** This term is sometimes used as a catch-all concept to encompass all possible universes, multiverses, dimensions, and realities, essentially everything that exists or could exist as a cohesive whole.

Beyond these terms, there isn't a widely recognized hierarchy that includes a "highest order" concept. The Omniverse, if considered all-encompassing, would encapsulate the broadest scope of existence in this conceptual framework. However, it's important to note that these terms often arise in speculative physics, cosmology, and science fiction, and their definitions and interpretations can vary significantly depending on the context and the source.



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





4. **Megaverse:** This term can be less precisely defined, but in some contexts, it could refer to a hypothetical collection of multiple multiverses or a higher-level structure encompassing a vast number of universes or multiverses.

5. **Hyperverses:** This term is less commonly used but could imply a structure even larger or more complex than a megaverse, potentially involving higher-dimensional structures or alternate modes of existence.

6. **Omniverse:** This term is sometimes used as a catch-all concept to encompass all possible universes, multiverses, dimensions, and realities, essentially everything that exists or could exist as a cohesive whole.

Beyond these terms, there isn't a widely recognized hierarchy that includes a "highest order" concept. The Omniverse, if considered all-encompassing, would encapsulate the broadest scope of existence in this conceptual framework. However, it's important to note that

Message ChatGPT...



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.





ChatGPT 3.5 ▾

**ChatGPT**

The terms you've mentioned—Universe, Multiverse, Metaverse, Megaverse, Hyperverse, and Omniverse—often refer to speculative or theoretical concepts describing different scales or levels of existence. Here's a breakdown in increasing order:

1. **Universe:** Typically refers to the observable universe—the vast expanse of space and everything within it that we can directly observe and measure.
2. **Multiverse:** This concept suggests the existence of multiple universes, perhaps existing parallel to or alongside our own universe, each with its own unique physical constants and properties.
3. **Metaverse:** The term "metaverse" has gained popularity recently and is often used to describe a collective virtual shared space, usually in the context of virtual reality environments or interconnected digital spaces.



ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.



“शब्दों की आवश्यकता
कलह के लिए पड़ती है,
❤️ ❤️ ❤️
प्रेम के लिए तो
मौन की भाषा ही पर्याप्त है”





बेशर्त प्रेम का
अपना ही मजा है
कर के देखो
आनंद ही आनंद
कोई अपेक्षा नहीं
कोई मांग नहीं
केवल देने
का भाव
सिर्फ समर्पण
और
अहोभाव

Wisdom@facebook

ओशो



Kheloexch

LINK IN BIO

त्याग का अर्थ छोड़ना नहीं है
त्याग का अर्थ जाग कर देखना है
की मेरा कुछ है ही नहीं!!



8.6K



12



341



anmol.buddhavani @

Like Share Follow kare ❤️ ... more



bhijit Pohankar · Mountain Use



Send



Add a comment...



4:12 pm

6 KB/s

VoLTE 4G 58%



एक माया में मुक्त,
एक माया से मुक्त



27K



60



748



Send



सिर्फ विद्वान ही समझ सकते हैं



राधे राधे 🌸🍀



bhaktmaltales

माया में नहीं माया से मुक्त होना ही ध्येय होना चाहिए #... more

🕉️ Mix with Krishna - God Of

Add a comment...



हर सेकंड कोई ना कोई दुनिया छोड़
जाता हैं और हमे पता नहीं चलता
की हम भी इसी लाइन में हैं।

master_k_gyan



371K



1.1K



1.9K



Send



master_k_gyan



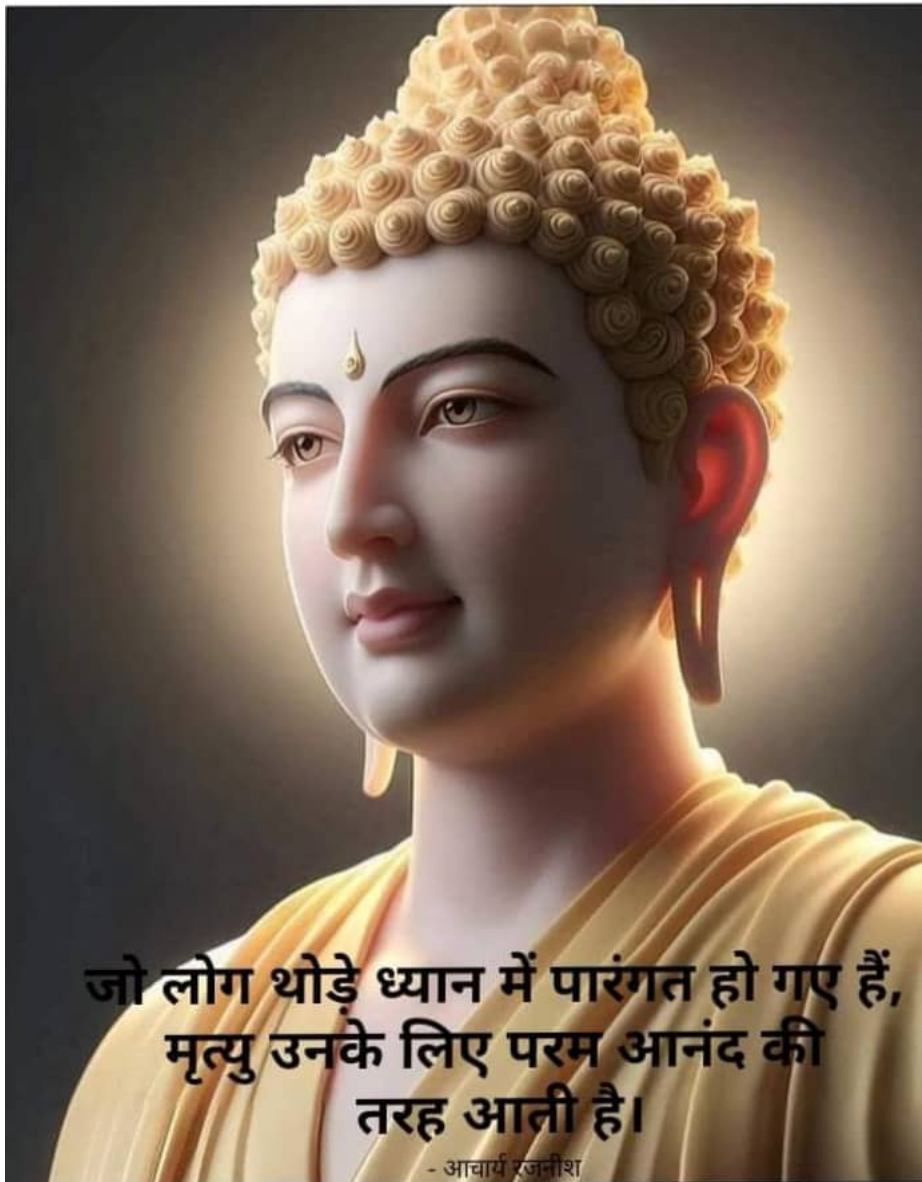
बातें कम, काम बड़े करो.. क्योंकि दुनिया को 🙌 ... more

छीन सकेगी।

हां, लेकिन अगर धन इकट्ठा किया, तिजोड़ी इकट्ठी की, मकान बनाया, और इसी में सब नियोजन कर दिया, तो जरूर डर लगेगा कि मौत आती है, धन भी छीन लेगी, मकान भी छीन लेगी। अगर देह को ही सजाते रहे, तो घबड़ाहट होगी कि मौत आती है, देह छीन लेगी, सब किया-कराया मिट्टी हो जाएगा।

कुछ ऐसा करो जो मौत न छीन सके! शून्य को मौत नहीं छीन सकती। ध्यान को मौत नहीं छीन सकती। तो जो ध्यान को कमा लेता है, वह मृत्यु के पार हो जाता है।

ओशो, प्रेम पंथ एसो कठिन-६





Punjabhai Bharadiya

6h · 🌐

जब बुद्ध मरने को हुए तो उन्होंने जो बात अपने शिष्यों से कही वह यही थी। उन्होंने कहा कि तुम्हें कुछ पूछना हो तो पूछ लो, अन्यथा मैं मृत्यु की तैयारी करूँ।

आनंद ने पूछा, मृत्यु की तैयारी! क्या आप चिता पर चढ़ना चाहते हैं? क्या आप अपने हाथ से मरना चाहते हैं?

नहीं, बुद्ध ने कहा कि मरने की तैयारी का अर्थ है कि मैं क्रमशः जैसे-जैसे मौत आए वैसे-वैसे ध्यान में उतरता जाऊँ। मौत शरीर को पकड़ ले, तो मैं ध्यान से शरीर को छोड़ दूँ। मौत मुझसे छीन न पाए शरीर को, उसके पहले मैं छोड़ दूँ।

इधर मौत छीनने को हो, उधर मैं पहले ही छोड़ दूँ। मौत मन को छीनना चाहे, उसके पहले मैं मन को छोड़ दूँ। मौत को कहने को यह न हो कि उसे मेहनत करनी पड़ी। मेरे साथ मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

मैं जीने की भी कला जानता हूँ और मरने की भी कला जानता हूँ। क्योंकि मैं जीवन के भी पार हूँ और मृत्यु के भी पार हूँ।

और उन्होंने यही किया। आंख बंद कर ली, शरीर छोड़ दिया। मौत को इतना भी अवसर न दिया। इतना भी श्रम करना पड़े मौत को। मन छोड़ दिया, भाव छोड़ दिया। तीनों तलों पर छोड़ दिया। और चौथे तल पर, अस्मिता के तल पर आखिरी छोड़ छोड़ दी। "मैं हूँ", यह बात भी छोड़ दी। शून्य हो गए।

मौत क्या छीनेगी अगर तुम शून्य होना जानते हो? अगर तुम शून्य होना जानते हो तो पूर्ण उतर आएगा तुम में। मौत तुमसे कुछ भी न छीन सकेगी।

हां, लेकिन अगर धन इकट्ठा किया, तिजोड़ी इकट्ठी की, मकान बनाया, और इसी में सब नियोजन कर दिया, तो जरूर डर लगेगा कि मौत आती है, धन भी छीन लेगी, मकान भी छीन लेगी। अगर

न बुद्ध

**आपसे हाथ जोड़कर कहेंगे कि
मैं बुद्ध हूँ मुझे मानो।**

न कृष्ण कहेंगे।

**इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि
आप मानते हैं कि नहीं मानते।
उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।**

**लेकिन आपका न मानना, आपके लिए अवरोध हो जाता है।
वे हैं या नहीं, यह भी गौण है, यह भी महत्वपूर्ण नहीं है।**

**अगर कोई व्यक्ति पत्थर को भी
भगवान मानकर चल पड़े,
तो पत्थर भगवान होगा कि नहीं होगा,
यह सवाल नहीं है,**

**वह आदमी जरूर ऊपर उठना शुरू हो जाएगा।
यह सवाल उस आदमी के अपने अंतर्विकास का है।
और हम जितने विराटतर को मान लेते हैं,
उतने विराटतर तक पहुंचने की
हमारी चेतना का मार्ग साफ हो जाता है।**

**आचार्य श्री रजनीशOsho
गीतादर्शन अ.9.प्र.4/103॥ विराट की अभीप्सा॥**

खुद से मिला नही और खुदा की बात करता है,
जिंदगी भर खुद को नजरअंदाज करता है ।





ओशो

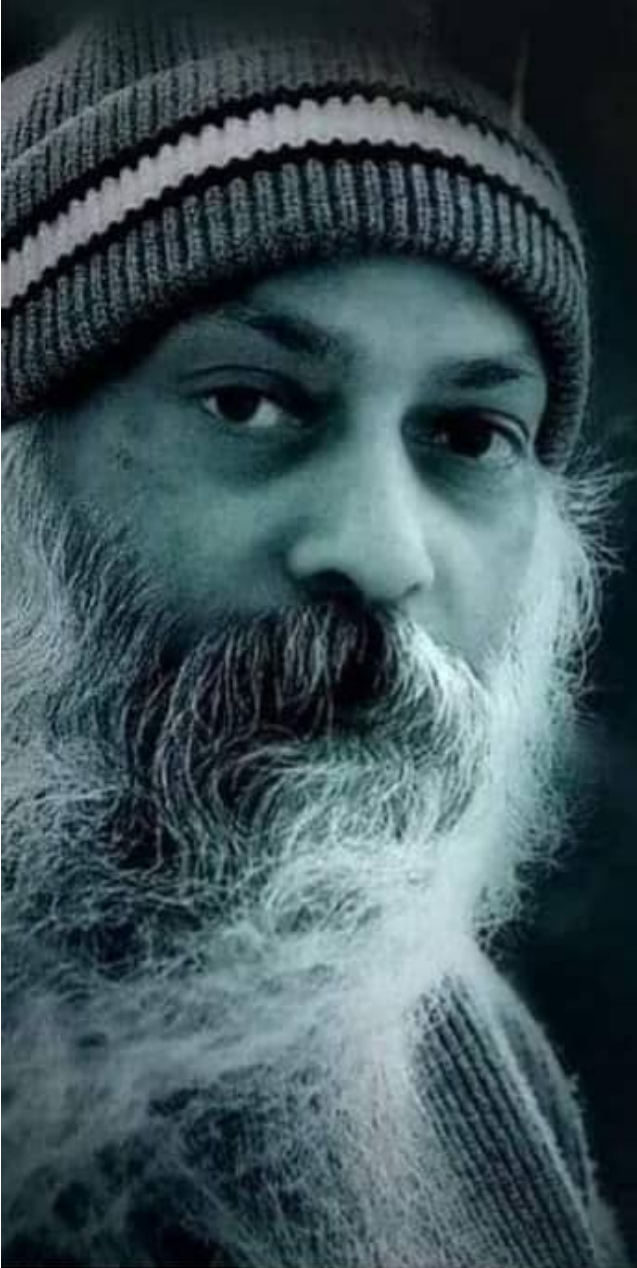


मेरे जीवन में जो कुछ भी हो रहा है, वो मेरी वजह से ही हो रहा है, ये सूत्र जिसकी समझ में आ गया, सिर्फ उसी व्यक्ति का धर्म में प्रवेश हो सकता है...

कोई कितना ही ध्यान करे, बुद्ध, महावीर, कृष्ण, गुरजीएफ या किसी को भी माने... धम्मपद, गीता, कुरान, पतंजलि किसीको भी कंठस्थ कर ले...लेकिन जब तक ये सूत्र उस की पकड़ में नहीं आया, वहां तक उस का धर्म में प्रवेश नहीं हो सकता

चौबीस घंटे कोई हमें
भीतर से देख रहा है।

- ओशो



सदगुरु वही है, जो पहले तुमसे सारा संसार छुड़ा दे और फिर स्वयं से भी तुमको छुड़ा दे। महावीर निश्चित सदगुरु थे, ऐसा वचन साधारण गुरु से नहीं निकल सकता। साधारण गुरु तो फिकर करते हैं: कहीं चले मत जाना, किसी और के पास मत पहुंच जाना, मुझे छोड़ मत देना। साधारण गुरु तो सब तरह से जकड़ते हैं। साधारण गुरु तो घबड़ाया रहता है कि शिष्य कहीं छोड़ न दे।

सदगुरु पूरी चेष्टा करता है कि पहले सब छोड़ दो, फिर अंततः मुझे भी छोड़ देना। ऐसे जैसे दीया जलता है, तुमने देखा? तो पहले तो ज्योति तेल को जलाती है; सारा तेल चुक जाता है। फिर ज्योति बाती को जलाती है; फिर बाती चुक जाती है। फिर ज्योति बुझ जाती है। फिर ज्योति स्वयं को जला लेती है। पहले तेल जला देती है, फिर बाती जला देती है, फिर स्वयं को जला लेती है। फिर परम शून्य हो जाता है। ऐसा सदगुरु। पहले संसार से छुड़ाता है। संसार से छुड़ाने के लिए नये-नये सिद्धांत देता है; ध्यान देता है; विचार देता है। फिर जब संसार छूट जाता है, तो इन सिद्धांतों और विचारों को छीनने लगता है; फिर विधि-विधान छीनने लगता है। जब विधि-विधान भी छूट जाता है--तेल भी जल गया, बाती भी जल गई--तो आखिरी संदेश वही है जो महावीर का, कि अब मुझे भी छोड़ दे। अब ज्योति अपने को जला लेती है और महाशून्य में लीन हो जाती है।

घाट तो छोड़ने ही पड़ेंगे। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि घाट बुरे हैं। तुम्हारे मन में यह सवाल उठता है कि घाट छोड़ने पड़ेंगे तो उनमें कुछ खराबी है। घाट में कोई खराबी नहीं; तुम्हारे पकड़ने में खराबी है।

ओशो... "अजहूं चेत गंवार -13"

**Osho janaki dhyana kendra**

3h · 🌐



महावीर की मृत्यु के समय ऐसी घटना घटी: उनका सबसे प्रधान शिष्य, गौतम दूसरे गांव प्रवचन के लिए गया था और महावीर का शरीर छूट गया। जब वह गांव की तरफ वापस लौट रहा था तो राहगीरों ने खबर दी: गौतम तू भी कैसा अभागा है! आज के दिन तू गया और भगवान ने देह छोड़ दी! तो वह रोने लगा। जीवन भर छाया की तरह उनके साथ चलता रहा और आज आखिरी घड़ी में साथ न जोड़ पाया। और रोने का और भी कारण था। वह छाती पीटने लगा। और उसने कहा कि मेरा क्या होगा? उनके रहते-रहते भी मैं अभी मुक्त नहीं हुआ। मेरा कल्मष अभी पूरा नहीं धुला। मेरा अंधेरा अभी रोशन नहीं हुआ। अभी मेरी जंजीरें कायम थीं। और उनके रहते-रहते भी न हो पाया तो अब मेरा क्या होगा? उनके बिना मेरा क्या होगा?

फिर उसने अपने आंसू पोंछे और उसने पूछा कि मेरे लिए कोई संदेश छोड़ गए हैं? तो उन्होंने कहा: हां, आखिरी संदेश तुम्हारे लिए ही छोड़ गए हैं। अंत में उन्होंने आंख खोली और कहा: गौतम को यह शब्द कह देना, यह मैं उसके लिए कहे जा रहा हूं। आज गौतम यहां नहीं है, ये शब्द उसके लिए छोड़े जाते हैं।

क्या कहा उन्होंने, गौतम पूछने लगा।

उन्होंने कहा: हम कुछ समझे नहीं। जो कहा, वे शब्द हम दोहरा देते हैं। लेकिन हम समझे नहीं कि मतलब क्या है? उन्होंने इतना ही कहा कि गौतम, तूने सब छोड़ दिया, अब मुझे क्यों पकड़े है? ये बड़े अदभुत शब्द हैं: तूने सब छोड़ दिया, अब मुझे क्यों पकड़े है? मुझे भी छोड़ और मुक्त हो जा।

और कहते हैं, उसी क्षण गौतम को ज्ञान हुआ। उसी क्षण ये शब्द सुन कर ज्ञान हुआ। उसे समझ में आ गई बात कि उसकी झंझट कहां रह गई थी। सब तो छोड़ दिया था उसने, लेकिन महावीर को पकड़ लिया था। संसार छोड़ दिया था, घाट पकड़ लिया था, तीर्थंकर को पकड़ लिया था।

सदगुरु वही है, जो पहले तुमसे सारा संसार छुड़ा दे और फिर स्वयं से भी तुमको छुड़ा दे। महावीर निश्चित सदगुरु थे, ऐसा वचन साधारण गुरु से नहीं निकल सकता। साधारण गुरु तो फिकर करते हैं: कहीं चले मत



सोने से पहले आखिरी बार क्या सोचते हैं?

सोने से पहले आपके अंतिम विचार मायने रखते हैं। क्या आप आज रात गहरी नींद सोना चाहते हैं? इसे आजमाएँ। जैसे ही आप अपना सिर बिस्तर पर टिकाएँ, अपनी आँखें बंद कर लें और उन सभी क्षणों के बारे में सोचें जब आपने किसी की मदद की या उसकी सेवा की और ऐसा करके आपको अपने बारे में अच्छा महसूस हुआ। आनंद के उस एहसास को अपने दिल में समाएँ और खुद को गहरी और खूबसूरत नींद को समर्पित कर दें।

यह न सिर्फ़ मेरे मामले में कारगर साबित हुआ है, बल्कि हमारे हजारों क्लाइंट्स को भी इससे लाभ हुआ है। यदि ये आपके लिए भी काम कर जाए, तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है! लेकिन, यदि ऐसा न भी हुआ, तो कम-से-कम आपने अपने लिए अच्छा तो महसूस किया। क्या अच्छी बात नहीं है? आज आपको अच्छी नींद आए।

जब बुद्ध मरने को हुए तो उन्होंने जो बात अपने शिष्यों से कही वह यही थी। उन्होंने कहा कि तुम्हें कुछ पूछना हो तो पूछ लो, अन्यथा मैं मृत्यु की तैयारी करूँ।

आनंद ने पूछा, मृत्यु की तैयारी! क्या आप चिता पर चढ़ना चाहते हैं? क्या आप अपने हाथ से मरना चाहते हैं?

नहीं, बुद्ध ने कहा कि मरने की तैयारी का अर्थ है कि मैं क्रमशः जैसे-जैसे मौत आए वैसे-वैसे ध्यान में उतरता जाऊँ। मौत शरीर को पकड़ ले, तो मैं ध्यान से शरीर को छोड़ दूँ। मौत मुझसे छीन न पाए शरीर को, उसके पहले मैं छोड़ दूँ।

इधर मौत छीनने को हो, उधर मैं पहले ही छोड़ दूँ। मौत मन को छीनना चाहे, उसके पहले मैं मन को छोड़ दूँ। मौत को कहने को यह न हो कि उसे मेहनत करनी पड़ी। मेरे साथ मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

मैं जीने की भी कला जानता हूँ और मरने की भी कला जानता हूँ। क्योंकि मैं जीवन के भी पार हूँ और मृत्यु के भी पार हूँ।

और उन्होंने यही किया। आंख बंद कर ली, शरीर छोड़ दिया। मौत को इतना भी अवसर न दिया। इतना भी श्रम करना पड़े मौत को। मन छोड़ दिया, भाव छोड़ दिया। तीनों तलों पर छोड़ दिया। और चौथे तल पर, अस्मिता के तल पर आखिरी छोड़ छोड़ दी। "मैं हूँ", यह बात भी छोड़ दी। शून्य हो गए।

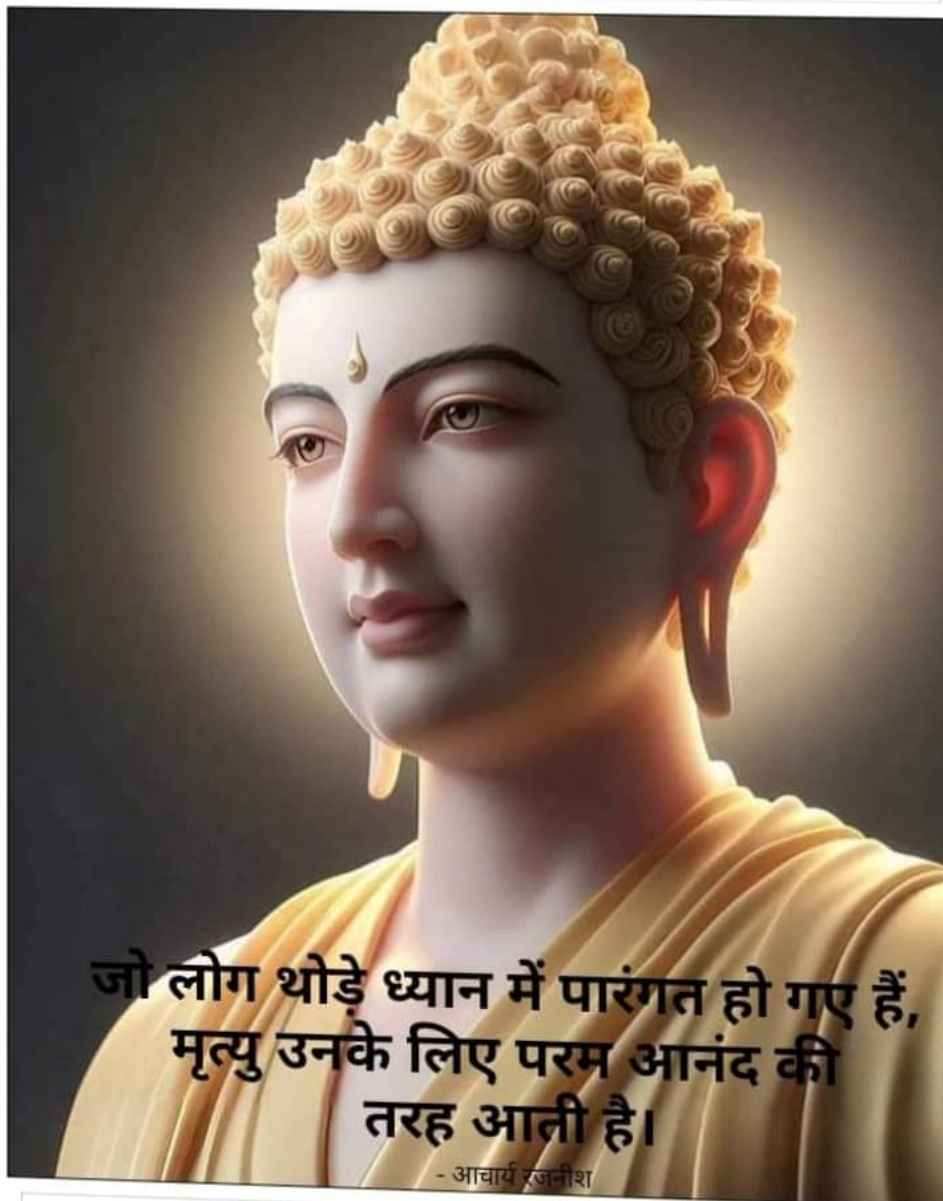
मौत क्या छीनेगी अगर तुम शून्य होना जानते हो? अगर तुम शून्य होना जानते हो तो पूर्ण उतर आएगा तुम में। मौत तुमसे कुछ भी न छीन सकेगी।

हां, लेकिन अगर धन इकट्ठा किया, तिजोड़ी इकट्ठी की, मकान बनाया, और इसी में सब नियोजन कर दिया, तो जरूर डर लगेगा कि मौत आती है, धन भी छीन लेगी, मकान भी छीन लेगी। अगर देह को ही सज्जते रहे तो घबड़ाहट होगी कि मौत आती है देह

हां, लेकिन अगर धन इकट्ठा किया, तिजोड़ी इकट्ठी की, मकान बनाया, और इसी में सब नियोजन कर दिया, तो जरूर डर लगेगा कि मौत आती है, धन भी छीन लेगी, मकान भी छीन लेगी। अगर देह को ही सजाते रहे, तो घबड़ाहट होगी कि मौत आती है, देह छीन लेगी, सब किया-कराया मिट्टी हो जाएगा।

कुछ ऐसा करो जो मौत न छीन सके! शून्य को मौत नहीं छीन सकती। ध्यान को मौत नहीं छीन सकती। तो जो ध्यान को कमा लेता है, वह मृत्यु के पार हो जाता है।

ओशो, प्रेम पंथ एसो कठिन-६



**जो लोग थोड़े ध्यान में पारंगत हो गए हैं,
मृत्यु उनके लिए परम आनंद की
तरह आती है।**

- आचार्य रजनीश



जीवन के लिए तुम्हारे मन में कोई धन्यवाद नहीं है, मृत्यु के लिए बड़ी शिकायत।
सुख के लिए कोई धन्यवाद नहीं है, दुख के लिए बड़ी शिकायत। तुम सुख के लिए कभी धन्यवाद देने मंदिर गए हो? दुख की शिकायत लेकर ही गए हो जब भी गए हो। जब भी तुमने परमात्मा को पुकारा है तो कोई दुख, कोई पीड़ा, कोई शिकायत। तुमने कभी उसे धन्यवाद देने के लिए भी पुकारा है? जो तुम्हें मिला है उसकी तरफ भी तुम पीठ किए खड़े हो। और इस कारण ही तुम्हें जो और मिल सकता है उसका भी दरवाजा बंद है।
ओशो ताओ उपनिषद- भाग--6 प्रवचन-124



जबकि ये हमारे ही भीतर ज्योति स्वरूप में मौजूद है।

गुरु नानक देव फरमाते हैं कि

"मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥"

लेकिन हर समय आकारों और विचारों के पीछे दौड़ने वाला यह चंचल मन इस विधि को नहीं जानता के अपने ही भीतर छुपे शाश्वत सत्य को राम को कैसे पहचानें।

यहाँ तक तो व्याख्या आप सबने पढ़ी होगी सुनी होगी लेकिन कबीर यहाँ नहीं रुकते कबीर आगे बढ़ते हैं ।

"चौथा छाड़ि जो पंचम ध्यावे, कहत कबीर सो हमको पावे॥"

जब हम घटाकाश में ,दिव्य आलोक में ध्यान लगाकर बैठने लगते हैं तो यही चंचल मन यही योनियों में भटकने वाला जीव आत्मस्वरूप होना शुरू हो जाता है।

इस अवस्था में मन उन्मन हो जाता है अर्थात् स्वयं में ठहर जाता है। साधक घटाकश की हदों को तोड़कर महाकाश में में विलीन हो जाता है तभी हमारा असली "होना" प्रकट हो जाता है ।साधक अपने मूल स्वभाव में लौट आता है यह मूल स्वभाव ही पांचवा राम है।

"कहत कबीर सो हमको पावे॥

यह मूल स्वभाव सब का एक जैसा है। चाहे वह कबीर दास, नानक देव, गोरख, बुद्ध, जीसस क्राइस्ट आदि कोई भी हों। साधक सभी को पा लेता है।

सभी मित्रों को सादर प्रणाम
आचार्य प्रेम आकाश

"एक राम का सकल पसारा।"

यह जो सकल पसारा है ये जो सृष्टि है ये जो प्रकृति है ये सारा मन
का ही विस्तार है ये पाँच तत्वों का ही विस्तार है।

"एक राम त्रिभुवन से न्यारा।।"

गुरु नानक देव कहते हैं कि

रागु धनासरी महला 1

"सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिस दै चानणि सभ महि चानणु
होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥"

वह जो तीनों से न्यारा राम है वह हमारे ही भीतर दिव्य आलोक के
रूप में मौजूद है।

ये घटाकाश का अनुभव है।

"तीन राम को सब कोई ध्यावे, चतुर्थ राम को मर्म न पावे।"

तीन तरह के राम को सब कोई मानते हैं

पहला है देहदारी राम

दूसरा है जीव

तीसरा है मन रूपी राम

"चतुर्थ राम को मर्म न पावे।"

कबीर कहते हैं ये जो चौथा राम है इसका मर्म कोई नहीं जानता
जबकि ये हमारे ही भीतर ज्योति स्वरूप में मौजूद है।

गुरु नानक देव फरमाते हैं कि

"मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥"

लेकिन हर समय आकारों और विचारों के पीछे दौड़ने वाला यह
चंचल मन इस विधि को नहीं जानता के अपने ही भीतर छुपे शाश्वत
सत्य को राम को कैसे पहचानें।



एक राम दशरथ का बेटा,
एक राम घट घट में बैठा।
एक राम का सकल पसारा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा।।

तीन राम को सब कोई ध्यावे, चतुर्थ राम को मर्म न पावे।
चौथा छाड़ि जो पंचम ध्यावे, कहत कबीर सो हमको पावे।।
(संत कबीर दास वाणी)

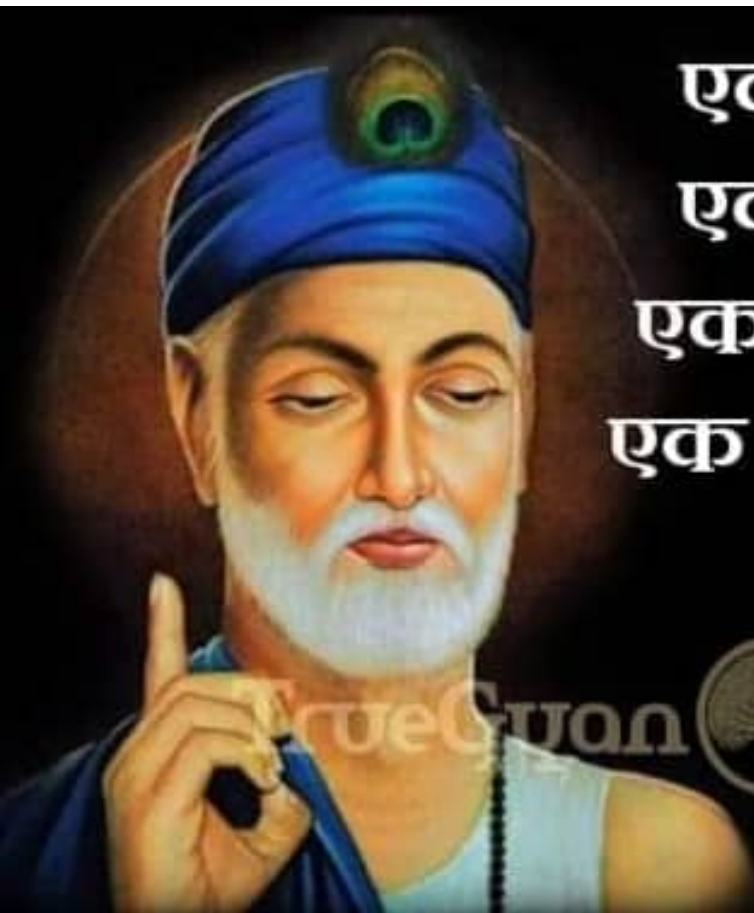
एक राम दशरथ का बेटा

संत कबीर दास पहचान कराते हैं कि ये शरीरधारी राम है ये देहधारी
राम है जिसने हमारी तरह माँ की कोख से जन्म लिया है हमारी
तरह ही जीवन में संघर्ष किया है उसकी मृत्यु भी हमारी तरह से ही
हो जाती है।

एक राम घट घट में बैठा

ये राम कौन सा है जो घट घट में बैठा है ?
ये है जीव जो कि आत्मलोक से आता है परम ज्ञान प्राप्त करने के
लिए लेकिन फिर आत्मलोक को वापस लौट जाता है।
अगर यह परम ज्ञान प्राप्त करने में सफल होता है फिर इसका कोई
जन्म नहीं कोई मृत्यु नहीं अगर यह असफल होता है तो इसको
इसके विचारों और कर्मों के हिसाब से अगली योनि में भेज दिया
जाता है।
हम अगला जन्म किस योनि में लेंगे ये हम स्वयं तय करते हैं कोई
परमात्मा तय नहीं करता कोई प्रकृति तय नहीं करती।
अगर हम रजस् गुण के बारे में ज्यादा विचार करते हैं तो हमें
भूमलोक में भेज दिया जाएगा यानी हम किसी पेड़ पौधे के रूप में
इसी धरती पर वापिस आ जाएंगे।

अगर हम तमस गुण का ज्यादा समय चिंतन करते तो हमें पानी के
योनियों में भेज दिया जाता है।



एक राम दशरथ का बेटा,
एक राम घट घट में बैठा !
एक राम का सकल पसारा,
एक राम त्रिभुवन से न्यारा !!

तीन राम को सब कोई धयावे,
चतुर्थ राम को मर्म न पावे।
चौथा छाड़ि जो पंचम धयावे,
कहे कबीर सो हम को पावे॥





Bsb Mahesh Singh plot Rohan...



Yesterday, 11:45 pm



काशी कोतवाल बाबा कालभैरव ...

बनारस

Reply





मंदिर गये पत्थर पडा था,
मस्जिद गये खाली पडा था,
चर्च गये सूली पर खड़ा था,
गुरुद्वार गये ढका हुआ था,

मगर

भीतर गये मालूम पड़ा,
वो अंग संग खड़ा था.!



शरीर और मन की वासना और इच्छा पूरी होने के बाद ही आत्मा की इच्छाएं उत्पन्न होती हैं। जिस व्यक्ति के शरीर और मन की अधूरी इच्छाएं हैं, उसके लिए आत्मा की प्यास होना बहुत कठिन है। क्योंकि आत्मा का संबंध परमात्मा और अस्तित्व से है प्रेम, ध्यान आध्यात्मिक इच्छाएं हैं। अस्तित्व इन सबसे परे है। प्रेम, ध्यान, समाधि कोई क्रिया नहीं है, फिर भी प्रयोग के लिए भाषा बोलनी पड़ती है। समाधि का अर्थ ही समाधान है। ओशो ने कहा है कि अष्टावक्र जनक से कहते हैं कि यह तुम्हारा भ्रम है कि तुम समाधि के कर्मकांड करते हो, समाधि प्रकृति है।

ओशो

अष्टावक्र महागीता



मुक्त तो वहीं हैं जिसकी कोई चाह नहीं, जो परमात्मा को भी चाहता नहीं, जो स्वर्ग भी चाहता नहीं, जिसने चाह की व्यर्थता समझ ली, की चाह भटकाती हैं, दौड़ाती है, जिसने चाह की ज्वर्ग्रस्तता समझ ली, जिसने चाह की विझिप्तता समझ ली, जिसने चाह को भर आँख देख लिया और चाह को गिर जाने दिया और नई चाह नहीं उठाई। जो ऐसा चाह शून्य हो जाता है उसे परमात्मा मिलता है। उससे मिला ही हुआ है।
ओशो - मरौ हे जोगी मरौ
ओशो मधुशाला ग्रुप

जिस दिन आप ने
सोच लिया कि
आपने ज्ञान पा
लिया है, उस दिन
आपकी मृत्यु हो
जाती है क्योंकि अब ना
कोई आश्चर्य होगा,
ना कोई आनंद और
ना कोई अचरज, अब आप
एक मृत जीवन जियेंगे

धन कमाना हो, यश कमाना हो, पदों की सीढ़ियां चढ़नी हों,
तो भविष्य के बिना कोई उपाय नहीं। टाइम विल बी नीडेड।
भविष्य चाहिए, नहीं तो कुछ भी न हो सकेगा।
लेकिन यदि संन्यास लेना हो,
तो भविष्य की कोई भी जरूरत नहीं है।
इसी क्षण घट सकता है, क्योंकि संन्यास निपट निजी है।
उसका इस जगत में किसी से कोई संबंध नहीं है।
और अगर धन मैं कमाना चाहूं,
तो मेरे पास जितना धन बढ़ेगा,
किसी के पास कम होगा।
या किसी के पास ज्यादा हो सकता था,
तो मैं छीनूंगा। कहीं न कहीं,
कोई न कोई वंचित होगा।
लेकिन अगर मैं संन्यास लेता हूं,
दुनिया में कहीं भी कोई वंचित नहीं होता।
शायद मेरे संन्यास लेने से दुनिया में
बहुत कुछ समृद्धि भला आ जाए,
लेकिन कहीं कोई वंचित नहीं होता है।
क्योंकि संन्यास कोई कमोडिटी नहीं है,
कोई वस्तु नहीं है कि कम हो जाएगी।
फिर संन्यास कोई संसार का हिस्सा
नहीं है कि मैं उसकी योजना करूं
और कल और परसों, और
वर्ष और दो वर्ष, और प्रतीक्षा करूं।

**संन्यास एक घटना है,
जो उस काल-क्षण में घटती है,
जो अभी और यहीं है।**

आचार्य श्री रजनीश Osho
गीता दर्शन अ. 8 प्र. 9/97

जीवन ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन-उत्तरायण पथ



संसार एक पड़ाव है;
और पड़ाव पर कभी शांति नहीं
हो सकती। थोड़ी देर विश्राम हो
सकता है, लेकिन आनंद नहीं
हो सकता। और विश्राम का तो
इतना ही अर्थ है कि फिर हम
श्रम करने को तैयार हुए, फिर
यात्रा के लिये पैर तैयार हैं। यह
हमारा घर नहीं। जहां हम ठहरे
हैं, वह धर्मशाला हो सकती है,
अतिथि-गृह हो सकता है।
लेकिन यह घर हमारा नहीं है।
हम परदेस में हैं। और इसीलिये
हम बेचैन हैं। और जब तक घर
न मिल जाए पुनः तब तक
बेचैनी जारी रहेगी।
घर की खोज ही धर्म है।

ओशो : बिन बाती बिन तेल

आश्चर्य की बात है कि
इतने लोग जमीन पर
बिना सुख पाये कैसे जी लेते हैं!
फिर भी उनके
जीवन में खोज पैदा नहीं होती ।
यह चमत्कार है ।
किसलिए जी रहे हो?
और अगर जीवन रोज हाथ से निकलता
जा रहा है, जो की निकलता जा रहा है:
रोज जीवन कम होता जा रहा है,
प्रतिपल तुम्हारी मौत आ रही है।
तो तुम कब की प्रतीक्षा कर रहे हो?
कब तुम्हारी खोज शुरू होगी?
तुम्हें कुछ भी नहीं मिला है
लेकिन
तुम समय को खोये जा रहे हो ।



बुद्ध की इस कथा में सर्प का प्रयोग हो रहा है इस अर्थ में कि सबकी दशा ऐसी है। कि हम जन्म से ही जहर की ग्रंथि लेकर पैदा हुए। दूसरे को चोट पहुंचाने में ही समाप्त हुए जा रहे हैं। दूसरे को मार डालने में ही हमने अपना जीवन समझा है। इसलिए। लेकिन एक दिन सर्प भी थक जाता है। तुम कब थकोगे? एक दिन सर्प भी बुद्ध से पूछता है कि मैं कब तक ऐसे ही सरकता रहूंगा! तुम कब पूछोगे? इसलिए प्रतीक चुना।

हिंदुओं ने प्रतीक चुना है कि सर्प जब खड़ा हो जाता है. तो सर्प की बड़ी खूबियां हैं, उसमें हड्डी होती नहीं। उसके पास हड्डी बिल्कुल नहीं है, लेकिन सर्प खड़ा हो जाता है बिना हड्डी के। होना नहीं चाहिए वैज्ञानिक ढंग से, लेकिन सर्प पूंछ के बल खड़ा हो जाता है, फन उठाकर। और उसके पास कोई हड्डी नहीं है। तो चमत्कार है। ऐसा ही चमत्कार मनुष्य के भीतर घटता कि जो ऊर्जा काम ग्रंथि में पड़ी है, बिना किसी सहारे के, बेसहारे, बिना माध्यम खड़ी हो जाती है, सर्प जैसी। फन जाकर चोट करता है ऊपर और आखिरी 'खुल जाता है। इसलिए हिंदुओं ने उसका वैसा प्रयोग कर लिया है। लेकिन सर्प का प्रयोग प्रतीकात्मक है। ये सूत्र बुद्ध ने सर्प को कहे थे। सभी सूत्र बुद्धों ने सर्पों को कहे हैं। क्योंकि मनुष्य अभी सर्प ही है। और इन सर्पों में भी कुछ कम, थोड़े से भाग्यवान सर्प पूछते हैं। नहीं तो पूछते ही नहीं। वे तो सोचते हैं, जैसा जी रहे हैं, वही ठीक है।

ऐसा जब तुम्हें दिखायी पड़ जाए कि सरकते सरकते वीरान रास्तों पर थक गए हो, तब तुम किसी बुद्ध के चरणों में सिर झुकाकर पूछते हो, अब क्या करें? क्या सर्प ही बने रहेंगे हम, या उठने का कोई उपाय है?

उपाय है: सुख मत खोजो, दुख को देखो, दुख का कारण खोजो, दुख का कारण जानते दुख से मुक्त होने का उपाय मिल जाता, उपाय मिलते ही कौन नासमझ होगा जो उसका उपयोग न कर ले! उपयोग होते ही दुख निरोध हो जाता है। वही दशा निर्वाण की है।

ओशो; एस धम्मो सनंतनो



ईसाई कहते हैं कि सर्प ने भटकाया आदमी को। ईव को समझाया कि खा ले यह फल जो भगवान ने वर्जित किया है। ईव को फुसलाया सर्प ने। बुद्ध की इस कथा में सर्प कहता है कि कब तक मैं सरकता रहूंगा जमीन पर? हिंदू कहते हैं, कुंडलिनी जो ऊर्जा है मनुष्य के भीतर, वह सर्पाकार है। वह सर्प जैसी है। जब उठती है फन उठाकर तो उसका फन जब चोट करता है सहस्रार में तो सारे कमल खिल जाते हैं।

सर्प का प्रतीक आदमी के बहुत करीब है। उसमें कई खूबियां हैं। पहली बात, उसकी खूबी है कि सर्प बहुत चालाक। उस चालाकी के कारण ईसाइयों ने उसका प्रतीक बनाया कि उसने स्त्री को भ्रमाया, ईव को समझाया और अदम को ईश्वर की बगावत में जाने का प्रोत्साहन दिया। सर्प बड़ा शैतान, क्योंकि बड़ा चालाक प्राणी है। बड़ा चालबाज। भरोसे का नहीं। उस प्रतीक का उपयोग किया।

बुद्ध की इस कथा में सर्प का प्रयोग हो रहा है इस अर्थ में कि सबकी दशा ऐसी है। कि हम जन्म से ही जहर की ग्रंथि लेकर पैदा हुए। दूसरे को चोट पहुंचाने में ही समाप्त हुए जा रहे हैं। दूसरे को मार डालने में ही हमने अपना जीवन समझा है। इसलिए। लेकिन एक दिन सर्प भी थक जाता है। तुम कब थकोगे? एक दिन सर्प भी बुद्ध से पूछता है कि मैं कब तक ऐसे ही सरकता रहूंगा! तुम कब पूछोगे? इसलिए प्रतीक चुना।

हिंदुओं ने प्रतीक चुना है कि सर्प जब खड़ा हो जाता है. तो सर्प की बड़ी खूबियां हैं, उसमें हड्डी होती नहीं। उसके पास हड्डी बिलकुल नहीं है, लेकिन सर्प खड़ा हो जाता है बिना हड्डी के। होना नहीं चाहिए वैज्ञानिक ढंग से, लेकिन सर्प पूंछ के बल खड़ा हो जाता है, फन उठाकर। और उसके पास कोई हड्डी नहीं है। तो चमत्कार है। ऐसा ही चमत्कार मनुष्य के भीतर घटता कि जो ऊर्जा काम ग्रंथि में पड़ी है, बिना किसी सहारे के, बेसहारे, बिना माध्यम खड़ी हो जाती है, सर्प जैसी। फन जाकर चोट करता है ऊपर और आखिरी 'खुल जाता है। इसलिए हिंदुओं ने उसका वैसा प्रयोग कर लिया है। लेकिन सर्प का प्रयोग प्रतीकात्मक है। ये सूत्र बुद्ध ने सर्प को कहे थे। सभी सूत्र बुद्धों ने सर्पों को कहे हैं। क्योंकि मनुष्य अभी सर्प ही है। और इन सर्पों में भी कुछ कम, थोड़े से भाग्यवान सर्प पूछते हैं। नहीं तो पूछते ही नहीं। वे तो सोचते हैं, जैसा जी रहे हैं, वही ठीक है।



ओशो का हिन्दी साहित्य

Kunal Pandey · 6h ·



बुद्ध और सर्पराज

जंगल में बुद्ध बैठे हैं ध्यान करने और एक सर्पराज सर्पों का राजा फन फैलाकर खड़ा हो गया। उसने झुककर बुद्ध के चरणों में प्रणाम किए। बुद्ध ने आंख खोली उन्होंने कहा महाराज क्योंकि देखा उसके माथे पर अदभुत मणि है जो सिर्फ नागों में सम्राटों के माथे पर होती है तो बुद्ध ने कहा महाराज क्या चाहते हैं? तो उस नाग ने कहा मैं जन्मों जन्मों से भटक रहा हूं। जो भी किया सब उलटा चला गया। कब तक सरकता रहूंगा जमीन पर? कब तक सरकता रहूंगा खाई खंदकों में अंधेरी गलियों में? कब तक सरकता रहूंगा? कब उठूंगा? कब उड़ सकूंगा? तुम्हें मैंने उड़ते देखा। तुम्हारे प्राणों की ऊर्जा को कहीं जाते देखा। इसलिए पूछता हूं मुझे कुछ उपदेश है?

‘सभी पापों का न करना, पुण्यों का संचय करना और अपने चित्त का शोधन करते रहना, यही बुद्धों का शासन है।’

‘तितिक्षा और क्षांति परम तप हैं, बुद्ध निर्वाण को परम रहते हैं, दूसरों का घात करने वाला प्रवर्जित नहीं होता और दूसरों को सताने वाला श्रमण नहीं है।’

‘निंदा न करना, घात न करना, पातिमोक्ष में सम्बर रखना, भोजन में मात्रा जानना, एकातवास करना और चित्त योग में लगाना यही बुद्धों का शासन है।’ ये उस सर्पराज को कहे गए थे।

सोचना इसे थोड़ा। हम भी सब जमीन पर सरकते हुए सर्प हैं। अभी हमने सिर भी उठाकर कहां आकाश की तरफ देखा? अभी तो अंधी गलियो कूचों में, पोलों में, कोने कातते में हम सरकते फिरते हैं। फिर सर्प का प्रतीक ही क्यों चुना होगा? क्योंकि सर्प जन्म से ही दूसरे को चोट पहुंचाने का जहर लेकर आता है, इसलिए। उसके जहर की गांठ जन्म से ही उसके भीतर है। वह दूसरे को मारने में ही, दूसरे का घात करने में ही रस लेता है। यही तो गांठ हम भी लेकर आए हुए हैं। यह प्रतीक प्यारा है। और सर्प का प्रतीक सारे धर्मों ने चुना है। उसमें कुछ कारण है।

facebook



सत्य को जानने के पूर्व स्वयं को जानना तो अनिवार्य ही है।

और स्वयं को जानते ही जाना जाता है कि अब कुछ और जानने को शेष नहीं है।

आत्मज्ञान की कुंजी के पाते ही सत्य का ताला खुल जाता है।

सत्य तो सब जगह है। समग्र सत्ता में वही है। किन्तु उस तक पहुंचने का निकटतम मार्ग स्वयं में ही है। स्वयं की सत्ता ही चूंकि स्वयं के सर्वाधिक निकट है, इसलिए उसमें खोजने से ही खोज होनी सम्भव है।

और जो स्वयं में ही खोजने में असमर्थ है, जो निकट ही नहीं खोज पाता है तो दूर कैसे खोज पाएगा? दूर की खोज का विचार निकट की खोज से बचने का उपाय भी हो सकता है।

संसार की खोज चलती है ताकि स्वयं से बचा जा सके और फिर ईश्वर की खोज चलते लगती है। क्या स्वयं के अतिरिक्त शेष सब खोजें स्वयं से पलायन की ही विधियां नहीं हैं?

भीतर देखें। वहां क्या दिखता है? अंधकार, अकेलापन, रिक्तता? क्या इस अंधकार, इस अकेलेपन, इस रिक्तता से भागकर ही हम कहीं शरण लेने को नहीं भागते रहते हैं? किन्तु इस भांति के भगोड़ेपन से दुख के अतिरिक्त और कुछ भी हाथ नहीं लगता है। स्वयं से भागे हुए के लिए विफलता ही भाग्य है। क्योंकि जो खोज स्वयं से पलायन है, वह कहीं भी नहीं ले जा सकती है।

और दो ही विकल्प हैं : स्वयं से भागो या स्वयं में जागो। भागने के लिए बाहर लक्ष्य होना चाहिए और जानने के लिए बाहर के सभी लक्ष्यों की सार्थकता का श्रम—भंग।

ओशो,

मैं कहता आंखन देखी-११

अन्ततः मैंने उनसे कहा— 'जो तुम मुझसे पूछते हो, वही किसी ने श्री रमण से पूछा था। श्री रमण ने कहा था : 'ईश्वर के दर्शन? नहीं, नहीं, दर्शन नहीं हो सकते। लेकिन चाहो तो स्वयं ईश्वर अवश्य हो सकते हो।' यही मैं तुमसे कहता हूं। ईश्वर को पाने और जानने की खोज बिलकुल ही अर्थहीन है। जिसे खोया ही नहीं है, उसे पाओगे कैसे? और जो तुम स्वयं ही हो, उसे जानोगे कैसे?

वस्तुतः जिसे हम देख सकते हैं, वह हमारा स्वरूप नहीं हो सकता। दृश्य बन जाने के कारण ही वह हमसे बाहर और पर हो जाता है। परमात्मा है हमारा स्वरूप और इसलिए उसका दर्शन असंभव है। मित्र, परमात्मा के नाम से जो दर्शन होते हैं, वे हमारी ही कल्पनाएं हैं। मनुष्य का मन किसी भी कल्पना को आकार देने में समर्थ है। किन्तु इन कल्पनाओं में खो जाना सत्य से भटक जाना है।

यह घटना मुझे अनायास याद हो आई है क्योंकि आप भी तो ईश्वर के दर्शन करना चाहते हैं। उसी संबंध में कुछ कहूं इसलिए ही आप यहां एकत्र हुए हैं।

मैं स्वयं भी ऐसे ही खोजता था। फिर खोजते—खोजते, खोज की व्यर्थता शात हुई। ज्ञात हुआ कि जो खोज रहा है, जब मैं उसे ही नहीं जानता हूं तो इस अज्ञान में डूबे रहकर सत्य को कैसे जान सकूंगा?

सत्य को जानने के पूर्व स्वयं को जानना तो अनिवार्य ही है।

और स्वयं को जानते ही जाना जाता है कि अब कुछ और जानने को शेष नहीं है।

आत्मज्ञान की कुंजी के पाते ही सत्य का ताला खुल जाता है।

सत्य तो सब जगह है। समग्र सत्ता में वही है। किन्तु उस तक पहुंचने का निकटतम मार्ग स्वयं में ही है। स्वयं की सत्ता ही चूंकि स्वयं के सर्वाधिक निकट है, इसलिए उसमें खोजने से ही खोज होनी सम्भव है।

और जो स्वयं में ही खोजने मैं असमर्थ है, जो निकट ही नहीं खोज पाता है तो दूर कैसे खोज पाएगा? दूर की खोज का विचार निकट की खोज से बचने का उपाय भी हो सकता है।



ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 3h ·



एक रात्रि की बात है।

पूर्णिमा थी, मैं नदी तट पर था, अकेला आकाश को देखता था। दूर-दूर तक सन्नाटा था। फिर किसी के पैरो की आहट पीछे सुनाई पड़ी। लौटकर देखा, एक युवा साधु खड़े थे। उनसे बैठने को कहा। बैठे, तो देखा कि वे रो रहे हैं। आंखों से झर-झर आंसू गिर रहे हैं। उन्हें मैंने निकट ले लिया।

थोड़ी देर तक उनके कंधे पर हाथ रखे मैं मौन बैठा रहा। न कुछ कहने को था, न कहने की स्थिति ही थी, किन्तु प्रेम से भरे मौन ने उन्हें आश्चस्त किया। ऐसे कितना समय बीता कुछ याद नहीं। फिर अन्ततः उन्होंने कहा, 'मैं ईश्वर के दर्शन करना चाहता हूँ। कहिए क्या ईश्वर है या कि मैं मृगतृष्णा में पड़ा हूँ।'

मैं क्या कहता? उन्हें और निकट ले लिया। प्रेम के अतिरिक्त तो किसी और परमात्मा को मैं जानता नहीं हूँ। प्रेम को न खोजकर जो परमात्मा को खोजता है, वह भूल में ही पड़ जाता है।

प्रेम के मन्दिर को छोड़कर जो किसी और मन्दिर की खोज में जाता है, वह परमात्मा से और दूर ही निकल जाता है।

किन्तु यह सब तो मेरे मन में था। वैसे मुझे चुप देखकर उन्होंने फिर कहा. 'कहिए—कुछ तो कहिए। मैं बड़ी आशा से आपके पास आया हूँ। क्या आप मुझे ईश्वर के दर्शन नहीं करा सकते?'

फिर भी मैं क्या कहता? उन्हें और निकट लेकर उनकी आंसुओं से भरी आंखें चूम लीं। उन आंसुओं में बड़ी आकांक्षा थी, बड़ी अभीप्सा थी। निश्चय ही वे आंखें परमात्मा के दर्शन के लिए बड़ी आकुल थीं। लेकिन, परमात्मा क्या बाहर है कि उसके दर्शन किए जा सकें? परमात्मा इतना भी तो पराया नहीं है कि उसे देखा जा सके!

अन्ततः मैंने उनसे कहा— 'जो तुम मुझसे पूछते हो, वही किसी ने श्री रमण से पूछा था। श्री रमण ने कहा था : 'ईश्वर के दर्शन? नहीं, नहीं, दर्शन नहीं हो सकते। लेकिन चाहो तो स्वयं ईश्वर अवश्य हो सकते हो।' यही मैं तमसे कहता हूँ। ईश्वर को पाने और जानने की गतित निरन्तर ही

अन्ततः मैंने उनसे कहा— 'जो तुम मुझसे पूछते हो, वही किसी ने श्री रमण से पूछा था। श्री रमण ने कहा था : 'ईश्वर के दर्शन? नहीं, नहीं, दर्शन नहीं हो सकते। लेकिन चाहो तो स्वयं ईश्वर अवश्य हो सकते हो।' यही मैं तुमसे कहता हूँ। ईश्वर को पाने और जानने की खोज बिलकुल ही अर्थहीन है। जिसे खोया ही नहीं है, उसे पाओगे कैसे? और जो तुम स्वयं ही हो, उसे जानोगे कैसे?

वस्तुतः जिसे हम देख सकते हैं, वह हमारा स्वरूप नहीं हो सकता। दृश्य बन जाने के कारण ही वह हमसे बाहर और पर हो जाता है। परमात्मा है हमारा स्वरूप और इसलिए उसका दर्शन असंभव है। मित्र, परमात्मा के नाम से जो दर्शन होते हैं, वे हमारी ही कल्पनाएं हैं। मनुष्य का मन किसी भी कल्पना को आकार देने में समर्थ है। किन्तु इन कल्पनाओं में खो जाना सत्य से भटक जाना है।

यह घटना मुझे अनायास याद हो आई है क्योंकि आप भी तो ईश्वर के दर्शन करना चाहते हैं। उसी संबंध में कुछ कहूँ इसलिए ही आप यहां एकत्र हुए हैं।

मैं स्वयं भी ऐसे ही खोजता था। फिर खोजते—खोजते, खोज की व्यर्थता शात हुई। ज्ञात हुआ कि जो खोज रहा है, जब मैं उसे ही नहीं जानता हूँ तो इस अज्ञान में डूबे रहकर सत्य को कैसे जान सकूंगा?

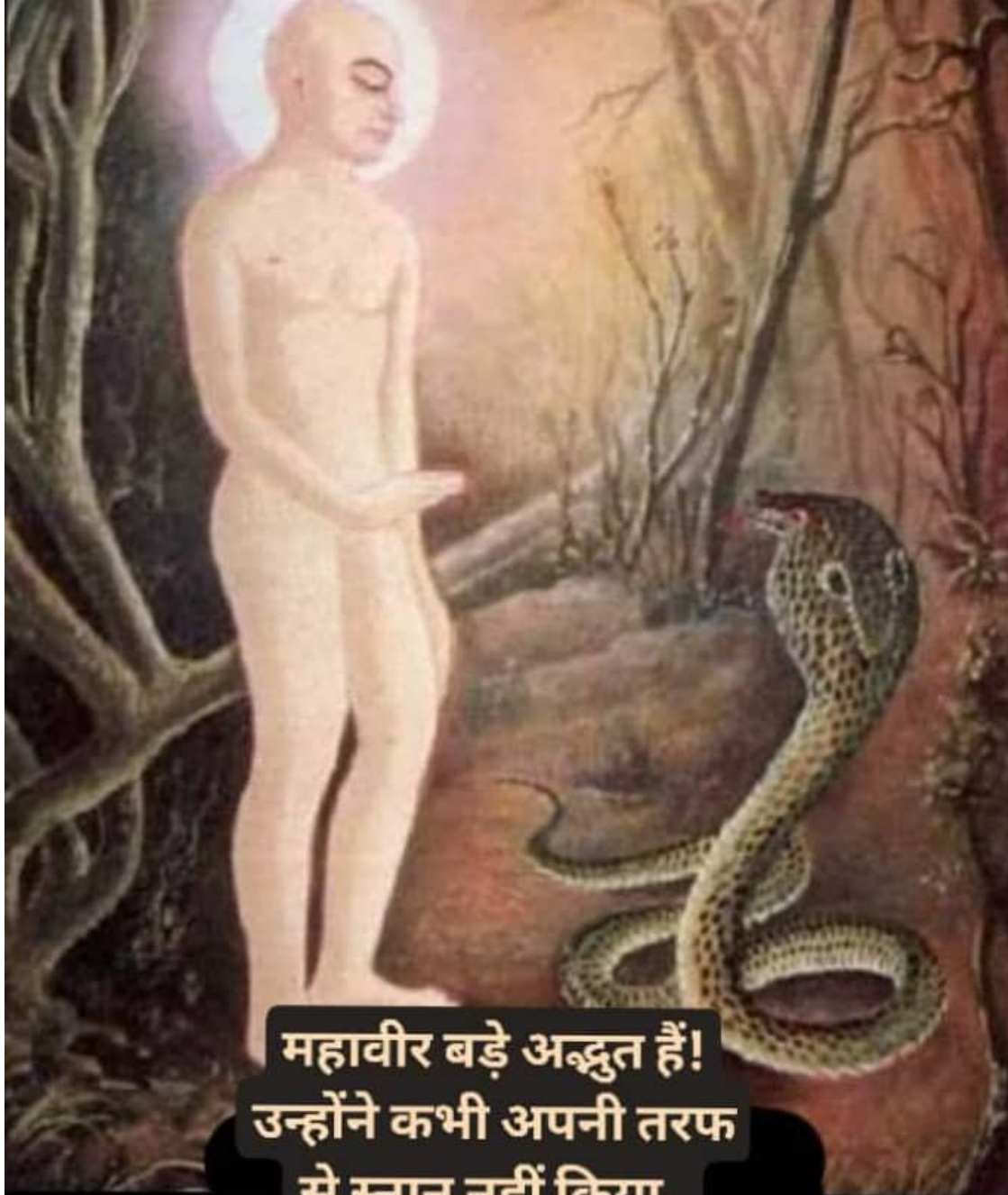
सत्य को जानने के पूर्व स्वयं को जानना तो अनिवार्य ही है।

और स्वयं को जानते ही जाना जाता है कि अब कुछ और जानने को शेष नहीं है।

आत्मज्ञान की कुंजी के पाते ही सत्य का ताला खुल जाता है।

सत्य तो सब जगह है। समग्र सत्ता में वही है। किन्तु उस तक पहुंचने का निकटतम मार्ग स्वयं में ही है। स्वयं की सत्ता ही चूंकि स्वयं के सर्वाधिक निकट है, इसलिए उसमें खोजने से ही खोज होनी सम्भव है।

और जो स्वयं में ही खोजने में असमर्थ है, जो निकट ही नहीं खोज पाता है तो दूर कैसे खोज पाएगा? दूर की खोज का विचार निकट की खोज से बचने का उपाय भी हो सकता है।



महावीर बड़े अद्भुत हैं!
उन्होंने कभी अपनी तरफ
से स्नान नहीं किया,
"वर्षा का पानी जितना
धुला देता...,, नाह लेते थे!
लेकिन बड़ी मजेदार.

बात यह है कि,
फिर भी महावीर के शरीर
से कभी, "पसीने की दुर्गंध
नहीं आती थी.!!

ओशो

हर चीज़ का वक़्त तय है,
हर जगह तय है
आप कहीं पर पहुँचते नहीं,
पहुँचाए जाते हो,
खेल तुम नहीं रहे,
खेल तो वो रहा है.

★ Send a gift



shri premanand Maha...

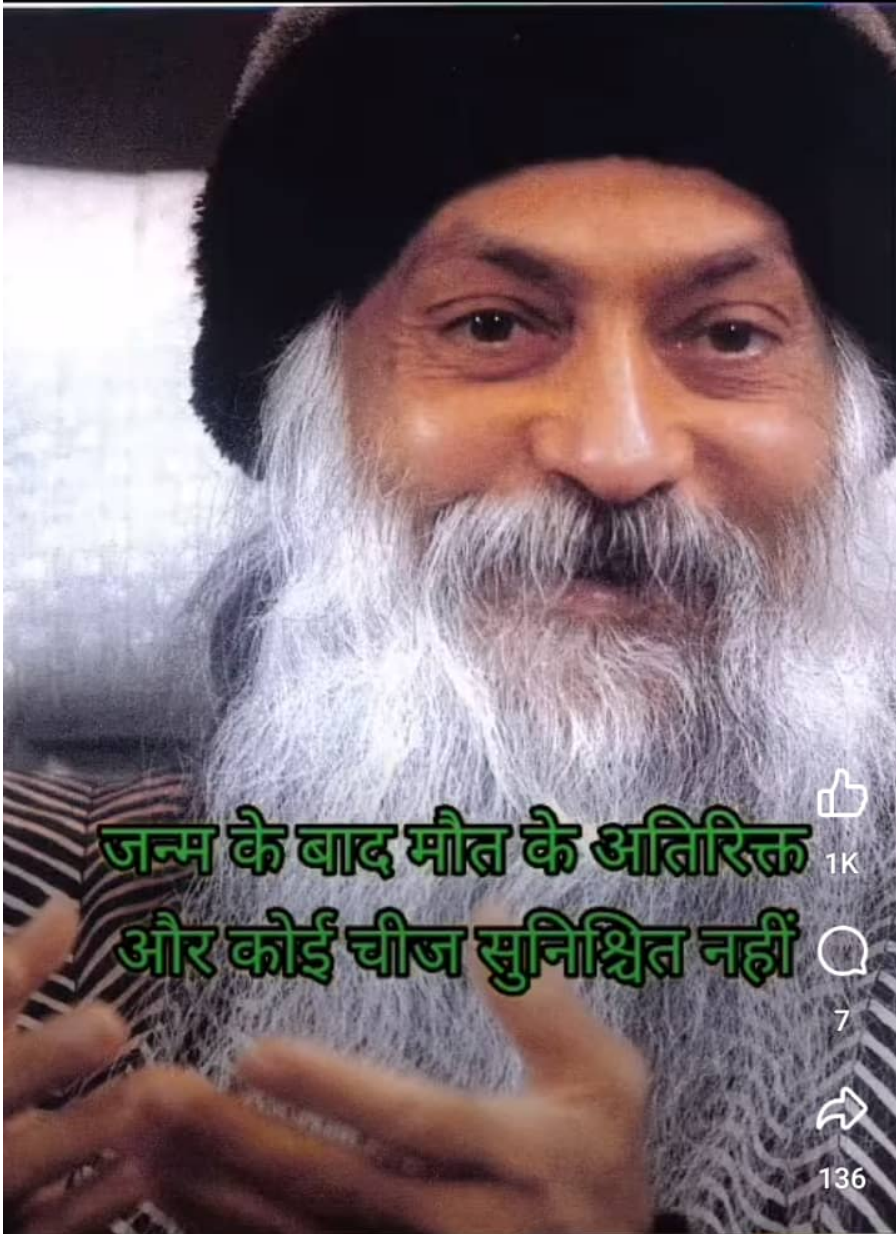
Follow

Abhinash Sony commented: Radha Radha RADHA
Radha Radha Radha Radha Radha Radha Radha R...

←

मन मक्का दिल द्वारिका,
काया कासी जान।
दस द्वारै का देहरा,
तामै ज्योति पीछान।।





जन्म के बाद मौत के अतिरिक्त
और कोई चीज सुनिश्चित नहीं



1K



7



136



Send



Sapna Meena

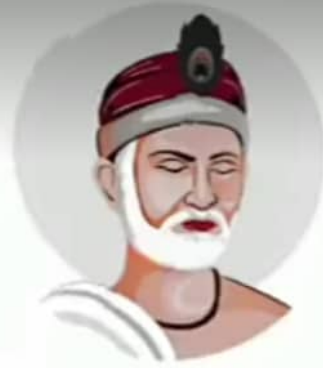
Follow

मौत के अतिरिक्त कुछ भी सुनिश्चित नहीं है #osho ... more



Add a comment...





"मुरदे को भी देत है
कपड़ा पानी आग
जीवत नर चिंता करै,
ताका बड़ा अभाग।"



2K



23



217



Send



Kabir Is God

Follow

Santosh Baman commented: संत रामपाल जी महाराज
कि जय हो

Add a comment...



CamScanner

साक्षी की साधना

फिल्म में भी हम साक्षी नहीं रह पाते हैं,
तो जिंदगी में साक्षी रहना कठिन पड़ेगा।
वैसे जिंदगी भी फिल्म से बहुत ज्यादा नहीं है
और अगर बहुत गहरे में देखें तो
जिंदगी भी पर्दे से बहुत ज्यादा नहीं है।
और अगर बहुत गहरे में देखें तो
जिस भांति किरणों का जाल फिल्म के
पर्दे पर प्रकट होता है, उसी तरह
विद्युत का जाल जिंदगी में भी
प्रकट हुआ है।

यह सब भी सघन विद्युत का जाल है।
यह सब भी इलेक्ट्रॉंस का बड़ा खेल है।

उन्माद ओशो

समूह

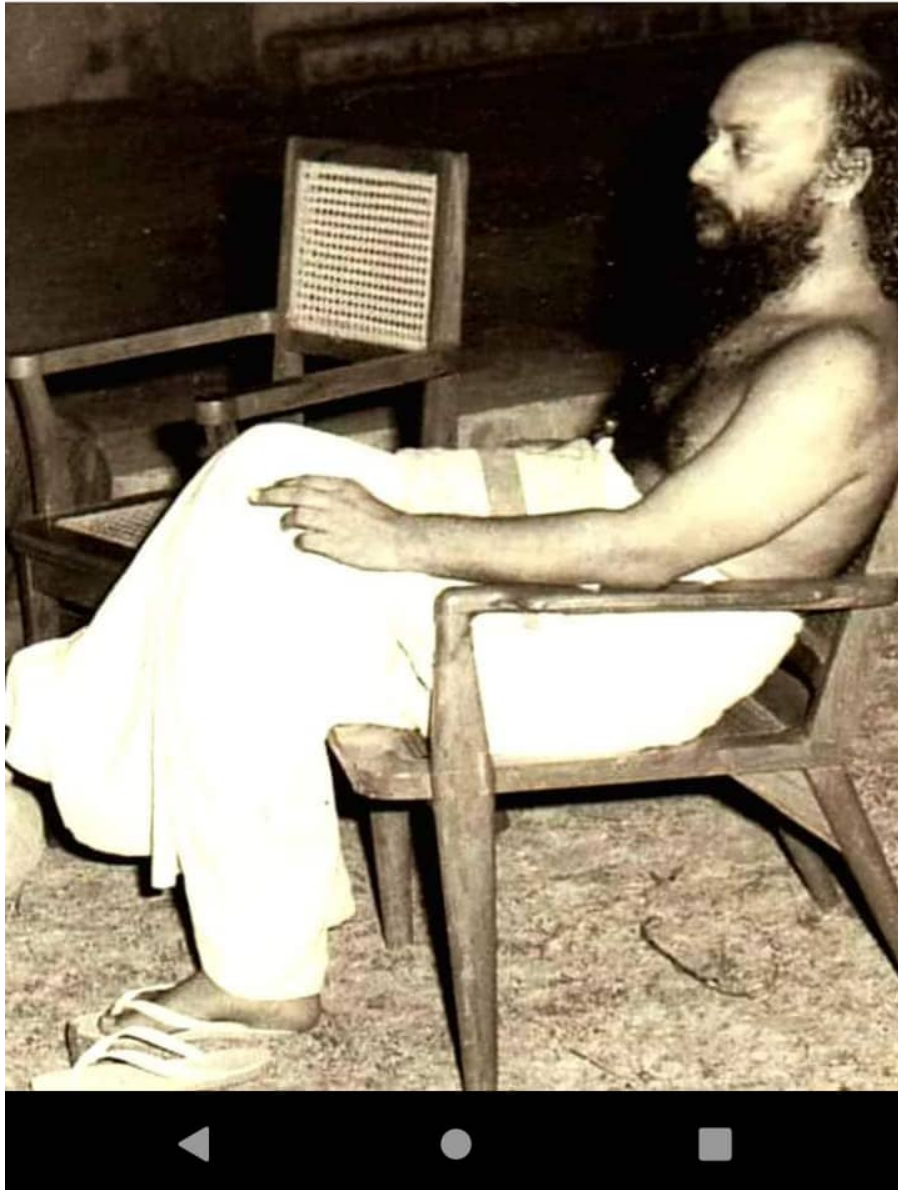
मैं मृत्यु सिखाता हूँ प्र. 12

Osho

वह जो मैंने कल कहा उस बात को समझ लेना जरूरी है। मैंने कल कहा कि मनुष्य के व्यक्तित्व में सात केंद्र हैं, सात चक्र हैं। और जो केंद्र सक्रिय होता है वह अपने अनुकूल चारों तरफ से सब कुछ खींच लेता है। केंद्र एक रिसेप्टिविटी बन जाता है, एक ग्राहकता बन जाता है। अगर क्रोध का केंद्र सक्रिय है, तो वह आदमी अपने चारों तरफ से क्रोध की सारी लहरों को समाविष्ट कर लेगा। अगर प्रेम का केंद्र सक्रिय है, तो चारों तरफ से प्रेम की धाराएं उस आदमी की तरफ दौड़ने लगेंगी। अगर काम का केंद्र सक्रिय है, तो सारे चारों तरफ से कामवासना उसकी तरफ दौड़ने लगेंगी। वह एक खड्ड की तरह बन जाएगा और चारों तरफ की धाराएं, जो उसने मांगा है उसकी तरफ आनी शुरू हो जाएंगी।

ओशो

तृष्णा गई एक बूँद से
प्रवचन नं-- 3



हर बीज की अपनी इच्छा है, अपना विल, अपना संकल्प है। वह छोटा सा बीज वही खींचता है जो खींचना चाहता है, और सब पड़ा रहे, वह उसे छूता भी नहीं। गुलाब गुलाब बन जाता है, चमेली चमेली बन जाती है। पास में ही चमेली बन गई है चमेली, पास में ही गुलाब गुलाब बन गया है। एक ही मिट्टी से दोनों ने ताकत खींची है। गुलाब की सुगंध अलग है, चमेली की सुगंध अलग है, रंग-ढंग सब कुछ अलग है।

जिंदगी में अनंत संभावनाएं हैं। लेकिन हम वही बन जाते हैं जो हम उन संभावनाओं में से अपने भीतर खींच लेते हैं। अनंत विचारों का विस्तार है, अनंत विचारों की तरंगें हैं चारों तरफ। लेकिन हम उन्हीं विचारों को अपने पास खींच लेते हैं, जिन विचारों को खींचने की क्षमता, मैग्नेट, जिन विचारों को खींचने की रिसेप्टिविटी हमारे भीतर होती है।

इसी दुनिया में एक आदमी बुद्ध हो जाता है। इसी दुनिया में एक आदमी जीसस हो जाता है। इसी दुनिया में एक आदमी कृष्ण हो जाता है। और इसी दुनिया में हम कुछ भी नहीं होते और ना-कुछ होकर मिट जाते हैं और खतम हो जाते हैं। और जिस दुनिया से खींची जाती हैं सारी चीजें, वह बिल्कुल एक है—वह आकाश एक, वह जमीन एक, वह चारों तरफ की हवाएं एक, वे सूरज-चांदतारे एक—वह सब एक, और हर आदमी अलग-अलग कैसे हो जाता है? और हमारी शक्ल-सूरत भी एक सी मालूम पड़ती है, हमारे शरीर भी एक से मालूम पड़ते हैं, हमारी हड्डी-मांस-मज्जा भी एक सी मालूम पड़ती है। फर्क कहां पड़ जाता है? आदमी के व्यक्तित्व अलग-अलग कहां हो जाते हैं? कोई आदमी बुद्ध कैसे हो जाता है? कोई आदमी अंधकार में कैसे खड़ा रह जाता है? कोई आदमी प्रकाश में कैसे उठ जाता है?

वह जो मैंने कल कहा उस बात को समझ लेना जरूरी है। मैंने कल कहा कि मनुष्य के व्यक्तित्व में सात केंद्र हैं, सात चक्र हैं। और जो केंद्र सक्रिय होता है वह अपने अनुकूल चारों तरफ से सब कुछ खींच लेता है। केंद्र एक रिसेप्टिविटी बन जाता है, एक ग्राहकता बन जाता है। अगर क्रोध का केंद्र सक्रिय है, तो वह आदमी अपने चारों तरफ से क्रोध की सारी लहरों को समाविष्ट कर लेगा। अगर प्रेम का केंद्र सक्रिय है, तो चारों तरफ से प्रेम की धाराएं उस आदमी की तरफ दौड़ने लगेंगी। अगर काम का केंद्र सक्रिय है, तो सारे चारों तरफ से कामवासना उसकी तरफ दौड़ने लगेगी। वह एक खड्ड की तरह बन जाएगा और चारों तरफ की शाखाएं जो उमने मांगा है उमकी तरफ आनी शुरू हो जाएंगी।

**Ten thousand Buddha's Osho**

2d · 🌐

कोई आदमी बुद्ध कैसे हो जाता है

एक बगीचे में मैं गया था। एक ही जमीन थी उस बगीचे की। एक ही आसमान था उस बगीचे के ऊपर। एक ही सूरज की किरणें बरसती थीं। एक सी हवाएं बहती थीं। एक ही माली था। एक सा पानी गिरता था। लेकिन उस बगीचे में फूल सब अलग-अलग खिले हुए थे। मैं बहुत सोच में पड़ गया। हो सकता है कभी किसी बगीचे में जाकर आपको भी यह सोच पैदा हुआ हो।

जमीन एक है, आकाश एक है, सूरज की किरणें एक हैं, हवाएं एक हैं, पानी एक है, माली एक है। लेकिन गुलाब पर गुलाबी फूल हैं, चमेली पर सफेद फूल हैं। सुगंध अलग है। एक ही जमीन और एक ही आकाश से और एक ही सूरज की किरणों से ये अलग-अलग फूल, अलग-अलग रंग, अलग-अलग सुगंध, अलग-अलग ढंग कैसे खींच लेते हैं?

मैं उस माली को पूछने लगा। उसने कहा, सब एक है, लेकिन खींचने वाले बीज अलग-अलग हैं।

छोटा सा बीज लेकिन क्या खींच लेता होगा?

जरा सा बीज, इतने बड़े आकाश और इतनी बड़ी जमीन और इतने बड़े सूरज और इतनी हवाओं को, इन सबको एक तरफ फेंक कर अपनी ही इच्छा का रंग खींच लेता है! इतनी बड़ी दुनिया को एक तरफ हटा कर एक छोटा सा बीज अपनी ही इच्छा की सुगंध खींच लेता है! एक छोटे से बीज का संकल्प इतना बड़ा है, जितना आकाश नहीं, जितनी पृथ्वी नहीं! और एक बीज वही हो जाता है जो होना चाहता है! एक छोटे से बीज के भीतर ऐसा क्या हो सकता है?

हर बीज की अपनी इच्छा है, अपना विल, अपना संकल्प है। वह छोटा सा बीज वही खींचता है जो खींचना चाहता है, और सब पड़ा रहे, वह उसे छूता भी नहीं। गुलाब गुलाब बन जाता है, चमेली चमेली बन जाती है। पास में ही चमेली बन गई है चमेली, पास में ही गुलाब गुलाब बन गया है। एक ही मिट्टी से दोनों ने ताकत खींची है। गुलाब की सुगंध अलग है, चमेली की सुगंध अलग है, रंग-ढंग सब कुछ अलग है।

मां के गर्भ में रहने के चार महीने बाद शिशु की उंगलियों पर रेखाएं बननी शुरू हो जाती हैं। ये रेखाएं ताड़ के मांस में रेडियोधर्मी तरंग की तरह बनने लगती हैं।

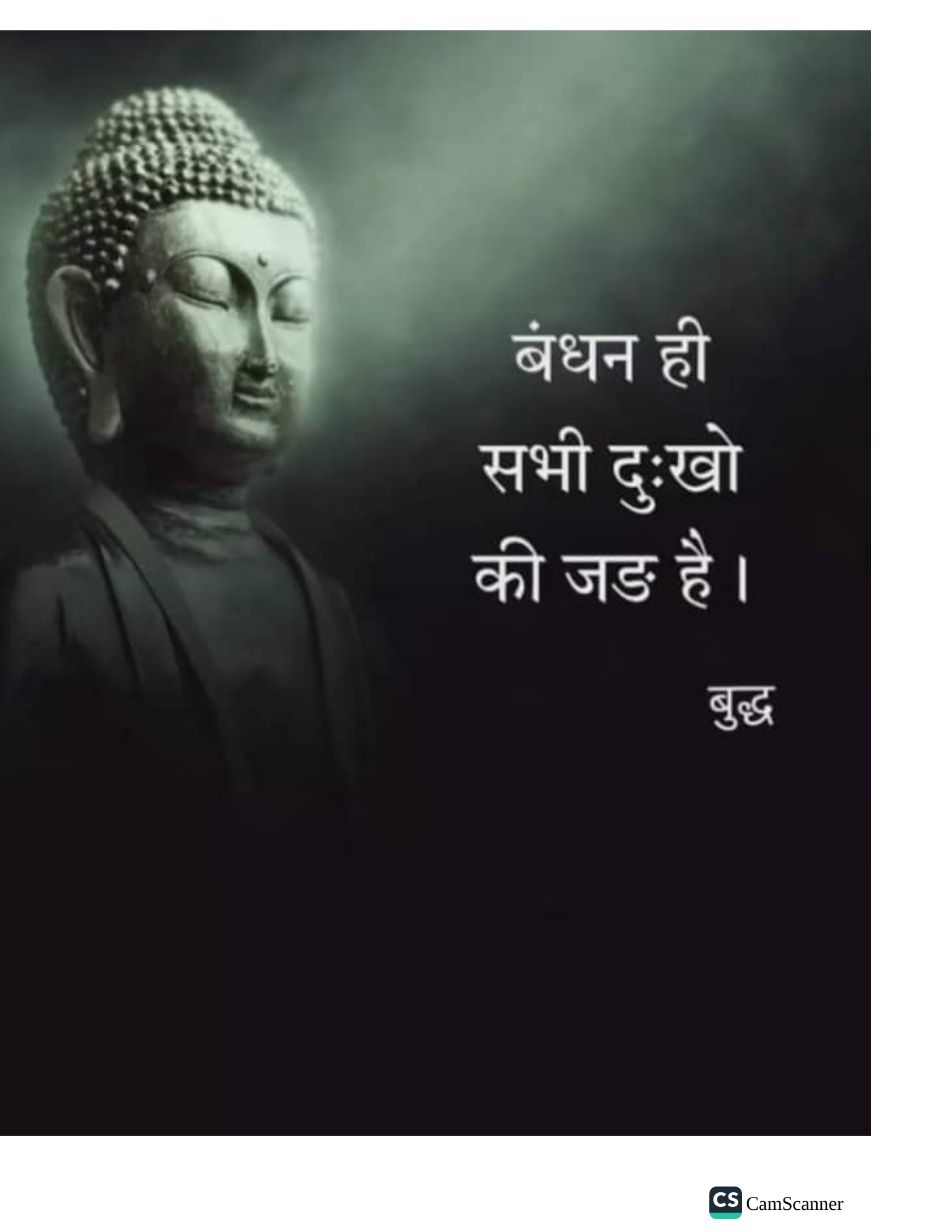
आश्चर्य की बात यह है कि ये रेखाएं उनके पूर्वजों या धरती पर रहने वाले अन्य लोगों से मेल नहीं खातीं। रेखाएं बनाने वाला व्यक्ति रेखाओं को इस तरह से समायोजित करता है कि वह उन रेखाओं और हर डिज़ाइन के बारे में अच्छी तरह से जानता है जो इस दुनिया में हैं और जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। यही कारण है कि वह हर बार अपनी उंगलियों पर एक नई शैली की डिज़ाइन बनाते हैं ताकि यह साबित हो सके कि उनके जैसा कोई निर्माता, कारीगर, कलाकार और कलाकार नहीं है।

इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि यदि किसी कारणवश ये उंगलियों के निशान मिट जाएं तो ये फिर से वही रेखाएं बन जाएंगी। यहां तक कि दुनिया भर के वैज्ञानिक और कलाकार भी इंसान की उंगलियों पर अलग अलग रेखाओं वाले फिंगरप्रिंट नहीं बना सकते।

इतना ही नहीं, पेड़-पौधों की पत्तियों पर बनी रेखाएं एक दूसरे से मेल नहीं खातीं। अरबों खरबों आकाशगंगाओं, सौरमंडलों, ग्रहों, उपग्रहों, जीव जंतुओं, पशु पक्षियों, नर नारियों, पेड़ पौधों, फलों और बीजों की अद्भुत रचना के बारे में क्या कहें!!

वे लोग बहुत ही मूर्ख और कृतघ्न हैं जो ऐसी अद्भुत रचना को देखकर, जानकर भी पूछते हैं "भगवान कहाँ है?"

~ #अज्ञात



बंधन ही
सभी दुःखो
की जड़ है ।

बुद्ध

ओशो सहजयोग

Osho.Universal
dhaval.parmar

संन्यास का तो
अर्थ ही यह है कि
अब मैंने छोड़ दिए
रास्ते पिटे पिटाए;
लकीर का फकीर अब
मैं नहीं हूं। अब चलूंगा
अपनी मौज से, अपनी
मर्जी से! अब खोजूंगा
परमात्मा को अपने
ढंग से, अपनी शैली
से। सम्हालो ... तुम
अपनी परंपराएं, मेरी
अब कोई परंपरा नहीं।
मैं अपनी पगडंडी खुद
चलूंगा और बनाऊंगा।



57m Like Reply



Lucky Gupta

आमंत्रण मतलब संभावना निमंत्रण मतलब टिकट कन्फर्म



55m Like Reply

1



Sabir Idrishi

सिंपल है आम पर मंत्र पढ़ कर दे तो आमंत्रण और नीम पर पढ़ कर दे तो निमंत्रण

55m Like Reply

9



Pawan Kumar Pandey

[Sabir Idrishi](#)



52m Like Reply

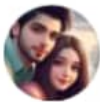


Atish Saurya

निमंत्रण के बाद किसी का आमंत्रण होता है

52m Like Reply

3



Madhu Kashyap

Aamantran.... Bina khaye piye...
Nimantran... Kha pi kr jao

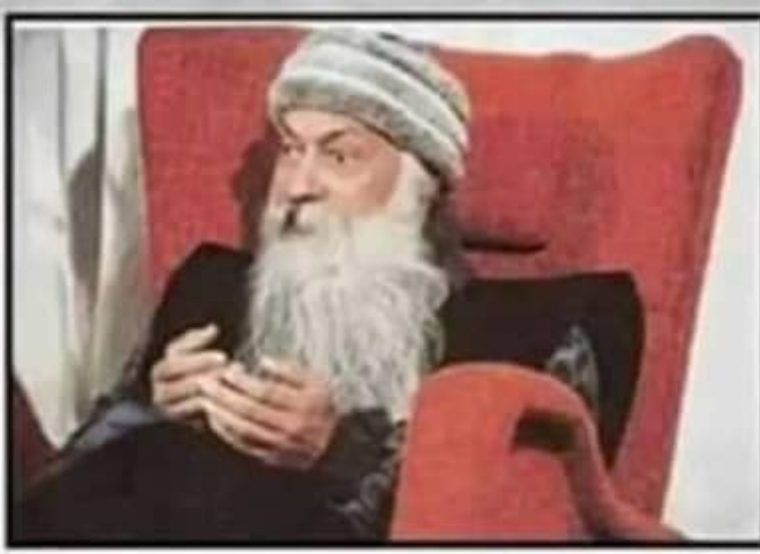
51m Like Reply

3



Mahendra Singh Daudat

Write a comment...



स्मरण रहे, परमात्मा, मंदिरों और मस्जिदों में छिपा हुआ नहीं बैठा है। परमात्मा प्रगट है, निर्वस्त्र है, चारों तरफ मौजूद है। झांको तो तुम्हारे भीतर मौजूद है और ऐसे दौड़ते रहो काबा और काशी और कैलाश..तुम्हारी मर्जी! लोग सस्ता पाना चाहते हैं कि चले तीर्थयात्रा को चले हज—यात्रा को। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो सब हाजियों को मिल जाए—हाजी मस्तान को भी मिल जाए। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो हर तीर्थयात्री को मिल जाए। और कुछ लोग तो तीर्थों में अड्डा जमाकर ही बैठे हैं, उन्हें तो पक्का मिल जाए। लेकिन बाहर नहीं है जब भी मिलेगा भीतर मिलेगा।

Osho

facebook



सिगरेट पीते समय ईश्वर-चिंतन करें। लेकिन दोनों बातें बिलकुल अलग हो गईं। एक बात के उत्तर में उसी आदमी ने इनकार कर दिया, दूसरी बात के उत्तर में उसी आदमी ने हां भर दिया। निश्चित ही कौन स्वीकार करेगा कि ईश्वर-चिंतन करते समय सिगरेट पीएं? कौन अस्वीकार करेगा कि सिगरेट पीते समय ईश्वर-चिंतन करें या न करें? कोई भी कहेगा कि अच्छा ही है। अगर सिगरेट पीते समय भी ईश्वर-चिंतन करते हो तो बुरा क्या है, ठीक है।

उस दूसरे युवक ने कहा कि पहले मेरे मन में भी वही पूछने का खयाल आया था, क्योंकि सीधी बात वही थी। लेकिन फिर तत्क्षण मुझे खयाल आया कि भूल हो जाएगी। अगर मैं पूछता हूं कि ईश्वर-चिंतन करते समय सिगरेट पी सकता हूं, तो मैंने पहले ही जान लिया था कि उत्तर नहीं में मिलने वाला है।

लिएबमेन ने लिखा है कि फिर मैंने जिंदगी में बहुत बार इसका प्रयोग किया। और तब तो धीरे-धीरे मुझे समझ में आया कि दूसरे आदमी से हां या न निकलवा लेना उस आदमी के हाथ में नहीं, तुम्हारे हाथ में है। वह दूसरे आदमी को पता भी नहीं चलता कि तुमने कब उससे हां निकलवा ली है या कब तुमने न निकलवा ली है। और अगर दूसरा आदमी न करता है, तो सोच लेना कि हमसे कहीं कोई भूल हो गई है। हो सकता है हमारे भाव बिलकुल सही हों, हमारा खयाल सही हो, सिर्फ हमारा मौजूद करने का ढंग गलत हो गया होगा। अन्यथा इस दुनिया में कोई भी आदमी न करने को तैयार नहीं है। हर आदमी हां करना चाहता है। लेकिन हां कहलवाने वाले लोग, उनकी तैयारी, उनकी समझ, उनकी सूझ, उस सब पर निर्भर करता है कि हम कैसे मौजूद करते हैं।

ओशो - अनंत की पुकार



18

1 comment • 3 shares



Like



Comment



Send



Share

जोसुआ लिएबमेन करके एक यहूदी विचारक और पुरोहित था। उसने संस्मरण लिखा है कि जब मैं युवा था और पहली दफा गुरु के आश्रम में शिक्षा लेने गया, तो मेरा एक मित्र भी मेरे साथ था। हम दोनों को सिगरेट पीने की आदत थी। हम दोनों ही परेशान थे कि क्या करें, क्या न करें? सिर्फ एक घंटा मोनेस्ट्री के बाहर ईश्वर-चिंतन के लिए बगिया में जाने को मिलता था, उसी वक्त पी सकते थे सिगरेट, और तो कोई मौका नहीं था। लेकिन फिर भी यह सोचा कि पीने के पहले गुरु को पूछ लेना उचित है। तो मैं और मेरा मित्र दोनों पूछने गए। जब मैं पूछ कर वापस लौटा तो मैं बहुत क्रोध में था, क्योंकि गुरु ने मुझे मना कर दिया था। और जब मैं बगीचे में आया तो मेरा क्रोध और भी बढ़ गया, मेरा मित्र तो आकर बेंच पर बैठा हुआ सिगरेट पी रहा था। मालूम होता है गुरु ने उसे हां भर दी है। यह तो हद अन्याय हो गया था। मैंने जाकर उस मित्र को कहा कि मुझे तो मना कर दिया है उन्होंने, क्या तुम्हें हां भर दी है? या कि तुम बिना उनकी हां किए ही सिगरेट पी रहे हो?

उस मित्र ने कहा कि तुमने क्या पूछा था?

लिएबमेन ने कहा, मैंने पूछा था कि क्या हम ईश्वर-चिंतन करते समय सिगरेट पी सकते हैं? उन्होंने कहा कि नहीं, बिल्कुल नहीं। तुमने क्या पूछा था?

उसने कहा, मैंने पूछा था कि क्या हम सिगरेट पीते समय ईश्वर-चिंतन कर सकते हैं? उन्होंने कहा, हां, बिल्कुल कर सकते हो।

ये दोनों बातें बिल्कुल एक थीं: ईश्वर-चिंतन करते समय सिगरेट पीएं या सिगरेट पीते समय ईश्वर-चिंतन करें। लेकिन दोनों बातें बिल्कुल अलग हो गईं। एक बात के उत्तर में उसी आदमी ने इनकार कर दिया, दूसरी बात के उत्तर में उसी आदमी ने हां भर दिया। निश्चित ही कौन स्वीकार करेगा कि ईश्वर-चिंतन करते समय सिगरेट पीएं? कौन अस्वीकार करेगा कि सिगरेट पीते समय ईश्वर-चिंतन करें या न करें? कोई भी कहेगा कि अच्छा ही है। अगर सिगरेट पीते समय भी ईश्वर-चिंतन करते हो तो बुरा क्या है, ठीक है।

उस दूसरे युवक ने कहा कि पहले मेरे मन में भी वही पूछने का खयाल आया था, क्योंकि सीधी बात वही थी। लेकिन फिर तत्क्षण मुझे खयाल

**Sanjeev Mishra**

2h · 🌐



राजा भोज के दरबार में एक ज्योतिषी आया। उसने राजा भोज का हाथ देखा और कहा कि तू अत्यंत अभागा व्यक्ति है। अपने लड़के को अरथी पर तू ही चढ़ाएगा। अपनी पत्नी को भी अरथी पर तू ही चढ़ाएगा। तेरे सारे लड़के, तेरी सारी लड़कियां - तू ही उनको मरघट तक पहुंचाएगा। उस भोज ने क्रोध से उस ज्योतिषी को हथकड़ियां डलवा दीं और कहा, इसको जाकर जेलखाने में बंद कर दो। कैसे बोलना चाहिए, यह भी इसे पता नहीं है। यह क्या बोल रहा है पागल!

कालिदास बैठ कर यह सारी बात सुनते थे। जब वह ज्योतिषी चला गया तो कालिदास ने कहा कि उस ज्योतिषी को पुरस्कार देकर विदा कर दें।

राजा ने कहा, उसे पुरस्कार दूं? सुनते हो तुम उसने क्या कहा था!

कालिदास ने कहा कि क्या मैं भी आपका हाथ देखूं? कालिदास ने हाथ देखा और कहा कि आप बहुत धन्यभागी हैं। आप सौ वर्ष के पार तक जीएंगे। आप बहुत लंबी उम्र उपलब्ध किए हैं। आप इतने धन्यभागी हैं कि आपके पुत्र भी आपकी उम्र नहीं पा सकेंगे, पीछे छूट जाएंगे।

राजा ने कहा, क्या यही वह कहता था?

कालिदास ने कहा, यही वह कह रहा था, लेकिन उसके कहने का ढंग बिल्कुल ही गड़बड़ था।

भोज ने उसे एक लाख रुपये देकर ईनाम दिया, और उसे विदा किया सम्मान से। और उससे जाते वक्त कहा, मेरे मित्र, अगर यही तुझे कहना था तो ऐसे ही तूने क्यों न कहा? तूने कहने का ढंग कौन सा चुना था!

जोसुआ लिएबमेन करके एक यहूदी विचारक और पुरोहित था। उसने संस्मरण लिखा है कि जब मैं युवा था और पहली दफा गुरु के आश्रम में शिक्षा लेने गया, तो मेरा एक मित्र भी मेरे साथ था। हम दोनों को सिगरेट पीने की आदत थी। हम दोनों ही परेशान थे कि क्या करें, क्या न करें? सिर्फ एक घंटा मोनेस्ट्री के बाहर ईश्वर-चिंतन के लिए बगिया में जाने को मिलता था, उसी वक्त पी सकते थे सिगरेट, और तो कोई मौका नहीं था। लेकिन फिर भी यह सोचा कि पीने के पहले गरु को पछ लेना उचित है।



यह संभव है? संभव है। असंभव जैसा दिखता है, लेकिन संभव है।

असंभव इसलिए दिखता है कि हमें ब्रह्मचर्य के आनंद का कोई अनुभव नहीं है। हमें सिर्फ कामवासना से मिलने वाला जो क्षण भर का सुख है- सुख भी कहना शायद ठीक नहीं क्षणभर की जो राहत है, क्षण भर के लिए हमारे शरीर से जैसे बोझ उतर जाता है।

बायोलॉजिस्ट कहते हैं कि काम-संभोग छींक से ज्यादा मूल्यवान नहीं है। जैसे छींक बैचेन करती है और नासापुट परेशान होने लगते हैं, और लगता है किसी तरह छींक निकल जाए; तो हल्कापन आ जाता है।

ठीक करीब-करीब साधारण कामवासना छींक से ज्यादा राहत नहीं देती है। बायोलॉजिस्ट कहते हैं जननेंद्रिय की छींक-शक्ति इकट्ठी हो जाती है भोजन से, श्रम से; उससे हलके होना जरूरी है। इसलिए वे कहते हैं, कोई सुख तो उससे नहीं है लेकिन एक बोझ उतर जाता है।

जैसे सिर पर किसी ने बोझ रख दिया हो और फिर उतार कर आपको अच्छा लगता है। कितनी देर अच्छा लगता है? जितनी देर तक बोझ की याद रहती है। बोझ भूल जाता है, अच्छा लगना भी भूल जाता है।

यह जो कामवासना जिसका हम बोझ उतारने के लिए उपयोग करते हैं, और हमने इसके अतिरिक्त कोई आनंद नहीं जाना है, छोड़ना मुश्किल मालूम पड़ती है। क्योंकि जब बोझ घना होगा, तब हम क्या करेंगे?

और आज की सदी में तो और भी मुश्किल मालूम पड़ती है, क्योंकि पूरी सदी के वैज्ञानिक यह समझा रहे हैं लोगो को कि छोड़ने का न तो कोई उपाय है कामवासना न छोड़ने की कोई जरूरत है।

न केवल यह समझ रहे हैं, बल्कि यह भी समझा रहे हैं कि जो छोड़ता है वह नासमझ है, रूग्ण हो जाएगा; जो नहीं छोड़ता, वह स्वस्थ है।

----ओशो.

**Sanjeev Mishra**

6h · 🌐



शायद आपने सुना हो कि मिस्र की खूबसूरत महारानी क्लियोपैट्रा जब मर गई, तो उसकी कब्र से उसकी लाश चुरा ली गई और तीन दिन बाद लाश मिली और चिकित्सकों ने कहा कि मुर्दा लाश के साथ अनेक लोगों ने संभोग किया है।

मरी हुई लाश के साथ! और निश्चित ही ये कोई साधारण जन नहीं हो सकते थे जिन्होंने क्लियोपैट्रा की लाश चुराई होगी। क्योंकि क्लियोपैट्रा की लाश पर भयंकर पहरा था। ये जरूर मंत्री, वजीर, राजा के निकट के लोग, राजा के मित्र, शाही महल से संबंधित लोग, सेनापति इसी तरह के लोग थे। क्योंकि क्लियोपैट्रा की लाश तक भी पहुँचना साधारण आदमी के लिए आसान नहीं था। और चिकित्सकों ने कहा कि अनेक लोगों ने संभोग किया है। तीन दिन के बाद लाश वापस मिली।

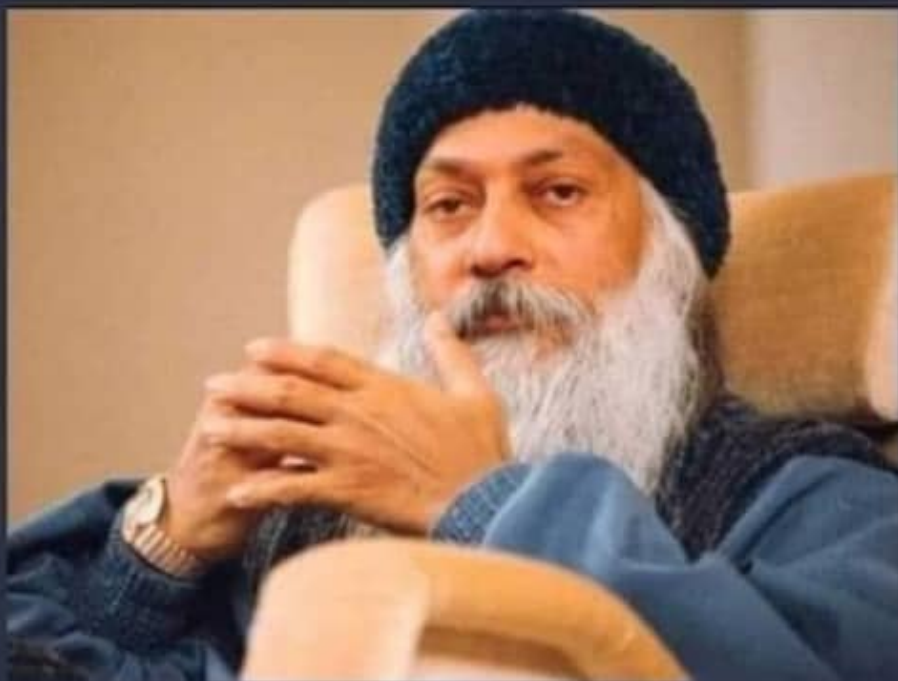
आदमी की वासना कहाँ तक जा सकती है, कहना बहुत मुश्किल है। एकदम कठिन है। और महावीर कहते हैं ब्राह्मण वही है, जो कामवासना के ऊपर उठ गया हो। जिसे किसी तरह की वासना न पकड़ती हो। क्या यह संभव है? संभव है। असंभव जैसा दिखता है, लेकिन संभव है।

असंभव इसलिए दिखता है कि हमें ब्रह्मचर्य के आनंद का कोई अनुभव नहीं है। हमें सिर्फ कामवासना से मिलने वाला जो क्षण भर का सुख है-सुख भी कहना शायद ठीक नहीं क्षणभर की जो राहत है, क्षण भर के लिए हमारे शरीर से जैसे बोझ उतर जाता है।

बायोलॉजिस्ट कहते हैं कि काम-संभोग छींक से ज्यादा मूल्यवान नहीं है। जैसे छींक बैचैन करती है और नासापुट परेशान होने लगते हैं, और लगता है किसी तरह छींक निकल जाए; तो हल्कापन आ जाता है।

ठीक करीब-करीब साधारण कामवासना छींक से ज्यादा राहत नहीं देती है। बायोलॉजिस्ट कहते हैं जननेंद्रिय की छींक-शक्ति इकट्ठी हो जाती है भोजन से, श्रम से; उससे हलके होना जरूरी है। इसलिए वे कहते हैं, कोई सुख तो उससे नहीं है लेकिन एक बोझ उतर जाता है।

जैसे सिर पर किसी ने बोझ रख दिया हो और फिर उतार कर आपको
...थकता जाता है। किसी ने थकता जाता है? किसी ने थकता जाता है...

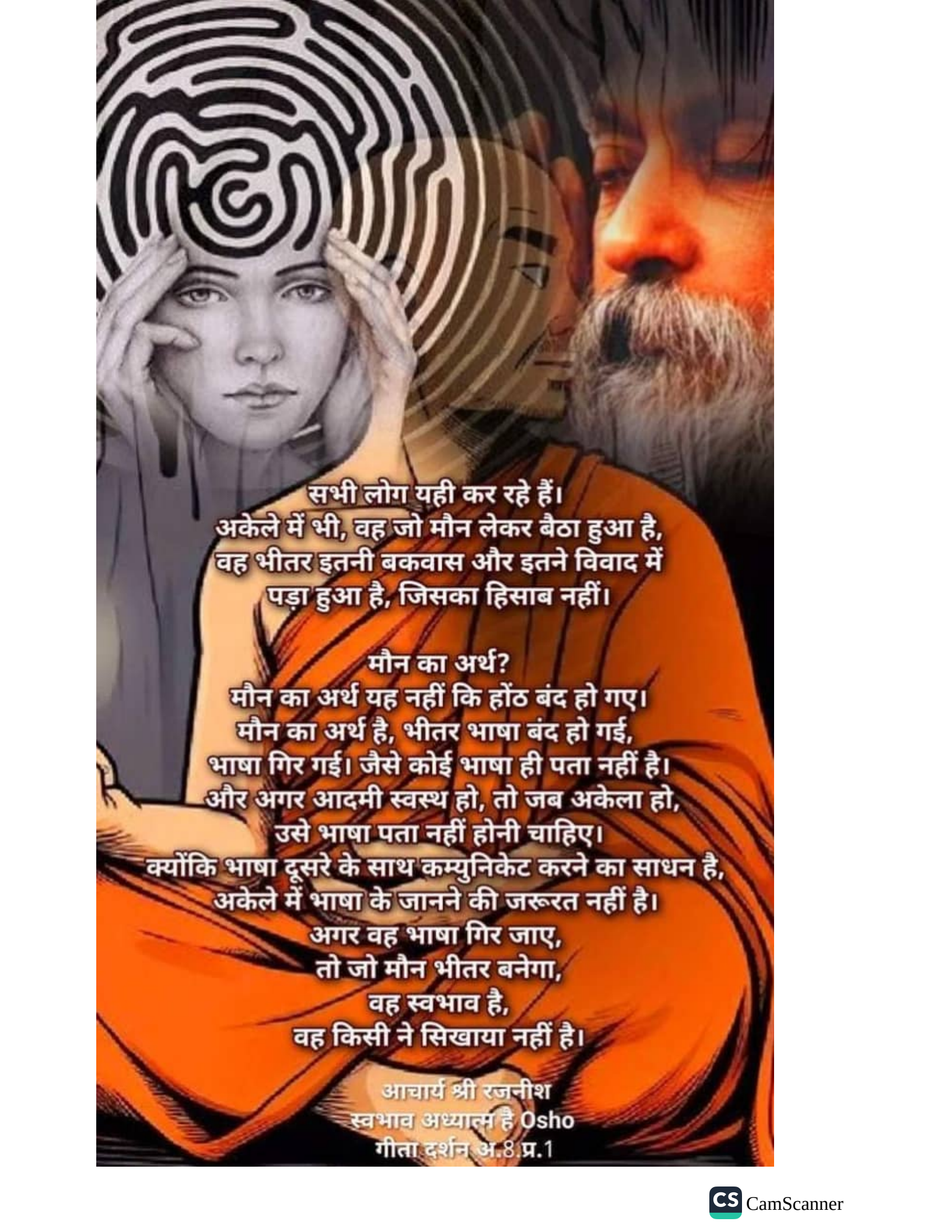


ओशो

अहं भाव

हम क्या है? हम छोटे-से अंश है। जैसे सागर की एक छोटी-सी तरंग। तरंग चाहे कि सागर मेरे अनुकूल चले, यह कैसे होगा? और यही हम चाह रहे है। इसी असंभव का नाम तृष्णा है। हां, सागर के साथ तरंग चल सकती है, तो जीतेगी, फिर कोई निराशा नहीं है। लेकिन सागर के साथ जब तरंग चलेगी, तो पहले तो आशा छोड़ देनी होगी। फिर जहां ले जाए विराट, जो उसकी मर्जी! जेहि विधि राखे राम। फिर तुम्हारी कोई आशा नहीं है; इसलिए तुम्हारी कोई निराशा भी नहीं हो सकती। आशा के बीज बोओगे, निराशा की फसल काटोगे। सफलता की आकांक्षा असफलता की खाइयों में, खड्डों में गिरोगे। विजय चाहते हो, हार सुनिश्चित है।

इस महागणित को ठीक से समझ लो। इसे जिसने समझ लिया, वह बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया।

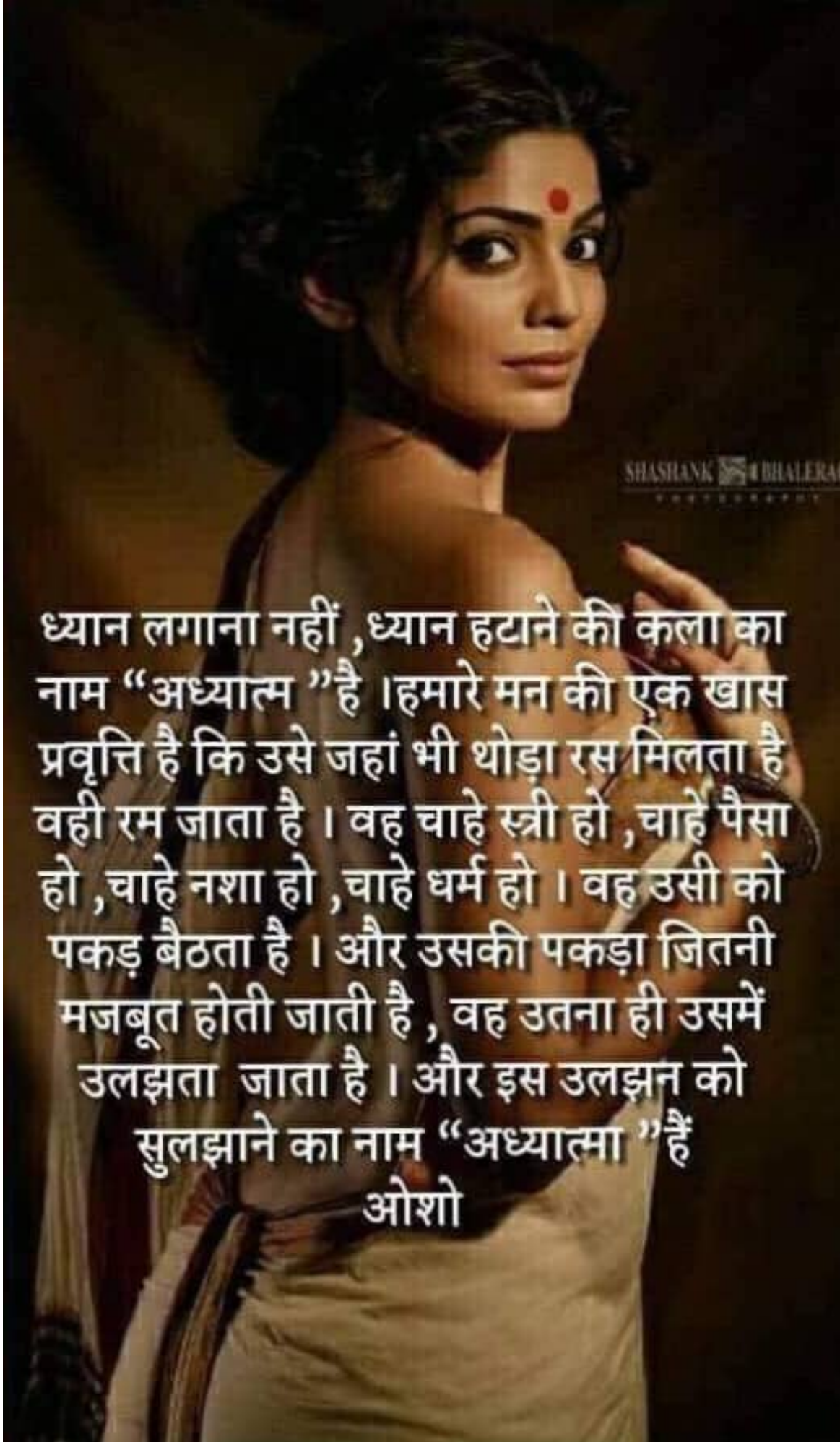


सभी लोग यही कर रहे हैं।
अकेले में भी, वह जो मौन लेकर बैठा हुआ है,
वह भीतर इतनी बकवास और इतने विवाद में
पड़ा हुआ है, जिसका हिसाब नहीं।

मौन का अर्थ?

मौन का अर्थ यह नहीं कि होंठ बंद हो गए।
मौन का अर्थ है, भीतर भाषा बंद हो गई,
भाषा गिर गई। जैसे कोई भाषा ही पता नहीं है।
और अगर आदमी स्वस्थ हो, तो जब अकेला हो,
उसे भाषा पता नहीं होनी चाहिए।
क्योंकि भाषा दूसरे के साथ कम्युनिकेट करने का साधन है,
अकेले में भाषा के जानने की जरूरत नहीं है।
अगर वह भाषा गिर जाए,
तो जो मौन भीतर बनेगा,
वह स्वभाव है,
वह किसी ने सिखाया नहीं है।

आचार्य श्री रजनीश
स्वभाव अध्यात्म है Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.1



SHASHANK BHALLERA
PHOTOGRAPHY

ध्यान लगाना नहीं , ध्यान हटाने की कला का नाम “अध्यात्म ” है । हमारे मन की एक खास प्रवृत्ति है कि उसे जहां भी थोड़ा रस मिलता है वही रम जाता है । वह चाहे स्त्री हो , चाहे पैसा हो , चाहे नशा हो , चाहे धर्म हो । वह उसी को पकड़ बैठता है । और उसकी पकड़ा जितनी मजबूत होती जाती है , वह उतना ही उसमें उलझता जाता है । और इस उलझन को सुलझाने का नाम “अध्यात्मा ” हैं
ओशो



जिसके भीतर पूजा का भाव जगा है
वह पूजा नहीं करता। भाव काफी है।
भाव के सुमन काफी हैं।

जिसके भीतर पूजा का भाव नहीं है,
वहीं मंदिर में जाकर घंटियां बजाता है,
पानी छिड़कता है, फूल चढ़ाता है,
धूप-दीप जलाता है।

पूजा का भाव नहीं है, इसलिये पूजा
का अभिनय करता है।





मरने के बाद भी पीछा नहीं छोड़ती ये 5 चीजें, कई जन्मों तक चलती हैं साथ

Authored By [Rakesh Jha](#) | नवभारतटाइम्स.कॉम | 6 May 2022, 3:30 pm

Advertisement

Ad

आमतौर पर यहा कहा जाता है कि मृत्यु हो गई तो सब समाप्त हो गया। चिता के साथ ही सब स्वाहा हो गया। लेकिन हमारे वेद, पुराण, धर्म और दर्शन इस बात को नहीं मानते। इनके अनुसार चिता पर जल केवल देह का अंत होता है। 5 चीजें ऐसी हैं जो शरीर के जल जाने पर भी शेष रह जाती है और आत्मा के साथ पंचतत्व में लीन हो जाती है। उचित समय आने पर आत्मा के साथ ये 5 चीजें फिर नए शरीर में प्रविष्ट हो जाती हैं।

ऐप पर पढ़ें

राशिफल

पंचांग

आरती

ग्रह नक्षत्र



कामना

कामना मनुष्य और दूसरे जीवों को फिर से नए शरीर को धारण करने में सहयोग करती है। कामना के अनुसार ही मनुष्य को अपना नया शरीर मिलता है। मृत्यु के समय मनुष्य जिन-जिन चीजों को सोचता है वह कामना उसके साथ चली जाती है और उसकी पूर्ति के लिए फिर से जीव से शरीर में लौटना पड़ता है। इसलिए धर्म ग्रंथों में कहा गया है कि मृत्यु करीब आने पर सब चीजों की इच्छा त्याग करके ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए। अगर कामना लिए चले गए तो फिर नए शरीर में लौटना पड़ेगा।

2/5



ऐप पर पढ़ें

राशिफल

पंचांग

आरती

गृह नक्षत्र





वासना

कामना का साथी वासना है। यह ऐसी चीज है जिसका कोई अंत नहीं है। मृत्यु शैया पर भी लोग वासना से मुक्त नहीं हो पाते हैं। सांसारिक सुख की चाहत ही वासना है। मनुष्य मरते समय भी अपने जीवनसाथी, बच्चों, परिवारजनों के बारे में सोचता रहता है। उनसे मिलने वाले सुख-दुख को सोचता रहता है। अधूरी चाहतों को लेकर छटपटता रहता है। इसी छटपटाहट में उसके प्राण निकल जाते हैं। विष्णु पुराण में राजा भरत की कहानी है, उसकी चाहत उसके प्यारे हिरण के बच्चे में थी। उसे सोचते हुए राजा के प्राण निकल गए। अगले जन्म में राजा को स्वयं हिरण रूप में जन्म लेना पड़ा। इसलिए कामना और वासना को मृत्यु के करीब आने पर मन पर हावी ना होने दें।

यह संकते बताते हैं घर पर है किसी का साया



Subscribe to Notifications



3/5

ऐप पर पढ़ें

राशिफल

पंचांग

आरती

ग्रह नक्षत्र



कर्म

मनुष्य जीवन भर कर्म करता है चाहे वह अच्छा हो या बुरा। गीता में कहा गया है कि कोई भी मनुष्य बिना कर्म किए एक पल भी नहीं रह सकता। मृत्यु करीब आने पर आत्मा शरीर द्वारा किए गए कर्मों की स्मृति को समेट लेती है। ये कर्म ही मनुष्य को परलोक में सुख और दुख देते हैं और इन्हीं के परिणाम से अगले जन्म में अच्छा बुरा फल प्राप्त होता है। कर्म की गति तो ऐसी है कि 7 जन्मों तक पीछा नहीं छोड़ती है। महाभारत में इसका अच्छा उदाहरण मिलता है। बाणों की शैय्या पर लेटे हुए भीष्म ने जब श्रीकृष्ण से पूछा कि मुझे ऐसी मृत्यु क्यों प्राप्त हुई है तो श्रीकृष्ण ने उन्हें 7 जन्म पूर्व की घटना याद दिलाई। 7 जन्म पूर्व भीष्म ने एक अधमरे सांप को उठाकर नागफनी के कांटों पर फेंक दिया था।



ऐप पर पढ़ें

राशिफल

पंचांग

आरती

ग्रह नक्षत्र



PREMIUM HEARING AIDS

KNOW MORE



कर्ज

किसी से कर्ज लें तो उसे मरने से पहले जरूर चुका देना चाहिए। लिया गया कर्ज और दिया गया कर्ज दोनों ही जन्म-जन्मांतर तक पीछा नहीं छोड़ता है। गरुड़ पुराण में लिखा है कि कर्ज लेकर मरने पर कर्जदाता जब परलोक में आता है तो अपना कर्ज का धन वापस मांगता है। उस समय यम के दूत कर्ज लेकर मरने वाले का मांस काटकर कर्जदाता को देता है। लेकिन कर्ज का बोझ यहीं नहीं उतरता है। अगले जन्म में भी कर्ज पीछा करता है और उसे किसी ना किसी रूप में चुकाना पड़ता है।

पति की मृत्यु के बाद देवर जेठ का हाथ थामा

ऐसी और तस्वीरें देखें

डाउनलोड ऐप

5/5



ऐप पर पढ़ें

राशिफल

पंचांग

आरती

ग्रह नक्षत्र



START with **KETO FRIENDLY**
Your Fitness Journey **SUPER FOOD**





पुण्य

पुराणों में बताया गया है कि आपके द्वारा किया गया दान, परोपकार का पुण्य कई जन्मों तक साथ चलता है। जीवन में जब कभी कोई अपरिचित आपकी मदद करे तो यह समझ लीजिए कि वह आपके पूर्वजन्म का पुण्य चुका गया है। शास्त्रों में दान पुण्य को बैंक में रखे धन की तरह कहा गया है जो बुरे वक्त में समय-समय पर काम आता है। इसलिए मनुष्य को पुण्य रूप धन को जीवन भर जमा करते रहना चाहिए। अक्षय तृतीया, अक्षय नवमी, माघ पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, गंगा दशहरा, मकर संक्रांति कुछ ऐसे दिन हैं जिनमें किया गया दान पुण्य कई जन्मों तक व्यक्ति को सुख देता है।



ऐप पर पढ़ें

राशिफल

पंचांग

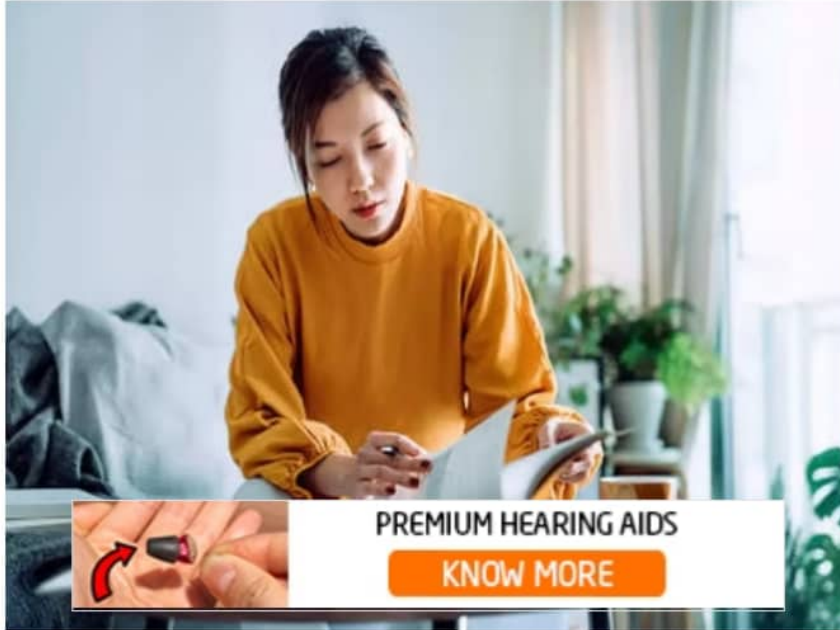
आरती

ग्रह नक्षत्र



अन्य धर्म राशिफल पंचांग आरती ग्रह नक्षत्र धर्म-व

मृत्यु के बाद भी साथ जाता है ज्ञान



ज्ञान व्यक्ति को भीड़ में सबसे अलग करता है। ज्ञान के बल पर आप अपनी एक अलग पहचान और लोगों पर छाप छोड़ने में कामयाब रहते हैं। इसलिए अपनी मृत्यु से पहले पहले आप जितना ज्ञान ले लेंगे वह आपके बहुत काम आएगा। दरअसल ऐसी मान्यता है कि जीवित रहते हुए व्यक्ति ज ज्योतिषी लेता है वह उसके साथ मृत्यु के बाद भी जाते हैं। इसलिए अपना समय खुद को अच्छा ज्ञान और गुण सीख में व्यस्त करें। श्री गीता में भी इस बात का जिक्र किया गया है कि ज्ञान

राशिफल

पंचांग

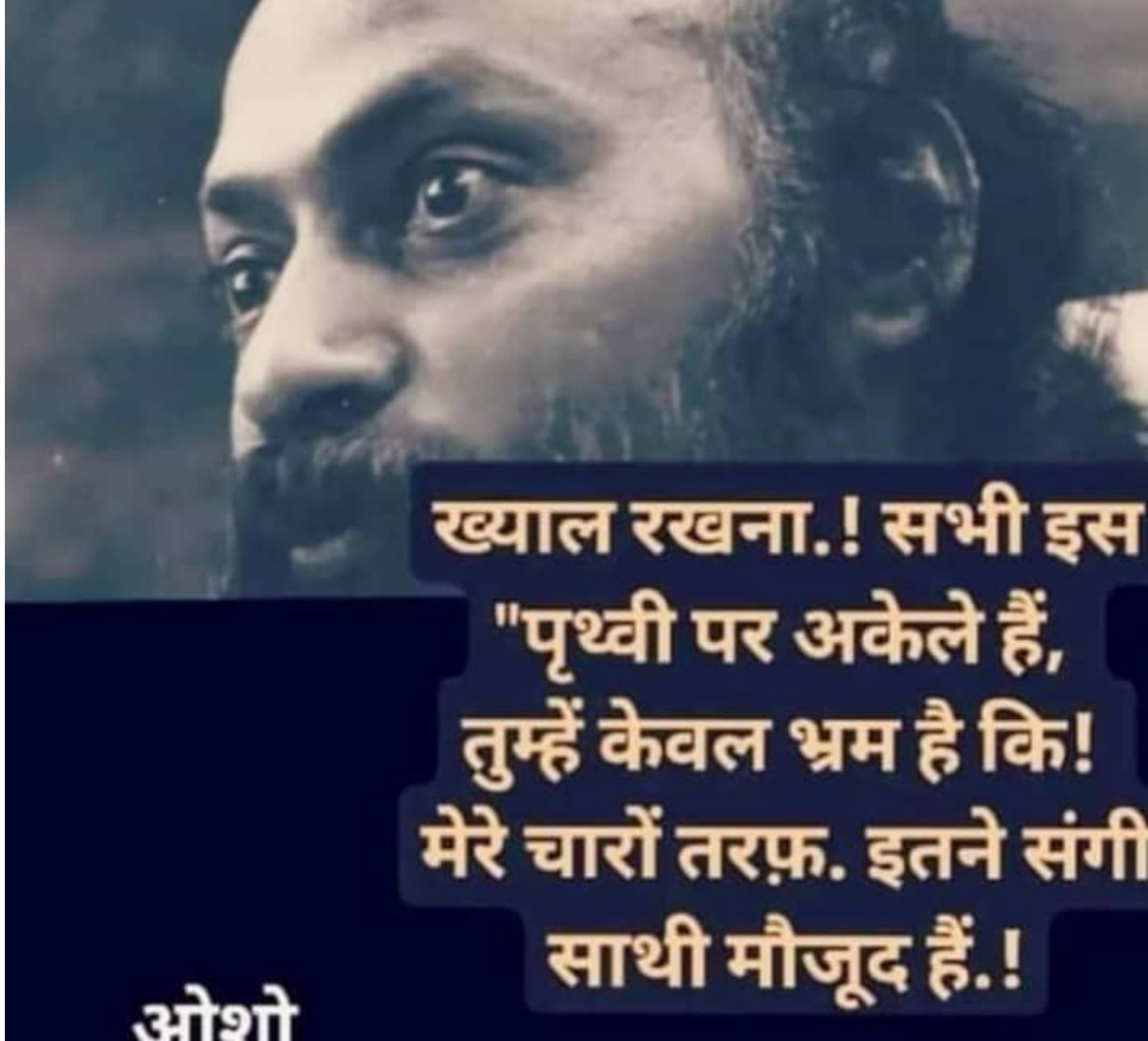
आरती

ग्रह नक्षत्र

YOU MAY LIKE

SPONSORED LINKS BY TABOOLA



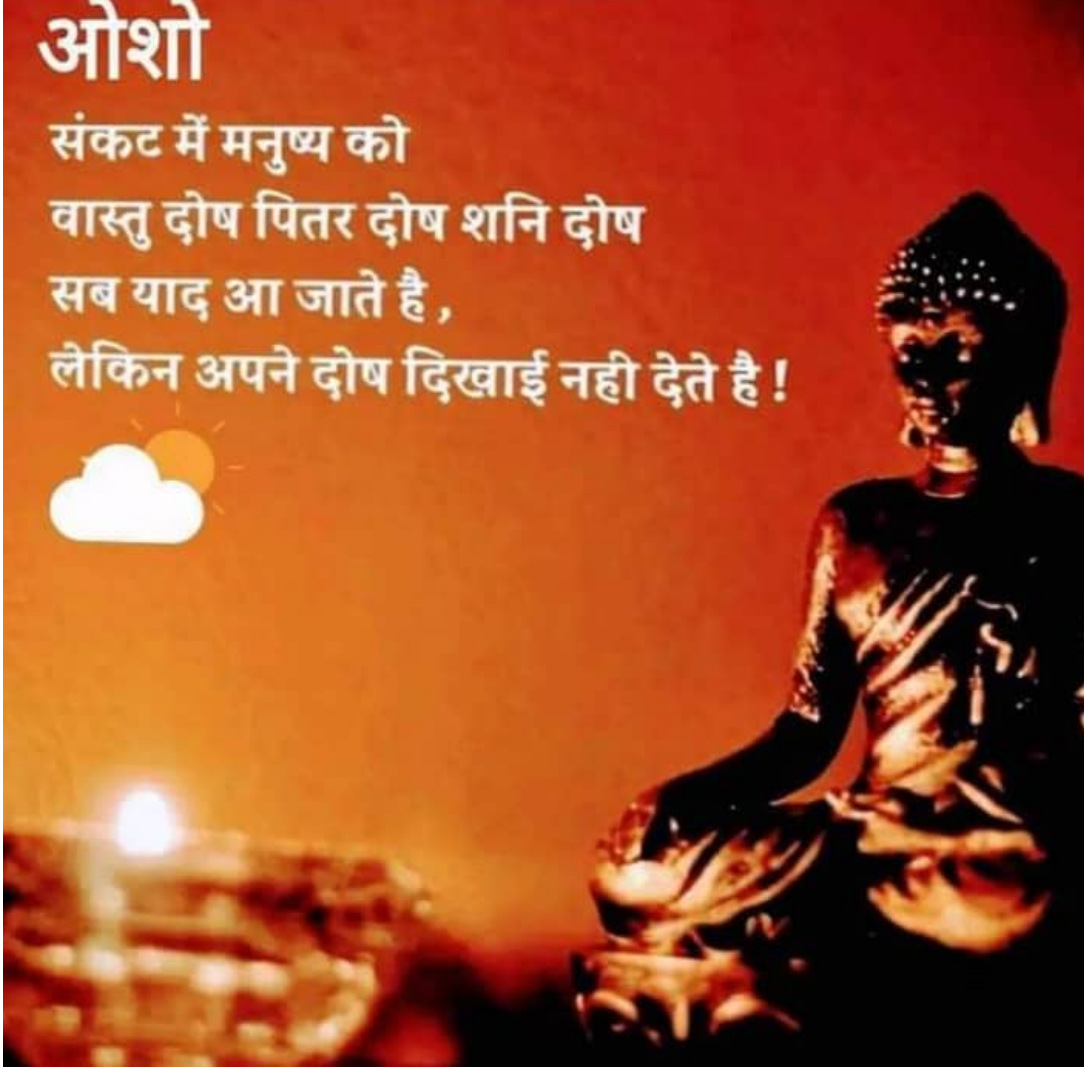


ख्याल रखना.! सभी इस
"पृथ्वी पर अकेले हैं,
तुम्हें केवल भ्रम है कि!
मेरे चारों तरफ़. इतने संगी
साथी मौजूद हैं.!

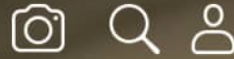
ओशो

ओशो

संकट में मनुष्य को
वास्तु दोष पितर दोष शनि दोष
सब याद आ जाते है ,
लेकिन अपने दोष दिखाई नही देते है !



← Reels ▾



औरत को मोहब्बत से
जयादा इज्जत, सैक्स,
रुपया दो वो जिंदगी
भर तुम्हारी रहेगी...!

IG:- @AFIFA_WRITER1



1.1K



39



4



Send



★ Send a gift



Afifa Queen



Follow

Add a comment...



[← Reels](#) ▾

जैसे मैले कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता है, ऐसे ही
माया में रमे हुए व्यक्ति पर भक्ति का रंग नहीं चढ़ता है!
राधे राधे



307



5

Bolo radhe krishn 🙏



1



Send

[theaquashiva](#)

Radhe Radhe 🙏 Hari Bol 🌸... more



← Reels ▾



परमात्मा को वो ही
लोग खोजने निकलते है...
जिनको
परमात्मा खोजना शुरू कर देता है!
osho

2.6K

17

325

Send



spritualmint

Osho lovers... ❤️ 🙏 ... more

Add a comment...





औरतों के गुप्त राज..

1. साइकोलॉजी के अनुसार, औरत आधे पेट खा के रह लेगी। पर अपना प्रेम उसे पुरा ही चाहिए होता है।
2. चाणक्य कहते हैं कि औरत कभी उधार नहीं रखती। मोहब्बत, इज्जत, खुशी, नफरत सब दुगना कर के लौटाती है।
3. लड़कियां आमतौर पर उस लड़के के साथ ज्यादा देर तक आँखे नहीं मिला सकती, जिसे वे बहुत पसंद करती हैं।
4. जब कोई लड़की आपको सच्चा प्यार करती है, तो वह छोटी छोटी बातों पर परेशान हो जाती हैं। यदि आप इसे संभाल नहीं सकते हैं तो, एक ऐसी लड़की खोजें जो सिर्फ आपसे पैसे चाहती हो।

★ Send a gift



Aasan Gharelu Nuskhe करें: Follow

सेक्स समस्या का समाधान

8759200012

औरत के गुप्त राज... more

 Reels ▾

होश को कैसे साधे?

तीन स्तरों पर अपने होश को साधन का प्रयास करें।

पहला शरीर के प्रति सजग होना शुरू करिए , चलो तो सिर्फ चलो और कुछ मत सोचो, खाओ तो सिर्फ खाओ, बैठो तो सिर्फ बैठो, उठा तो जानते हुए उठो कि मैं उठ रहा हूं सारे कर्म आपके अमुर्छा में होने चाहिए।

दूसरा यही प्रयोग मन पर करिए अपने विचारों को देखते रहिए एक भी विचार यूँही नहीं निकल जाना चाहिए। देखते रहने से आपके विचार शून्य होना शुरू हो जायेंगे।

तीसरा प्रयोग भावनाओं पर कीजिए इसे भी देखिए कैसे आप भावनाओं में खो जाते हैं कैसे कोई घटना घटती है आपके भीतर एंजाइम रिलीज होते हैं और आप भावनाओं में बह जाते हैं। यदि आपने इन तीनों को साध लिया आपका जीवन होश से भर जाएगा।

23K

– आधुनिक बुद्ध (ओशो)



116



291



_spritual_j0urney_ @

साधना



Send

🔖 ehucker

Dark by



Add a comment...



← Reels ▾



इसको अति गंभीरता से
मत्व लो।



253



6



Send



d_samraat_official @

Yeh sab bahane..... more



ter by instagram

Aqu

sho_spiritu

Add a comment...



← Reels ▾



खेल की तरह खेल
लो



253

osho_spirituals



6



d_samraat_official @

Yeh sab bahane..... more



Send

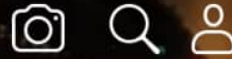
✦ Aqua Glitter by instagram



Add a comment...



← Reels ▾



osho_sprituals
देखो यहाँ कुछ मिलने
को हैं नही



253



6



Send



d_samraat_official

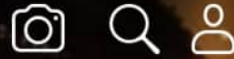
Yeh sab bahane..... more

✦ iter by instagram Aqua

Add a comment...



← Reels ▾



osho_sprituals

बहुत ही चुका
इंतजार



253



6



Send



d_samraat_official

Yeh sab bahane..... more

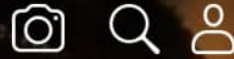
✦ Aqua Glitter by instagram



Add a comment...



← Reels ▾



osho_sprituals

अब जागो



253



6



d_samraat_official

Yeh sab bahane..... more



Send

✦ glitter by instagram Aq



Add a comment...



← Reels ▾



नासा के साइंटिस्ट द्वारा खोजा
गया TON 618 नाम का ब्लैकहोल
यूनिवर्स का अब तक का सबसे बड़ा
ब्लैक होल है जिसका mass यानी 5.2K
कि वजन सूरज से 600 बिलियन
गुना ज्यादा है..!

*the_unitedgyan*

★ Send a gift



यूनाइटेड ज्ञान

Follow

👉 रोज़ कुछ नया सीखने के लिए एक लाइक ❤️ क... more

Add a comment...



← Reels ▾



संस्कृत मंत्र श्लोक

उत्तरायण क्या है? दक्षिणायन क्या है?

☀️ 21-22 जून से सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होने जा रहे हैं ☀️

अयन का अर्थ होता है परिवर्तन। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार एक वर्ष में दो अयन होते हैं। साल में दो बार सूर्य की स्थिति में परिवर्तन होता है। सूर्य 6 महीने उत्तरायण और 6 महीने दक्षिणायन में रहते हैं।



उत्तरायण का महत्व

उत्तरायण मास को देवी- देवताओं का दिन माना गया है। उत्तरायण के 6 महीनों के दौरान नए कार्य जैसे- गृह प्रवेश, यज्ञ, व्रत, अनुष्ठान, विवाह, मुंडन आदि जैसे कार्य करना शुभ माना जाता है। उत्तरायण के समय दिन लंबा और रात छोटी होती है। इसमें तीर्थयात्रा, धामों के दर्शन और उत्सवों का समय होता है। उत्तरायण के दौरान तीन ऋतुएं होती हैं- शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म

दक्षिणायन का महत्व

2.9K

दक्षिणायन का काल देवताओं की रात्रि मानी गई है। दक्षिणायन के समय में रातें लंबी हो जाती हैं और दिन छोटे होने लगते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दक्षिणायन होने पर सूर्य दक्षिण की ओर झुकाव के साथ गति करता है। 10 दक्षिणायन में विवाह, मुंडन, उपनयन आदि विशेष शुभ कार्य निषेध माने जाते हैं। दक्षिणायन के दौरान वर्षा, शरद और हेमंत, ये तीन ऋतुएं होती हैं। तामसिक प्रयोगों के लिए दक्षिणायन का समय उपयुक्त होता है।

630



संस्कृत मंत्र श्लोक

Follow



Send

Abhishek Shaw commented: Utrayan or dakshirayan kab se kis mahine tak rahta h??



← Reels ▾



मन पर नियंत्रण

मन पर नियंत्रण करने का उपाय सब खोज रहे हैं।
असंभव की खोज है मन पर नियंत्रण करना।
जिस पर नियंत्रण हो ही नहीं सकता आप उसे करने की
विधियां ढूंढ रहे हैं।
एक बात का ख्याल किया कभी की मन को नियंत्रण करने
का विचार भी तो मन से उठा है।

मन के पार निकल जाइए।
मन का अतिक्रमण कर जाइए।
एक ही विधि है
जीवन में होश को साधना
ध्यान

—ओशो



4.9K



28



180



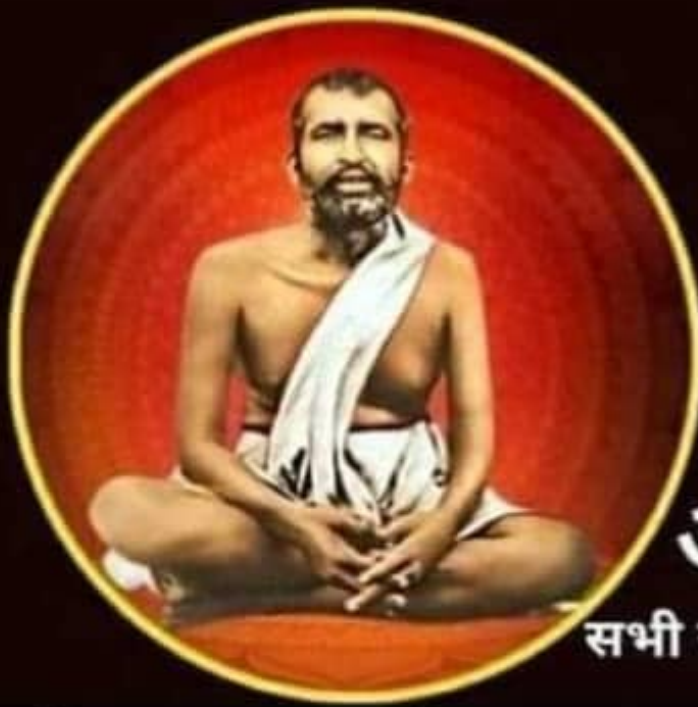
Send



_spritual_j0urney_ @

मन के पार के यात्रा पर निकालिए।





अहोभाव
ओशो

सभी सयानें एक मत

रामकृष्ण ने कहा, शास्त्र से पूजा का क्या संबंध है? पूजा प्रेम की है। जब मन ही नहीं होता करने का, तो करना गलत होगा। और वह तो पहचान ही लेगा कि बिना मन के किया जा रहा है। तुम्हारे लिए थोड़े ही पूजा कर रहा हूं। उसको मैं धोखा न दे सकूंगा। जब मन ही करने का नहीं हो रहा, जब भाव ही नहीं उठता, तो झूठे आंसू बहाऊंगा, तो परमात्मा पहचान लेगा। वह तो पूजा न करने से भी बड़ा पाप हो जाएगा कि भगवान को धोखा दे रहा हूं। जब उठता है भाव तो इकट्ठी कर लेता हूं। दो तीन सप्ताह की एक दिन में निपटा देता हूं। लेकिन बिना भाव के मैं पूजा न करूंगा।



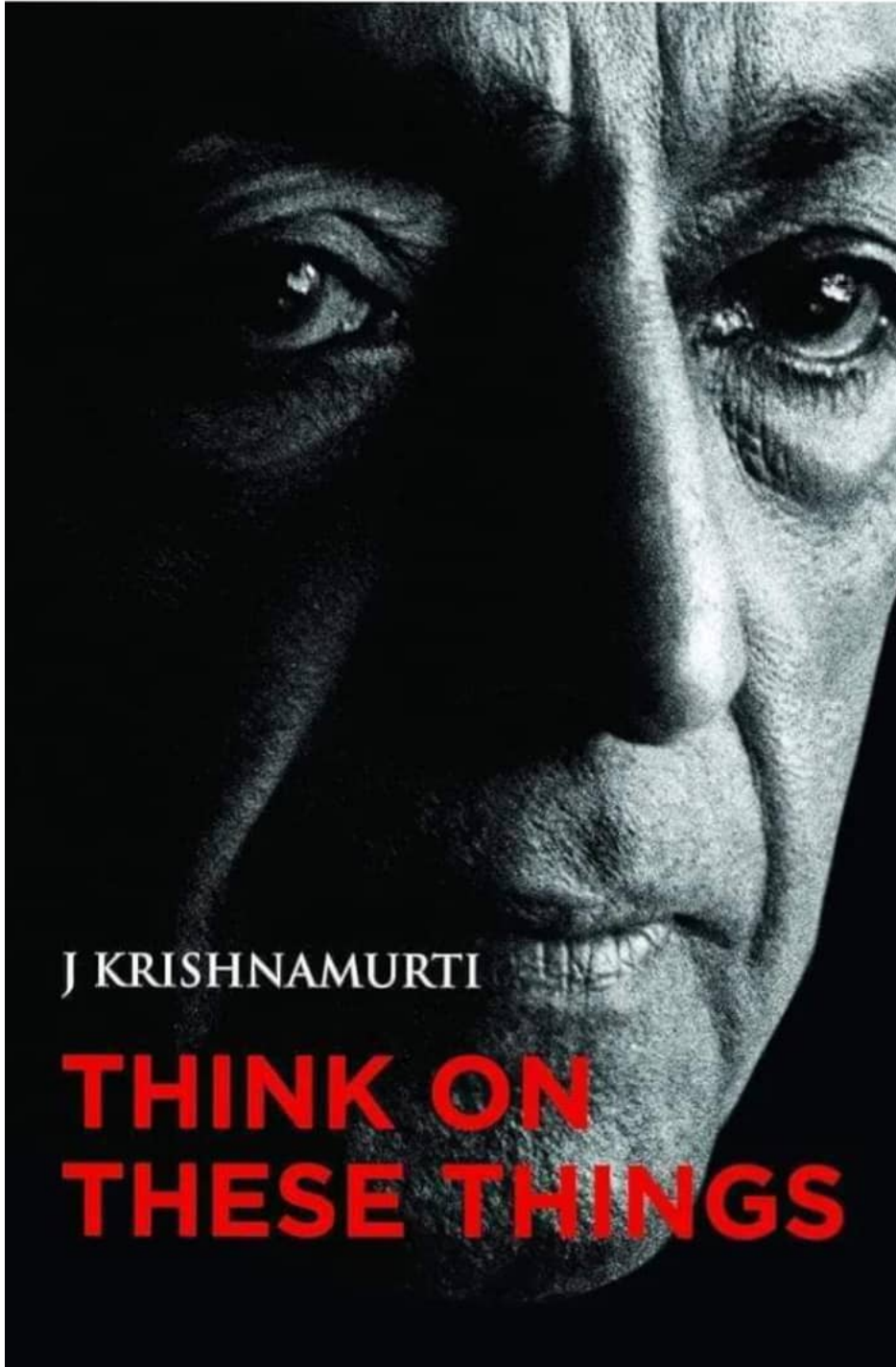
ॐ ओशो शिवधारा ॐ 🙏🔥💖

Ravi Kumar · 1d · 🌐



जाओ और हर दिन उसी पेड़ के नीचे शांति से बैठो, और तुम्हें जल्द ही यह एहसास होना शुरू हो जाएगा कि तुम्हारे चारों ओर सब कुछ जीवित है। लेकिन यह सब देखने और इसका आनंद महसूस करने के लिए आपके अंदर वास्तविक शांति होनी चाहिए।

जे कृष्णमूर्ति





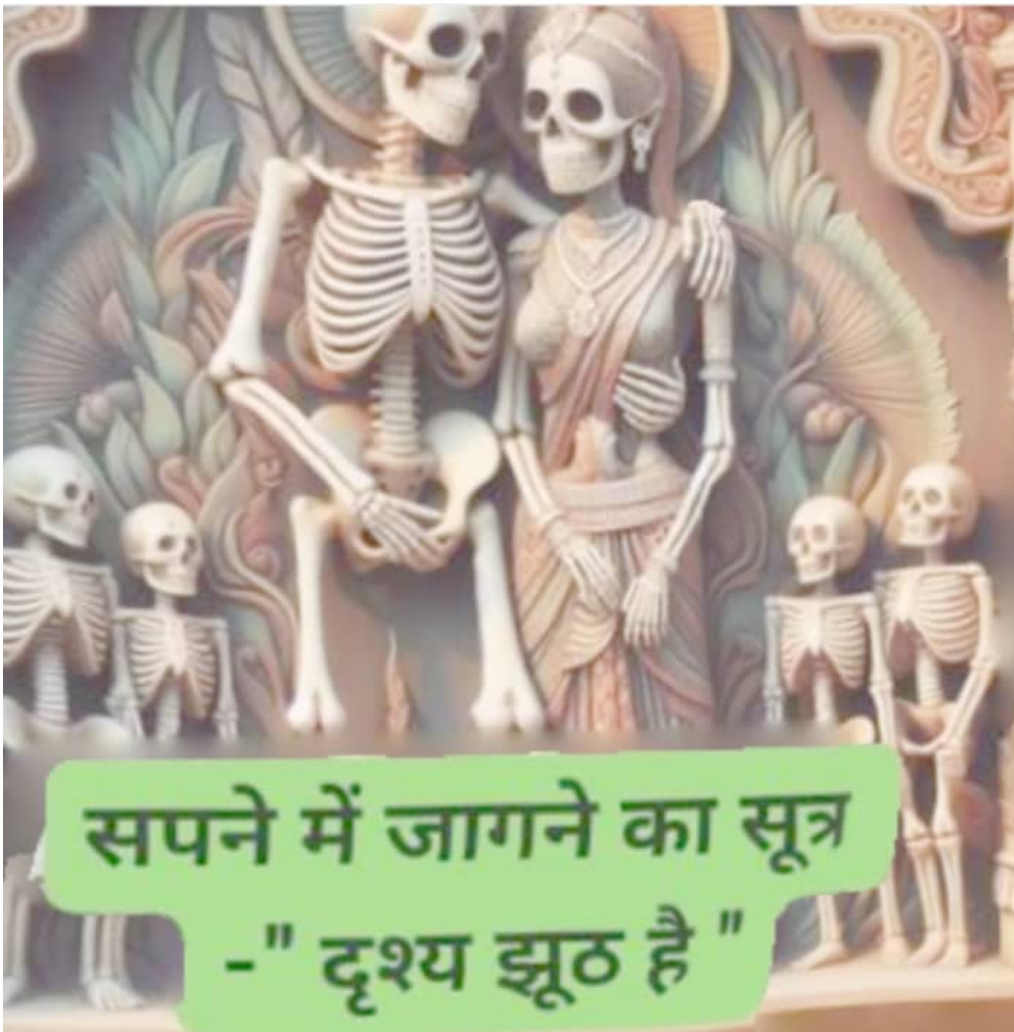
facebook



जन्म जन्म बड़ा होता बिछता था जन्म का बहूत बार बड़ता सूरज का
किरणें इंद्रधनुष का जाल बुनती थीं। कैसा रंगीन था! कैसा सतरंगा था!
कैसे काव्य की स्फुरणा हो रही थी! और अभी गया। गया तो सब गए
इंद्रधनुष! गया तो सब गए सतरंग। गया तो गया सब काव्य! कुछ भी न
बचा।

क्षणभंगुर से हमारा जो संबंध हम बना लेते हैं और शाश्वत की आकांक्षा
करने लगते हैं उससे दुख पैदा होता है। शाश्वत जरूर कुछ है; नहीं है,
ऐसा नहीं। शाश्वत है। तुम्हारा होना शाश्वत है। अस्तित्व शाश्वत है।
आकांक्षा कोई भी शाश्वत नहीं है। दृश्य कोई भी शाश्वत नहीं है। लेकिन
द्रष्टा शाश्वत है।

ओशो



तुम तड़पोगे। तुमने अपने विषाद के बीज बो लिए। तुमने अपनी आकांक्षा में ही अपने जीवन में जहर डाल लिया। यह टिकनेवाला नहीं है। कुछ भी नहीं टिकता यहां। यहां सब बह जाता है। आया और गया। अब तुमने यह जो आकांक्षा की है कि शाश्वत हो जाए, सदा-सदा के लिए हो जाए; यह प्रेम जो हुआ, कभी न टूटे, अटूट हो; यह श्रृंखला बनी ही रहे, यह धार कभी क्षीण न हो, यह सरिता बहती ही रहे--बस, अब तुम अड़चन में पड़े। आकांक्षा शाश्वत की और प्रेम क्षणभंगुर का; अब बेचैनी होगी, अब संताप होगा। या तो प्रेम मर जाएगा या प्रेमी मरेगा। कुछ न कुछ होगा। कुछ न कुछ विघ्न पड़ेगा। कुछ न कुछ बाधा आएगी।

ऐसा ही समझो, हवा का एक झोंका आया और तुमने कहा, सदा आता रहे। तुम्हारी आकांक्षा से तो हवा के झोंके नहीं चलते। वसंत में फूल खिले तो तुमने कहा सदा खिलते रहें। तुम्हारी आकांक्षा से तो फूल नहीं खिलते। आकाश में तारे थे, तुमने कहा दिन में भी रहें। तुम्हारी आकांक्षा से तो तारे नहीं संचालित होते। जब दिन में तारे न पाओगे, दुखी हो जाओगे। जब पतझड़ में पत्ते गिरने लगेंगे, और फूलों का कहीं पता न रहेगा, और वृक्ष नग्न खड़े होंगे दिगंबर, तब तुम रोओगे, तब तुम पछताओगे। तब तुम कहोगे, कुछ धोखा दिया, किसी ने धोखा दिया। किसी ने धोखा नहीं दिया है। जिस दिन तुम्हारा और तुम्हारी प्रेयसी के बीच प्रेम चुक जाएगा, उस दिन तुम यह मत सोचना कि प्रेयसी ने धोखा दिया है; यह मत सोचना कि प्रेमी दगाबाज निकला। नहीं, प्रेम दगाबाज है। न तो प्रेयसी दगाबाज है, न प्रेमी दगाबाज है--प्रेम दगाबाज है। जिसे तुमने प्रेम जाना था वह क्षणभंगुर था, पानी का बबूला था। अभी-अभी बड़ा होता दिखता था। पानी के बबूले पर पड़ती सूरज की किरणें इंद्रधनुष का जाल बुनती थीं। कैसा रंगीन था! कैसा सतरंगा था! कैसे काव्य की स्फुरणा हो रही थी! और अभी गया। गया तो सब गए इंद्रधनुष! गया तो सब गए सतरंग। गया तो गया सब काव्य! कुछ भी न बचा।

क्षणभंगुर से हमारा जो संबंध हम बना लेते हैं और शाश्वत की आकांक्षा करने लगते हैं उससे दुख पैदा होता है। शाश्वत जरूर कुछ है; नहीं है, ऐसा नहीं। शाश्वत है। तुम्हारा होना शाश्वत है। अस्तित्व शाश्वत है। आकांक्षा कोई भी शाश्वत नहीं है। दृश्य कोई भी शाश्वत नहीं है। लेकिन द्रष्टा शाश्वत है।

ओशो

तीन महीने पूरे होते-होते एक दिन तुम अचानक पाओगे कि रात सपने में, अचानक बीच सपने में तुम्हें स्मरण आ जाता है--झूठ! और वहीं सपना टूटकर बिखर जाता है। तीन महीने तुमने अभ्यास किया कि जो दिखाई पड़ रहा है--झूठ, जो दिखाई पड़ रहा है--झूठ, जो दिखाई पड़ रहा है--झूठ। यह अभ्यास गहरे चला गया। इसका तीर प्रवेश कर गया तुम्हारे हृदय की आखिरी सीमा तक। फिर एक दिन वहीं से रात सपना भी दिखाई ही पड़ेगा। यह अभ्यास एक दिन बोलेगा सपने में--'झूठ'। झूठ कहते ही, यह भाव उठते ही कि यह झूठ है, यह सपना है--सपना बिखर जाता है। सन्नाटा छा जाता है। और जिस क्षण तुम्हें याद आता है कि यह सपना है, इधर सपना टूटा, उधर तुम जागे। दृश्य गया, द्रष्टा उठा।

और जिस दिन तुम सपने में जान लोगे कि यह झूठ है, सपना झूठ है, दृश्य झूठ है, द्रष्टा सच है; उस दिन तुम सुबह जागकर पाओगे, अब अभ्यास की जरूरत न रही। अब तो जो दिखाई पड़ता है वह झूठ है। झूठ का यह अर्थ नहीं है कि नहीं है, झूठ का इतना ही अर्थ है: आभास है। झूठ का इतना ही अर्थ है: शाश्वत नहीं है, क्षणभंगुर है। पानी का बबूला है। पानी पर बबूले उठते हैं, झूठ तो नहीं हैं, हैं तो। लेकिन झूठ इस अर्थ में हैं, टिकेंगे नहीं। अभी उठे, अभी गए। क्षणभंगुर हैं। आई लहर, गई लहर। टिकती नहीं, स्थिर नहीं है, थिरता नहीं है। कल नहीं थी, आज है, कल फिर नहीं हो जाएगी।

इस परिभाषा को याद रखना। पूरब की सत्य की यह परिभाषा है: जो सदा रहे वह सत्य। जो सतत रहे वही सत्य। सतत का निचोड़ ही सत्य। सत्य और सतत एक ही अर्थ रखते हैं। वह जो सातत्य है, वही सत। जो आज है कल नहीं हो जाए, वही असत। जिसका सातत्य न रहे, वही असत।

असत को खयाल रखना। असत का यह मतलब नहीं होता कि नहीं है। पानी का बबूला भी है तो। रात का सपना भी है तो। सपना है, तो भी है तो। पानी पर उठी लहर है, मगर है तो। थोड़ी देर को है, बस इतना ही अर्थ है। और थोड़ी देर को जो है, उसमें जो उलझ गया वह दुख पायेगा। क्योंकि जो थोड़ी देर को है, थोड़ी देर बाद नहीं हो जाएगा।

तुम एक प्रेम में पड़ गए। तुमने एक स्त्री को चाहा, एक पुरुष को चाहा, खूब चाहा। जब भी तुम किसी को चाहते हो, तुम चाहते हो तुम्हारी चाह शाश्वत हो जाए। जिसे तुमने प्रेम किया वह प्रेम शाश्वत हो जाए। यह हो नहीं सकता। यह वस्तुओं का स्वभाव नहीं। तुम भटकोगे। तुम रोओगे। तुम तड़पोगे। तुमने अपने विषाद के बीज बो लिए। तुमने अपनी



Osho Human Being To Be.In.God

...



2h · 🌐

रात तुम सपना देखते हो, तुम भलीभांति जानते हो झूठ है। रात नहीं, सुबह जागकर जानते हो कि झूठ है। रात जान लो तो तुम प्रबुद्ध पुरुष हो जाओ, बुद्ध हो जाओ। रात तो तुम फिर भूल जाते हो। यह तुम्हारी पुरानी आदत है दृश्य में भूल जाने की। फिल्म में भूल जाते हो, टी. वी. पर देखते-देखते भूल जाते हो, किताब पढ़ते-पढ़ते भूल जाते हो। रात सपना देखते हो, अपनी ही कल्पना का जाल, वहां भूल जाते हो। और लगता है सब सच है, सब ठीक है। बिल्कुल असंगत बातें भी ठीक लगती हैं। जो जरा भी संभव नहीं है वह भी ठीक लगता है।

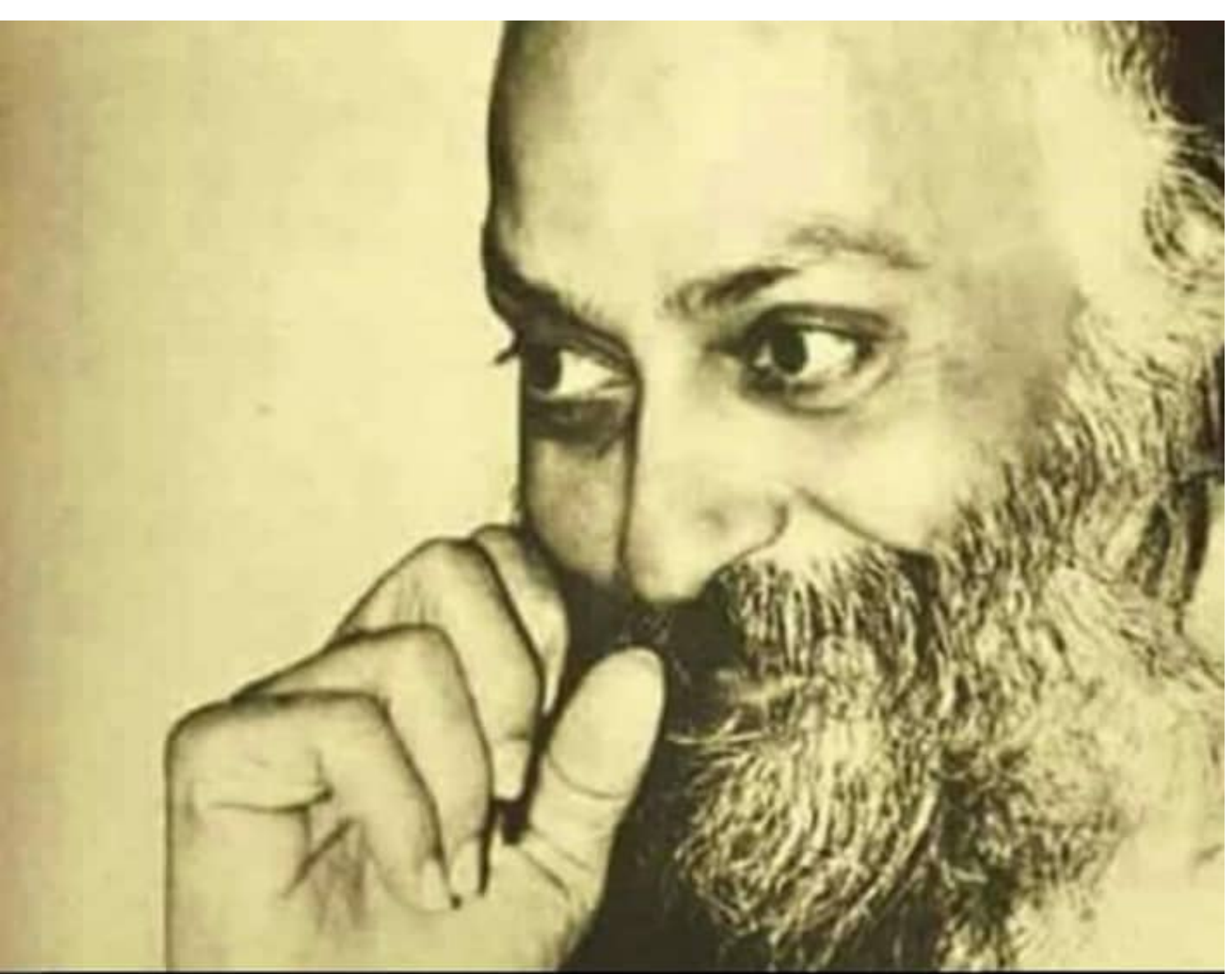
एक पत्थर पड़ा है राह के किनारे, पास तुम पहुंचते हो, अचानक पत्थर उचककर खरगोश हो जाता है, फिर भी तुम्हें कोई अड़चन नहीं आती। घोड़ा चला आ रहा है, बदलकर पत्नी हो जाती है, तुम्हें कुछ अड़चन नहीं मालूम होती। तुम यह भी नहीं सोचते एक क्षण को, यह कैसे हो सकता है।

नहीं, तुम दृश्य में इतने लीन हो कि सोचने वाला है कहां? जागकर देखनेवाला है कहां? निर्णय कौन करे? तुम तो हो ही नहीं। तुम तो सिर्फ, तुम तो नकार हो। तुम्हारी मौजूदगी नहीं है। तुम्हारी मौजूदगी की किरण आ जाए तो सपना अभी टूटने लगे, अभी बिखरने लगे।

गुरजिएफ अपने शिष्यों को साधना के पूर्व तीन महीने के लिए एक ही प्रयोग करवाता था कि किसी भांति सपने में जागना आ जाए। बहुत सी विधियां उसने खोजी थीं। उनमें एक विधि यह थी कि तीन महीने तक चलो, उठो, बैठो, बाजार जाओ, दूकान जाओ, दफ्तर जाओ, मगर एक बात खयाल रखो कि जो भी तुम देख रहे हो झूठ है। इसको स्मरण रखो। इस स्मरण को गहराओ। इस बात का अभ्यास करो कि जो भी देख रहे, सब झूठ है।

बड़ी कठिनाई है। राह पर तुम चल रहे हो, जो लोग चल रहे--झूठ, जो कारें दौड़ रहीं--झूठ, जो बसें चल रहीं--झूठ; सब झूठ है। पहले तो अड़चन होती है। पहले तो बड़ी अड़चन होती है। बार-बार भूल जाते हो, क्योंकि जन्मों-जन्मों तक इसे सच माना है। लेकिन गुरजिएफ कहता है, चेष्टा करते रहो। कोई महीने भर के प्रयोग के बाद यह बात थमने लगती है। यह भाव बना रहने लगता है कि सब झूठ।

तीन महीने पूरे होते-होते एक दिन तुम अचानक पाओगे कि रात सपने में, अचानक बीच सपने में तुम्हें स्मरण आ जाता है--झूठ! और वहीं सपना टूटकर बिखर जाता है। तीन महीने तुमने अभ्यास किया कि जो



यदि चाहते हो कि जीवन में आनंद ही आनंद हो जाए,
कि कोई भी चोट चोट न रहे,
कि कोई पत्थर भी मारे तो फूल की वर्षा हो,
कि कोई जहर भी पिलाए तो अमृत हो जाए
--तो उसका एक ही रास्ता है:
अपेक्षाओं को छोड़ दो, निरपेक्ष होकर जीओ।
और निरपेक्षता तुम्हारे हाथ में है,
कोई दूसरा तुम्हें दे न सकेगा



फूंक मारकर दिये को बुझा सकते है
अगरबत्ती को नहीं, क्योंकि जो सुगंध
फेलता है उसे कोई बुझा नहीं सकता।



119



3



Send



mrss3690



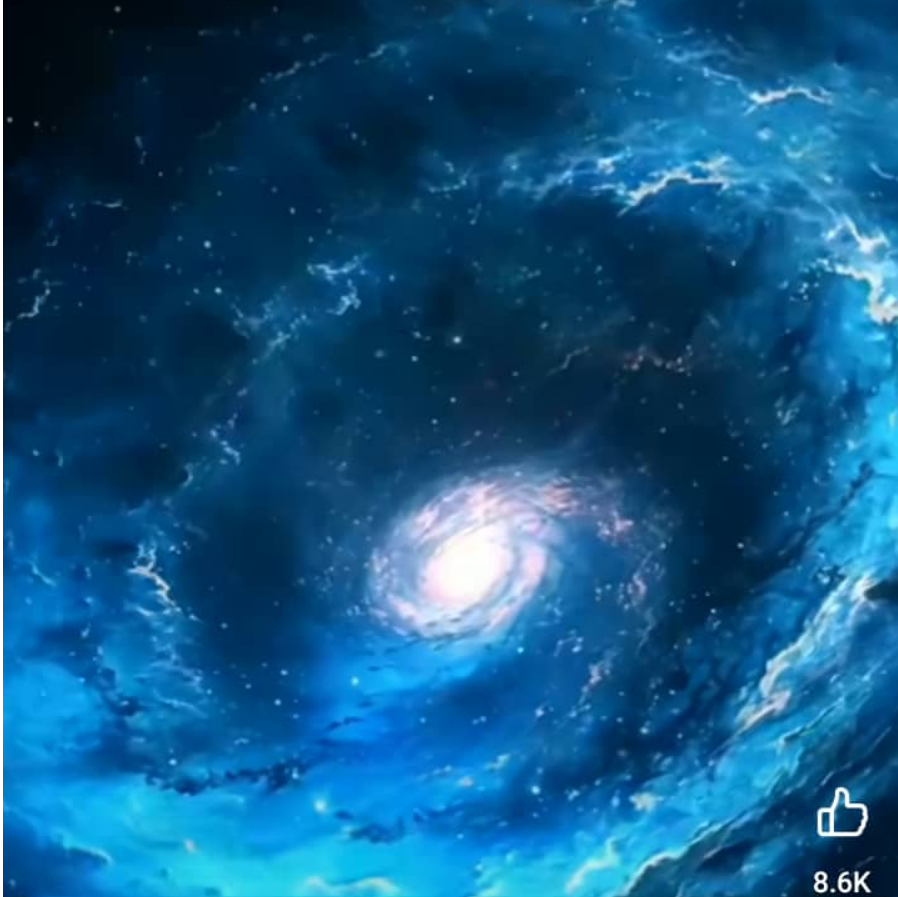
Add a comment...



← Reels ▾



@oshorajneesh__



8.6K

सभी जन्मों के पीछे मौत की घटना छिपी है।



41



810

@oshorajneesh__



oshorajneesh__



Send

🌸 "GET SUBSCRIPTION" 🌸 for exclusive ... more



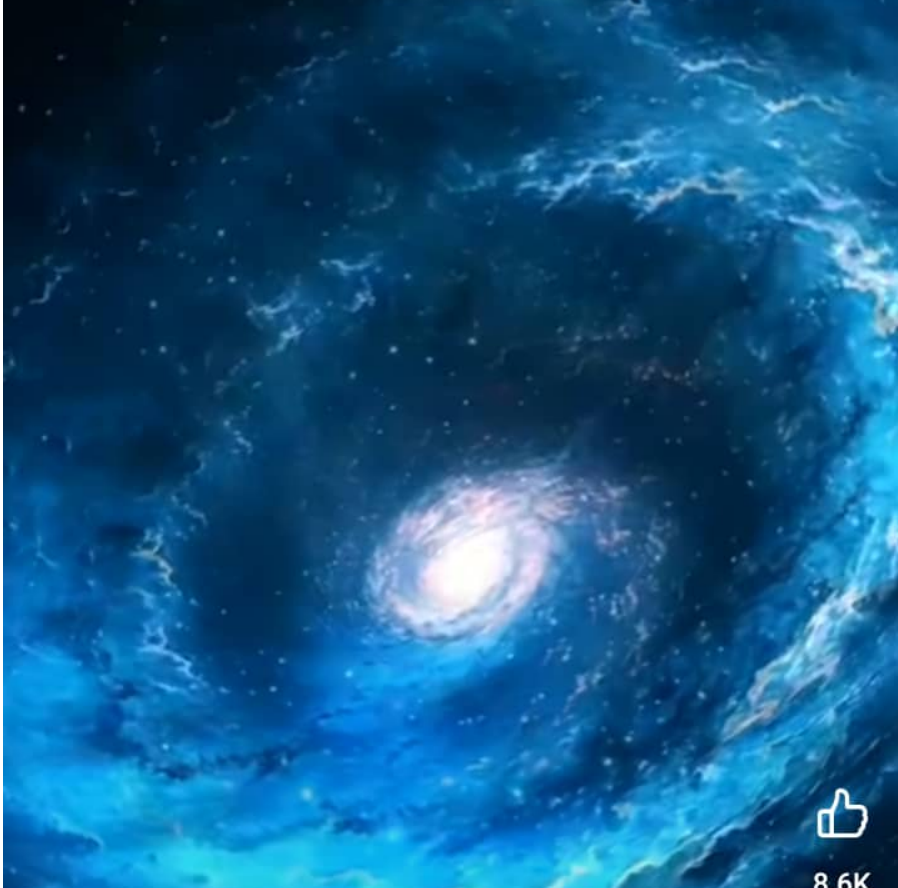
Add a comment...



← Reels ▾



@oshorajneesh__



कोई जन्म नया जन्म नहीं है।



8.6K



41



810

@oshorajneesh__



oshorajneesh__



Send

🌸 "GET SUBSCRIPTION" 🌸 for exclusive ... more

Add a comment...



← Reels ▾



और इसलिए हर जन्म नया जन्म
मालूम होता है।



8.6K



41



810



Send



oshorajneesh_

🌸 "GET SUBSCRIPTION" 🌸 for exclusive ... more

Add a comment...



← Reels ▾



अनेक बार मर जाने के बाद भी हमें
याद नहीं रहता कि हम पीछे भी मर चुके हैं।



8.6K



41



810

@oshorajneesh__



oshorajneesh__



Send

🌸 "GET SUBSCRIPTION" 🌸 for exclusive ... more

Add a comment...



[← Reels](#)

Love You Osho

मगर तुमने सच में मुझे हृदय से
पूना। तो मेरी आँखें सदा तुम पर
होंगी। और मैं तुम्हारा आकाश हो
जाऊँगा। तुम्हें घेरे हुए चलूँगा। तुम
हाँ भी जाओगे मुझे अपने साथ
जाओगे। और जो भी सहायता
आवश्यक होगी तत्क्षण तुम तक
हो जाएगी। ये मेरा वचन है -
मैं जाँचूँगा!

★ Send a gift



Love You Osho

Send



oshoduniya.com



"छोटे चोर अदालतों में फंस जाते हैं, कारागृहों में सड़ते हैं। बड़े चोर ! उनका इतिहास लिखा जाता है। नेपोलियन क्या है? सिकंदर क्या है? तैमूरलंग क्या है? बाबर, औरंगजेब, अकबर, अशोक क्या हैं? केसे ही उनके ढंग हों ऊपर से, महाचोर हैं। उनसे बड़े लुटेरे खोजने मुश्किल हैं। पर लूट इतनी बड़ी है कि लूट जैसी मालूम नहीं होती, सम्राट मालूम होते हैं। बड़े डाकू हैं। उनसे बड़े हत्यारे खोजने मुश्किल हैं। एच. जी. वेल्स ने लिखा है, 'अगर तुम एकाध हत्या करो तो मुश्किल में पड़ोगे। अगर तुम लाखों हत्याएं करो तो इतिहास तुम्हारे गुणगान करेगा। इस जगत में सिर्फ छोटा फंसता है, बड़ा बच जाता है..👍❤️💻

❤️ओशो❤️

नायक हमेशा दुश्मनों से लड़ते
हैं,
और नालायक हमेशा अपनों से
लड़ते हैं!

यही दुनियाँ है।

किसी के साथ हम वक्त को भूल
जाते हैं। कोई वक्त के साथ हमें भूल
जाता है।



Bui M Singh Sbi Police Sikand...

Today, 7:46 am



व्यवहारिक नहीं अब दुनियां
व्यावसायिक हो गई है,,
सम्बन्ध उनसे ही मधुर हैं जिनसे
मुनाफा अधिक है।



DNA



This image is of a star
exploding in the
constellation Vela, about
11000 years ago.



dnaindia.com



DNA



This image, captured by
NASA's Hubble Space
Telescope, shows that a NGC
7714 galaxy distorted due to
a collision with
neighbouring galaxy.



dnaindia.com



CamScanner

This image is of Great Carina Nebula, which is one of Galaxy's largest star-forming regions. Spanning over 300 light years, this nebula is surrounded by interstellar gas and cosmic dust clouds.



UPC Stat Upendra

Yesterday, 8:29 am



कैसे हो पायेगी...

अच्छे इन्सानों की पहचान...

दोनों ही नकली हो गये...

आँसू और मुस्कान।

Good Morning

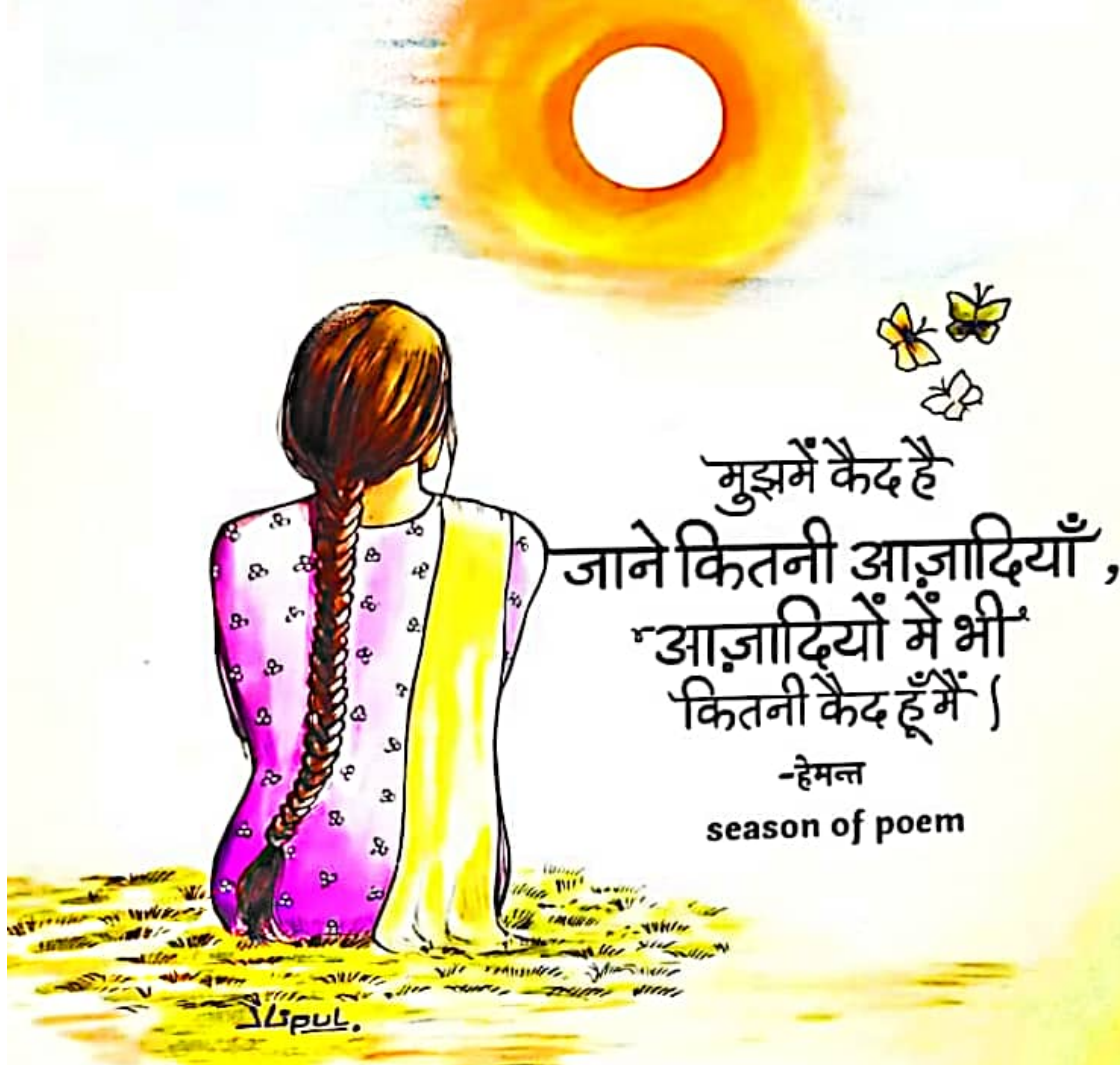


परमात्मा को तुम नहीं जानते, मैं तो जानता हूँ। तुम
कितने ही मेरे चरण पकड़ो, मैं तो तुम्हें उसके ही
चरण पकड़ाऊंगा। क्योंकि मेरे चरण आज हैं, कल
नहीं होंगे। वे तो मिट्टी के हैं। मिट्टी में मिल जाएगी।
मैं तुम्हें वे चरण पकड़ाता हूँ जो चिन्मय हैं। वे कभी
नहीं मिटेंगे। तुम सदा उन चरणों में डूबे रहोगे।

तुम्हें मुझसे प्रेम है, तुम्हें मुझसे लगाव है,
तुम्हारी गहन श्रद्धा मेरी तरफ है, लेकिन मैं आज हूँ
और कल नहीं होजाऊंगा। फिर क्या करोगे? फिर तुम
पत्थर की मूर्ति बना लोगे। फिर तुम पत्थर की पूजा
करोगे। यही तो होता रहा है। ☆ ~ ओशो ~ ☆



मैं तुम्हारे सारे गुरुओं से सावधान रहा
तुम मेरे सारे शिष्यों से सावधान रहना-ओशो



मुझमें कैद है
जाने कितनी आज़ादियाँ,
आज़ादियों में भी
कितनी कैद हूँ मैं।

-हेमन्त
season of poem



U RameshChand Yadav

Today, 3:12 pm



कृष्ण कहते हैं

कुछ लोग दिखावे के लिए
अच्छे बनते हैं मगर वे लोग
ये भूल जाते हैं की ईश्वर उन्हें
बाहर से नहीं भीतर से जनता है.!!

Reply





U RameshChand Yadav

Today, 3:15 pm

3

"तुलना" ऐसा खेल है!
जो.... उसमें "उलझा"
वो कभी नहीं सुलझा!

Reply





UPC Dean Office Omprakashu...

Today, 12:12 pm



किसी को भी नाराज न करें।
वोट देने साइकिल से जाएं,
हाथी को प्रणाम करके हाथ
से कमल का बटन दबाएं।

हाथ 🖐 भी खुश
हाथी 🐘 भी खुश
साइकिल 🚲 भी खुश
कमल 🌺 भी खुश
और
आप भी खुश।



Reply



पूजा करने का
कोई सिद्धांत नहीं है,
परमात्मा हर उस दिल की सुनता है,
जो की पवित्र, निर्दोष
और ईमानदार है..!



ideal_osho

आपके भीतर बैठे परमात्मा को मेरा नमस्कार 🙏

More

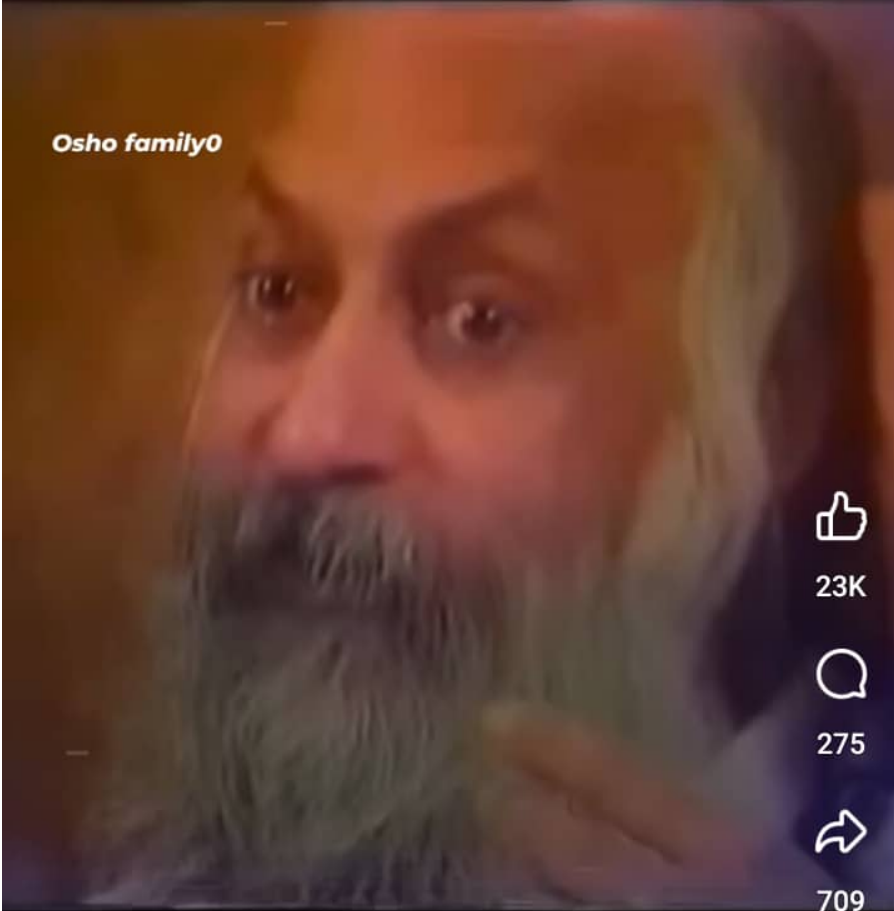
Add a comment...





मैं वही कहता हूं
जो मैंने अनुभव किया,,,

Osho family0



23K



275



709



osh_family

Follow me 😊

#trending #osho #gyaan #books ... more



Send



Franz Lambert · 1492 Cor



Add a comment...





साइकोलॉजी के अनुसार आप
जिसके बारे में जैसा महसूस करोगे
सामने वाला व्यक्ति उस फीलिंग
को महसूस कर लेगा क्योंकि हमारा
दिमाग बिना बोले ही उस तक
आपकी **Vibes** को पहुंचा देता है



10K



10



88



Send



ke comment and share 

krishana_sy 

New reel #newpost #trend #v #viralvideo... more

Add a comment...





तू असंग है
ओशो

★ Send a gift



रजनिशी

WhatsApp - 98765-67791 / 73024-9... more



284



3



51



Send





कबीर

"वेद पुरान सब झूठ हैं,
उसमे देखा पोल।
अनुभव की है बात कबीरा,
घट पर्दा देखा खोल।।

संत कबीरदास जी

अर्थ-

वेद पुराण आदि धर्मग्रंथ झूठ के पुलिन्द
कबीर ने उसमे धर्म के पोल देखे हैं।
कबीर ने अनुभव किया है।
अपने हृदय के परदे को हटा कर देखने
से साक्षात् ईश्वर का दर्शन संभव है।

kabir_vani1



1.4K



14



110



Send



spritualmint @

वेद पुरान सब झूठ हैं, उसमे देखा पोल। अनुभव की है... more

आरंभ हो...अंत न हो,
मन इतना भी स्वतंत्र न हो...

सुख थोड़ा मिले कोई बात नहीं
किंतु मन में कोई षड्यंत्र न हो...!! 🌹

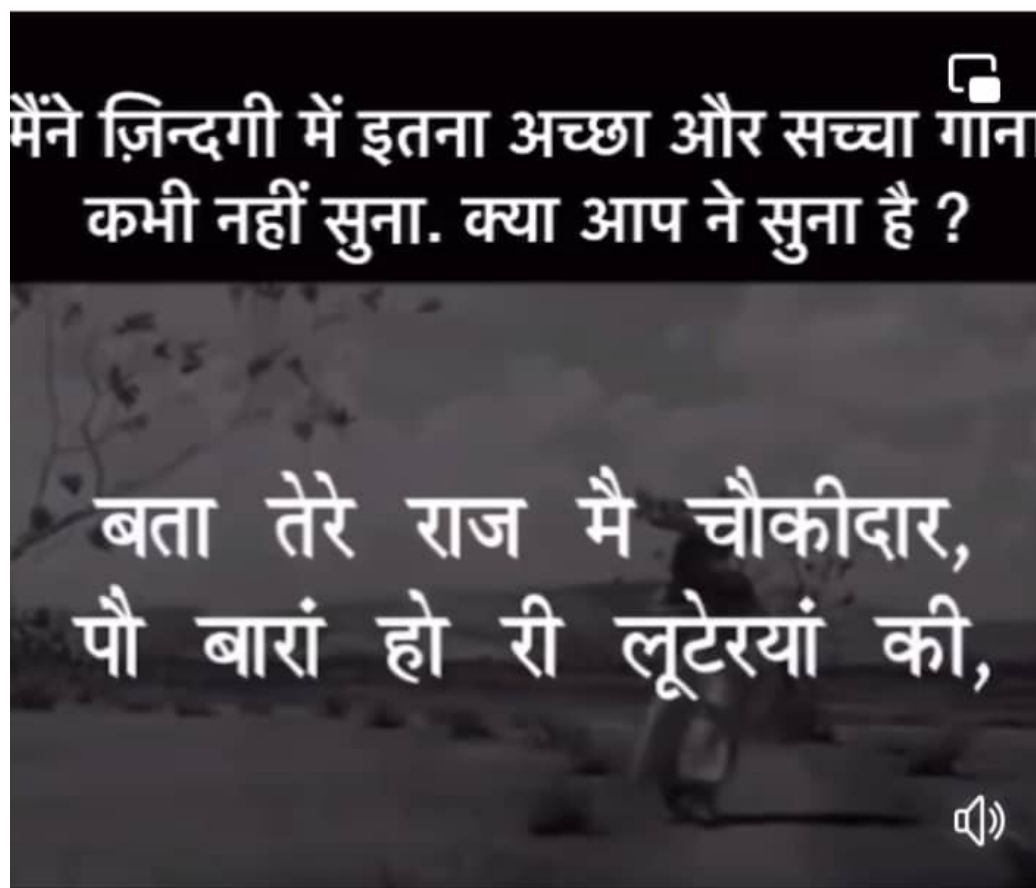


Rupesh Dhangar • Follow



10 Aug 2023 · 🌐

भाई जिसने भी लिखा और गाया बहुत लाजवाब गीत है,,



Osho dhyam. and 154K others

7.6K comments • 71K shares



Like



Comment



Send



Share



Manoj Pathak



27 Oct 2023 · 🌐

#अमीर_खुसरो #हबीब_पेंटर

इधर काशी में है पत्थर, इधर काबा में है पत्थर... See more



ओशो प्रेम

हार कर भी जो नहीं हारा कभी
सफलता उसके हृदय का गीत



105



8



Send



Osho Prem

Following

#oshoind #oshoreels #reelsinstagram #o... more



ओशो प्रेम

ओशो प्रेम

सफलता का एक कोई पंथ नहीं
विफलता की गोद में ही जीत है।



105



8



Send



Osho Prem

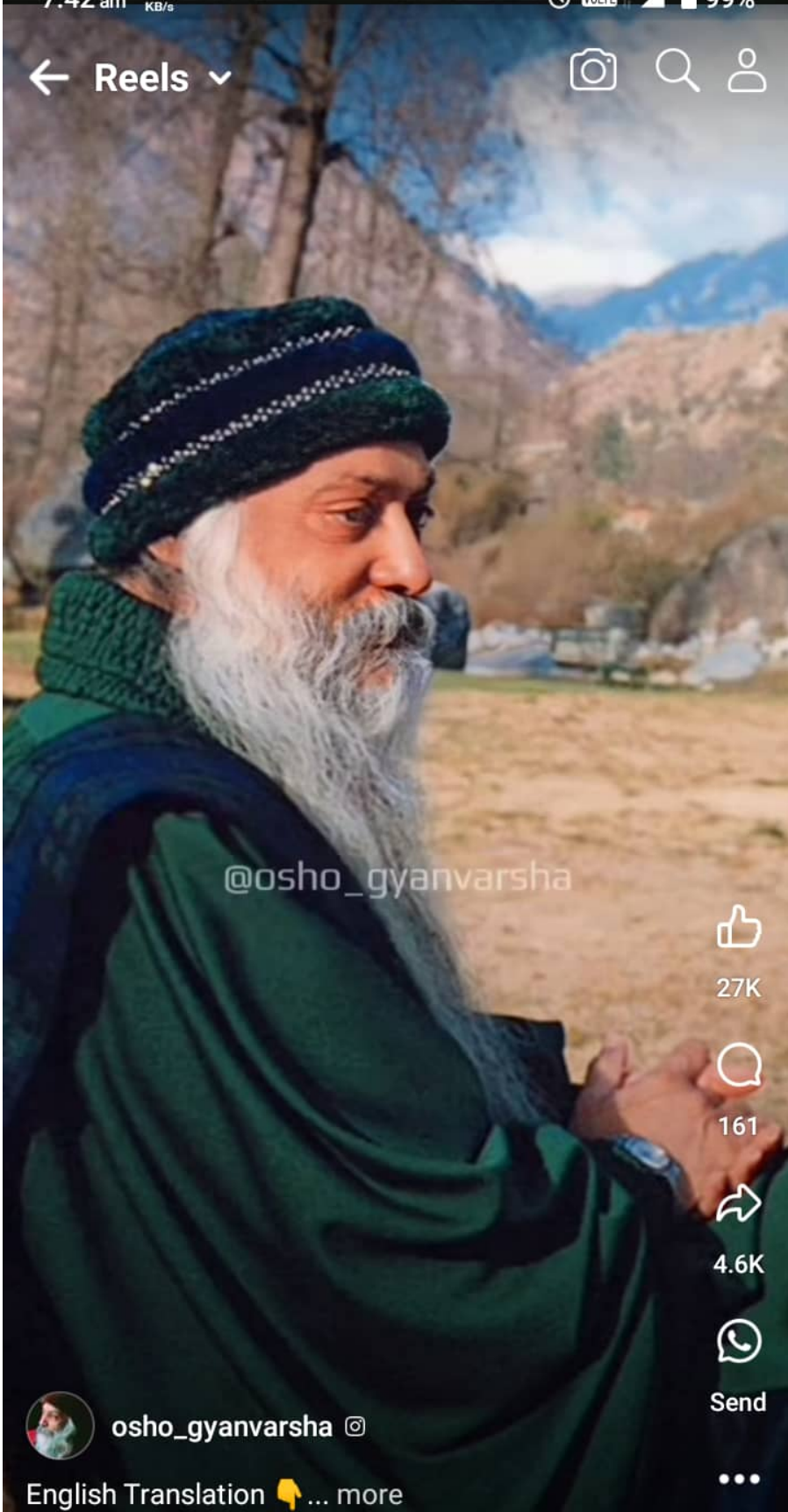


Following

#oshind #oshoreels #reelsinstagram #o... more



← Reels ▾



@osho_gyanvarsha



27K



161



4.6K



Send



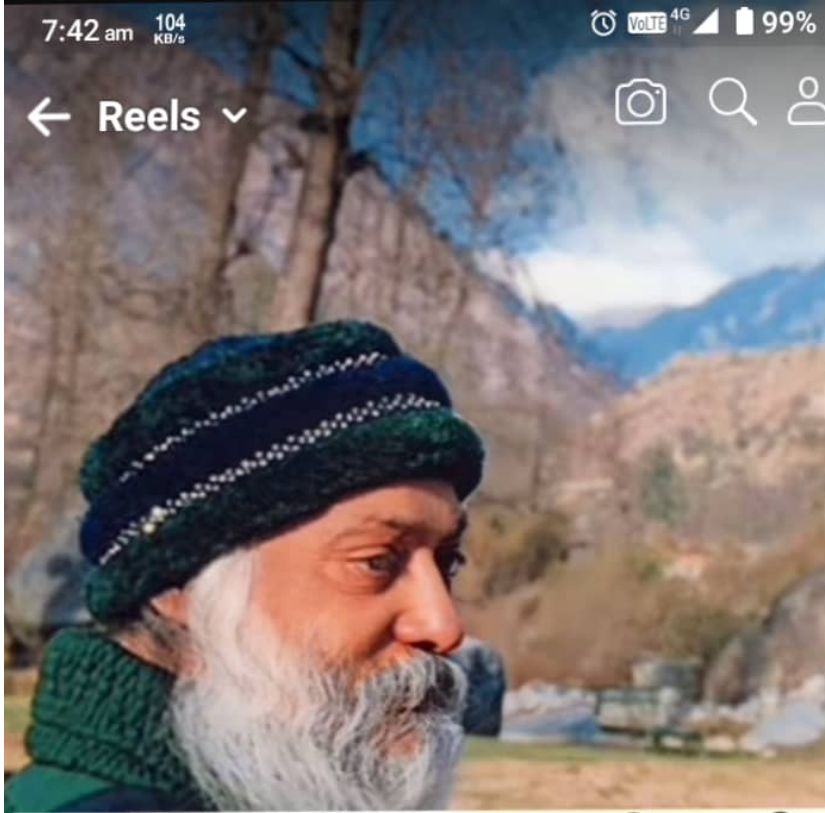
osho_gyanvarsha

English Translation 🗨️ ... more

Add a comment...



← Reels ▾



इसीलिए तो जीसस को सूली
लगानी पड़ी और मंसूर को मार
डालना पड़ा,



27K



161



4.6K



Send



osho_gyanvarsha



English Translation 🗨️ ... more

Add a comment...





मुक्ति

मृत्यु से तो सभी मुक्त होना चाहते हैं। लेकिन जन्म से कोई मुक्त नहीं होना चाहता। यही हमारी कठिनाई है।

दुख से सभी मुक्त होना चाहते हैं,
सुख से कोई मुक्त नहीं होना चाहता।
जिस दिन तुम सुख से मुक्त होना चाहोगे,
उसी दिन तुम्हारे जीवन में क्रान्ति घटी,
उस दिन तुम धार्मिक हुए।

Osho



**Mansa Anand Dasghara**

23h · 🌐



मैं शरीर नहीं हूँ-(ध्यान)-ओशो

एक भारतीय संन्यासी कहता है: मैं कूदना चाहता हूँ और फिर भी मैं कूदा नहीं पाता हूँ, मैं वही करना चाहता हूँ जो आप मुझसे करवाना चाहते हैं, और फिर भी मेरा एक हिस्सा है जो हमेशा विरोध करता रहता है, और मैं बहुत भ्रम में हूँ...]

(हँसते हुए) मैं जानता हूँ, यह स्वाभाविक है। कोई भी पूरी तरह से समर्पण नहीं कर सकता, कोई भी नहीं। यदि तुम पूर्ण समर्पण कर सकते हो तो इसी क्षण तुम प्रबुद्ध हो जाओगे। फिर करने को कुछ नहीं बचता.

इसलिए आप शुरुआत में समग्र नहीं हो सकते; यह इतना आसान नहीं है. यदि एक भाग भी समर्पण कर सके तो यह पर्याप्त से अधिक है। इसमें तो खुश होना चाहिए।

जब मैं कहता हूँ, 'कोई समस्या मत पैदा करो,' तो मेरा मतलब यह है: कि आपका एक हिस्सा समर्पित है, दूसरा हिस्सा नहीं है - इसीलिए संघर्ष है। संघर्ष स्वाभाविक है, क्योंकि अब आप विभाजित हैं, और जो हिस्सा समर्पण कर चुका है वह इसकी सुंदरता जानता है, और चाहेगा कि दूसरा हिस्सा भी समर्पण कर दे। लेकिन दूसरा हिस्सा इससे पूरी तरह अनजान है और डरता है, इसलिए संघर्ष पैदा होता है।

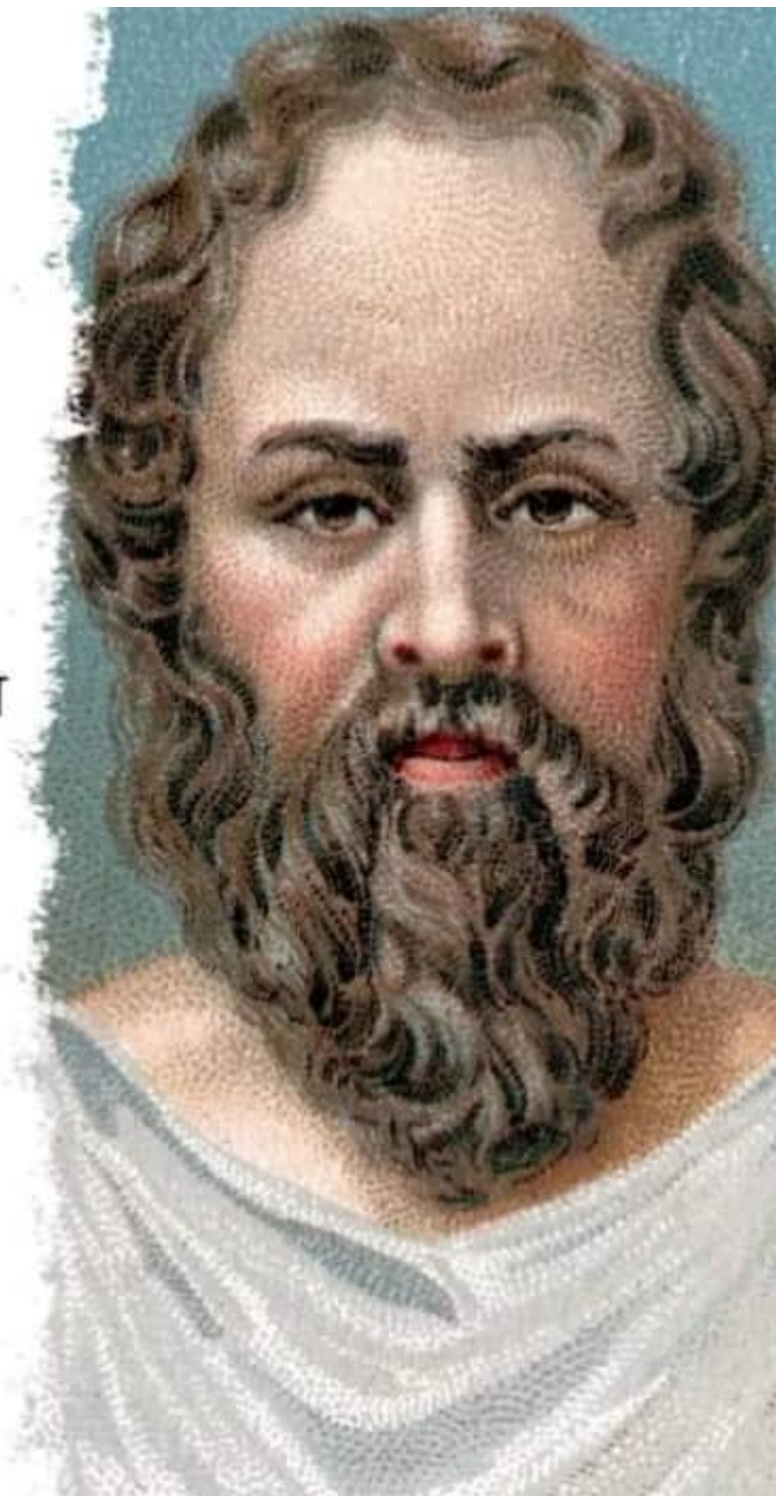
दूसरे हिस्से पर ज्यादा ध्यान न दें. एक छोटा सा हिस्सा समर्पित किया गया है - इसके बारे में खुश रहें, आभारी रहें। लाखों लोगों के साथ ऐसा भी नहीं होता। वे अपना पूरा जीवन बर्बाद कर देते हैं, और कभी नहीं जान पाते कि प्रेम क्या है, समर्पण और विश्वास क्या हैं।.....

https://oshoganga.blogspot.com/2024/04/blog-post_6.html

हर एक व्यक्ति के प्रति दयालु
बने क्योंकि हर व्यक्ति एक कठिन
लड़ाई लड़ रहा है ।

- सुकरात

Instagram : osho.vichar



रह है, कौन तुम्हारे पदाचक्षा को चिंता करेगा? तुम निकल भी न पाओगे कि तुम्हारे पदचिह्न रौंद दिए जाएंगे। लेकिन साधु—संतों के पदचिह्न बनते हैं। वहां कोई भी नहीं चलता। वहां ज्यादा संघर्ष और प्रतियोगिता ही नहीं है। साधु—संत बड़े अकेले चलते हैं। उनके पदचिह्न सदियों तक बने रहते हैं।

काश! वह आदमी सिर्फ बैठ जाता विश्राम में—जिसको अष्टावक्र ने कहा, काश उसने अपनी चेतना में विश्राम कर लिया होता—तो न पद—चिह्न बनते, न पृथ्वी विकृत होती, न छाया बनती, न छाया से बचने का उपाय करना पड़ता, न वह आदमी इस बुरी मौत मरता, इस कुत्ते को मौत मरता। अहंकार कुछ है नहीं, जिससे छूटना है। सिर्फ जाग कर देखना है कि कुछ भी नहीं है, छाया—मात्र है। तुम व्यर्थ ही भागे जा रहे हो, व्यर्थ ही परेशान हो रहे हो। बैठ जाओ, कुछ भी नहीं है। एक व्यावहारिक उपयोगिता है, उपयोगिता कर लो। बोलोगे तो कहना पड़ेगा, मैं। मैं भी बोलता हूं तो कहता हूं —मैं। बुद्ध भी बोलते हैं तो कहते हैं मैं। कृष्ण भी बोलते हैं तो कहते हैं मैं। लेकिन वहां मैं जैसा कोई भी नहीं। वे जानते हैं कि मैं सिर्फ एक भाषागत उपयोगिता है, एक व्यवहारगत उपयोगिता है। संवाद की जरूरत है। कहनी पड़ती है। मानी हुई बात है, सत्य नहीं।

साक्षी होने का इतना ही अर्थ है कि तुम गौर से देख लो जो भी तुम्हारी दशा है। उस गौर से देखने में तुम्हें पता चल जाएगा क्या है और क्या नहीं है? जो है, वही है आत्मा। जो नहीं है, वही है अहंकार।

*अष्टावक्र महागीता 🙏 ओशो:—\$\$\$ 🙏 *

राजाओं को चलते देखा है? जब वे चलते हैं तो आगे उनके मखमल बिछाई जाती है। उनके पदचिह्न मखमल पर पड़ते हैं। ये कोई साधारण आदमी थोड़े ही हैं कि मिट्टी पर। साधारण मिट्टी पर तो सभी के पदचिह्न पड़ते हैं।

एक हैं, जो इस छाया को सजाने में लगे हैं। यह एक तरह का पागलपन है। फिर दूसरे हैं, जो इस छाया से भयभीत हो गए हैं—भगोड़े, तथाकथित साधु—संत। संसारी छाया को सजाने में लगे हैं, छाया के आस—पास महल बना रहे हैं। और जिनको तुम गैर—संसारी कहते हो, विरागी कहते हो, वै भाग खड़े हुए, वे भाग रहे हैं कि छाया से दूर निकल जाएं। और छाया है नहीं। सजाओ तो भ्रांति है, भागों तो भ्रांति है। दोनों हालत में तुम मरोगे। कुछ सजाते—सजाते गिर पड़ेंगे, कुछ भागते—भागते गिर पड़ेंगे। सूफी कहते हैं, काश उस पागल आदमी को इतनी अक्ल होती कि मैं छाया में जा कर बैठ जाऊं किसी वृक्ष की, तो छाया मिट जाती। छाया बनती है जब तुम सूरज के सामने खड़े होते हो, सूरज के नीचे खड़े होते हो। छाया बनती है जब तुम धूप में खड़े होते हो, प्रकाश में खड़े होते हो। छाया बनती है जब तुम अहंकार की घोषणा करते हो, जब तुम कहते हो, 'देख दुनिया मुझे! पहचाने दुनिया मुझे! पड़े प्रकाश सारी दुनिया का मुझ पर!' जब तुम सम्मान चाहते हो, सफलता चाहते हो, तब छाया बनती है। सूरज की रोशनी में। सूफी कहते हैं; काश यह पागल आदमी हट गया होता, किसी छप्पर के नीचे शांति से बैठ गया होता, छाया मिट गई होती!

जो सम्मान नहीं चाहते, जो पद—प्रतिष्ठा नहीं चाहते, जो यश—गौरव नहीं चाहते, उनकी छाया मिट जाती है। वे छाया में खुद ही बैठ गए, अब छाया बनेगी कैसे? काश यह आदमी बैठ जाता तो पदचिह्न बनने बंद हो जाते। भागने से कहीं पद—चिह्न बनने बंद होंगे? और बनेंगे, और ज्यादा बनेंगे। तुमने देखा? यहां सांसारिक लोगों को चाहे लोग भूल भी जाएं, संतों को नहीं भूल पाते। सांसारिक आदमी के पद—चिह्न तो जल्दी ही मिट जाते हैं, क्योंकि वहां बड़ी भीड़ चल रही है। वहां करोड़ों लोग चल रहे हैं, कौन तुम्हारे पदचिह्नों की चिंता करेगा? तुम निकल भी न पाओगे कि तुम्हारे पदचिह्न रौंद दिए जाएंगे। लेकिन साधु—संतों के पदचिह्न बनते हैं। वहां कोई भी नहीं चलता। वहां ज्यादा संघर्ष और प्रतियोगिता ही नहीं है। साधु—संत बड़े अकेले चलते हैं। उनके पदचिह्न सदियों तक बने रहते हैं।

काश! वह आदमी सिर्फ बैठ जाता विश्राम में—जिसको अष्टावक्र ने कहा, काश उसने अपनी चेतना में विश्राम कर लिया होता—तो न पद—


OSHO World Raebareli

1d · 🌐



बोधकथा क्रमांक 344

*संन्यासी वह नहीं है, जो जंगल के एकांत में चला गया। संन्यासी वह है, जिसने भीड़ में अपने एकांत को पा लिया।**स्व में विश्राम*

एक सूफी कथा है। एक आदमी था। उसे अपनी परछाईं से घृणा हो गई। न केवल परछाईं से घृणा हो गई, उसे अपने पद—चिह्नों से भी घृणा हो गई। उस आदमी को अपने से ही घृणा थी। जब अपने से घृणा थी तो अपने पद—चिह्नों से भी घृणा हो गई। और जब अपने से घृणा थी तो अपनी छाया से भी घृणा हो गई। वह बचना चाहता था। वह चाहता था कि यह छाया मिट जाए। और वह चाहता था कि मैं कोई पद—चिह्न पृथ्वी पर न छोड़ूं? मेरी कोई याद न रह जाए, मैं इस तरह मिट जाऊं कि जैसे मैं कभी हुआ ही नहीं। वह भागने लगा—छाया और पद—चिह्नों से बचने को। वह खूब दूर मीलों भागने लगा। लेकिन जितना ही वह भागता, छाया उसी के साथ घसिटती हुई भागती। वह जितना भागता, उतने ही पद—चिह्न बनते। आखिर उसकी बुद्धि ने कहा कि तुम ठीक से नहीं भाग रहे, तुम तेजी से नहीं भाग रहे हो। उसके तर्क ने कहा कि इस तरह काम न चलेगा, ऐसे तो तुम भागते रहोगे, छाया साथ लगी है। तुम्हारे दौड़ने में जितनी गति होनी चाहिए उतनी गति नहीं है। गति से दौड़ो! तुम जितनी तेजी से दौड़ रहे हो, उतनी तेजी से तो छाया भी दौड़ रही है। इसलिए छाया भी उतना दौड़ सकती है। इतने दौड़ो कि छाया न दौड़ सके, तो संबंध टूट जाए। तो वह इतना ही दौड़ा और कहते हैं, गिरा और मर गया।

सूफी इस कहानी की व्याख्या करते हैं। वे कहते हैं, ऐसी ही आदमी की दशा है। कुछ हैं यहां, जो छाया को भरने में लगे हैं, जो छाया पर हीरे—मोती लगा रहे हैं, जो छाया को सोने से मढ़ रहे हैं। वे कहते हैं, यह हमारी छाया है, इसे हम सजाएंगे; इसे हम रूपवान बनाएंगे, इस पर हम इत्र छिड़केगे; इस पर हम मखमल बिछाएंगे। यह हमारी छाया है; यह किसी गरीब—गुरबे, किसी भिखमंगे की छाया नहीं। यह ऐसे सड़क के कंकड़—पत्थरों पर न पड़ेगी; यह सिंहासनों पर पड़ेगी; यह स्वर्ण—पटे मार्गों पर पड़ेगी

राजाओं को चलते देखा है? जब वे चलते हैं तो आगे उनके मखमल बिछाई जाती है। उनके पदचिह्न मखमल पर पड़ते हैं। ये कोई साधारण आदमी होते ही हैं कि मिटती नर शाशाणा मिटती नर तो सभी के मिटति



सारा जमाना नज़र रखता है...
एक हमीं हैं जिसे अपनी खबर नहीं..।।

sanjida soch

महमूद गया बाहर और
क्षणभर में वापस लौट आया।

नसरूद्दीन ने पूछा:
इतनी जल्दी तू दरवाज़ा बंद कर आया?

नौकर ने कहा:
साहब, दरवाज़ा पहले से ही बंद था!
मालूम होता है कि आज सुबह हम
दरवाज़ा खोलना ही भूल गए थे।
लेकिन दिन भर ये खयाल ही नहीं आया
कि दरवाज़ा बंद भी हो सकता है।
बेकार ही चिंता करते रहे कि
लोग नहीं आए तो क्यों नहीं आए?

हम जिस मन में बैठे हुए हैं,
उसका दरवाज़ा भी सदियों से बंद है।
परमात्मा चाहे भी तो कैसे प्रवेश करे?
उस बंद दरवाज़े को
खोलने का नाम ही ध्यान है।
शांति को, आनंद को मत खोजो।
अपने हृदय का बंद द्वार खोलो!

ओशो

**Naye bharat ke khoj**

2h · 🌐



महान डॉक्टर मुल्ला नसरुद्दीन
एक दिन सुबह से बैठा अपनी क्लीनिक में,
दोपहर होने के करीब आयी,
लेकिन कोई मरीज़ न आया।
कोई मिलने वाला भी न आया।

एक-दो बार उसने अपने
नौकर महमूद से कहा कि आज क्या बात है,
क्या गाँव में कोई मरीज़ नहीं बचा?
ऐसा कभी हुआ नहीं....!
आज किसी मुलाकाती का भी पता नहीं।
कोई सत्संग करने वाला
बकवासी दोस्त भी नहीं आया।
कहां मर गए सब?

साँझ होने लगी, फिर भी कोई नहीं आया।
रात भी हो गयी, मगर कोई नहीं आया।
रात के बारह बजे नसरुद्दीन ने कहा
कि जा, बाहर का दरवाज़ा बंद कर आ।
अब प्रतीक्षा करनी व्यर्थ है, अब सोने जाएंगे।

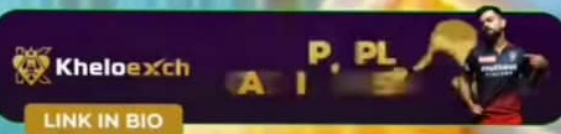
महमूद गया बाहर और
क्षणभर में वापस लौट आया।

नसरुद्दीन ने पूछा:
इतनी जल्दी तू दरवाज़ा बंद कर आया?

नौकर ने कहा:
साहब, दरवाज़ा पहले से ही बंद था!
मालूम होता है कि आज सुबह हम
दरवाज़ा खोलना ही भूल गए थे।
लेकिन दिन भर ये खयाल ही नहीं आया
कि दरवाज़ा बंद भी हो सकता है।
बेकार ही चिंता करते रहे कि



← Reels ▾



गौतम बुद्ध कहते हैं...
इस भ्रम में न रहे की आपके भाग्य
में जो लिखा है वही होगा, बल्की
यह विश्वास रखे की आप जैसा
करेंगे, वैसा ही भाग्य होगा।



11K



22



फॉलो करे अपना जीवन बदलें

587



Send



sucessline.1

SUCESSLINE.1



Add a comment...





← Reels ▾



अश्लीलता हमारी अपनी खोज है
ईश्वर की नहीं, अगर ईश्वर की होती
तो वह हमें कपड़े पहनाकर पैदा करता।

ओशो रजनीश • लोक पंक्तियाँ



3.9K



4



339



Send



suj3318

Osho

Osho



कैयों

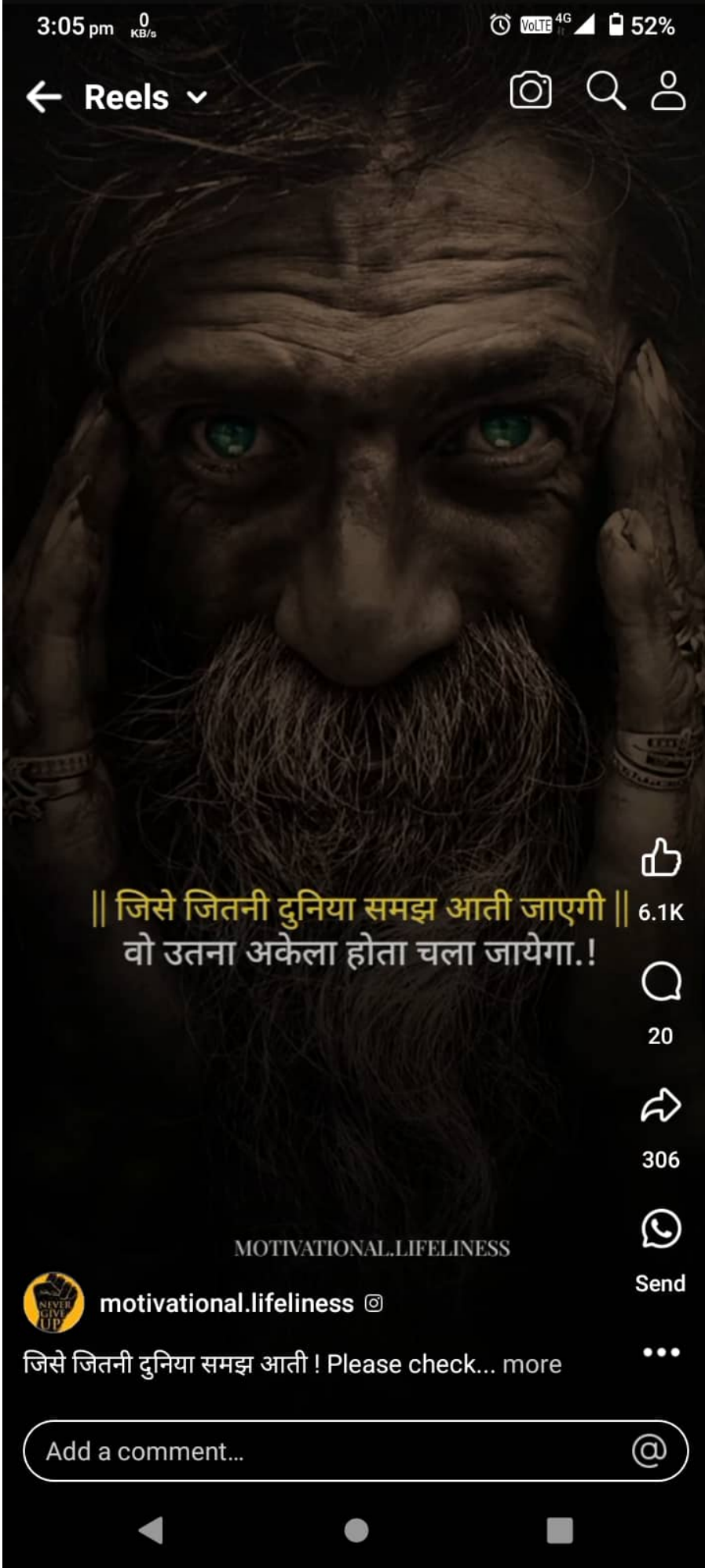
Remix with



Add a comment...



← Reels ▾



|| जिसे जितनी दुनिया समझ आती जाएगी || 6.1K
वो उतना अकेला होता चला जायेगा.!



20



306



Send



MOTIVATIONAL.LIFELINESS



motivational.lifeliness

जिसे जितनी दुनिया समझ आती ! Please check... more

Add a comment...



[← Reels](#) ▾

ज्ञान इतना सुना दिया,
जितना बालु रेत।
कहें कबीर मैं क्या करूं,
जीव न समझा एक॥

त कबीर दास जी ने लोगों को समझाने के लिए उनके
हे और साखी कहे, उन्होंने लोगों को समझाया कि यह
नुष्य तन अनमोल है, यह मुक्ति प्राप्त करने के लिए
ला हुआ एक मौका है, इस अवसर को मत गंवाओ।
रंतु लोगों ने उनकी बातों को गंभीरता से नहीं लिया।

@Official_ravindra2



2.9K



6



417



Send

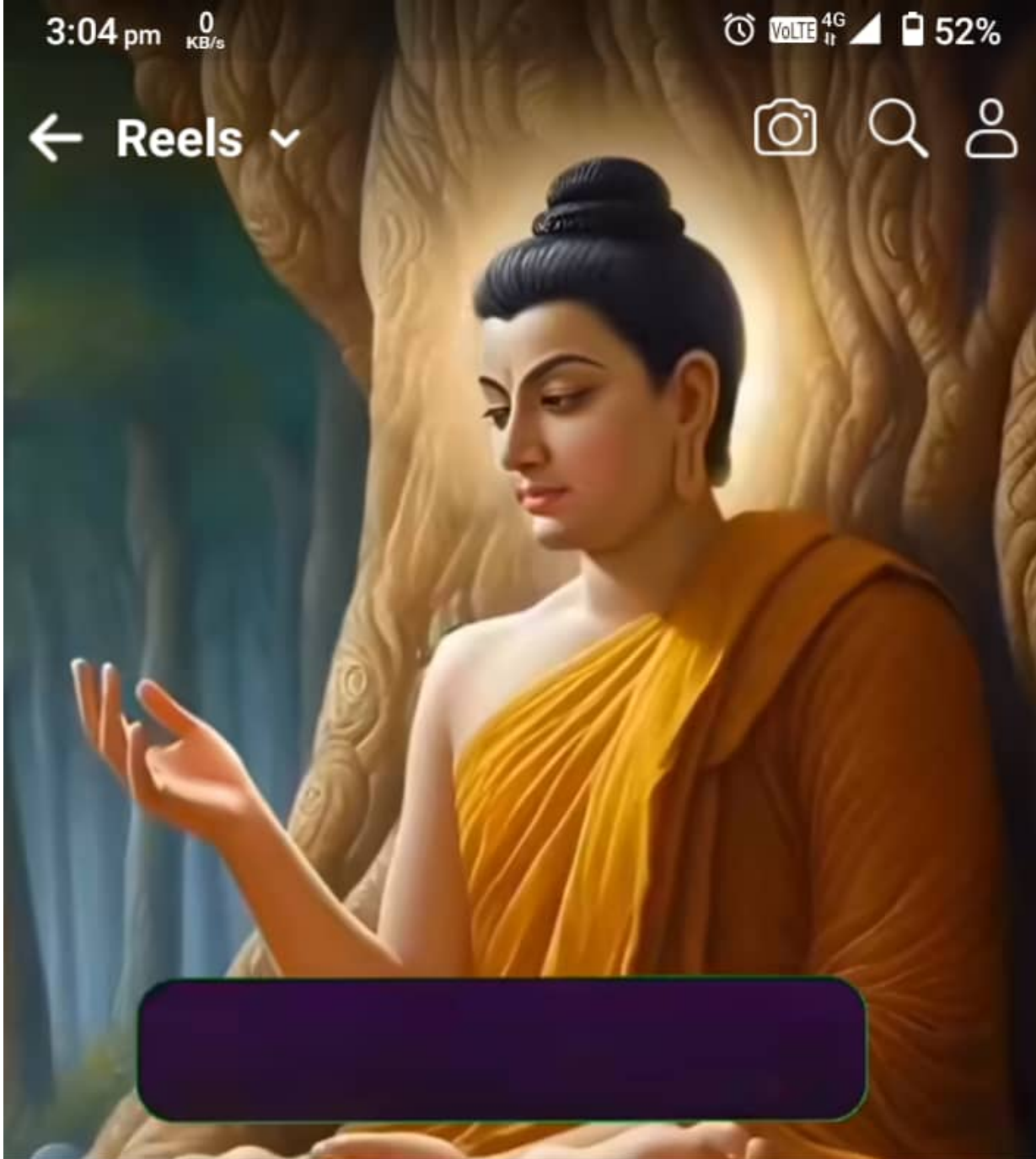


soni_saniyadav



Add a comment...



 Reels 

गौतम बुद्ध कहते हैं..!
कुछ भी स्थायी नहीं है
अपने आप को बहुत अधिक तनाव न दें
क्योंकि स्थिति चाहे कितनी भी खराब हो
यह बदल जाएगी।



9.7K



20



MIRROR TECHNIQU



71

को use करना



2

@Amitkumarrlive



6

★ Send a gift



Amit Kumarr

Follow



Send



Morning Mirror Technique: Start Your D... more





23

Dr. Joe Dispenza से



3



Send



★ Send a gift



Amit Kumarr

Follow

Lights! Camera! Manifestation! 🎬🌟... more



TE



23

Mental Movie Technique



3



Send

★ Send a gift



Amit Kumarr

Follow

Lights! Camera! Manifestation! 🎬✨... more



**Naye bharat ke khoj**

27m · 🌐



ये ज़रा समझने जैसा है।
कर्म सूखी रेखाएं हैं।
वो तुम्हे दिखाई नहीं पड़ती।
वो नौवीं अवस्था में पहुंचे
व्यक्ति को दिखाई पड़ती हैं।
वो बहुत सूक्ष्म हैं। लेकिन हैं।
अगर किसी कमरे में किसी की हत्या हुई हो , उस कमरे में तुम अगर
जाकर सोयोगे तो रात ठीक से सो ना पाओगे। वर्षों पहले हुई होगी
हत्या। लेकिन कोई चीख पुकार अभी भी दीवार के कणों से लटकी रह
गई।
कोई सूक्ष्म भाव अभी भी भटकता रह गया।
उसी को हम प्रेतात्मा कहते हैं।
कोई सूक्ष्म भाव लटका रह जाता है
दीवारों पर, वहा के कणों में।
इसलिए जहां संत बैठे है, जहां संत चले हैं।
वहां तीर्थ बन जाते हैं।
सदियां बीत जाती हैं,
अगर तुम किसी ऐसी जगह जाके खड़े हो जाओगे जहां कोई संत बैठा
था और समाधि को उपलब्ध हुआ था तो वो जगह अब भी उस गीत को
गुनगुना रही है।
तुम्हे भी पता चल जाता है।
तुम्हे भी कभी कभी किसी स्थान पर
बैठकर बड़ी शांति मिलती है।
किसी स्थान पर बैठकर
तुम बहुत अशांत हो जाते हो।
किसी वृक्ष के नीचे बैठकर तुम्हें बड़ा अहोभाव पैदा हो जाता है।
किसी घर में जाते ही
कुछ भय लगता है।
किसी घर के बाहर से ही तुम्हे निमंत्रण अनुभव होता है जैसे कोई बुला
रहा हो।
घर के सूक्ष्म कंपन होते हैं।
अदृश्य। सूक्ष्म तरंगे रह जाती है।

← Reels ▾



ओशो प्रेम

osho prem

एसे रहो जैसे तुम अकेले हो
कहीं भी रहो



154



1



10



Send



Osho Prem

#oshohindiquotes #budha_quote #oshoi... more

Add a comment...



← Reels ▾



KheloeXch

TOP IPL
GAMING SITE

LINK IN BIO

जीवन में हमेशा शांत रहिए,
आप अपने आप को
बहुत मजबूत पाएंगे।
क्योंकि लोहा जब ठंडा होता है
तो वह बहुत मजबूत होता है,
और जब गर्म होता है तो कोई भी
व्यक्ति उसका आकार बदल देता है,
इसलिए जब भी गुस्सा आए शांत रहें!



26K



36



2.1K



Send



sucessline.1

Add a comment...





विवाह एक व्यवस्था हैं!
प्रेम एक अवस्था हैं!

विवाह
शर्त के आधिन हैं!
प्रेम
बिना शर्त हैं!

इसलिए
विवाह और प्रेम
के बीच संघर्ष
रहेगा ही!



अपने ध्यान के अनुभवों को दूसरों को न बताएं, अनुभवों की चर्चा करने से अनुभव होने बंद हो जाते हैं... See more

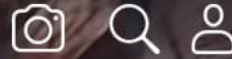


312

4 comments • 97 shares • 5.8K views



← Reels ▾



खुशी पाने का कोई
रास्ता नहीं
होता है खुश रहना ही
खुशी है



Buddha inspired 888

Namo Buddhay 🌸❤️🌸🙏 #inspired

🎵 Guru · Healing Bowls & E



30



Send



Add a comment...



मत चलो - ओशो

 Naye bharat ke khoj and 51 others 4 comments • 8 shares



Like



Comment



Send



Share

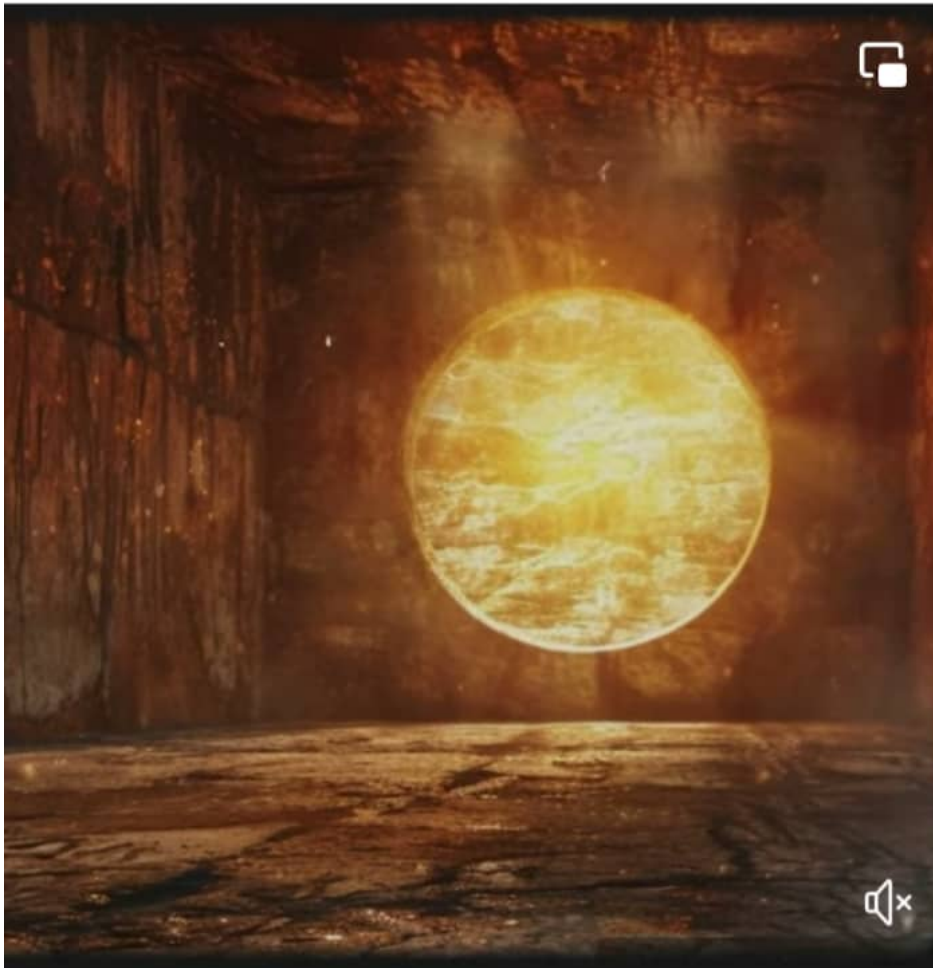


Rahasya Unsolved • [Follow](#)



20 Mar • 

आपका सच्चा आत्म बिना जाने ही फंस जाता है!



 577

4 comments • 80 shares • 14K views



Like



Comment



Send



Share



Sharwan Kumar is in **Khagaria.** •



[Follow](#)

6d • 



तुम ही हो भगवान और तुम ही हो भक्त।

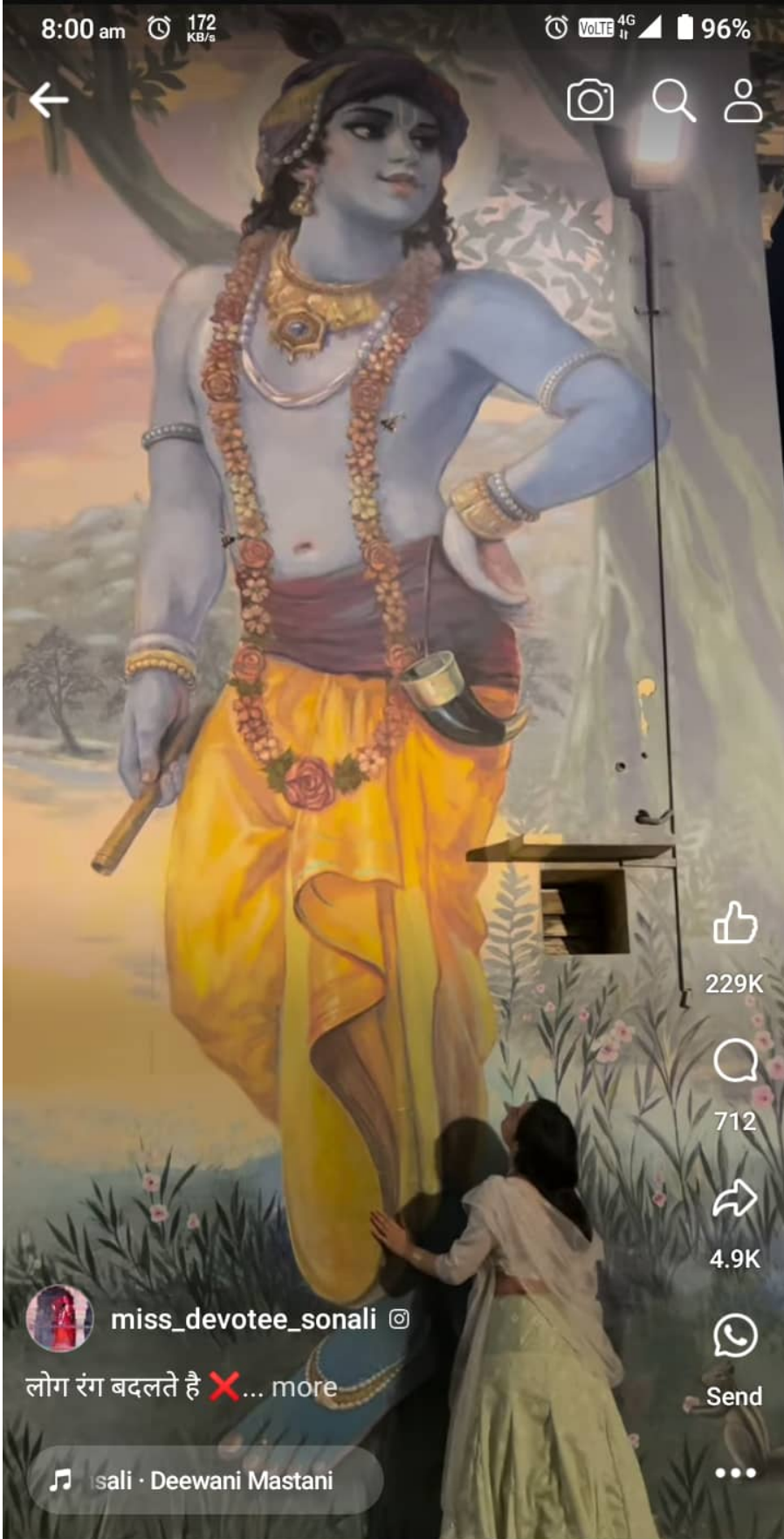
तुम ही हो पूजा, पुजारी, पूज्य।

और जब तक तुम्हें यह बात स्मरण न
आ जाए, तब तक तुम भटकते ही रहोगे।

इसलिए बुद्ध न तो परमात्मा की
बात करते हैं, न प्रार्थना की बात करते हैं,
बुद्ध केवल ध्यान की बात करते हैं।



Osho, एस धम्मो सनंतनो -(प्रवचन -09)



229K



712



4.9K



Send



miss_devotee_sonali

लोग रंग बदलते है ❌... more



sali · Deewani Mastani

Add a comment...



उस इंसान को कभी
न छोड़ना जो आपके
शरीर से नहीं, आपके
आत्मा से प्रेम करे।



12





जो लोग पूजा करते हैं!
वे नहीं जानते हैं,
और जो जानते हैं वे कभी
"पूजा नहीं करते.!!

ओशो
बोधिधर्म.!!

← Reels ▾



@theclassicbharat



आजादी कैसे मिली, ये पढ़ाने से ज्यादा
जरूरी ये पढ़ाना है कि हम गुलाम कैसे बने।



16K

- ओशो



40



2.9K



Send



oshoki.duniya

Osho ki duniya





भक्ति तो तुम्हारे भीतर परमात्मा को गढ़ने की प्रक्रिया है। भक्ति तो तुम्हारे भीतर छिपे हुए परम शास्त्र को पढ़ने की प्रक्रिया है। यह बड़े साहसियों का काम है। कमजोर लोग उधार से काम चला लेते हैं; दूसरों की किताबें पढ़ लेते हैं, अपने भीतर छिपी किताब को पढ़ते ही नहीं। दूसरों ने जो कहा है परमात्मा के संबंध में, मान लेते हैं। खुद देखने जाते ही नहीं। दरिया देखे जानिए...। और देखकर ही जानना चाहिए। जानना तभी जब अपनी आंख से देखा हो। फिर जो भी दांव पर लगे, लग जाए।

ओशो
सहज आसिकी नाहिं



OSHO

Never Born
Never Died

Only Visited the
Planet Earth between

Dec 11 1931 - Jan 19 1990



तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ तीर्थ
आपका हृदय है, यह जितना
निर्मल और निष्पाप होगा
सारे तीर्थ उतना ही
आपके पास
होंगे...

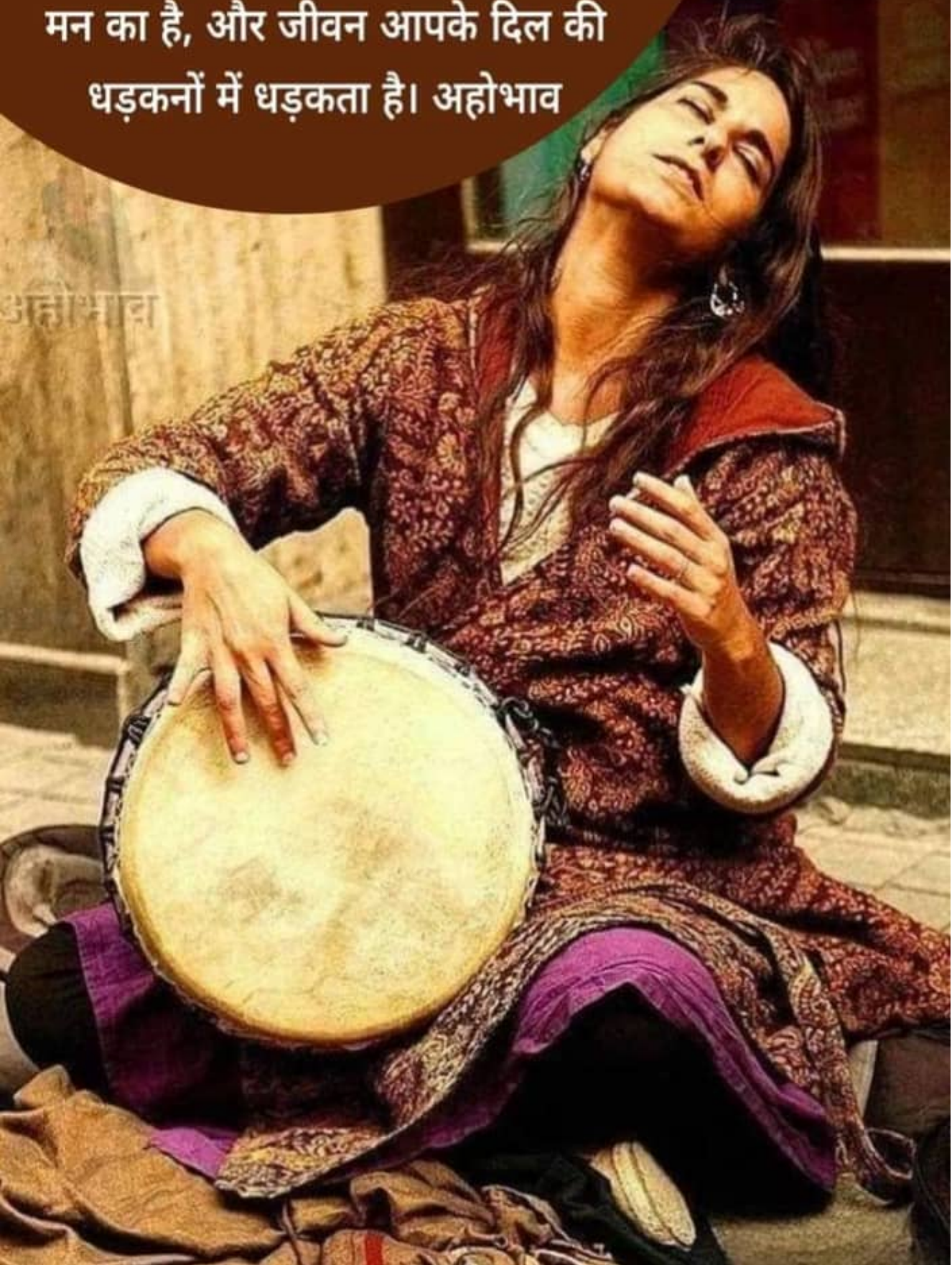
आपका दिन शुभ व मंगलमय हो

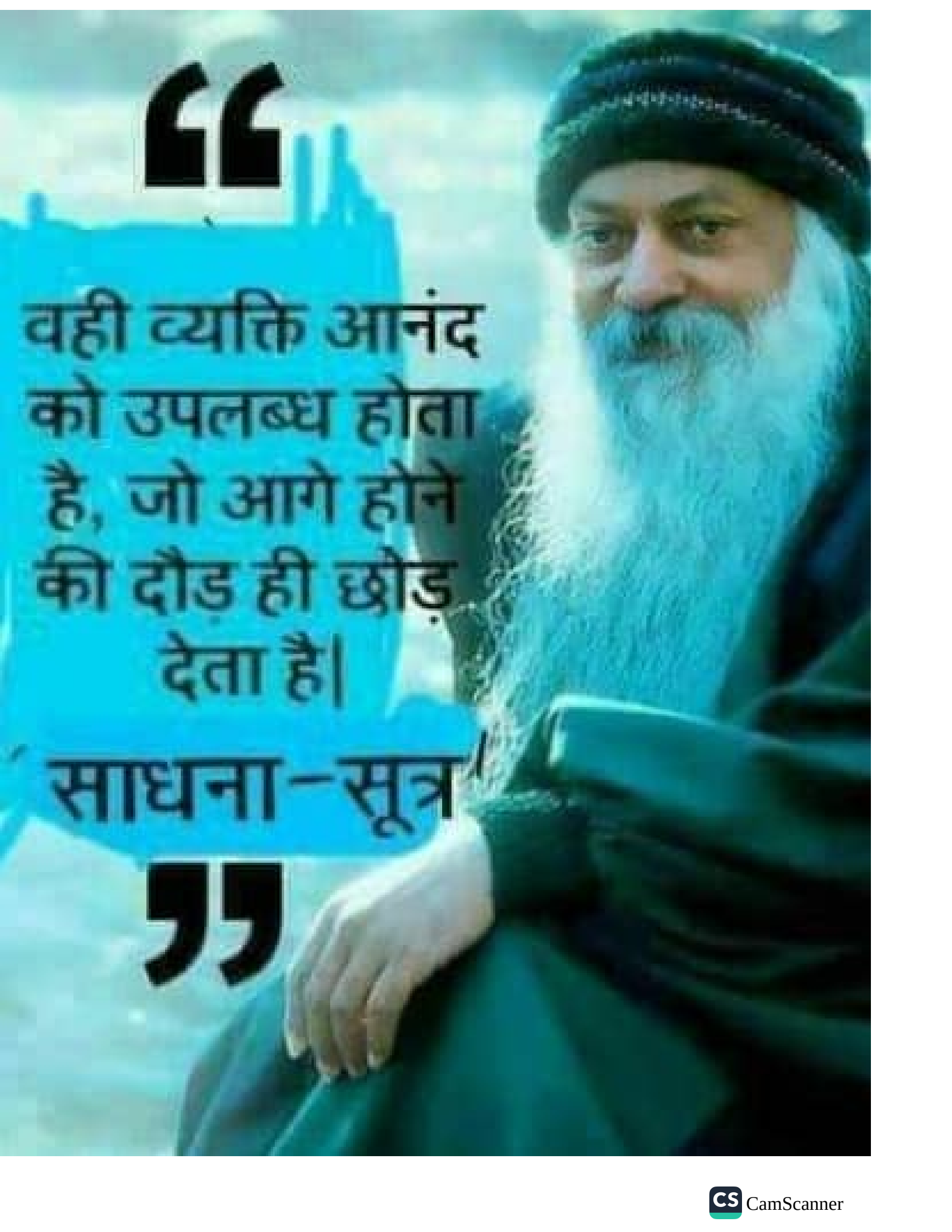


परमात्मा उतरता है
एक नृत्य की भांति,
एक गीत की भांति।
मगर उतरता उसी हृदय में है,
जो मस्त है।

ओशो

ओशो कहते हैं - जीवन गणित की तुलना
में संगीत के अधिक करीब है, क्योंकि गणित
मन का है, और जीवन आपके दिल की
धड़कनों में धड़कता है। अहोभाव





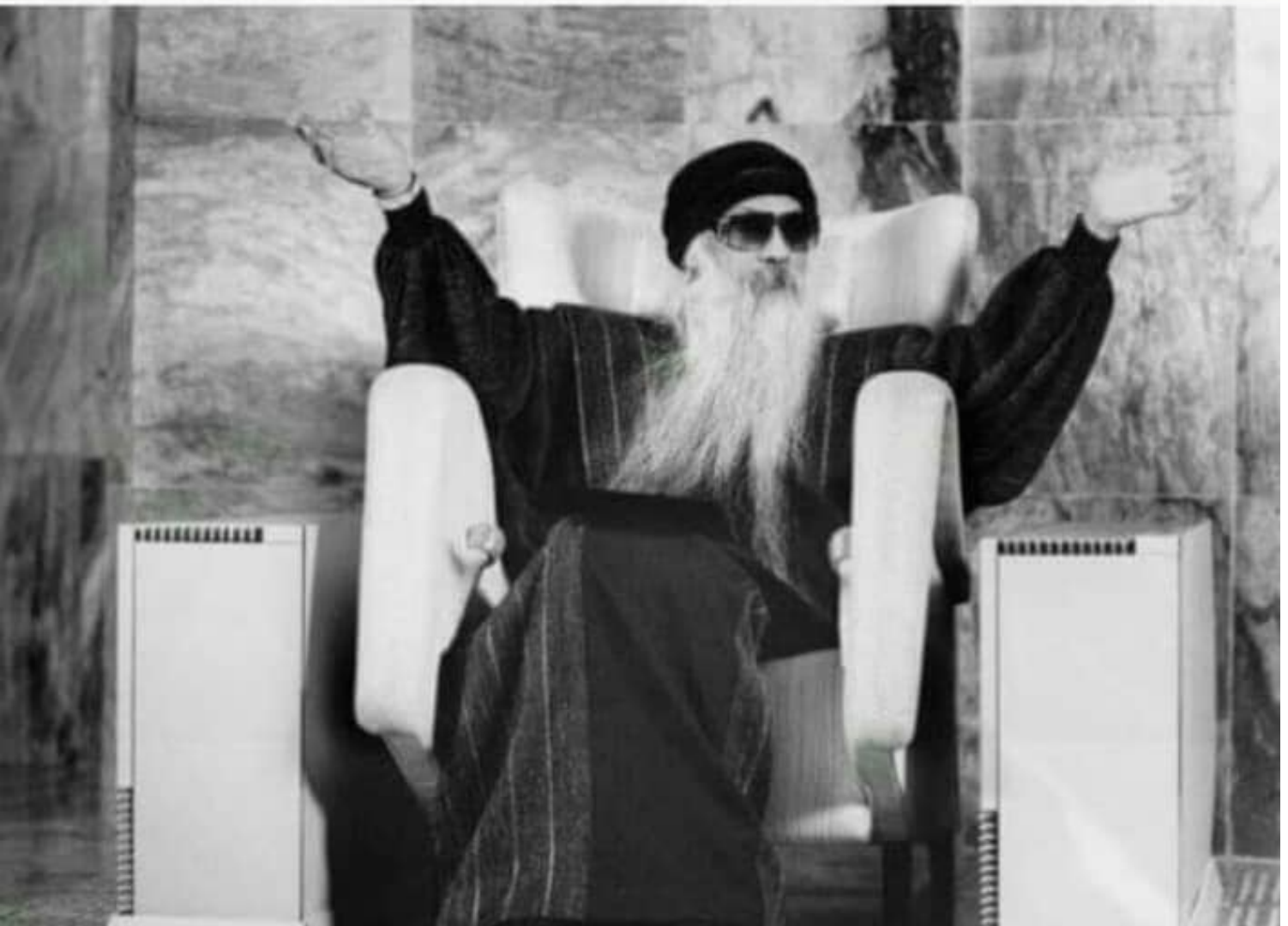
“

वही व्यक्ति आनंद
को उपलब्ध होता
है, जो आगे होने
की दौड़ ही छोड़
देता है।

साधना-सूत्र

”

इस अहद के इन्सॉ मे वफ़ा ढूँढ रहे हैं, हम ज़हर की शीशी
मे दवा ढूँढ रहे हैं.....
दुनिया को समझ लेने की कोशिश में लगे हम, उलझे हुए
धागों का सिरा ढूँढ रहे हैं.....
पूजा में, नमाज़ों में, अज़ानों में, भजन में, ये लोग कहाँ
अपना ख़ुदा ढूँढ रहे हैं....
पहले तो ज़माने में कहीं खो दिया ख़ुद को, आईने में अब
अपना पता ढूँढ रहे हैं....



एक आदमी आपकी छाती पर
छुरा रख दे-तब आप एक सेकेंड
को होश में आते हैं। एक सेकेंड
को वह छुरे की धार आपको
पांचवें शरीर तक पहुंचा देती
है। लेकिन बस, ऐसे दो-चार
क्षण जिंदगी में होते हैं, अन्यथा
साधारणतः हम सोए-सोए ही
जीते हैं।

ओशो.



संसार एक पड़ाव है;
और पड़ाव पर कभी शांति नहीं
हो सकती। थोड़ी देर विश्राम हो
सकता है, लेकिन आनंद नहीं
हो सकता। और विश्राम का तो
इतना ही अर्थ है कि फिर हम
श्रम करने को तैयार हुए, फिर
यात्रा के लिये पैर तैयार हैं। यह
हमारा घर नहीं। जहां हम ठहरे
हैं, वह धर्मशाला हो सकती है,
अतिथि-गृह हो सकता है।
लेकिन यह घर हमारा नहीं है।
हम परदेस में हैं। और इसीलिये
हम बेचैन हैं। और जब तक घर
न मिल जाए पुनः तब तक
बेचैनी जारी रहेगी।
घर की खोज ही धर्म है।

ओशो : बिन बाती बिन तेल

दोहा

हाड जले लकड़ी जले जले जलावन हार ।
कौतिकहारा भी जले कासों करूं पुकार ॥

~कबीरदास

{अर्थ: दाह क्रिया में हड्डियां जलती हैं उन्हें जलाने वाली लकड़ी जलती है उनमें आग लगाने वाला भी एक दिन जल जाता है. समय आने पर उस दृश्य को देखने वाला दर्शक भी जल जाता है. जब सब का अंत यही हो तो पनी पुकार किसको दू? किससे गुहार करूं – विनती या कोई आग्रह करूं? सभी तो एक नियति से बंधे हैं ! सभी का अंत एक है!}

‘दूसरों के दोष पर ध्यान न दे,
दूसरों के कृत्य-अकृत्य को नहीं देखे,
केवल अपने कृत्य-अकृत्य का
अवलोकन करे।’

Osho Rajneesh

आचार्य श्री रजनीश

प्रधानाचार्य

आचार्य श्री रजनीश

जय भीम ॥ नमो बुद्धाय ॥

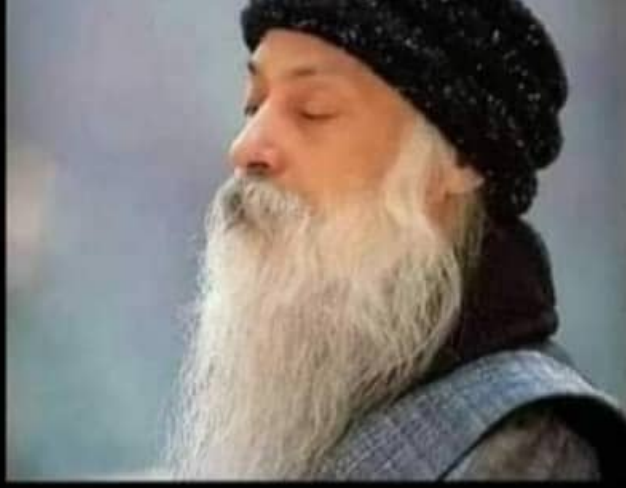
— “ —

अगर कोई व्यक्ति
अच्छे विचारों के साथ
बोलता या काम
करता है, तो उसकी
परछाई की तरह
खुशी उसका साथ
कभी नहीं छोड़ती ।

गौतम बुद्ध

भिमकन्या SUJATA CREATION

मंगलमय धम्म सकाळ



मनुष्य का जीवन इतना अशांत है, कि
शान्ति भरी आँखें, आनंद भरा हृदय और
प्रेम भरा जीवन दिखाई ही नहीं देता है...

ओशो

← You replied to Uma Shankar

आप को है बताये क्या है मेरी पहचान

जब तक परमात्मा को नहीं पहचानोगे
तुम्हारी पहचान तुम्हें नहीं मिलेगी

Uma Shankar

पिया को खोजने में गई मैं भी गई हिराय

क्यों गई खोजने?

पिया से पिया को मांग क्यों न
लिया ?

जिससे पिया पहचान में आ जाए

पिया से ऐसी दृष्टि क्यों ना मांगी
जिससे पिया पहचान में आ जाए

Uma Shankar

रास्ते दो है पूर्ण से शून्य तक शून्य से पूर्ण
तक



तुम रास्ते में अटक गए हम फासले
खत्म कर दिए ।

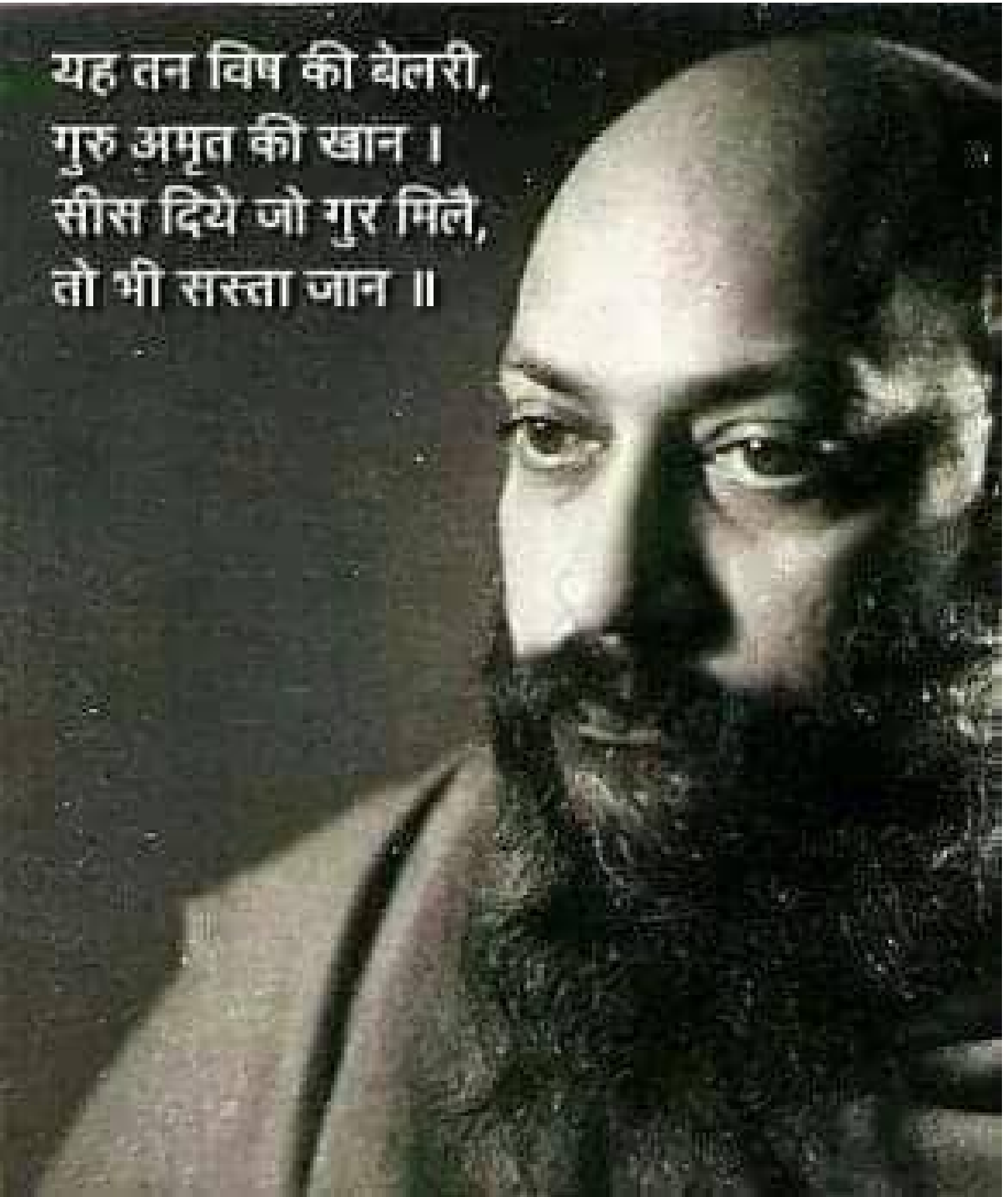


जीवन को जानना हो तो मरने की कला सीखनी पड़ती है।
जो मृत्यु से भयभीत है। वह जीवन से भी अपरिचित रह जाता है।
क्योंकि मृत्यु जीवन का गुह्यतम, गहन से गहन केंद्र है।
केवल वे ही लोग जीवन को जान पाते हैं, जो सचेतन, होशपूर्वक,
स्वागत से भरे हुए मृत्यु में प्रवेश कर सकते हैं।

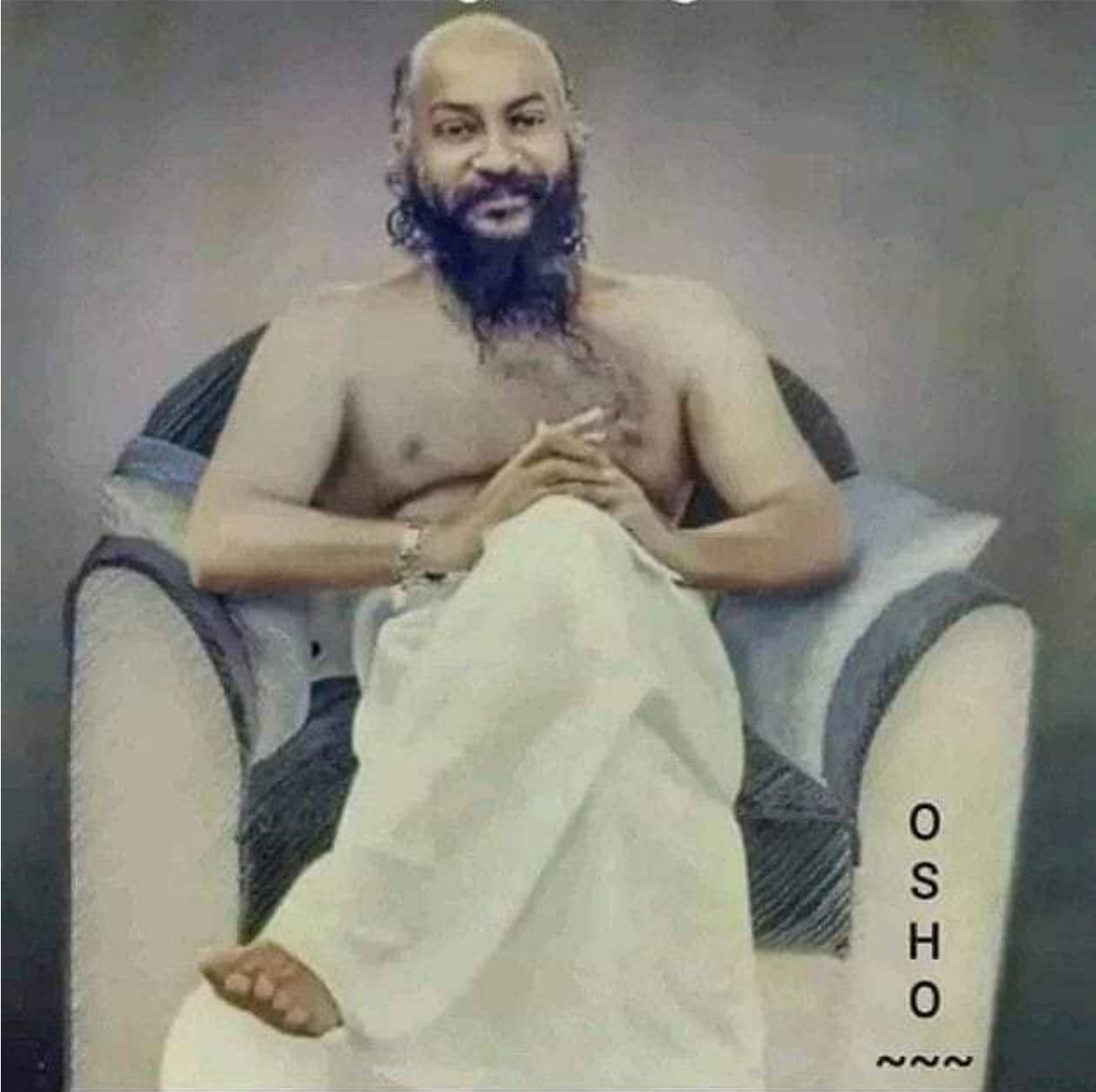
मरते सभी हैं, लेकिन सभी लोग मरने के कारण जीवन
को नहीं जान पाते। ओशो अहोभाव



यह तन विष की बेलरी,
गुरु अमृत की खान ।
सीस दिये जो गुर मिलै,
तो भी सस्ता जान ॥



लोभ, क्रोध और वासना
ये तीनों अगर न हो तो तुम्हारा अहंकार
बुझ जाएगा। और जहां अहंकार बुझा...
कि शून्य पैदा हुआ।



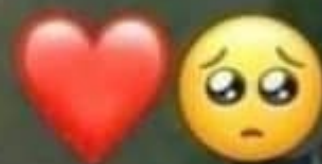
उसी शून्य में परमात्मा अवतरित होता है।
उसी खाली जगह में,

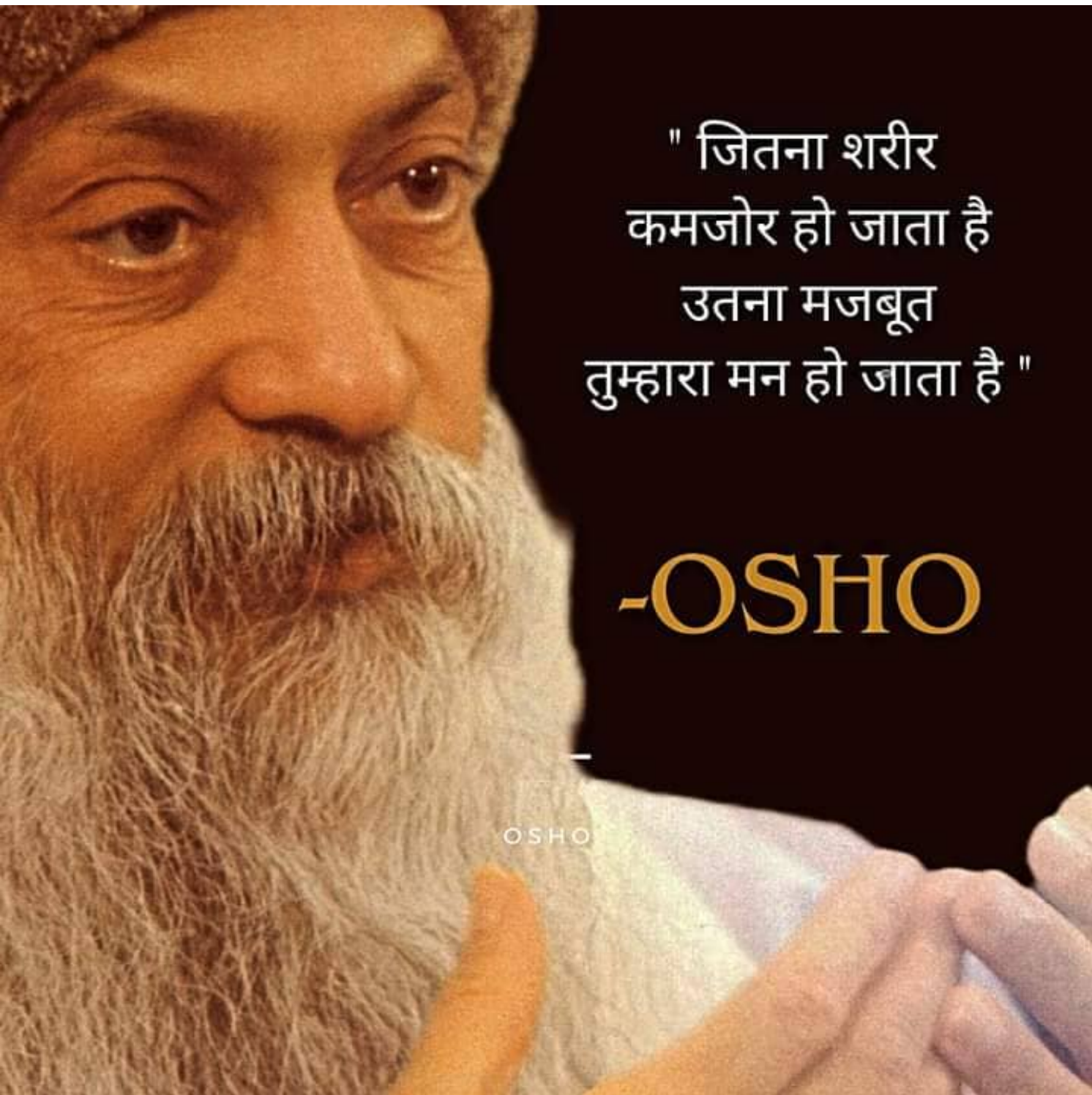


प्राणप्रतिष्ठा से पहले



प्राणप्रतिष्ठा के बाद





" जितना शरीर
कमजोर हो जाता है
उतना मजबूत
तुम्हारा मन हो जाता है "

-OSHO

OSHO



ओशो-Life with Osho

अहंकार की चालबाजियों से बचना।
अहंकार अंत— अंत तक पीछा
करता है। धन से ही नहीं अकड़ता,
पद से ही नहीं अकड़ता, प्रार्थना से
भी अकड़ जाता है, ध्यान से भी
अकड़ जाता है। और जहां अहंकार
आया वहीं द्वार बंद हो गए; वहीं तुम
विच्छिन्न हो गए, टूट गई तुम्हारी
जड़ें परमात्मा से।
मरौ है जोगो मारो -16



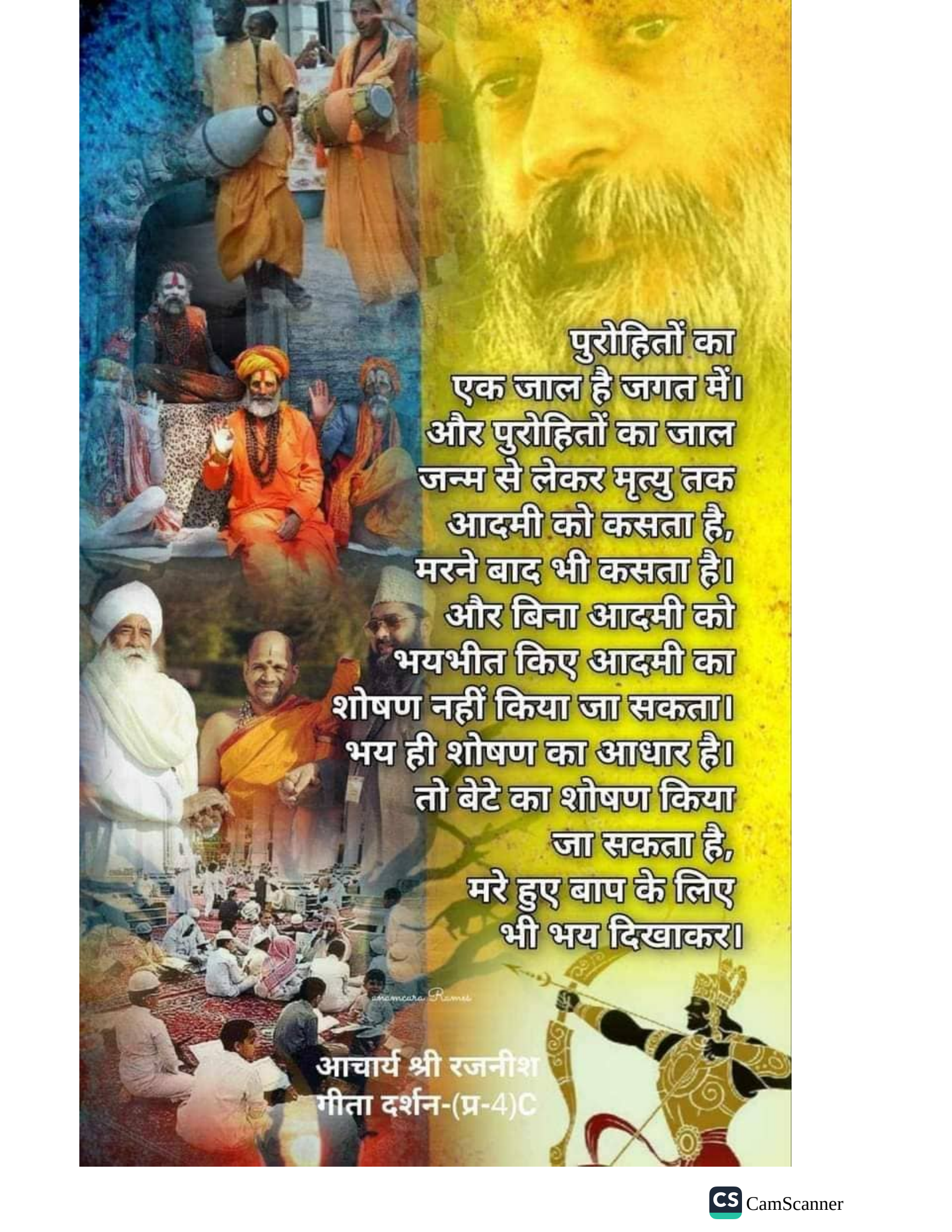
परमात्मा के लिए किसी मंदिर में जाने की जरूरत नहीं है। तुम जहां मौन हो गये, वहीं वह मौजूद है।

ओशो



दुनियाँ में अगर छोड़ने जैसा
कुछ है तो दूसरों से उम्मीद
करना छोड़ दो

OSHO



पुरोहितों का
एक जाल है जगत में।
और पुरोहितों का जाल
जन्म से लेकर मृत्यु तक
आदमी को कसता है,
मरने बाद भी कसता है।
और बिना आदमी को
भयभीत किए आदमी का
शोषण नहीं किया जा सकता।
भय ही शोषण का आधार है।
तो बेटे का शोषण किया
जा सकता है,
मरे हुए बाप के लिए
भी भय दिखाकर।

आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-(प्र-4)C

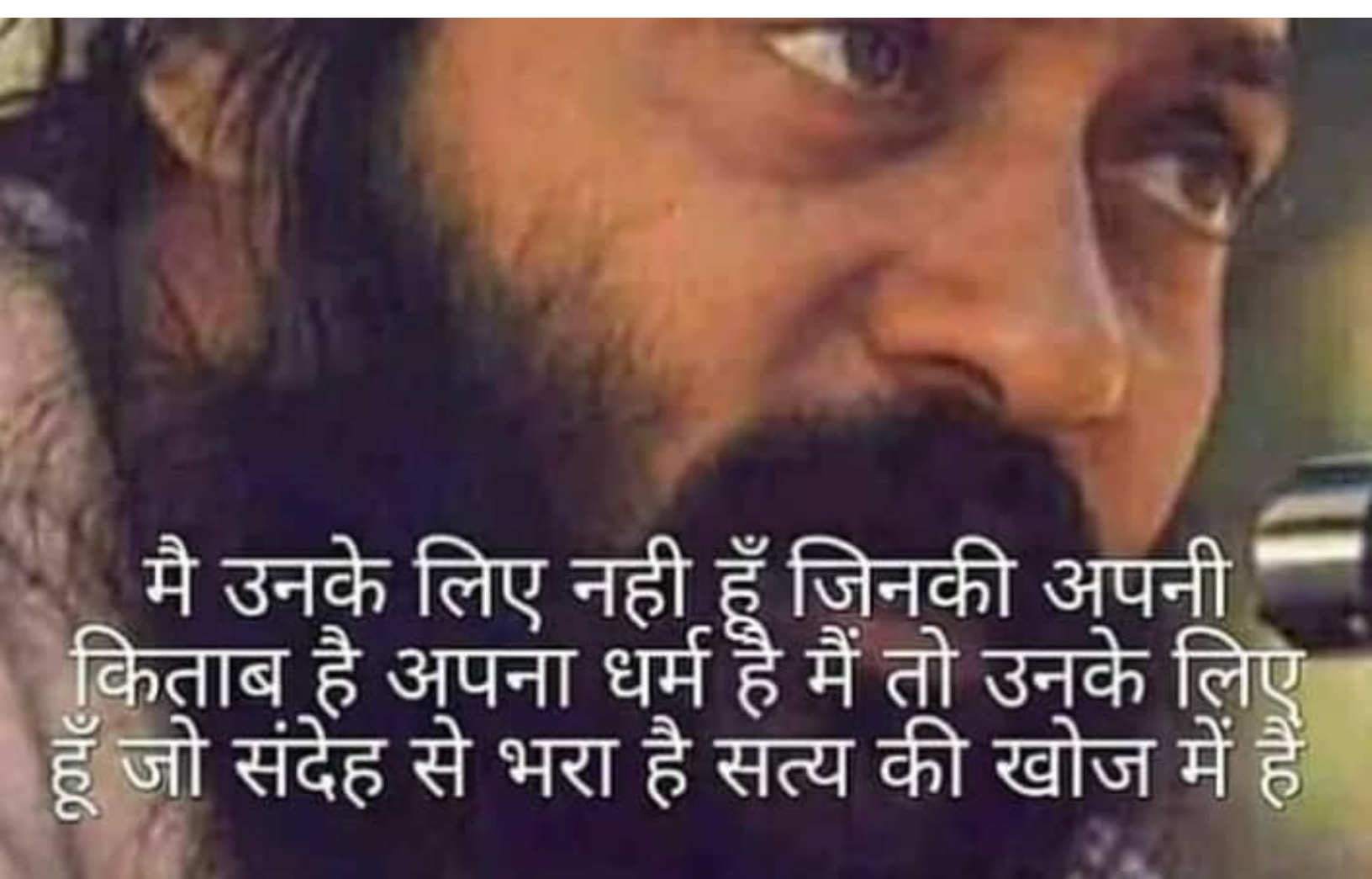


जो व्यक्ति चुप हो कर
बैठने की कला सीख
लेगा, उसे उसका ही
शरीर हजार-हजार
अनुभव दे देगा।
अपने ही शरीर से तुम
सारे योग शास्त्र को
जान सकते हो।

Osho

केवल मेरे शब्द ही
आग नहीं उगल रहें। मैं
साथ ही साथ यहां-
बारूद भी डाल
रहा हूँ, जो सदियों तक
विस्फोटित होते रहेंगे।
मैं उन्हें जरूरत से
ज्यादा डाल रहा हूँ---
क्योंकि मैं कोई अवसर
नहीं चूकना चाहता।
लगभग मेरा हर वाक्य
उन लोगो को गड़बड़
में डालने वाला है जो
मेरे आसपास धर्म
खड़ा करना चाहते हैं।
ओशो





मै उनके लिए नहीं हूँ जिनकी अपनी
किताब है अपना धर्म है मैं तो उनके लिए
हूँ जो संदेह से भरा है सत्य की खोज में है

← Reels ▾



अन्तरिक्ष में लाखों गैलेक्सियाँ हैं जिसमें लाखों सूर्य, तारे, चन्द्रमा, धरती, ग्रह, उपग्रह, उल्का और ब्लैक होल हैं। वैज्ञानिकों ने हमारी गैलेक्सी में असंख्य तारामंडल ढूँढे हैं। हमारी गैलेक्सी का नाम है मिल्की वे, जिसमें हम धरती पर रहते हैं। माना जाता है कि इसी गैलेक्सी में धरती जैसे ग्रहों पर जीवन हो सकता है जहाँ पर मनुष्य से भी कई गुना ज्यादा बुद्धिमान मनुष्य रहते हों। अंतरिक्ष में अब तक 800 से ज्यादा गैलेक्सी ढूँढी जा चुकी है। वैज्ञानिक कहते हैं कि लगभग 19 अरब गैलेक्सियाँ हो सकती है।

★ Send a gift



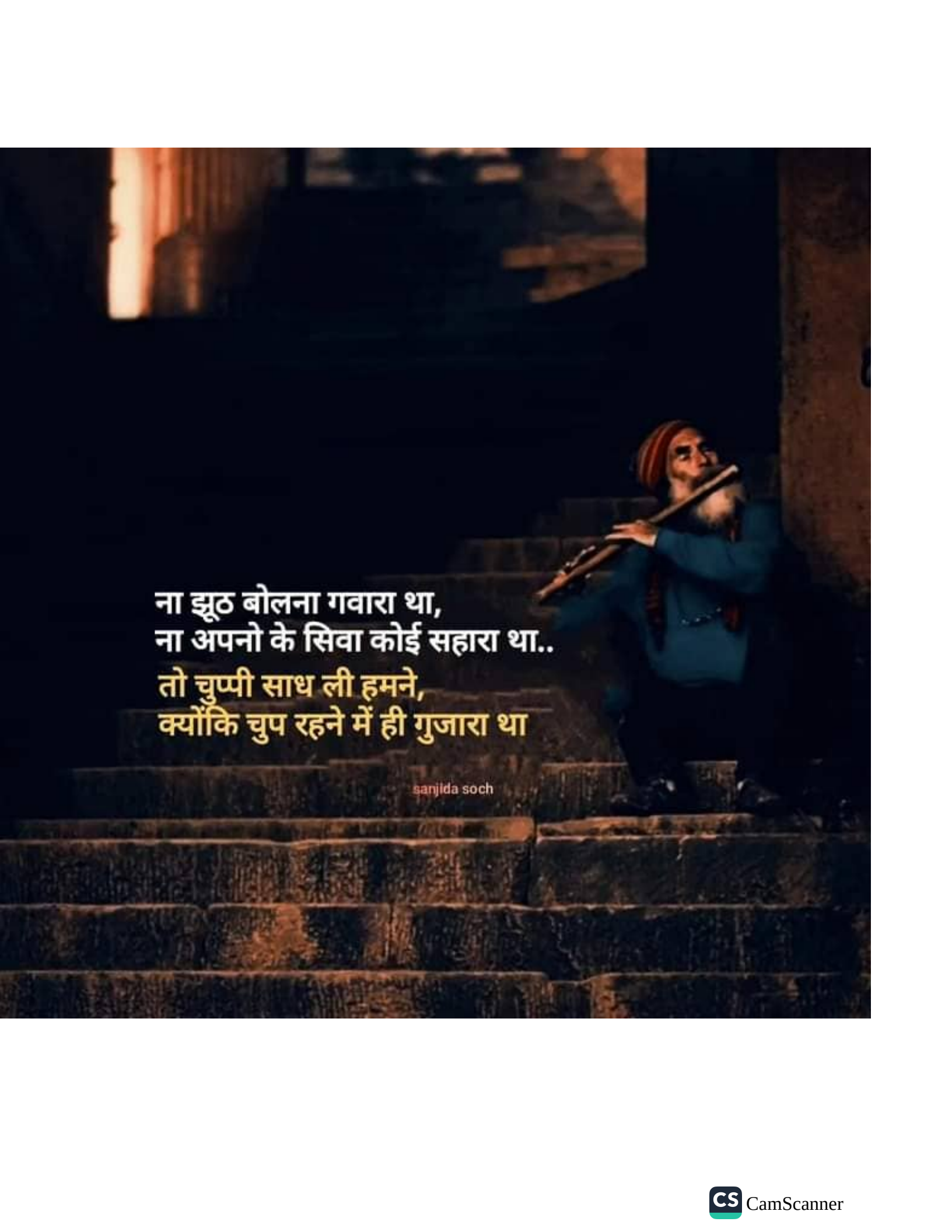
यूनाइटेड ज्ञान @he_unitedgyan

Send

👉 रोज़ कुछ नया सीखने के लिए एक लाइक ❤️ क... more

Add a comment...





ना झूठ बोलना गवारा था,
ना अपनो के सिवा कोई सहारा था..
तो चुप्पी साध ली हमने,
क्योंकि चुप रहने में ही गुजारा था

sanjida soch



ज्ञानी पुरुष के स्वप्न विलुप्त हो जाते हैं;
क्योंकि नींद में भी वह स्मरण रख पाता है
कि यह स्वप्न है।

~ओशो...

official_sonu_singh001



167



2



Send



official_sonu_singh001 @

ओशो..... #oshoworld #oshobooks #... more



Add a comment...





”

पत्थर मे भगवान है यह समझाने में धर्म
सफल रहा, लेकिन इंसान मे इंसान है, यह
समझाने मे धर्म आज भी असफल है

7

!! आचार्य रवनीश !!



269



osho_madhushala_ @

Osho ... more



Send



OLD FILM by_g



Add a comment...



मतलब की दुनिया हैं

फ़रेब का ज़माना हैं ,,

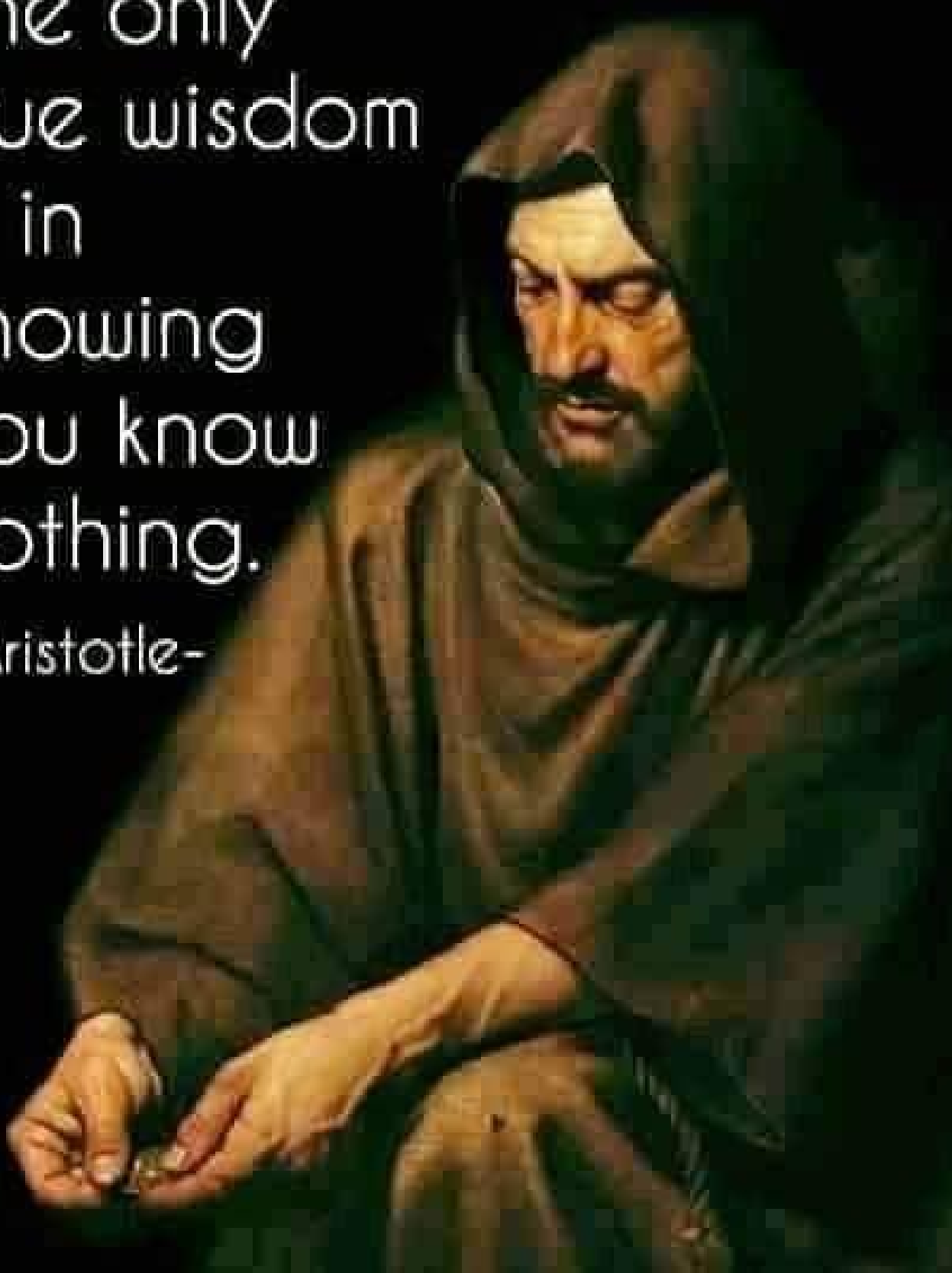
दिलों में नफ़रत हैं मुंह पर याराना हैं ...!

Acchi baateinn



The only
true wisdom
is in
knowing
you know
nothing.

-Aristotle-



"Don't talk of mistakes! We all make mistakes. Sometimes for bad reasons and sometimes for good ones."

- Lagertha

Thanks for nothing.



THE ZEN AWARDS



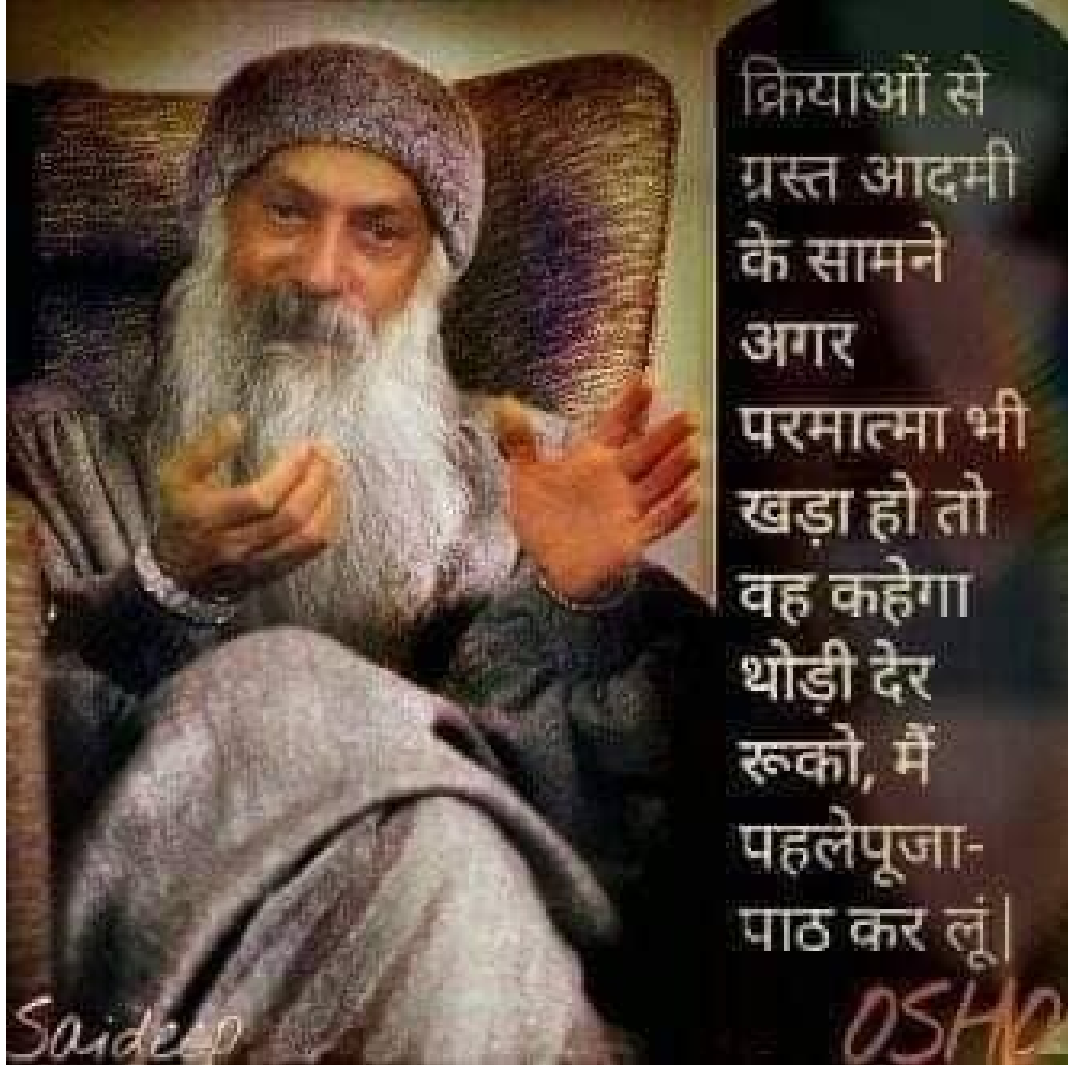
देवताओं का विज्ञान

कल्पना नहीं, सत्य!

तो जिनको देवताओं का आह्वान कहा जाता रहा है, उसका पूरा विज्ञान है। वे देवता कहीं आकाश से नहीं आते हैं। जिन्हें भूत-प्रेत कहा जाता रहा, वे भी किन्हीं नरकों से, किन्हीं प्रेत-लोको से नहीं आते हैं। वे सब मौजूद हैं, यहीं!

ओशो

मैं कहता आंखन देखी - ४



A peacock with vibrant blue and green feathers is perched on a weathered brick wall. The wall runs horizontally across the middle of the frame. In the background, a hazy cityscape with buildings and trees is visible under a grey, overcast sky. The foreground shows a concrete surface and the continuation of the brick wall.

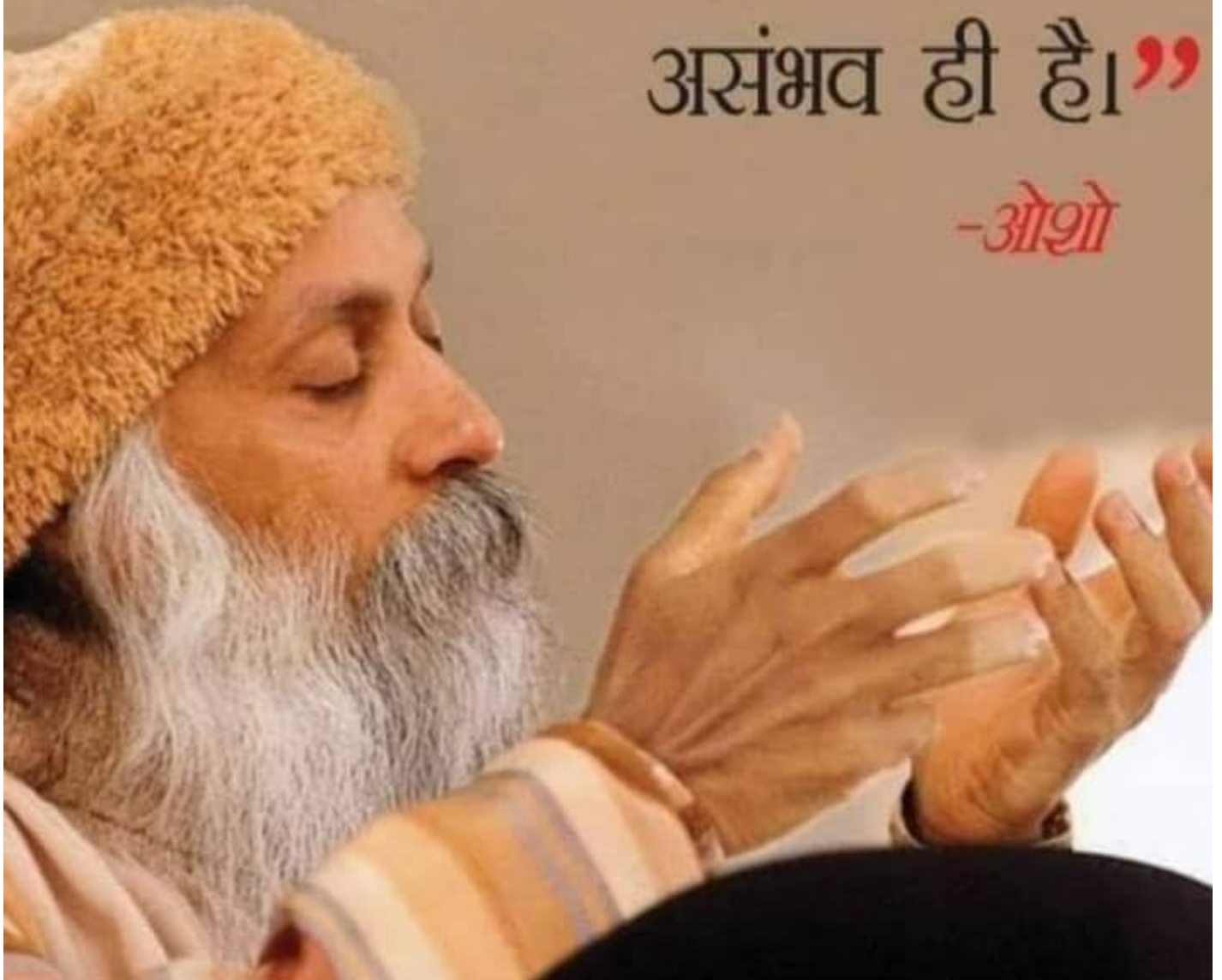
**मैं शरीर नहीं हूं तो मुक्ति हो गई
और
मैं शरीर हूं तो बंधन हो गया**



सारी शिक्षा व्यर्थ है, सारे उपदेश व्यर्थ हैं
अगर वे तुम्हें अपने भीतर
डूबने की कला नहीं सीखाते।

“उचित यही है अपना यात्रा पथ
चुनें और दूसरों की चिंता न करें
क्योंकि स्वयं को ही समझना
जब इतना कठिन है तो दूसरे
को समझना तो करीब करीब
असंभव ही है।”

-ओशो



पूछना है कि जिस ईश्वर ने सृष्टि बनाई। पेड़, नदियां, पहाड़, इन्सान, जानवर सब कुछ बनाया। उसने अपने लिए मंदिर, मस्जिद, चर्च क्यों नहीं बनाया ?

7:34 pm

496 KB/s

VoLTE 4G 3%

← Reels ▾



5G

4G



11K



बाप बेचे लोहा टिना और



33



बेटी बने सोनाक्षी सिन्हा



100



Send



Punam Panday

Follow



Add a comment...



CamScanner

जब ओशो ने लड़कियों के साथ डांस करना शुरू किया तो ओशो की मां थोड़ी चिंतित हो गई थी... ***

मेरी माँ कल मेरे पास आई थी; वह थोड़ी चिंतित थी। उसने कहा, "तुम्हें नाचता देखना अच्छा लगता है, लेकिन अब तुम लड़कियों के साथ नाचने लगे हो!" उन्हें चिंता थी कि अगर भारत में लोग इसे तस्वीरों में, वीडियो में देखेंगे तो उन्हें बहुत धक्का लगेगा। मैंने कहा, "अब तक, बहुत अच्छा।"

लेकिन मैं मुक्त हूँ—गौतम बुद्ध से ज्यादा मुक्त, महावीर से ज्यादा आजाद। गौतम बुद्ध में एक लड़की के साथ नाचने की हिम्मत नहीं थी।

मैं डांस कर सकता हूँ क्योंकि मुझे कोई दिक्कत नहीं दिखती। मेरे लिए कोई बाधा नहीं है, कोई सीमा नहीं है; मैं कुछ भी कर सकता हूँ।

बस उस रात, विवेक मुझसे पूछ रही थी, "क्या हमें डिस्को जाना चाहिए?"

मैंने कहा, "मैं एक दिन डिस्को जा रहा हूँ, लेकिन अभी बहुत देर हो चुकी है।"

मेरे डिस्को, मेरे रेस्तरां को ज़ोरबा द बुद्धा कहा जाता है। पहले मैं ज़ोरबा हूँ, और फिर मैं बुद्ध हूँ। और याद रखना, अगर मुझे दोनों में से किसी एक को चुनना हो तो मैं ज़ोरबा को चुनूंगा, बुद्ध को नहीं... क्योंकि ज़ोरबा हमेशा बुद्ध बन सकता है, लेकिन बुद्ध अपनी पवित्रता तक ही सीमित हो जाते हैं। वह डिस्को में जाकर ज़ोरबा नहीं बन सकता। और मेरे लिए, स्वतंत्रता सर्वोच्च मूल्य है; स्वतंत्रता से बड़ी, अधिक कीमती कुछ भी नहीं है। मेरे ज्ञान ने मुझे ज्ञान सहित हर चीज से मुक्त कर दिया है।

ओशो

Translated From :

Book – From Death To Deathlessness

Chapter # 3

Chapter Name – Belief Is A Barrier, Trust Is A Bridge

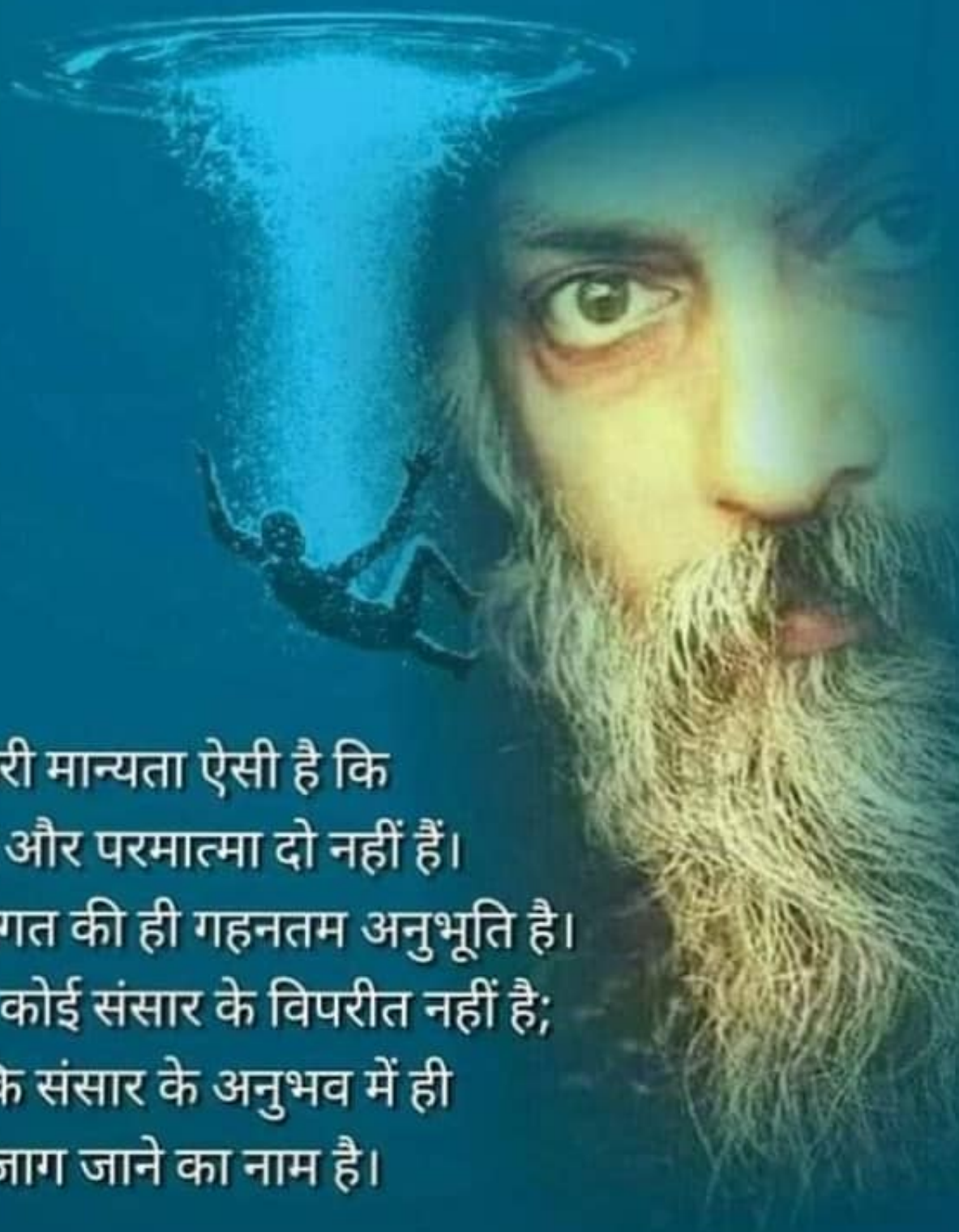


संसार का स्वभाव
समझो। दिखता है
सब--मिलता कुछ
भी नहीं।



ओशो





मेरी मान्यता ऐसी है कि
जगत और परमात्मा दो नहीं हैं।
परमात्मा जगत की ही गहनतम अनुभूति है।
और मोक्ष कोई संसार के विपरीत नहीं है;
बल्कि संसार के अनुभव में ही
जाग जाने का नाम है।

संभोग से समाधि की ओर-प्र०६
anamcara Ramesh Osho

झूठ बोलकर जीतने से बेहतर है,
सच बोलकर हार जाना.

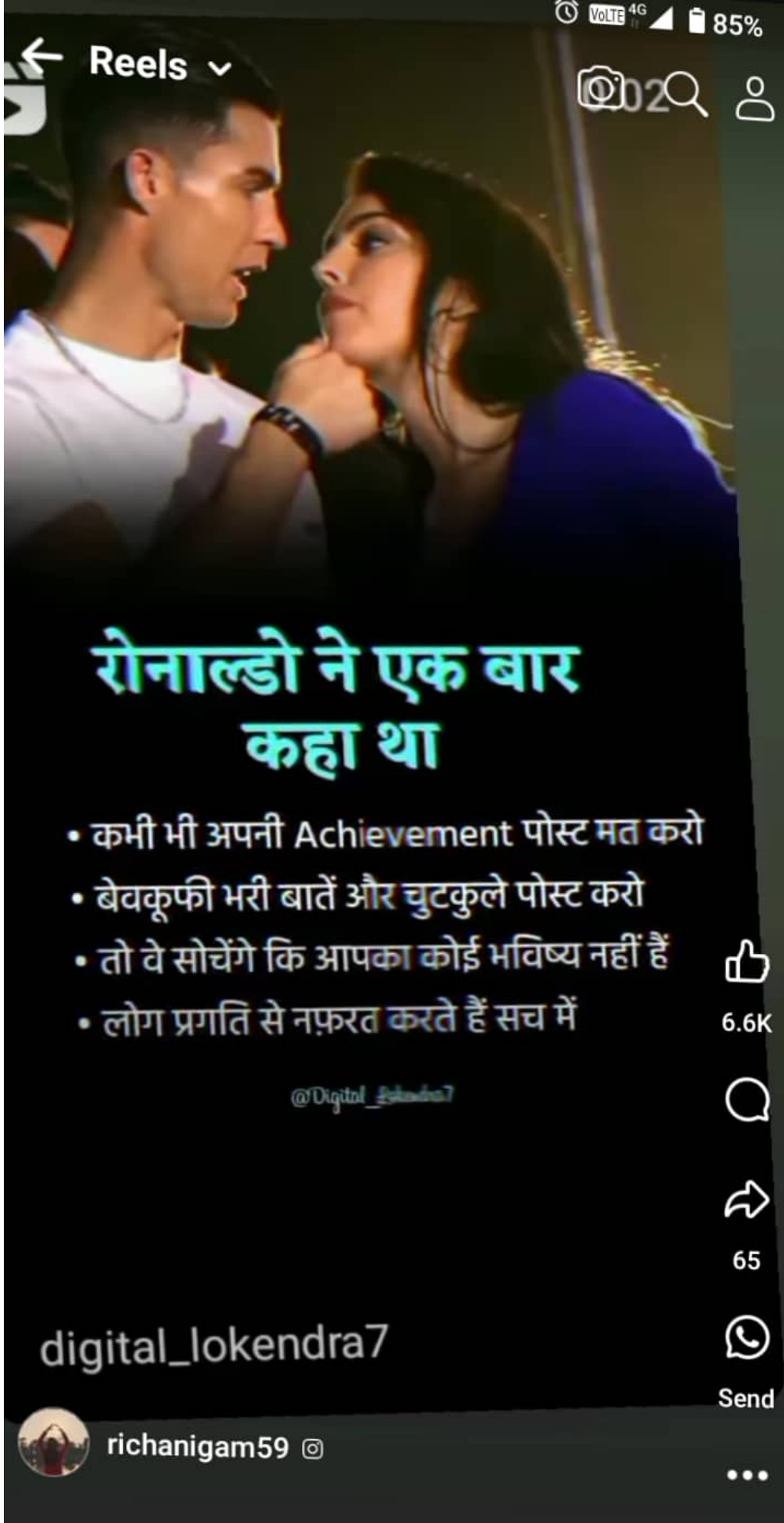
इस संसार में सदा नहीं रहेंगे, ऐसा
जिसको समझ में आ गया, उसी
को इस संसार में रहने का ढंग आ
गया। जिसको समझ में आ गया
के ओस की बूंद है, अब गिरी, तब
गेरी; भोर की तरैया है, अब डूबी,
तब डूबी। क्षणभर का खेल है।

फिर क्या चिंता है? फिर किसको
खुश देना है, किसको पीड़ा देनी है,
केससे शत्रुता लेनी है? शत्रुता हम
से पाते हैं इसी आधार पर कि जैसे
सदा रहना है.

प्रेम को प्रार्थना बनाओ

♥ ओशो ♥





रोनाल्डो ने एक बार कहा था

- कभी भी अपनी Achievement पोस्ट मत करो
- बेवकूफी भरी बातें और चुटकुले पोस्ट करो
- तो वे सोचेंगे कि आपका कोई भविष्य नहीं है
- लोग प्रगति से नफ़रत करते हैं सच में

@Digital_lokendra7

digital_lokendra7



richanigam59



6.6K



65



Send



@talksofme

लोगों के डर से कितने
समय तक ज़िओगे??

दूसरे की किसी बात
को लेकर सोचें मत।
और तुम यही सोचते
रहते हो। निन्यानबे
प्रतिशत बातें जो तुम
सोचते हो उनका लेना-
देना दूसरों से रहता है।
छोड़ दें, उन्हें इसी वक्त
छोड़ दें! ओशो



spritualmint @

गों के डर से कितने समय तक ज़िओगे?..❤️🔥 ... more



Vangelis · Conque



अहंभाव

योगी में तुम्हे होश मिलेगा, भोगी में
बेहोशी मिलेगी और भक्त में
तुम्हे दोनो मिलेंगे ।
ओशो

7:59 am

0 KB/s

VoLTE 4G 93%



इनसान
बनाने वाला हूँ जब मैं उसकी



621

2



31



Send



sanakhan14_3

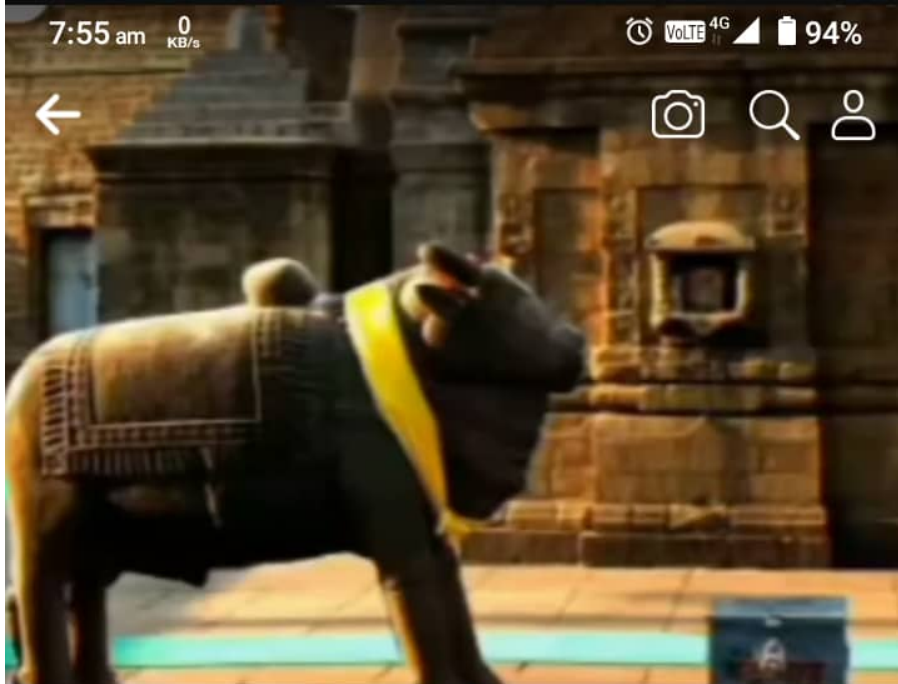
Follow

Quran translation ❤️🌸 ... more



Add a comment...





महाकाल की नगरी उज्जैन में दुनिया
का इकलौता मंदिर जहां खड़े हैं नंदी
इसी स्थान पर भगवान कृष्ण ने 64
ने दिनों में 64 विद्यार्यों को सीख
लिया था



40K



176



137



mahakal__ka_status__



#हर हर महादेव#mylifelines❤ Mahadev... more



Send



ori Female

Prabi



Add a comment...





अमरनाथ की खोज..!

बूटा मलिक एक मुस्लिम चरवाहा था, स्थानीय लोककथाओं के अनुसार जिसने 1850 में अमरनाथ गुफा की खोज की थी, कहानी यह है कि वह अपने भेड़ को चराते समय मलिक को एक सूफी संत ने कोयले का एक थैला दिया था। जब मलिक घर लौटा तो उसे सोने के सिक्कों से भरा बैग मिला, जिससे वह बहुत खुश हुआ। वह संत को धन्यवाद देने गया, लेकिन संत गायब हो चुके थे। मलिक को तब पवित्र गुफा मिली, जिसमें बर्फ का शिव लिंगम है, और उसने ग्रामीणों को अपनी खोज की घोषणा की। तब से यह एक पवित्र तीर्थ स्थल बन गया।

जय बाबा अमरनाथ बर्फानी,
भूखे को अन्न प्यासे को पानी।
@प्रसेनजीत कुमार सनातनी



834



23



24



Send



प्रसेनजीत कुमार सनातनी

Follow

इस विषय पर आपका क्या विचार है..?





Ig:-satyam.mishra_12



@SATYAM.MISHRA_12

GowraHari, Saicharan Bh

काटने वाले अगर चाटने लग जाएं,

तो सतर्क हो जाइए,
कोई ऐसे चक्रविहू का निर्माण हो चुका है,
जिसे भेदना आपके वस की बात नहीं है..!!



108



7



Send



Abhishek Shukla



Follow





इंतजार क्या होता हैं..? माता
वैष्णो देवी जी से पूछो,
जो त्रेतायुग से भगवान श्रीहरि
(कल्कि जी) का त्रिकूट पर्वत पर
इंतजार कर रही हैं..!



654

जय माँ वैष्णो देवी 🙏



12

-@प्रसेनजीत कुमार सनातनी



9



प्रसेनजीत कुमार सनातनी

Follow



Send

Deepak Mehra commented: Mera khyal se jab
Congress ki jit hogi aur atyachar bhi adhik hoga ta...



WHAT IF I TOLD YOU THAT



THE LEFT WING
AND THE RIGHT WING
BELONG TO THE
SAME BIRD.



insta:- swami_dhyan_rohan

तुम "वृक्षों से फूल तोड़कर... "ईश्वर की मूर्ति पर चढा आते हो. !
किसको धोखा देते हो ! वो पहले से, "ईश्वर पर चढा था. ! ज्यादा
जीवंत था उस वृक्ष पर..!

~ आचार्य रजनीश

← Reels ▾



रहस्यमय बनना चाहते हैं

1. शांत रहे
2. कम बोले
3. कम react करे
4. Eye contact करे
5. बोलने से ज्यादा सुनें
6. हटके सोचे
7. बोलने से पहले सोचे
8. हमेशा available न रहें
9. अपने बारे में कम बोलें



1.3K



26



51

अगर आप ऑनलाइन पैसा कमाने में रुचि रखते हैं
तो हमें फॉलो करके मैसेज करे "Yes"



Send



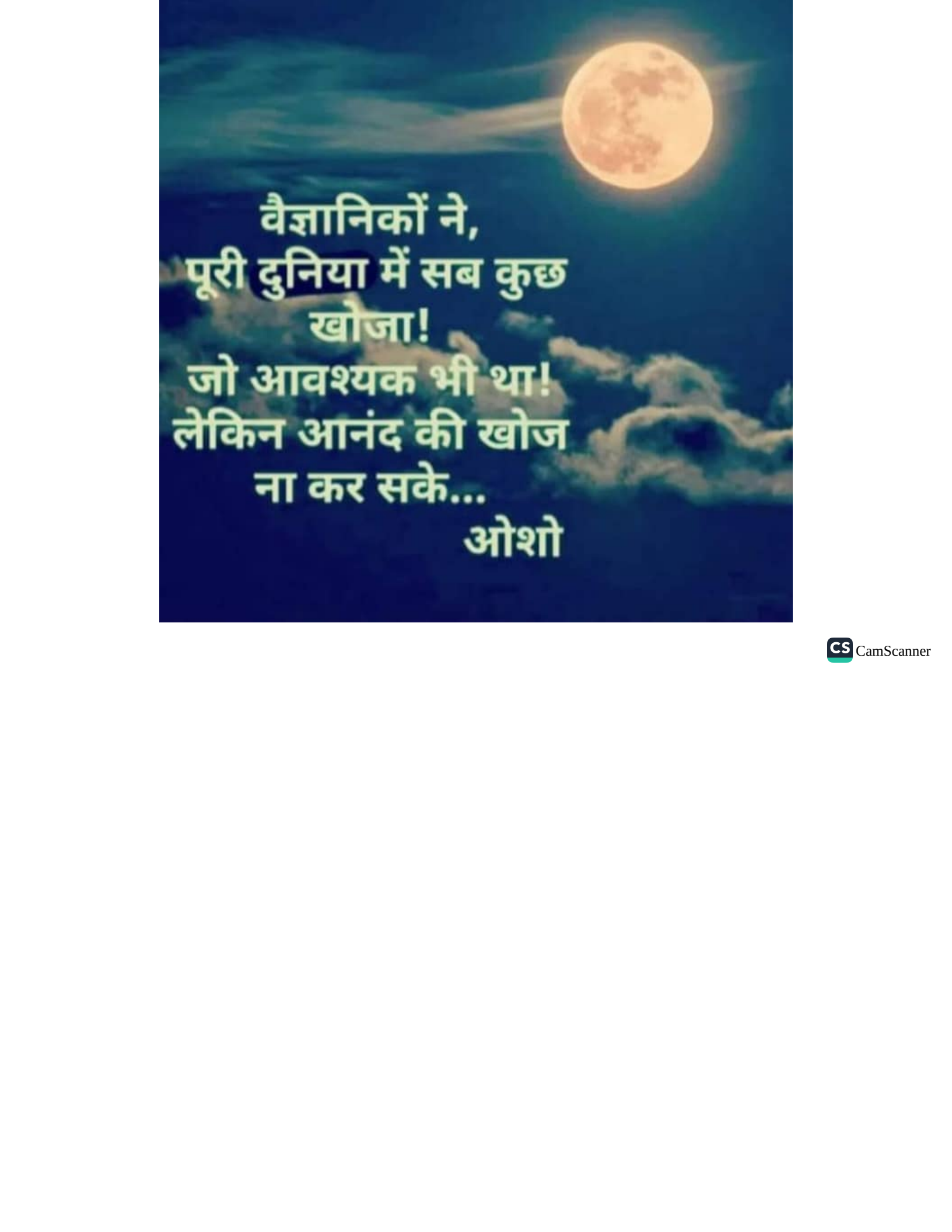
चाणक्य नीति ७

Follow



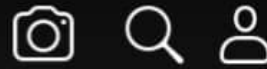
Add a comment...





वैज्ञानिकों ने,
पूरी दुनिया में सब कुछ
खोजा!
जो आवश्यक भी था!
लेकिन आनंद की खोज
ना कर सके...
ओशो

← Reels ▾



जब जिस्म ही चाहिए तो बस तुम
नहीं पूरा शहर पड़ा है ..

रुह से महोब्बत हैं शायद इसलिए
ये दिल सिर्फ़ तुम्हारे पीछे पड़ा है



6.8K



4



240



Send



nth_feelings



#foryou #aesthetic #reelkarofeelkaro #lo... more



नाम – ओशो

पूर्व नाम – रजनीश

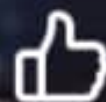
जन्म – 11 दिसंबर 1931

जन्मस्थान – गाडरवारा (M.P.)

मृत्यु – 19 जनवरी 1990

प्रोफेशन – विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक

क्वालिफिकेशन – परस्नातक 🌿👉 100



1.6K



नारी पुरुष की स्त्री, पुरुष नारी का पूत
यहि ज्ञान विचारि के, छारि चला अवधूत।

एक नारी पुरुष की स्त्री
होती है। एक पुरुष
नारी का पुत्र होता है।
इसी ज्ञान को विचार
कर एक संत अवधूत
कामिनी से विरक्त
रहता है।



1.2K



_कबीर साहब

5



64



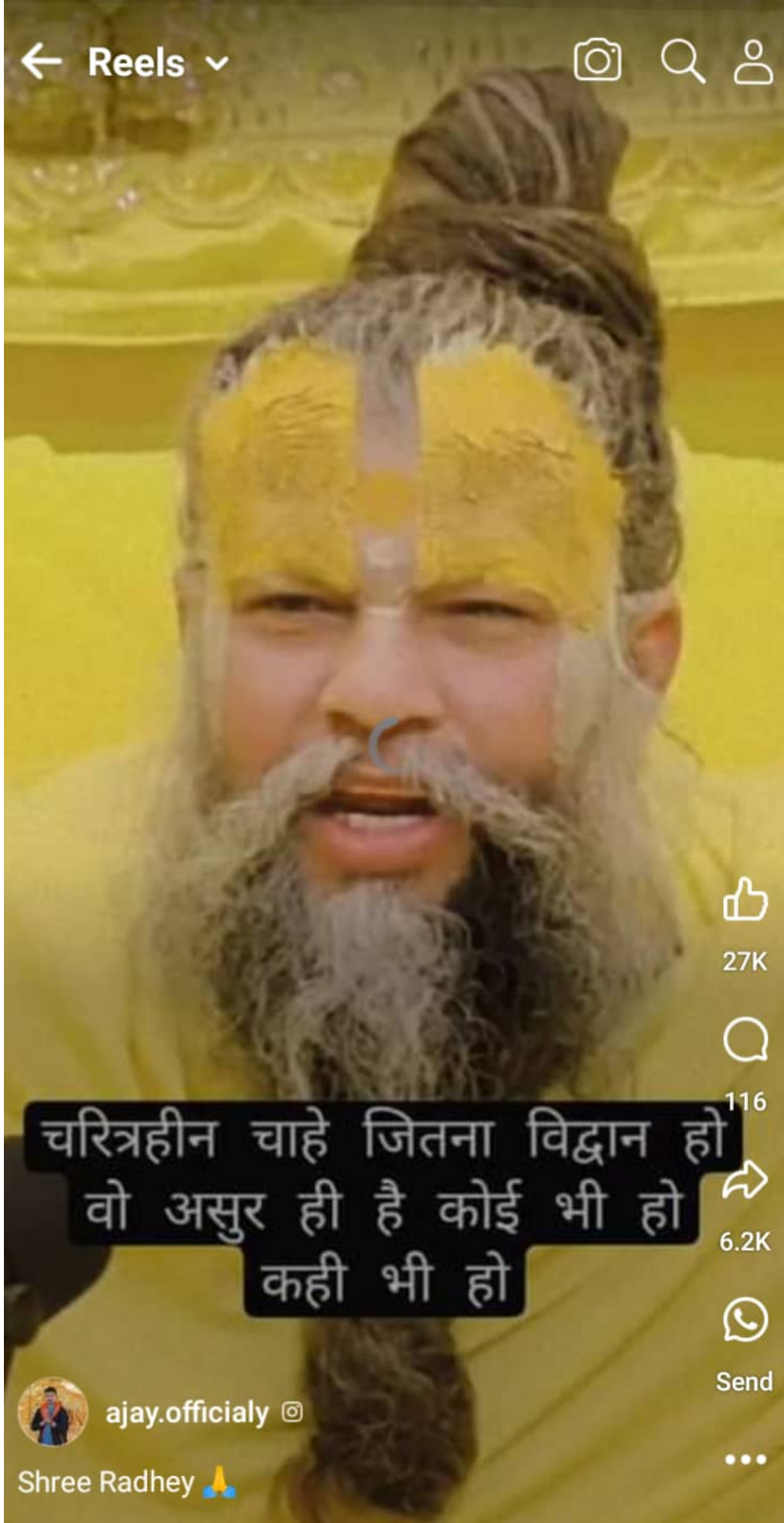
jaigurudev_world



#kabeer #jaigurudev_world #jaiguru... more

Send

← Reels ▾



27K



116



6.2K



Send



ajay.officialy



Shree Radhey 🙏

← Reels ▾



विद्वान था, आराधना करता
था, उत्तम कुल का भी था लेकिन
चरित्रहीन होने के कारण राक्षस
कहा गया है रावण



27K



116



6.2K



Send



ajay.officialy @

Shree Radhey 🙏





अहंकार मरता कैसे है?
तुम जो हो उससे राजी हो
गये की अहंकार मर गया।



2.9K



7



389



Send



spritualmint



अहंकार मरता कैसे है? तुम जो हो उससे राजी हो गये... more





एक स्त्री को इज्जत उसकी सुंदरता के
अनुसार दी जाती है और
एक पुरुष को उसकी जेब में पैसे के अनुसार
यही हमारे समाज का सच है

72



2



15



Send



चाणक्य नीति

समाज का सच

@Apnizindagi3
फॉलो कर दिजिए

Add a comment...





आनंद का अर्थ होता है—
शांति, परम शांति। न दुख
रहा, न सुख रहा, सब तरंगे
सुख—दुख की समाप्त
हो गयीं, निस्तरंग हो गयी
चेतना।

अथातो भक्ति जिज्ञासा-12
ओशो



तुम इस बात की गाँठ!
बाँध लो, इस संसार में
चाहे कितनी भी,
ताकत लगा लेना..
तुम्हारी हार निश्चित है!
यहाँ से जीतकर वहीं
जा सकता है, जो स्वयं
को जान लेता है..!! ओशो



सुखी आदमी खोजना कठिन है।
आपने कभी कोई सुखी आदमी देखा?
सुखी आदमी वही हो सकता है,
जो जहा है वहीं सुखी है।
कठोपनिषद ओशो



नागिन के तो दोये फन,
नारी के फन बीस ।
जाका डसा ना फिर जीये,
मरि है बिसबा बीस ॥

भावार्थ :

सांप के केवल दो फंन होते है पर स्त्री के
बीस फंन होते है। स्त्री के डसने पर कोई
जीवित नहीं बच सकता है। बीस लोगों
को काटने पर बीसों मर जाते हैं।

- कबीरदास जी



sahityasathi

नागिन के तो दोये फन, नारी के फन बीस ।... more



4.4K



69



79



Send

● काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ईर्ष्या,
द्वेष, कलह, अहंकार – जो भी समस्या
हो, बिना निंदा और बिना
प्रशंसा के समस्या के तथ्य
को देखो, पक्ष या विपक्ष में
बिना कोई भी निर्णय लिए।
दूर से निष्पक्ष होकर समस्या
को ऐसे देखो जैसे उससे
तुम्हारा कोई लेना-देना ही न हो।



साक्षी होने में वैज्ञानिकता लाओ।
समस्या जो भी हो, वह स्वयं ही
गिर जाएगी; तुम्हें उसे गिराने की
जरूरत नहीं होगी।

~ ओशो

← Reels ▾



@HINDI_WRITER_666

Rishi Kumar Instrumentals,

ध्यान रहे !
जीवन श्रम है,
मृत्यु विश्राम है।
अगर जीना है तो कुछ तो करना पड़ेगा ।

~ओशो...



936



62



Send



oshoki.duniya

Osho dham

Add a comment...



 Reels ▾

मैं ऐसे भगवान में विश्वास नहीं करता
जो जिंदा रहते हुए तो मुझे रोटी नहीं दे
सकता लेकिन मरने के बाद स्वर्ग देगा!!³¹

~ आचार्य रजनीश ❀



4



5

 Send a gift

महान आचार्य श्री रजनीश ओशो जी महाराज



Send

Hiralal Gupta commented: Vahi to Bhagavan hai
Jo aapke sahi hone pe kabhi bhi Kuchh de sakte h...



 Reels ▾

पूजा करने का कोई सिद्धांत नहीं है
परमात्मा हर उस दिल की सुनता है
जो की पवित्र निर्दोष और ईमानदार है!!



ओशो



2.9K



3



264



Send



acharya_oshopap



#oshopap 🌸🌸



Add a comment...



← Reels ▾



मनोवैज्ञानिक के अनुसार अगर आपके मन में किसी बीमारी का थोड़ा सा भी डर है तो आपका दिमाग आपके शरीर में उस बीमारी के लक्षण उत्पन्न कर देगा, क्योंकि हमारा दिमाग इतना शक्तिशाली है कि वह किसी बीमारी का इलाज भी कर सकता है और बीमारी पैदा भी कर सकता है।



2K



1



98



Send



kumarmotive2.0



kumarmotive2.0

Follow..... more



Add a comment...



ओशो

का सोचें बिज रेन

दुश्मनी सोच-समझ लेना,
क्योंकि जिससे तुम दुश्मनी लोगे
उसी जैसे हो जाओगे। यह राज की बात समझो



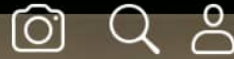
oso_ek_mistory

दुश्मनी सोच समझ कर करना क्योंकि जिससे तुम दुश्... more

shitaavrmaa

old f Try it

← Reels ▾



जो अकेले रहकर भी खुश है
असल में वही इंसान कहलाने
योग्य है यदि आपकी खुशी दूसरो
पर निर्भर करती है तो आप बस
एक गुलाम है।



7.5K



16



554



osho_vani_21

Osho vichar ✨ #osho #viral #reel #insta @osho



Send



A.R. Rahman · Th

✦ Watery by alwaysc



Add a comment...



← Reels ▾



सांस खत्म हो जाएं और तमन्ना बाकी
रहे वह है मृत्यु सांस बाकी रहें और
तमन्ना खत्म हो जाए वह है मोक्ष!!



67

~ ओशो

1



5



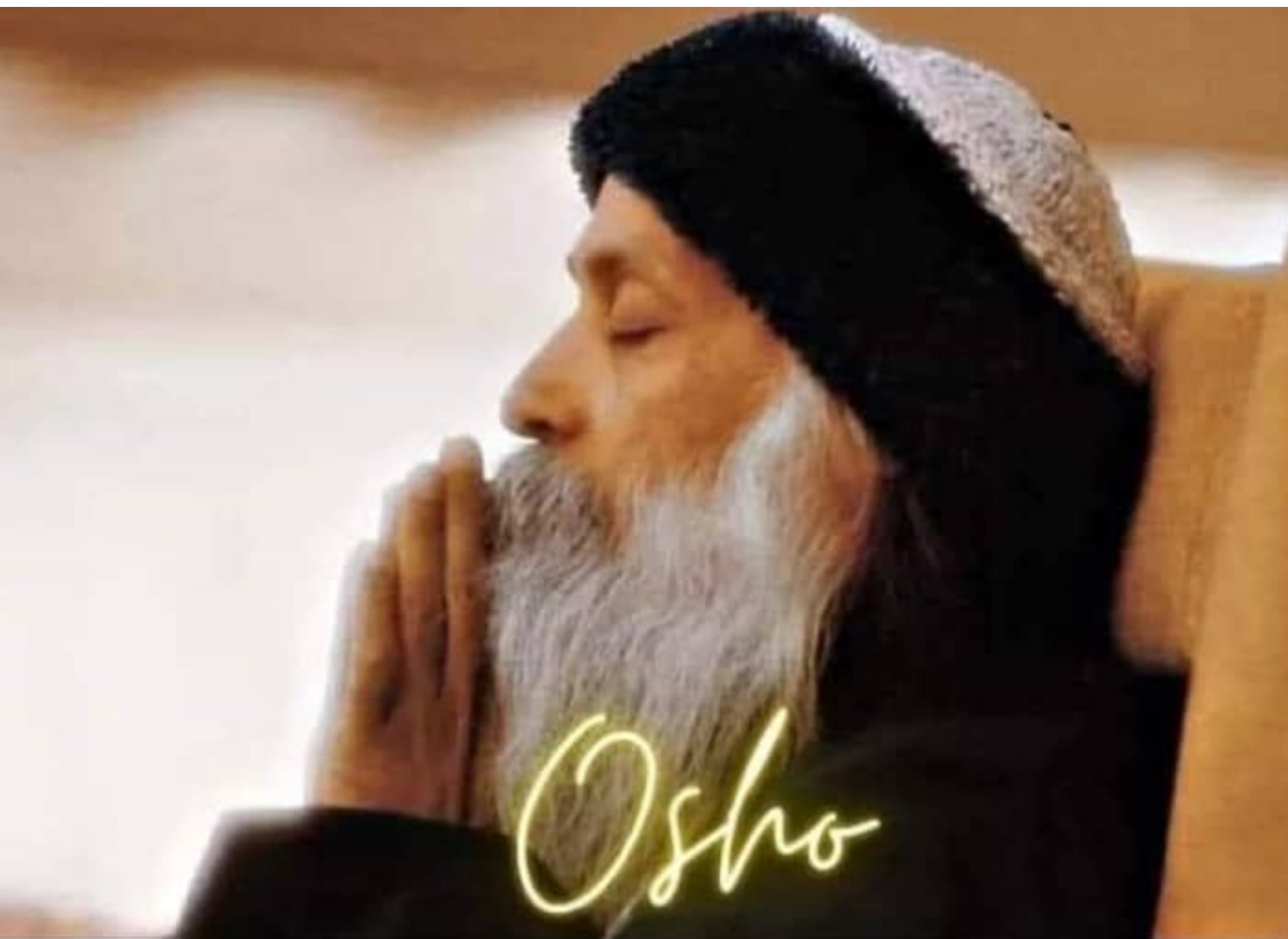
Send

★ Send a gift



महान आचार्य श्री रजनीश ओशो जी महाराज

Twist for end 🎯🧘 #oshomeditation #os... more



आदमी जैसा ऊपर से दिखाई पड़ता है, उससे ठीक उलटा उसके भीतर है। उसकी मुस्कुराहटें झूठी हैं, उसकी खुशी झूठी है, उसके मनोरंजन झूठे हैं; और उसके भीतर बहुत गहरा नरक, बहुत अंधेरा, बहुत दुख और पीड़ा भरी है।



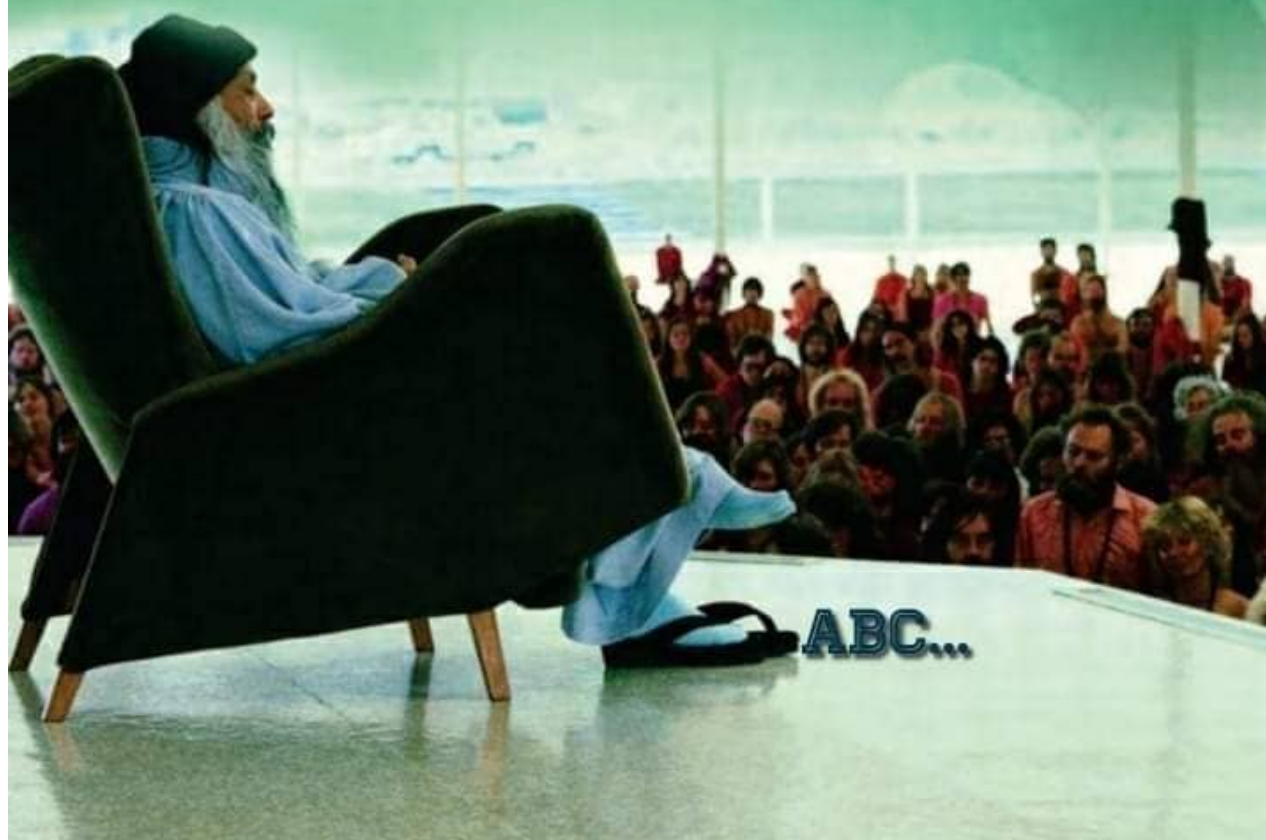
रजनीश
११५, नेपियर टाउन
जबलपुर (म.प्र.)
रात्रि: १४ जून १९६२

प्रत्येक नाविक जानता है
कि नाव को सागर में छोड़ने के
पहले तट से खोलना आवश्यक है।
प्रत्येक मनुष्य को भी जानना चाहिए
कि आनंद के, पूर्णता के, प्रकाश के
सागर में नाव छोड़ने के पूर्व
तट से वासना की जंजीरें
अलग कर लेनी होती हैं।
इसके बाद तो फिर शायद
पतवार भी नहीं चलानी पड़ती है।
श्री रामकृष्ण कहें है :
“तू नाव तो छोड़ - तू पाल तो खोल -
प्रभु की हवायें तुझे
ले जाने को प्रतिक्षण उत्सुक हैं।”

रजनीश के प्रणाम

मैं तुम्हें संबुद्धों की तरह देखता हूं।
तुम वही हो।
तुम बस अज्ञानी होने का खेल खेल रहे हो,
स्वयं को धोखा दे रहे हो।
लेकिन तुम कुछ भी करो,
उससे मूल स्वभाव को कोई अंतर नहीं पड़ता।
वह निर्दोष, शुद्ध, परिशुद्ध रहता है।

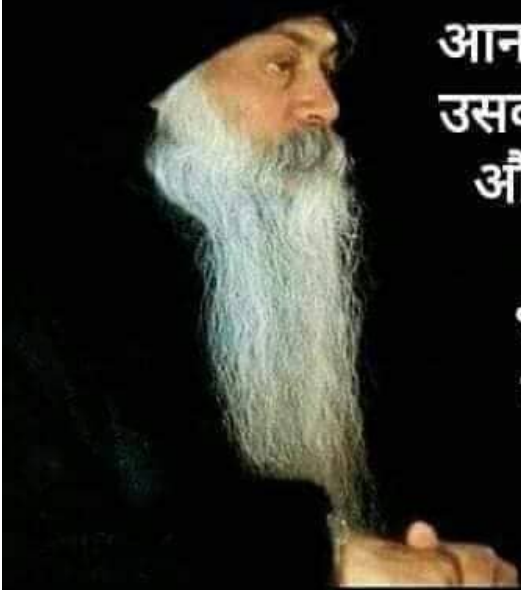
ओशो





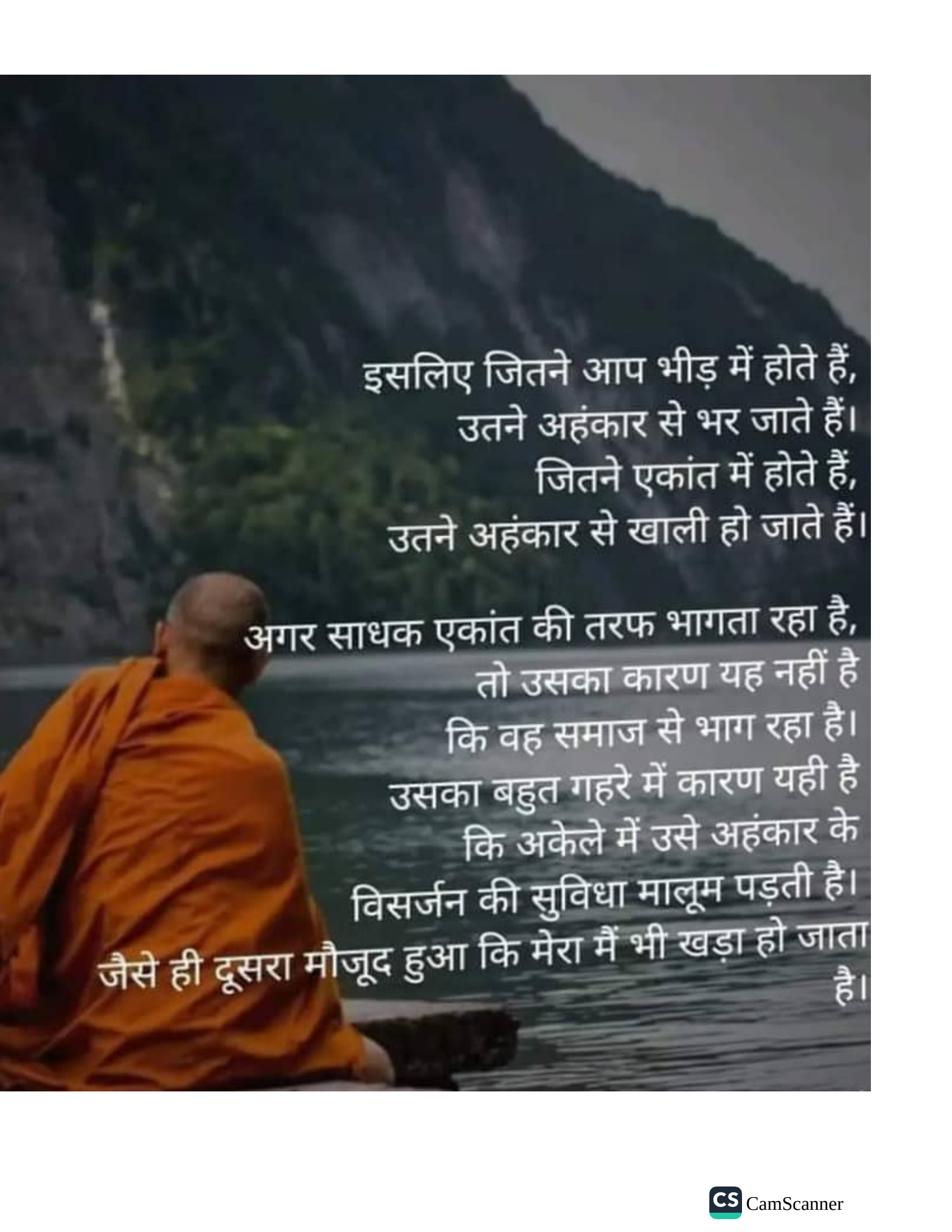
बुद्ध ने प्रार्थना की बात ही नहीं की। बुद्ध ने पूजा की बात ही नहीं की। बुद्ध ने तो सिर्फ एक सीधा सा सूत्र दिया ध्यान। ध्यान का अर्थ है-नींद को तोड़ो, सपने को तोड़ो और जागो।

*☒ ओशो☒ *



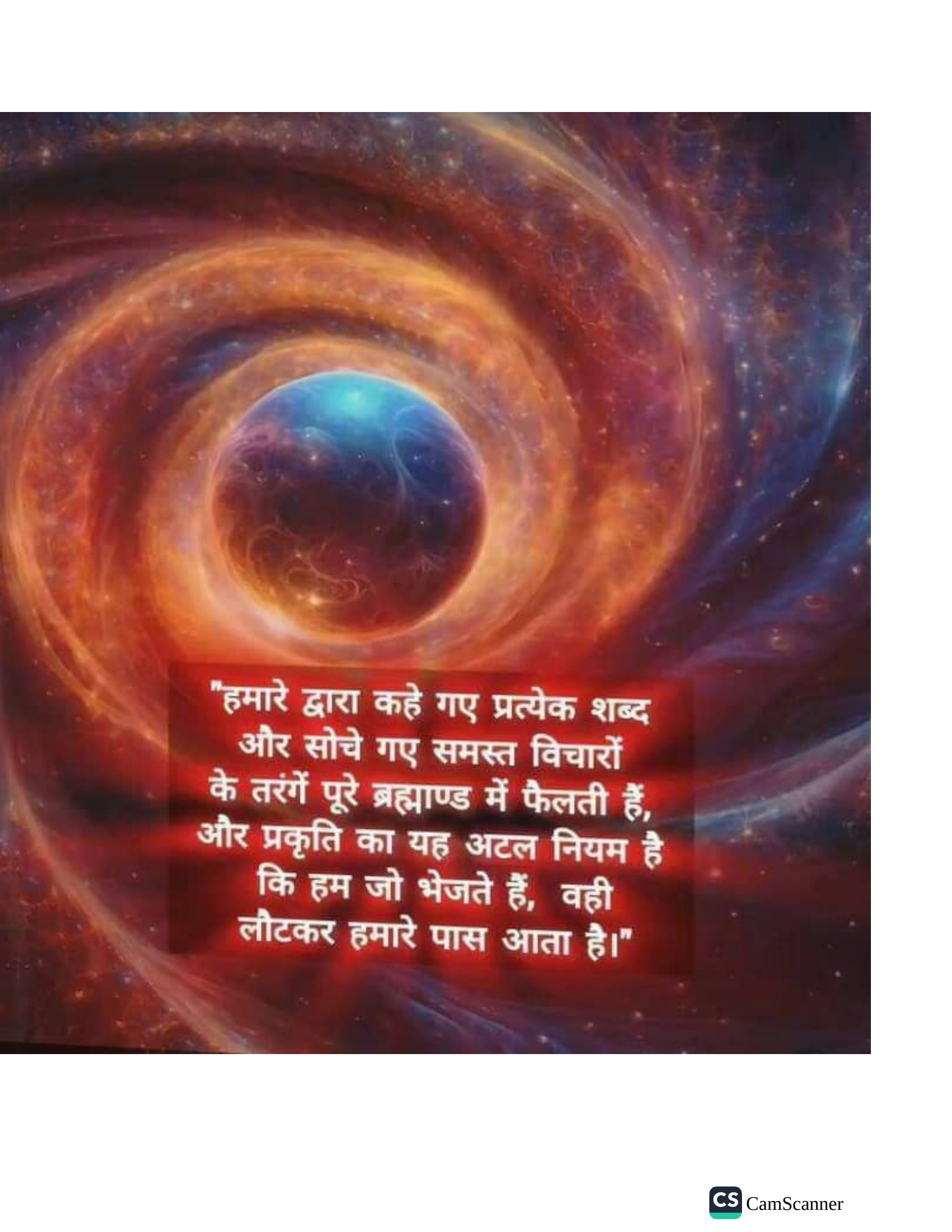
● अकेला रहना तो
बड़ा आनन्द है ।
सच्चाई भी यही है कि
हम सब अकेले हैं।
भीड़-भाड़ में कबतक
स्वयं के सत्य को
भुलाया जा सकता है?
एक दिन तो अकेला —
बिलकुल अकेला होना ही पड़ता है।
उसके पूर्व ही जो अकेला होने में
आनन्द अनुभव करने लगता है,
उसकी जीवन-यात्रा बहुत सरल
और शान्तिपूर्ण हो जाती है।
उस एकान्त घर में —
भीड़ का विचार न कर,
मन को भी शान्त और
शून्य में ले जाया कर।
मौन बैठा कर।
आकाश को देखा कर।
फिर, धीरे-धीरे एक
अभिनव आनन्द प्रकट होगा
और तेरे प्राणों को स्वर्गीय संगीत
संगीत से भर देगा।
शान्ति में, मौन में ही तो
परमात्मा के संगीत की
अनुभूति होती है।

~ ओशो ●



इसलिए जितने आप भीड़ में होते हैं,
उतने अहंकार से भर जाते हैं।
जितने एकांत में होते हैं,
उतने अहंकार से खाली हो जाते हैं।

अगर साधक एकांत की तरफ भागता रहा है,
तो उसका कारण यह नहीं है
कि वह समाज से भाग रहा है।
उसका बहुत गहरे में कारण यही है
कि अकेले में उसे अहंकार के
विसर्जन की सुविधा मालूम पड़ती है।
जैसे ही दूसरा मौजूद हुआ कि मेरा मैं भी खड़ा हो जाता
है।



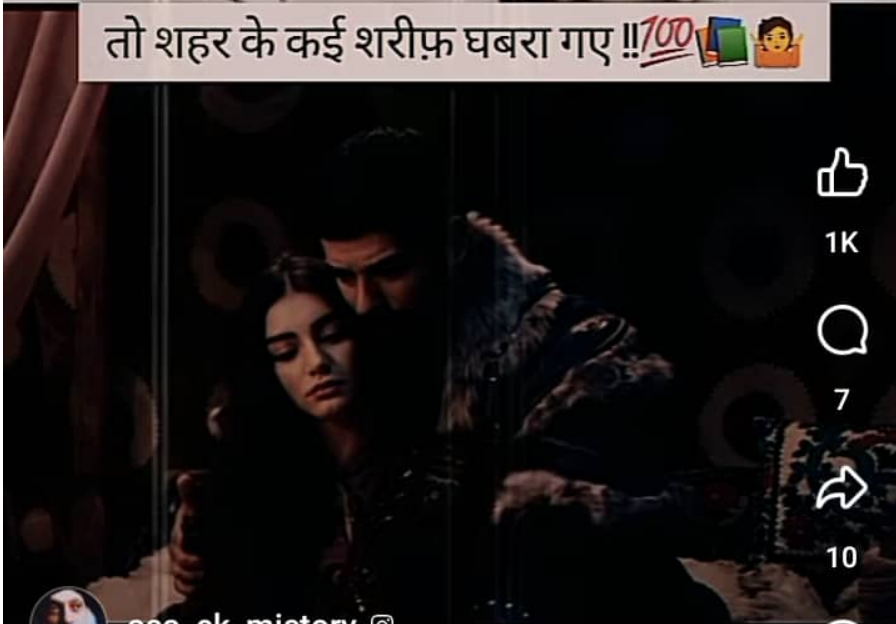
"हमारे द्वारा कहे गए प्रत्येक शब्द
और सोचे गए समस्त विचारों
के तरंगें पूरे ब्रह्माण्ड में फैलती हैं,
और प्रकृति का यह अटल नियम है
कि हम जो भेजते हैं, वही
लौटकर हमारे पास आता है।"



o\$ho

👤 एक तवायफ ने आत्मकथा लिखने की सोची

तो शहर के कई शरीफ़ घबरा गए !! 100 📖 🧑



1K



7



10



oso_ek_mistory @

👤 एक तवायफ ने आत्मकथा लिखने की सोची, तो श... more



Send

🔗 OLD FILM GRAIN by fd_fil Try it



Add a comment...



दुनिया को जीतना है
तो, खुद के बनाए हुए
नियम पर चलें

Send a gift

Buddha inspired 888 🌟

ha inspired 100 🌸 🙏 ... more



3



2



Send





Motivation_280821

जो दुःख में जीने को राजी है
उससे सुख कौन छीन सकता है
- ओशो



336



34



Send



motivation_280821



जो दुःख में जीने को राजी है , उस से सुख कोई नहीं छ... more





एकांत
मुख के लिए कैदखाना और
ज्ञानी के लिए स्वर्ग होता है



12K



14



765



motivation_280821

एकांत ज्ञानी के लिए स्वर्ग होता है। ओशो... more



Send



A.R. Rahman · The S



Aqua Glitter by insta



Add a comment...



कितने कलाओं से युक्त
भौतिक जगत के प्राणी ?



DATE

पत्थर एवं वनस्पतियाँ - 1 से 2 कलाएँ

पशु-पक्षी - 2 से 4 कलाएँ

सामान्य मानव - 5 कलाएँ

संस्कृतियुक्त समाज के मानव - 6 कलाएँ

विशिष्ट पुरुष - 7 कलाएँ

ऋषि - 8 कलाएँ

सप्तर्षि, मनु, देवता, प्रजापति, लोकपाल - 9 कलाएँ

10 एवं अधिक कलाएँ केवल भगवान में संभव हैं

श्रीराम - 12 कलाएँ, श्रीकृष्ण - 16 कलाएँ

नोट - 1. 16 कलाओं से युक्त होने के कारण

श्रीकृष्ण को पूर्ण ब्रह्म कहा गया है।

2. रावण का वध 'नर' द्वारा होने का विधान

था इसलिए रामावतार केवल 12 कलाओं से युक्त था।

← Reels ▾



क्या आपको पता है, voyager
1 एक सेकंड में 17 km की दूरी
तय करता है। मतलब की 1 घंटे में
61,200km की दूरी तय कर लेता
है। इतनी रफ्तार में उसे पृथ्वी से
चांद तक पहुंचने में मात्र साढ़े छे
घंटे (6 घंटे और 28 मिनट) का ही
वक्त लगेगा..!

★ Send a gift



यूनाइटेड ज्ञान

the_unitedgyan

👉 रोज़ कुछ नया सीखने के लिए एक लाइक ❤️ क... more

Add a comment...



@sahityasathi



मंदिर मस्जिद या चर्च के बाहर बैठे
हुए भिखारी इस बात के गवाह हैं कि,
भीतर सुनने वाला कोई नहीं है..!



6.5K

- ओशो



174



182



sahityasathi

ओसो जी कहते हैं कि, मंदिर मस्जिद या चर्च के बाहर... more



Send

🎵 Seal · Saagar Kinare

🔗 OLD FILM^ by _ghos





Osho Line

22h · 🌐

...

सेक्स के पार होने के लिए एक छोटी सी विधि बहुत सहायक होगी।



जब कभी तुम्हारे अंदर सेक्स की कामना उठे, तो वहां उसकी तीन सम्भावनाएं हैं:

पहली है, उनको तुष्ट करने में लग जाओ, सामान्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति यही कर रहा है।

दूसरी है—उसका दमन करो, उसे बलपूर्वक अपनी चेतना के पार अचेतन के अंधकार में नीचे धकेल दो, उसे अपने जीवन के अंधेरे तलघर में फेंक दो। तुम्हारे तथा कथित असाधारण लोग, महात्मा, संत और भिक्षु यही कर भी रहे हैं। लेकिन यह दोनों ही प्रकृति के विरुद्ध हैं। ये दोनों ही रूपांतरण के अंतर्विज्ञान के विरुद्ध हैं।

तीसरी सम्भावना है—जिसका बहुत थोड़े से लोग सदैव प्रयास करते हैं। जब भी सेक्स की कामना उठे, तुम अपनी आंखें बंद कर लो। यह बहुत मूल्यवान क्षण है: कामना का उठना ऊर्जा का जाग जाना है। यह ठीक सुबह सूर्योदय होने जैसा है। अपनी दोनों आंखें बंदकर लो, यह क्षण ध्यान करने का है। अपनी पूरी चेतना को काम केंद्र पर ले जाओ, जहां तुम उत्तेजना, कम्पन और उमंग का अनुभव कर रहे हो। वहां गतिशील होकर केवल एक मौन दृष्टा बने रहो। उसकी निंदा मत करो, उसके साक्षी बने रहो। तुम उसकी निंदा करते हो, तुम उससे बहुत दूर चले जाते हो। और न उसका मजा लो, क्योंकि जिस क्षण तुम उसमें मज़ा लेने लगते हो, तुम मूर्च्छा में होते हो। केवल सजग, निरीक्षणकर्ता बने रहो, उस दीये की तरह जो अंधेरी रात में जल रहा है। तुम केवल अपनी चेतना वहां ले जाओ, चेतना की ज्योति, बिना हिले डुले थिर बनी रहे। तुम देखते रहो कि कामकेंद्र पर क्या हो रहा है, और यह ऊर्जा है क्या?

इस ऊर्जा को किसी भी नाम से मत पुकारो, क्योंकि सभी शब्द प्रदूषित हो गए हैं। यदि तुम यह भी कहते हो कि यह सेक्स है, तुरंत ही तुम उसकी निंदा करना प्रारम्भ कर देते हो। यह शब्द ही निंदापूर्ण बन जाता है। अथवा यदि तुम नई पीढ़ी के हो, तो इसके लिए प्रयुक्त शब्द ही कुछ पवित्र बन जाता है। लेकिन शब्द अपने आप में हमेशा भाव के भार से दबा रहता है। कोई भी शब्द जो भाव से बोझिल हो, सजगता और होश के मार्ग में अवरोध बन जाता है। तुम बस उसे किसी भी नाम से पुकारो ही मत। केवल इस तथ्य को देखते रहो कि काम केंद्र के निकट एक ऊर्जा उठ रही है। उसमें उत्तेजना है उमंग है, उसका निरीक्षण करो। और



इस ऊर्जा को किसी भी नाम से मत पुकारो, क्योंकि सभी शब्द प्रदूषित हो गए हैं। यदि तुम यह भी कहते हो कि यह सेक्स है, तुरंत ही तुम उसकी निंदा करना प्रारम्भ कर देते हो। यह शब्द ही निंदापूर्ण बन जाता है। अथवा यदि तुम नई पीढ़ी के हो, तो इसके लिए प्रयुक्त शब्द ही कुछ पवित्र बन जाता है। लेकिन शब्द अपने आप में हमेशा भाव के भार से दबा रहता है। कोई भी शब्द जो भाव से बोझिल हो, सजगता और होश के मार्ग में अवरोध बन जाता है। तुम बस उसे किसी भी नाम से पुकारो ही मत। केवल इस तथ्य को देखते रहो कि काम केंद्र के निकट एक ऊर्जा उठ रही है। उसमें उत्तेजना है उमंग है, उसका निरीक्षण करो। और उसका निरीक्षण करते हुए तुम्हें इस ऊर्जा का पूरी तरह से एक नये गुण का अनुभव होगा। उसका निरीक्षण करते हुए तुम देखोगे कि यह ऊर्जा ऊपर उठ रही है। वह तुम्हारे अंदर मार्ग खोज रही है। और जिस क्षण वह ऊपर की ओर उठना प्रारम्भ करती है, तुम्हें अनुभव होगा कि एक शीतलता तुम पर बरस रही है, तुम पर चारों ओर से एक अनूठी शांति, मौन अनुग्रह आशीर्वाद और आनंद की वर्षा हो रही है। अब कोई पीड़ायुक्त है, यह ठीक एक मरहम जैसा है। और तुम जितने अधिक सजग बने रहोगे, यह ऊर्जा उतनी ही ऊपर जाएगी। यदि यह हृदय तक आ सकती है, जो बहुत कठिन नहीं है, कठिन तो है, लेकिन बहुत अधिक कठिन नहीं है.. यदि तुम सजग बने रहे, तो तुम देखोगे कि यह हृदय तक आ गई है। जब यह ऊर्जा हृदय तक आ जाती है तो तुम पहली बार यह जानोगे कि प्रेम क्या होता है।

_ओशो

आनंद योग, (प्रवचन 07

[#facebookpage](#)

[#facebookbonus](#)

[#trending](#)

[#motivation](#) [#spiritualawakening](#) [#spiritualgrowth](#)

[#spirituality](#) [#Osho](#) [#meditation](#) [#india](#) [#worldwide](#)

[#world](#) [#peace](#) [#stressrelief](#) [#love](#)

ओशो
पद घूंघरू बांध-
प्रवचन--16

परमात्मा
यात्रा
से नहीं
मिलता-
यात्राओं के
छूटने
से
मिलता है।

कुदरत के दो रास्ते

एक बच्चा दोपहर में नंगे पैर फूल बेच रहा था। लोग मोलभाव कर रहे थे। एक सज्जन ने उसके पैर देखे; बहुत दुःख हुआ। वह भागकर गया, पास ही की एक दुकान से बूट लेकर के आया और कहा-बेटा! बूट पहन ले। लड़के ने फटाफट बूट पहने, बड़ा खुश हुआ और उस आदमी का हाथ पकड़ के कहने लगा-आप भगवान हो। वह आदमी घबराकर बोला-नहीं...नहीं...बेटा! मैं भगवान नहीं। फिर लड़का बोला-जरूर आप भगवान के दोस्त होंगे, क्योंकि मैंने कल रात ही भगवान को अरदास की थी कि भगवानजी, मेरे पैर बहुत जलते हैं। मुझे बूट लेकर के दो। वह आदमी आंखों में पानी लिये मुस्कराता हुआ चला गया, पर वो जान गया था कि भगवान का दोस्त बनना ज्यादा मुश्किल नहीं है। कुदरत ने दो रास्ते बनाए हैं-

■ देकर जाओ या

■ छोड़कर जाओ

साथ लेकर के जाने की कोई व्यवस्था नहीं।





m.facebook.com



1

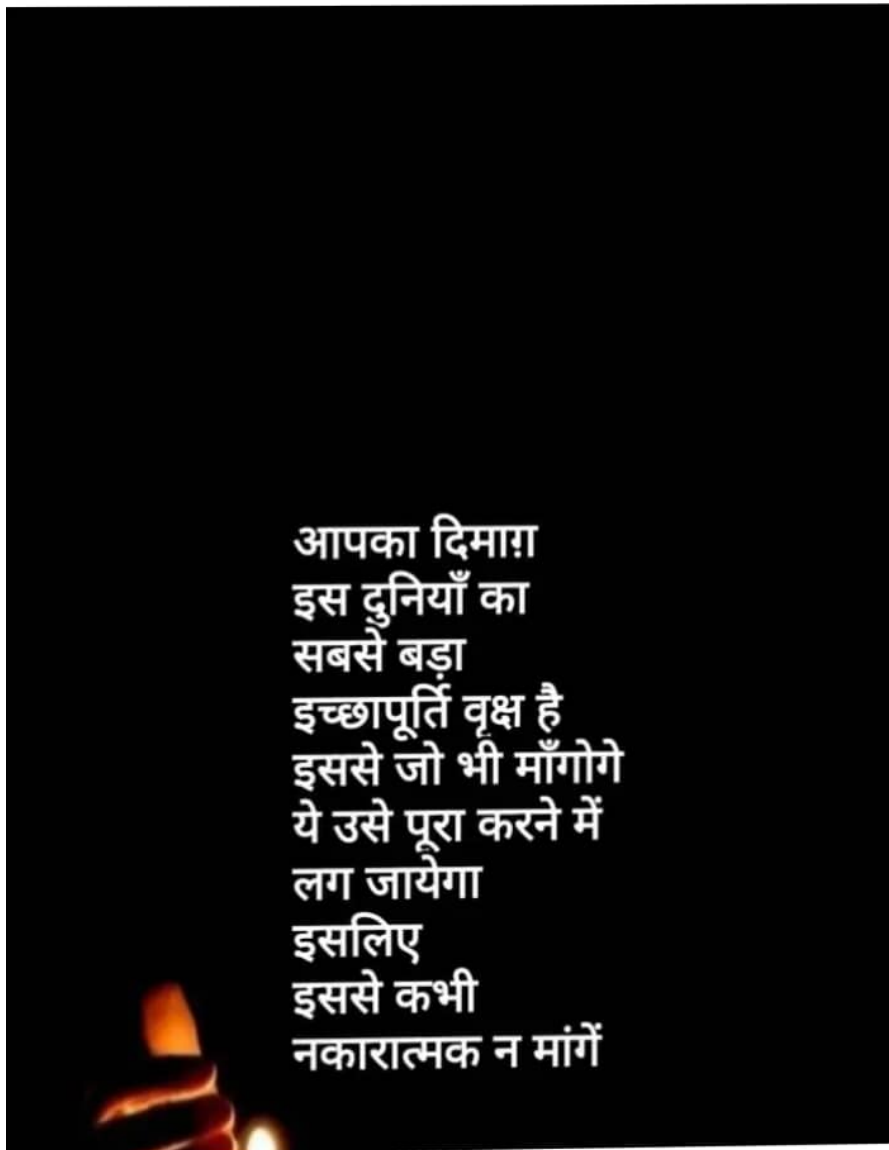


282

58

**Ramesh Soni** • [Follow](#)

3d •



Osho Harpreet and others



78

340

**Satyam Singh Kanaujia** • [Follow](#)

5d •

**Pathivara Tour Package 4N/5D 9807653855 -**



Swarup Sharma

23h · 🧑



तुम्हारी देह परमात्मा के
विपरीत नहीं है। तुम्हारी
देह को तो परमात्मा ने
अपना आवास बनाया
है। तुम्हारी देह मंदिर है,
पूजा का स्थल है, काबा
है, काशी है।

ओशो Osho wisdom



तुम इस दुनिया में रहते नहीं हो
बल्कि यहाँ से गुज़र रहे हो।



मेरे पास तुम्हे सिखाने
के लिये तीन ही बातें हैं.....
सादगी.... धैर्य.... दया....
यही जीवन का सबसे
बड़ा खज़ाना है !

~ लाओ त्ज़े ~



👍 2

👍 2



Empowered Living

Sponsored · 🌐



We're all in this together.





OSHO FRAGRANCE FRIENDS

Deepak Maniyar · 8m · 2

...

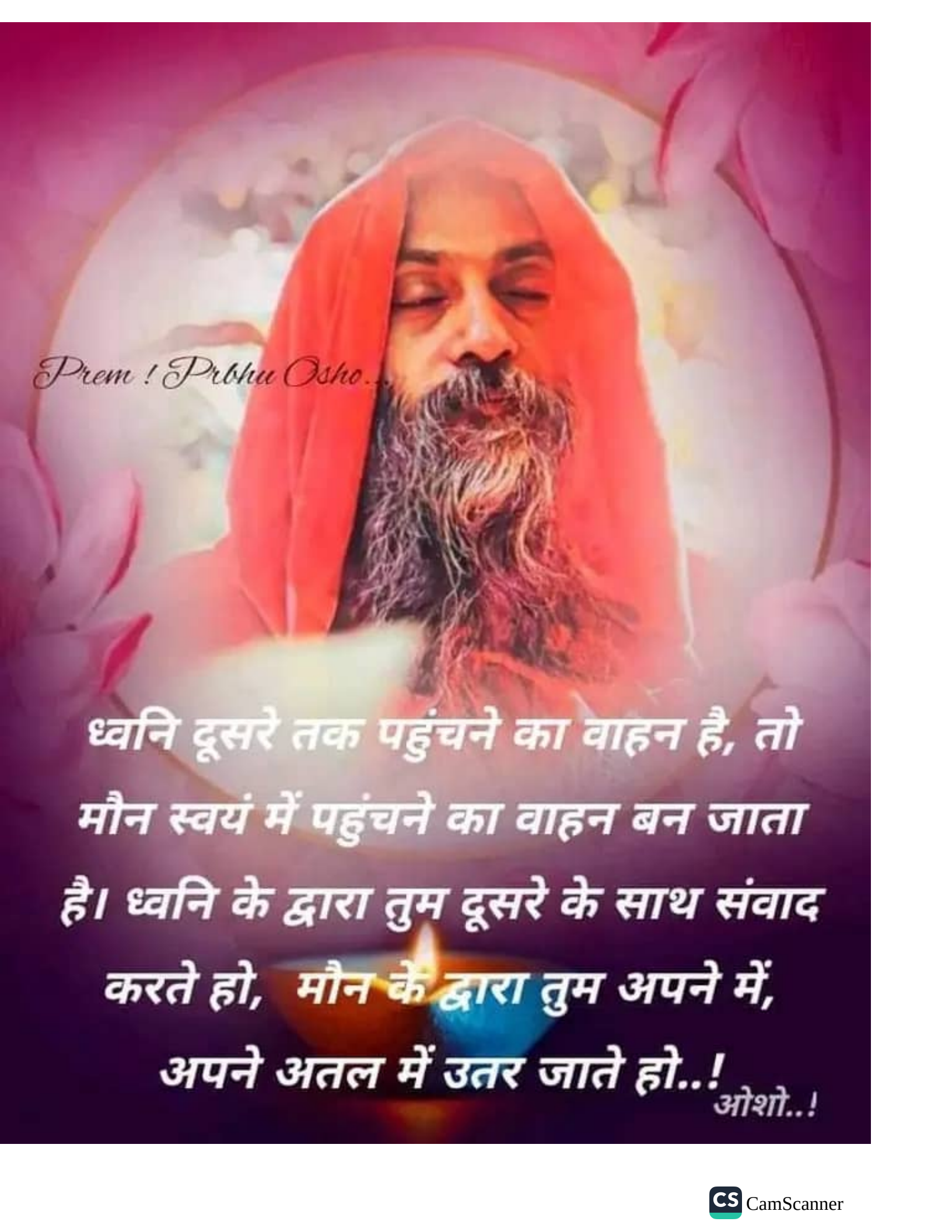
खोजी होए तो तुरतै मिलिहौं, पलभर की तलास में। 🙏🌸

कबीर एक बड़ा अनूठा विचार कह रहे हैं: वह जो झोन फकीर कहते हैं—सडन एनलाटमेन्ट—समाधि इसी पल हो सकती है। एक पल तक भी रुकने की कोई जरूरत नहीं है, स्थगित करने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि समाधि कोई सरकारी दफ्तर नहीं है कि कल, कल, कल, और फिर कभी नहीं होता। समाधि कोई रेड टेप नहीं है कि उसके लिए कोई बड़े दफ्तरों में प्रार्थना करनी पड़ती है, फिर वहां से सैंक्शन मिले, फिर रिश्तत खिलाओ, फिर लाईसेंस निकालो—तब तुम्हारी समाधि होगी। अगर दूसरे का सहारा लेना हो तो फिर पता नहीं कब वह दूसरा सहारा देगा और कब घटना घटेगी। अगर दूसरे पर थोड़ी भी निर्भरता हो तो समय लगेगा, दूसरे का क्या भरोसा—दे, न दे! लेकिन समाधि तुम्हारा शुद्ध निर्णय है। समाधि एक मात्र घटना है इस जगत में जो तुम्हारे अकेले होने से घट सकती है, जिसके लिए दूसरे की जरूरत नहीं है। सभी घटनाओं में दूसरे की जरूरत है। प्रेम तक के लिए दूसरे की जरूरत है। दूसरा न हो तो कैसे प्रेम घटेगा। इसलिए प्रेम भी निर्भर है, मोहताज है। अकेली समाधि एकमात्र घटना है जो मोहताज नहीं है, जो भिखारी नहीं है। अकेली समाधि सम्राट है। तुम जिस क्षण चाहो...तुम ही न चाहो—तुम्हारी मर्जी! तुम कई बार सोचते हो कि तुम चाहते हो और घटती नहीं है; तुम गलत सोचते हो। तुम चाहते नहीं; नहीं तो घटेगी ही। वह नियम है। उस नियम में कोई रूपांतरण नहीं हुआ है। कभी नहीं होगा।

मुझसे कई बार लोग आकर कहते हैं कि आप कहते हैं, चाहने से घट जाएगी; चाहते तो हम भी हैं, लेकिन उनकी चाह मैं देख रहा हूं कि बिलकुल कुनकुनी है। चाह का मतलब हंड्रेड डिग्री, सौ डिग्री पर होनी चाहिए, तभी पानी उबलता और भाप बनता है। भाप बनाने की इच्छा है, बड़ा तबेला रखे बैठे हैं मन का और एक अंगारा लगा रखा है नीचे—उससे होता ही नहीं।

मेरे पास लोग आते हैं। वे कहते हैं कि चाह तो है। लेकिन जब वे कहते हैं चाह तो है, तब भी मैं देखता हूं कि वे डर रहे हैं कि कहीं ऐसा न हो कि समाधि लग ही जाए। चाह तो है, उसमें भी पैर पीछे खींचते हुए मैं उनको देखता हूं। वे मेरी तरफ ऐसा देखते हैं, ऐसा नहीं कि आप पक्का ही मान लें। मतलब है, थोड़ी जिज्ञासा है। जानने का थोड़ा खयाल है।





Prem ! Prabhu Osho...

ध्वनि दूसरे तक पहुंचने का वाहन है, तो
मौन स्वयं में पहुंचने का वाहन बन जाता
है। ध्वनि के द्वारा तुम दूसरे के साथ संवाद
करते हो, मौन के द्वारा तुम अपने में,
अपने अतल में उतर जाते हो..!
ओशो..!



m.facebook.com



146K

146k

4k

561

**Osho Line** is with **Sanjeev Mishra** and **38 others.**

11h ·

भगवान श्री रजनीश ओशो -- अध्यात्म उपनिषद दूसरा प्रवचन

यह सूत्र अनेक-अनेक द्वारों से एक ही बात की पुनरुक्ति है। वायु के भीतर जो छिपा है, वायु उसे जानती नहीं। मन जिसका शरीर है, मन उससे अपरिचित। अहंकार जिसकी देह है, अहंकार उसके प्रति अनजान। चित्त जिसका शरीर है, अक्षर, अव्यक्त जिसका शरीर है, वे भी उसे जानते नहीं जो भीतर छिपा है। मृत्यु भी उससे अपरिचित रह जाती है, जिसकी मृत्यु घटित होती है, जो मरता है। यह जरा अजीब वाक्य है; क्योंकि जो मरता है, मृत्यु उससे अपरिचित रह जाती है! जो मरता है, वह मरता ही नहीं! मृत्यु जब घटती है तो कौन मरता है? कोई भी नहीं मरता।

ओशो लाइन

मा सुष्मिता

[#facebookreels](#) [#meditation](#) [#Oshointernational](#)

[#osho](#)

[#facebookpage](#) [#facebookbonus](#)

[#osho](#) [#tantra](#) [#Oshointernational](#)

**M★STBET**

वक्त का पासा कभी भी पलट सकता है,
सितम वही कर जो तू सह सके !



2.4K



4



300



vaanya_mathur



...



googleplay.spicebazaar.life

ऑनलरइन लरखों नकद प्ररप्त करें

PLAY GAME

**Swarup Sharma**

19h ·



आत्मा तुम्हारी है, शरीर प्रकृति का है
और मन समाज का है....

आचार्य रजनीश



3



3

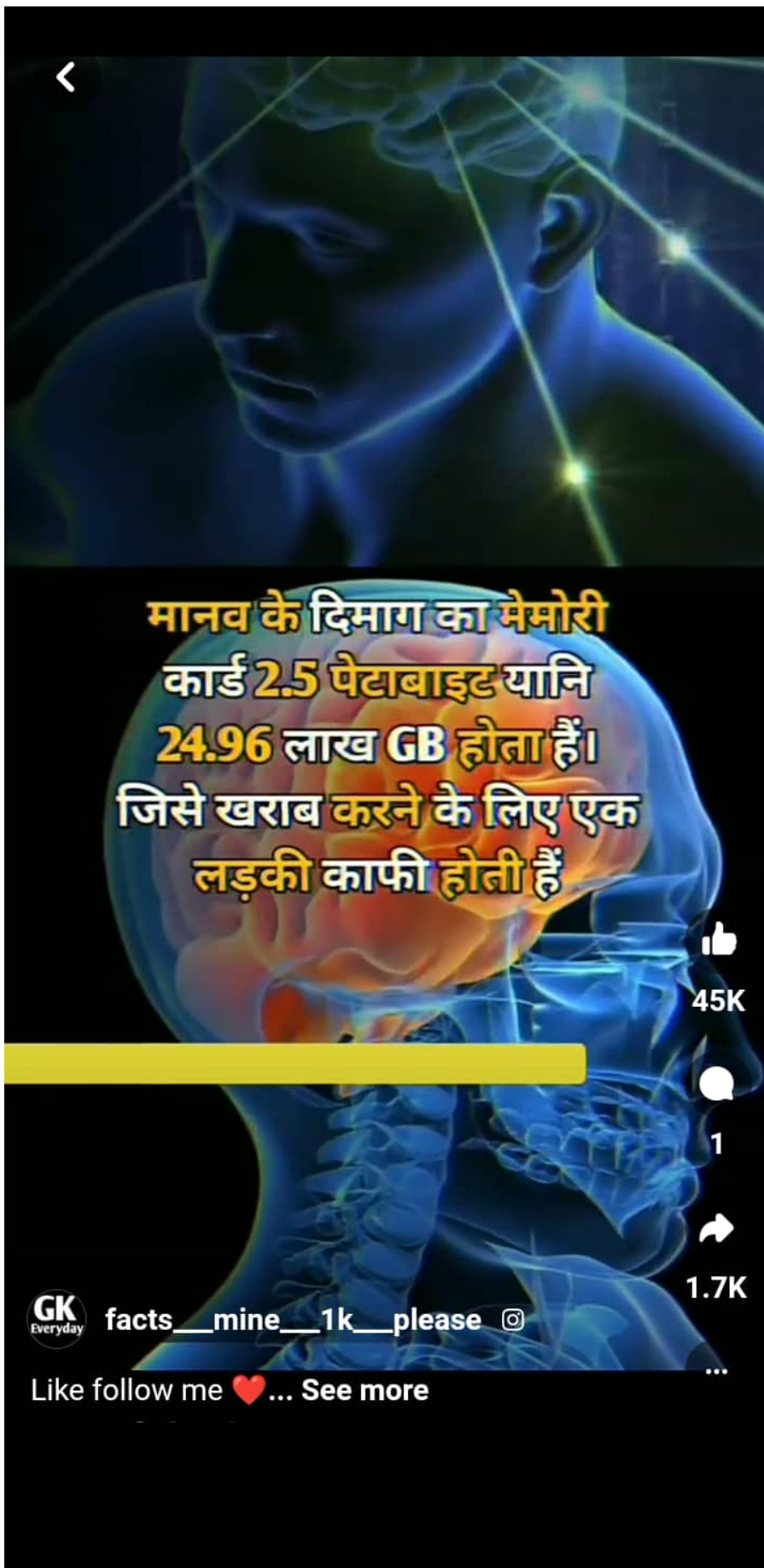
**ओशो क्रांति**

Osho Harpreet · 22h ·



सात सौ वर्ष पहले,अपने पूर्व जन्म में मैं मृत्यु से पूर्व इक्कीस दिन के उपवास की साधना कर रहा था। पूरे इक्कीस दिन के उपवास की साधना कर रहा था। पूरे इक्कीस दिन के उपवास के बाद ...see more







जहां से चले जाना है, वहां वैर क्या करना?

osho_gyanvarsha



29K



137



4.5K



osho_gyanvarsha



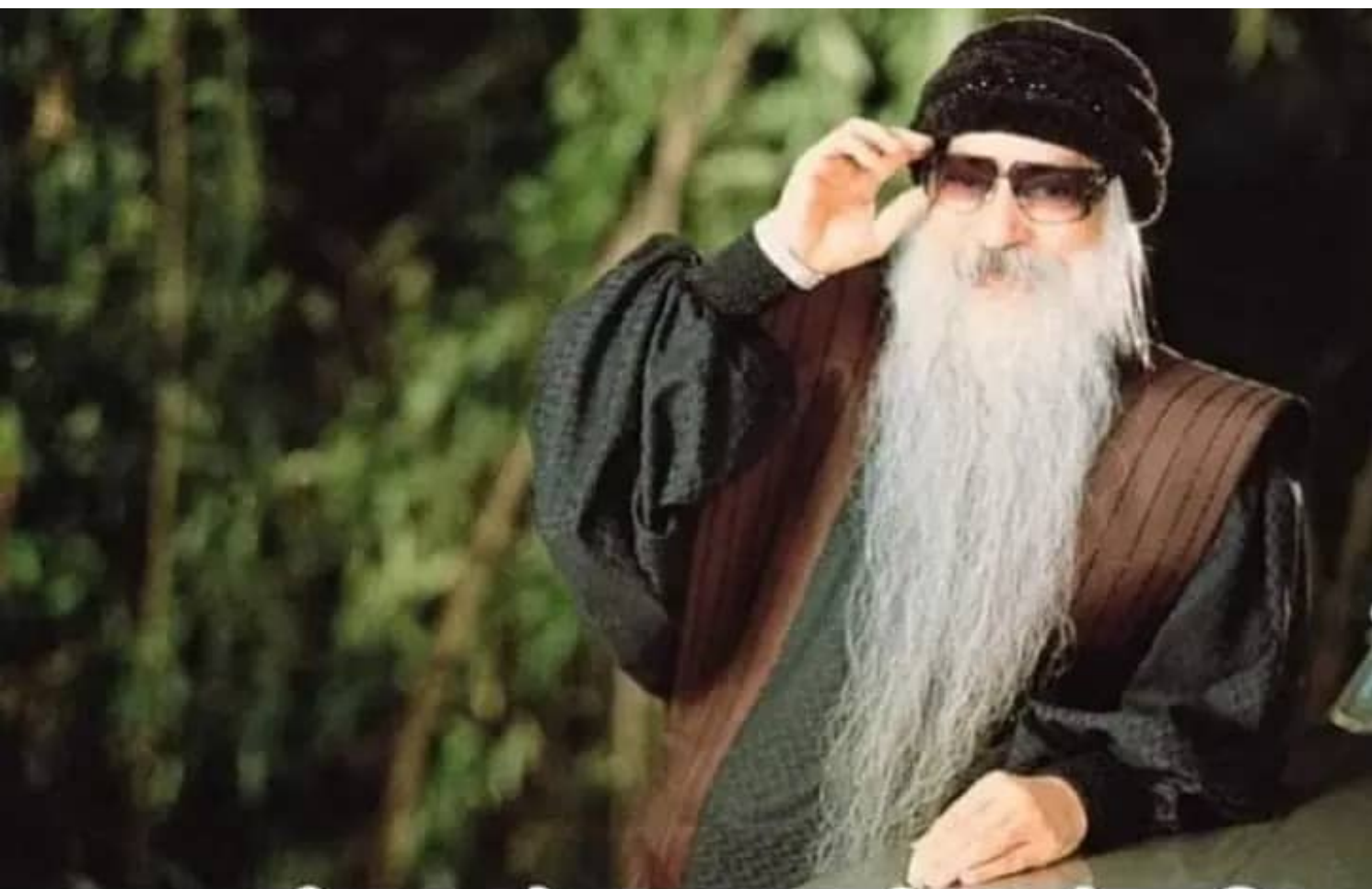
अगर हम मृत्यु को ठीक से पहचान लें, तो ... See more



जब जीवन आपके
आस-पास ही है...

तो ईश्वर आपसे दूर
कैसे हो सकता है...





एक ही पाप है तुम्हारा जीवन के प्रति
जिसकी कोई माफी नहीं-तुम
जीवन में आनंदित हो सकते थे
पर हुए नहीं,,



जिसको भी पाने की तुम
दौड़ करोगे,
वही ना मिलेगा।



3.7K



9



583

**spiritualmint** @

जिसको भी पाने की तुम दौड़ करोगे, वही ... See more



कोई भी आदमी
साधारणतः

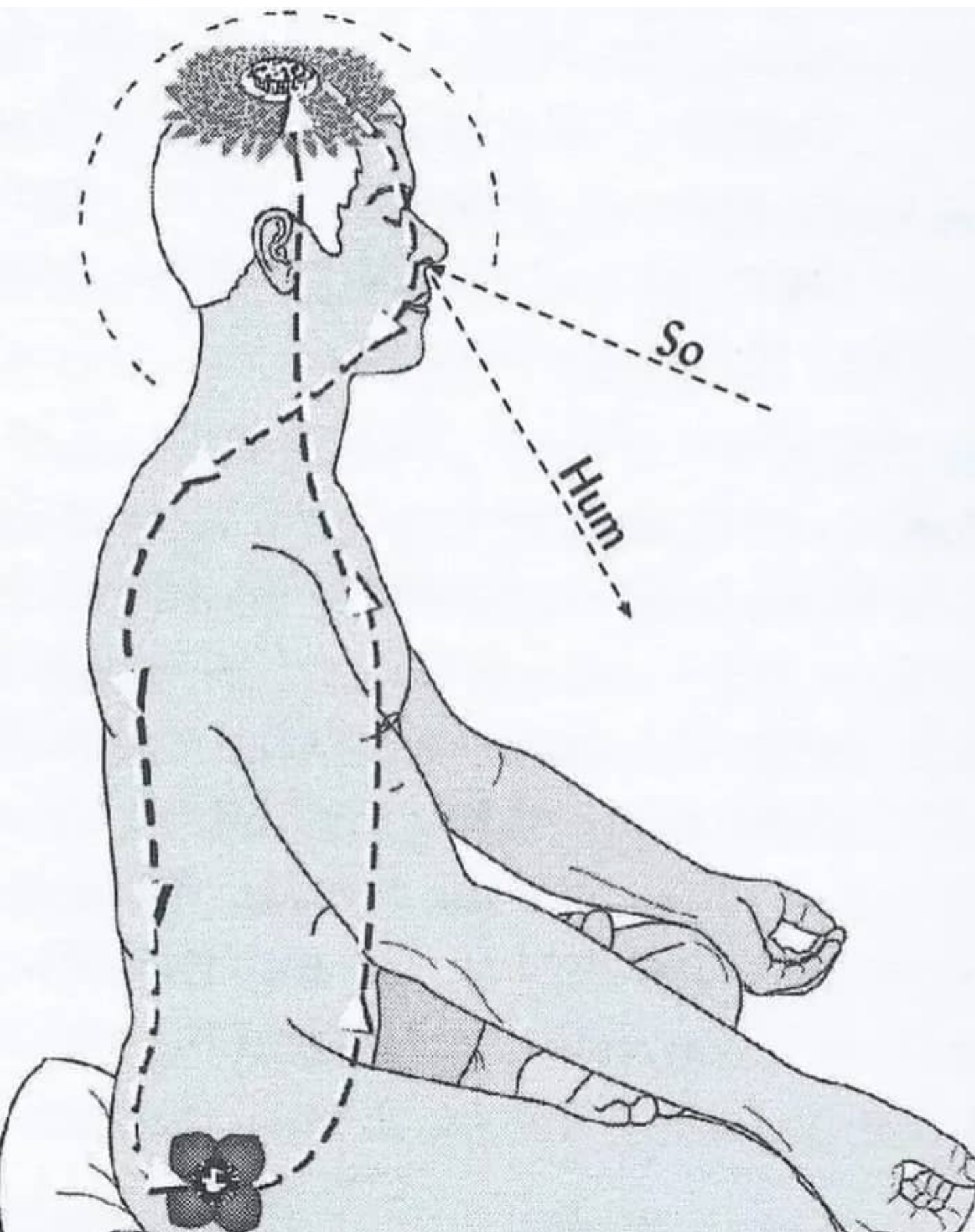
मरते क्षण होश में नहीं रहता।

अगर होश में
एक बार रह जाए,
तो फिर मृत्यु का भय
उसके लिए सदा के लिए
विलीन हो जाए।
अगर वह एक दफा देख ले
कि मरना यानी क्या,
मरने में होता क्या है,
तो फिर दुबारा उसे
मृत्यु का भय न रहे,
क्योंकि मृत्यु ही न रहे।



मैं मृत्यु सिखाता हूं 🔥 प्र.3

animesha frames
Osho





एक मंत्र परमात्मा ने दिया है वह श्वास है!.... 😊

लोग मुझसे पूछते हैं कोई मंत्र दे दें मैं उनसे कहता हूं मंत्र वगैरह न लें। एक मंत्र परमात्मा ने दिया है, वह 'श्वास' है। उसको देखें। श्वास पहला मंत्र है। बच्चा पैदा होते ही पहला काम करता है श्वास लेने का और आदमी जब मरता है तो आखिरी काम करता है श्वास छोड़ने का। श्वास से घिरा है जीवन।

जन्म के बाद पहला काम श्वास है; वह पहला कृत्य है आप श्वास लेकर ही कर्ता हुए हैं इसलिए अगर आप श्वास को देख सकें तो आप पहले कृत्य के पहले पहुंच जाएंगे। आपको उस जीवन का पता चलेगा, जो श्वास लेने के भी पहले था जो जन्म के पहले था।

अगर आप श्वास को देखने में समर्थ हो जाएं तो आपको पता चल जाएगा कि मृत्यु शरीर की होगी, श्वास की होगी, आपकी नहीं होने वाली। आप श्वास से अलग हैं।

बुद्ध ने बहुत जोर दिया है 'अनापानसती-योग' पर, श्वास के आने जाने को देखने का योग वे अपने भिक्षुओं को कहते थे तुम कुछ भी मत करो बस एक ही मंत्र है श्वास भीतर गई इसको देखो श्वास बाहर गई, इसको देखो और जोर से मत लेना। कुछ करना मत श्वास को सिर्फ देखना। करने का काम ही मत करना। सिर्फ देखना!

आंख बंद कर ली, श्वास ने नाक को स्पर्श किया, भीतर गई, भीतर गई। भीतर पेट तक जाकर उसने स्पर्श किया। पेट ऊपर उठ गया। फिर श्वास वापस लौटने लगी। पेट नीचे गिर गया। श्वास वापस आई। श्वास बाहर निकल गई। फिर नई श्वास शुरू हो गई। यह वर्तुल है। इसे देखते रहना।

अगर आप रोज पंद्रह-बीस मिनट सिर्फ श्वास को ही देखते रहें, तो आप चकित हो जाएंगे, बुद्धि हटने लगी। साक्षी जगने लगा। आंख खुलने लगी भीतर की। हृदय के द्वार, जो बंद थे जन्मों से, खुलने लगे, सरकने लगे। उस सरकते द्वार में ही परमात्मा की पहली झलक उपलब्ध होती है!

ओशो 🌻🌺
गीता दर्शन



@sufi_writess_

न ढूँढ तू.....
किसी को किसी में,
पहले ढूँढ तू.....
"खुद को खुद ही में !!



m.facebook.com/reel/18





तांत्रिक कहता है भूत होते हैं
पुजारी कहता है ईश्वर होते हैं
दोनों का बाजार चल रहा है
आप पीड़ित नहीं हैं आप ग्राहक हैं!!

Osho_life_change__



1.5K



बौद्ध ध्यान को अशुद्धियों (*क्लेश*) और आसक्ति और लालसा (*उपादान*) से मुक्ति के मार्ग के रूप में अपनाते हैं , जिसे जागृति भी कहा जाता है , जिसके परिणामस्वरूप निर्वाण की प्राप्ति होती है , [नोट 3] और इसमें विभिन्न प्रकार की ध्यान तकनीकों शामिल हैं, विशेष रूप से *अनापानसति* (सांस लेने की सावधानी)। अन्य तकनीकों में *अशुभ भावना* ("प्रतिकारकता पर विचार") शामिल हैं;

[1] *प्रतीत्यसमुत्पाद* (आश्रित उत्पत्ति) पर चिंतन ; *अनुसति* (यादें, जिसमें *अनापानसति* भी शामिल है) और *सती* (चेतना), ध्यान में परिणति (एक सतर्क और चमकदार दिमाग का विकास); [2] [3] [4] [5] और *ब्रह्म-विहार* (प्रेम-दया और करुणा)। इन तकनीकों का उद्देश्य समभाव और *सती* (दिमागीपन) विकसित करना है; *समाधि* (मन का एकीकरण) सीक्यू *समथ* (शांति) और *विपश्यना* (अंतर्दृष्टि); और यह भी कहा जाता है कि इससे *अभिज्ञान* (अलौकिक शक्तियां) प्राप्त होती हैं। इन ध्यान तकनीकों को पहले और उन प्रथाओं के साथ जोड़ा जाता है जो इस विकास में सहायता करती हैं, जैसे नैतिक संयम और मन की स्वस्थ स्थिति विकसित करने के लिए सही प्रयास।

हालाँकि इन तकनीकों का उपयोग बौद्ध विद्यालयों में किया जाता है , फिर भी इनमें महत्वपूर्ण विविधता भी है। ध्यान तकनीकों का एक बुनियादी वर्गीकरण *समथ* (मन को शांत करना) और *विपश्यना* (अंतर्दृष्टि प्राप्त करना) है। थेरवाद परंपरा में, *विपश्यना* पर जोर देते हुए , इन्हें विरोधी तकनीकों के रूप में देखा जाता है, [नोट 4] जबकि महायान बौद्ध धर्म *समथ* और *विपश्यना* के बीच परस्पर क्रिया पर जोर देता है । [6] दोनों परंपराओं में, श्वास ध्यान एक केंद्रीय अभ्यास है। चीनी और जापानी बौद्ध धर्म ने भी ध्यान तकनीकों की एक विस्तृत श्रृंखला को संरक्षित किया है, जो प्रारंभिक बौद्ध धर्म से चली आ रही है, और *सर्वास्तिवाद* बौद्ध धर्म के माध्यम से प्रसारित की गई थी। तिब्बती बौद्ध धर्म में, *देवता योग* में दृश्य शामिल हैं, जो *सूर्यता* ("शून्यता") की प्राप्ति से पहले होते हैं । [नोट 5]

✓ शब्द-साधन



[Here is my photo of the Sombrero Galaxy taken with a small telescope for comparison](#) - a huge difference.

5. Eta Carinae



Eta Carinae picture by the Hubble Space Telescope. Source: NASA

Eta Carinae is a star in the Carina







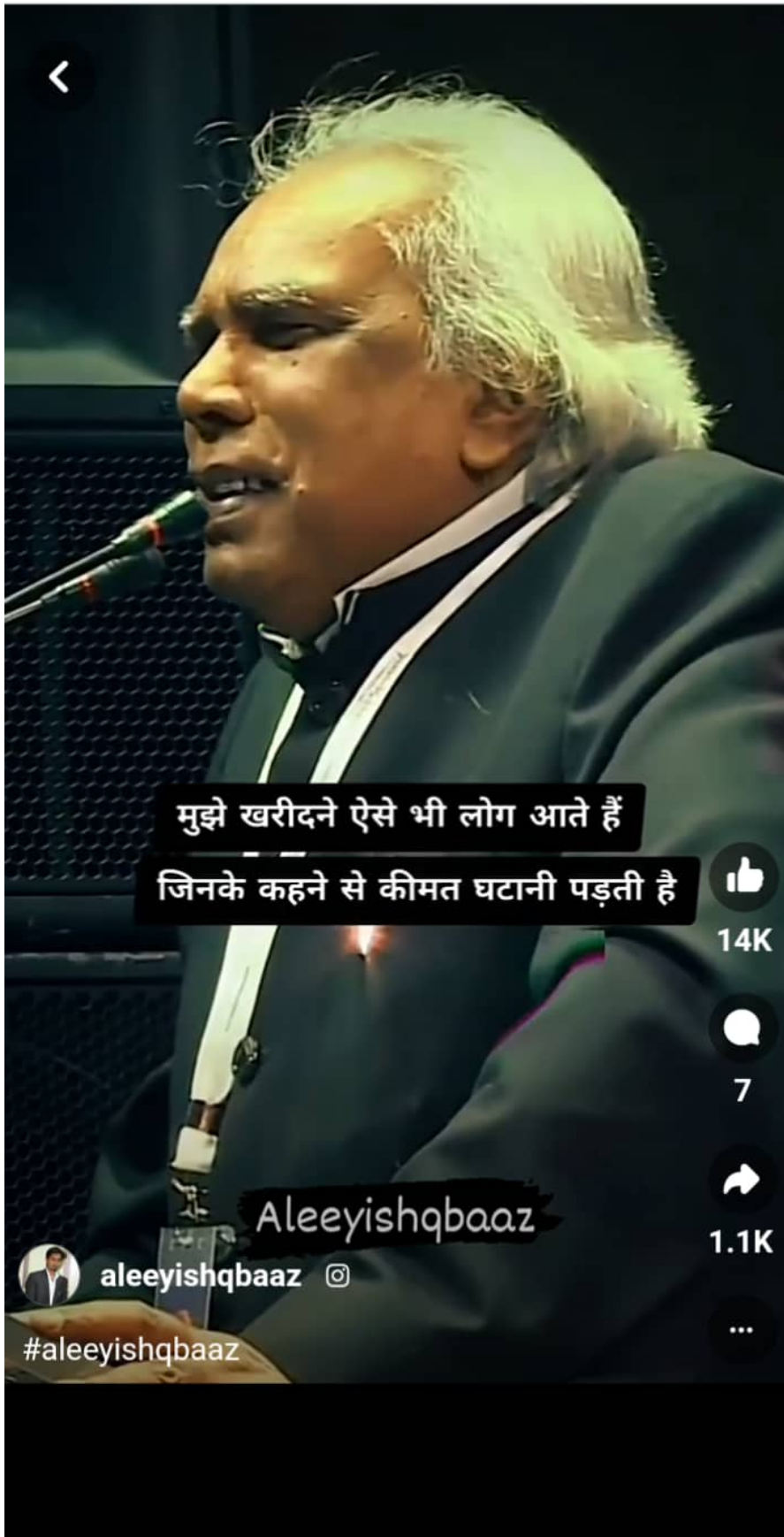
1. Pillars of Creation



Pillars of Creation is the most famous picture taken by the Hubble Space Telescope. Source: NASA

And finally, the magnificent **Pillars of Creation**! Pillars are part of the Eagle Nebula, an open cluster of stars located





मुझे खरीदने ऐसे भी लोग आते हैं
जिनके कहने से कीमत घटानी पड़ती है



14K



7



1.1K



aleeyishqbaaz @

#aleeyishqbaaz





डंकल मैकडॉगल ही वह व्यक्ति है
जिन्होंने मनुष्य की आत्मा का वजन
पता लगाया था। इनके अनुसार
मनुष्य की आत्मा का वजन 21 ग्राम
होता है।

[Follow//@Royal_fact23](#)



royal_factss



[Follow//@royal_fact_23](#) ... See more



86



1.2K





कहाँ है ईश्वर



24.7Fact_s

हमारे उंगलियों में यह रेखाएँ तब बननी शुरू होने लग जाती हैं जब हम माँ के पेट में लगभग 4 महीने के होते हैं, इन रेखाओं को भी सूचना DNA देता है, आश्चर्य है कि ये रेखाएँ किसी भी परिस्थिति में हमारे माता पिता या संसार के किसी भी मानव से मेल नहीं खाती, रेखाएँ बनाने वाला इतना विशिष्ट है कि वह अरबों खरबों की संख्या में प्राणी जो इस संसार में हैं और जो गुजर चुके हैं उन सभी की उंगलियों में उपस्थित इन रेखाओं के एक एक डिज़ाइन से परिचित है और हर बार एक नए प्रकार का डिज़ाइन स्थापित करके खुद को सिद्ध करता है, जानकर आश्चर्यजनक होगा कि जलने, कटने या मिटने पर ये रेखाएँ वापस उसी रूप में विकसित होती हैं जिनमें एक डॉट का भी अन्तर नहीं होता, कोई तो है जो ये सब कर रहा है और चला रहा है

शायद वहीं ईश्वर है जो हर चीज में सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में विद्यमान है

564



the_facts_king_amazing





इंसान के गुरूर की
औक़ात बस इतनी
सी है
न पहली बार खुद
नहा पाता है
न ही आखिरी बार
खुद नहा सकता है



9



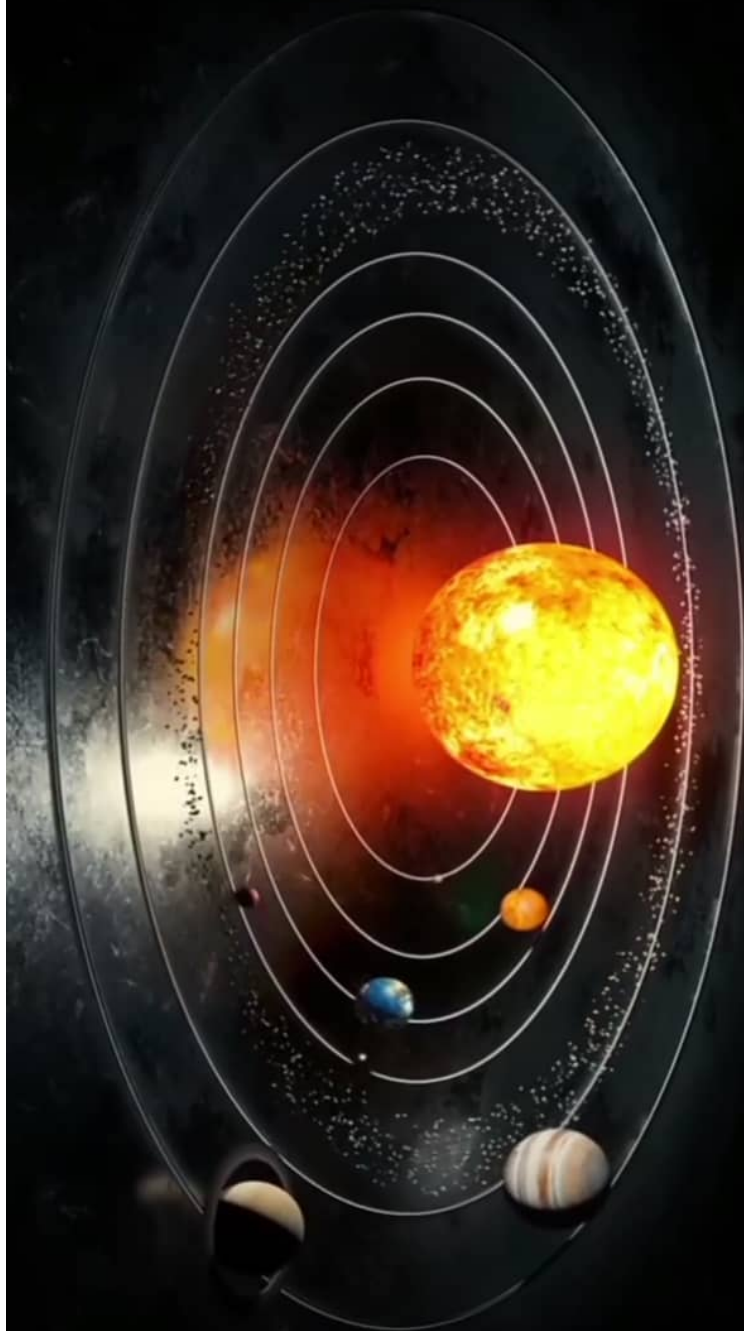
16



कथा संग्रह · Following

जीवन सत्य

...



4K



3



54



Tech World · [Follow](#)

#facts





अपने आप को छोटी छोटी मुसीबतों में डालें
जैसे अगर आप हर रोज दाएं हाथ (Right
Hand) से दांत साफ करते हैं तो कभी कभी
बाएं हाथ से करने की कोशिश करें इससे
आपके दिमाग की दूसरी साइड एक्टिवेट 1.1K
होने लगेगी और आपकी सोचने समझने की
क्षमता बढ़ जाएगी और आपको चीजें ज्यादा 7
अच्छे से समझ आने लगेगी।

IG | @INNER_MOTIVE



inner_motive @

ऐसी और जानकारी के लिए फॉलो करे... See more



5

...



ENJOY THE IPL
WITH 1win

साइकोलॉजी के अनुसार यदि ग्रुप में लोग किसी बात को लेकर हंस रहे होते हैं, तो हर कोई हंसते समय उस व्यक्ति को देखता है जिससे वो प्यार करता है। इसलिए जब भी कोई ग्रुप में हंसे तो लोगों की आँखों में देखो। कौन किससे प्यार करता है, ये तुरंत पता चल जाएगा। कुछ नया जानने के लिए follow जरूर करें।

IG| Factified Earth



2.4K



6



24



Factified Earth · Follow

Follow for more Pshycology fact... See more





मैं बुद्ध को इसलिए
अपनाता हूं, की बुद्ध!

"ना तो स्वर्ग का
लालच दिखाते हैं और
ना ही नर्क का भय!"

वो ना तो अपने को
"भगवान कहते हैं!

ना ही मुक्तिदाता! वो
तो अपने को सिर्फ एक
"मार्ग दाता बताते हैं!"

ओशो



154



9



sikander_777.3



Namo budhdhay 🙏🙏



परमात्मा की कारिगरी तो देखो हम
सबको बनाकर खुद गायब हो गया
आंखे बनाई देखने के लिए पर वो
दिखता बंद आंखों से है।

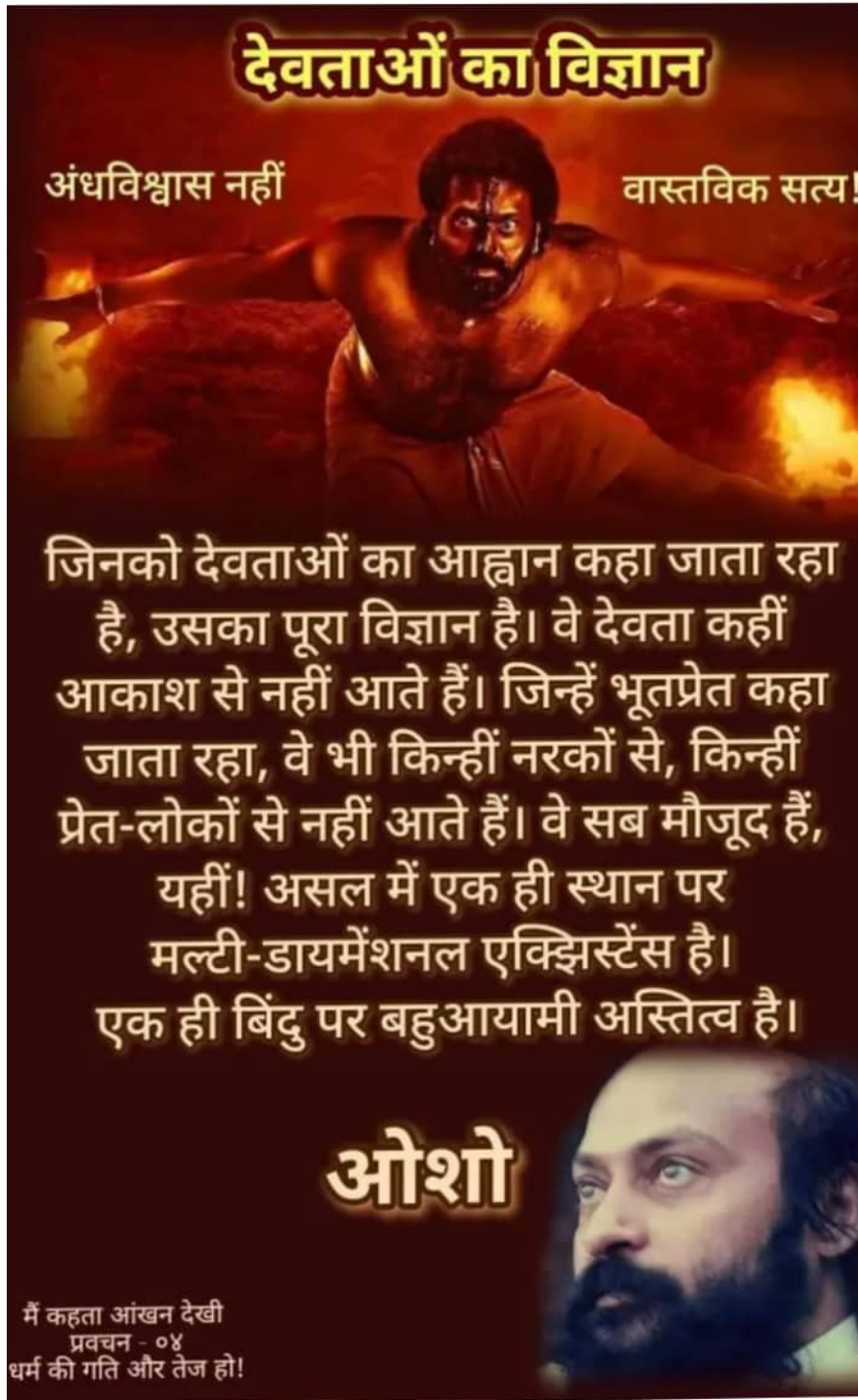


17



आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

Ronu Fly Man · 48m ·



26

26

1

2



Rani Singh

40m •



बाबा कामपुरुष

22h •

#स्त्री को तीन चीजे दे दो वो तुम्हारे लिए सब कुछ न्यौछावर कर देगी

#सम्मान

#आजादी

#संभोग

हर स्त्री सम्मान की भूखी होती है स्त्री को बंधन पसंद नहीं और बिस्तर पर बेहतरीन संभोग 🔥

#all #everyone #followers



आशा क दस सूत्र :

1. कभी किसी की आज्ञा का पालन न करे, जब तक के वो आपके भीतर से भी नहीं आ रही हो।
2. अन्य कोई ईश्वर नहीं हैं, सिवाय स्वयं जीवन के।
3. सत्य आपके अन्दर ही है, उसे बाहर ढूँढने की जरूरत नहीं।
4. प्रेम ही प्रार्थना है।
5. शून्य हो जाना ही सत्य का मार्ग है। शून्य हो जाना ही स्वयं में उपलब्धि है।
6. जीवन यही अभी है।
7. जीवन होश से जियो।
8. तैरो मत - वही ।
9. प्रत्येक पल मरो ताकि तुम हर क्षण नवीन हो सको।
10. उसे ढूँढने की जरूरत नहीं जो कि यहीं है, रुको और देखो।

OSHO quotes



Sanjay Chonde and 136 others

335k

2k

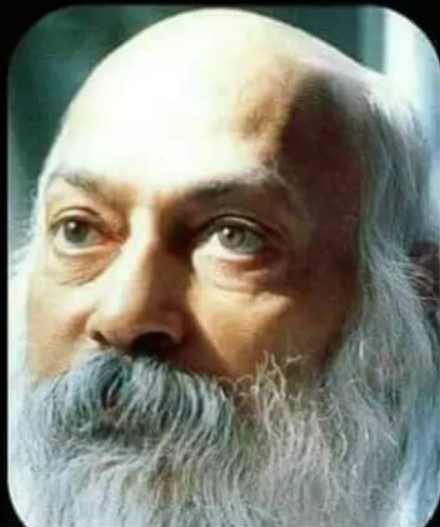
45k

**Osho Harpreet**

3d ·



जब तुम सबको स्वीकार कर
लेते हो तो तुम्हारे भीतर रूपांतरण
की प्रक्रिया शुरू होती है. तुम्हारे
भीतर की रसायन बदलती है .
क्रोध करुणा बन जाता है,
काम राम बन जाता है,
तुम्हारे भीतर
काँटे फूलों की
तरह खिलने
लगते हैं ।
ओशो



Sanjay Chonde and 136 others

137

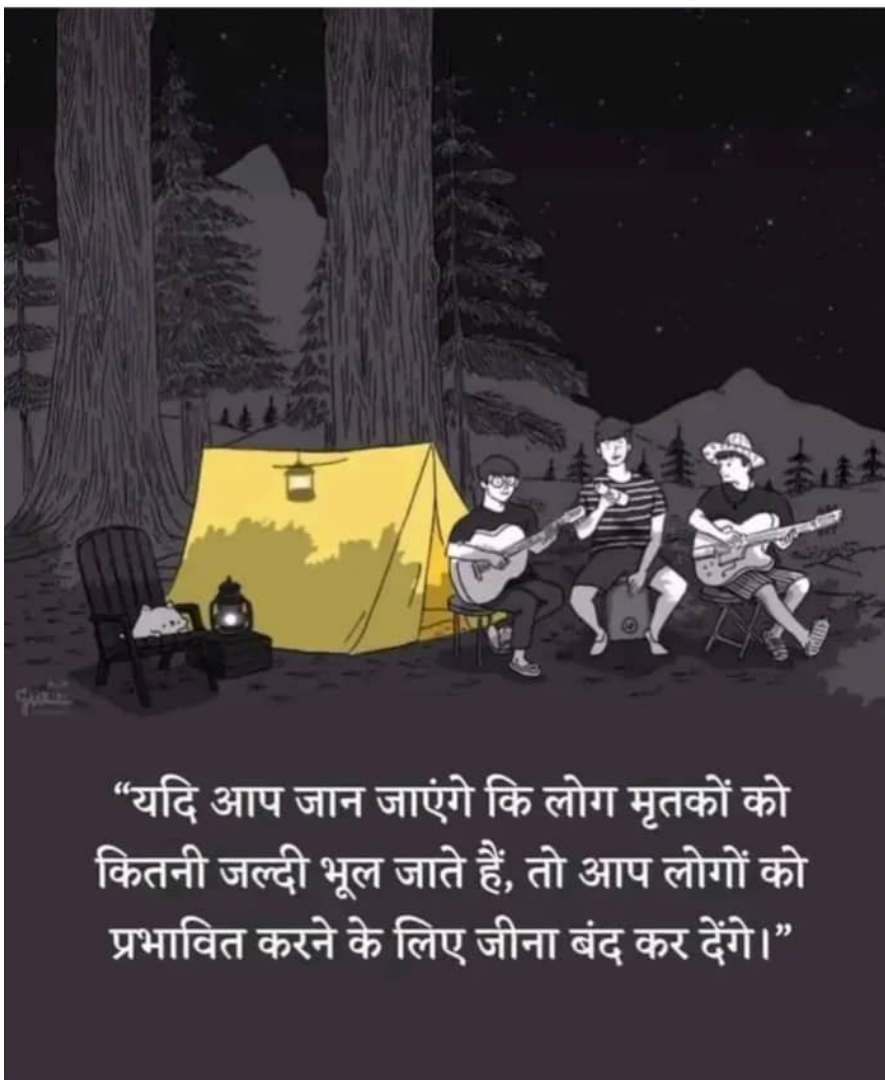
17

12

**UUU 222**

[See all >](#)**धर्मो रक्षति रक्षितः** • [Follow](#)

12 May 2024 • 🌐



“यदि आप जान जाएंगे कि लोग मृतकों को कितनी जल्दी भूल जाते हैं, तो आप लोगों को प्रभावित करने के लिए जीना बंद कर देंगे।”

10

10



2

Satish Purohit posted in 5 groups.

**Osho Thoughts**

Satish Purohit • 3h • 🌐

मुल्ला नसरुद्दीन एक जंगल से यात्रा कर रहा था। एक मित्र साथ थे। दोनों अपनी बैलगाड़ी में जा रहे थे कि अचानक डाकुओं ने हमला किया। कोई पचास कदम पर दाक खड़े थे बंदकों लिए। और उन्होंने कहा रुक



m.facebook.com



24



1

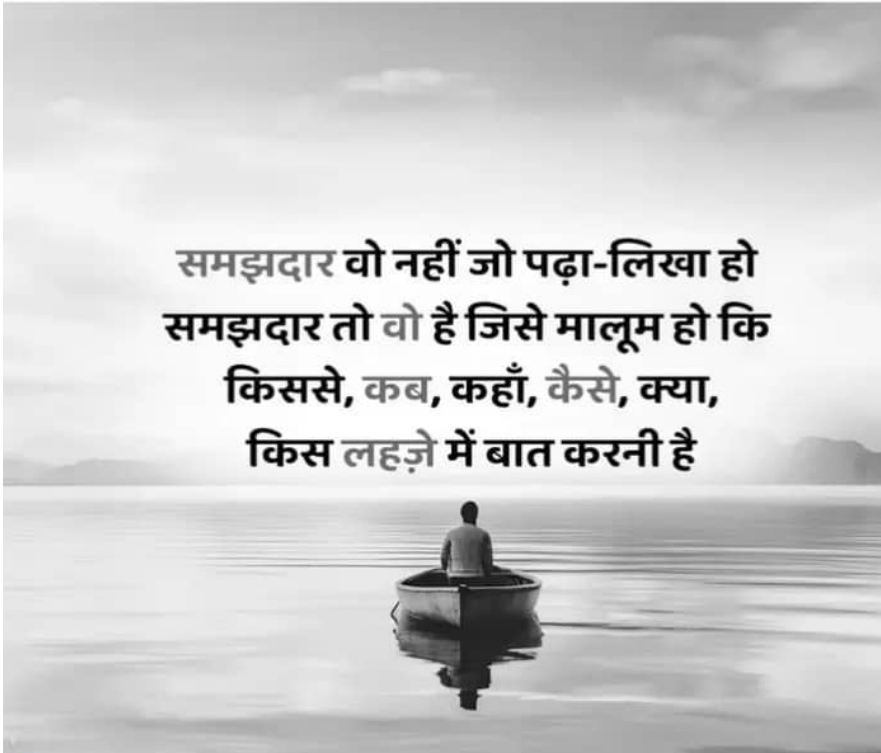


5

Show More

**OSHO Tapobhumi**

Suggested for you · 1d ·



OSHO Tapobhumi and 995 others



996



27



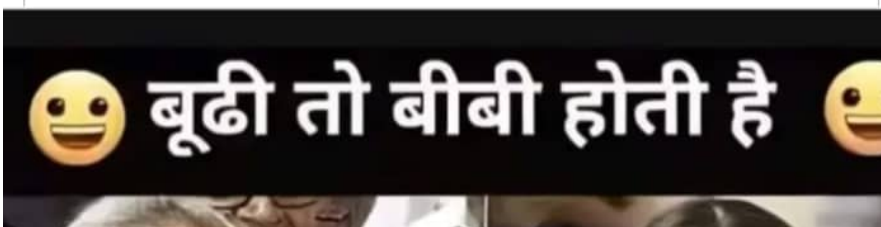
164

**Mitali Rajkar**

2h ·

**Pankaj Autade Patil**

2d ·



**Snaptravels Holidays India** • [Follow](#)

5d •



The incredible Kailash Parvat, where Bhagwan Shiva lives with his Family.

...see more



2.3K



2k



69



77

**Rajendra Sahoo**

15h •

**Bhanu** ✓

18 Jun 2023





दुनिया में 6 प्रकार की कुरान है सभी कुरान एक दूसरे से अलग अलग है और उनकी आयतों की संख्या भी अलग अलग है और सभी कुरान को मानने वाले एक दूसरे की कुरान को ग़लत कहते हैं.....कोई बता सकता है निम्लिखित इन 6 कुरान में से असली कुरान कौन सी है..।।

1. कूफी कुरान..आयत 6236
2. बशरी कुरान..आयत 6216
3. शयामि कुरान..आयत 6250
4. मक्की कुरान..आयत 6212
5. ईराकी कुरान..आयत 6214
6. साधारण कुरान (आम कुरान)..आयत 6666

मुझको सिर्फ इतना बता दो मित्रो इन सब कुरान में से असली कुरान कौन सी है जो अल्हा ने आसमान से भेजी



आदमी की उम्र बहुत कम है,
विचार की उम्र बहुत ज्यादा है।
और यह भी खयाल रहे कि
जो विचार हम प्रकट नहीं करते,
उसकी उम्र और ज्यादा है उस विचार से
जो हम प्रकट कर देते हैं;
क्योंकि वह और ज्यादा सूक्ष्म है।
जो अप्रकट है, वह और सूक्ष्म है;
उसकी उम्र और ज्यादा है।
जितना सूक्ष्म, उतनी ज्यादा उम्र;
जितना स्थूल, उतनी कम उम्र।

ॐ

जिन खोजा तिन पाइयाँ १५



m.facebook.com



1



9.7K

9k

671

1k



ओशो की मधुशाला

3d ·



जीवन में जब भी हम कुछ बुरा कर रहे हैं, तो हम किसी दूसरे के साथ कर रहे हैं, यह भ्रान्ति है आपकी।
प्राथमिक रूप से हम अपने ही साथ कर रहे हैं।
क्योंकि अंतिम फल हमें भोगने हैं। वह जो भी हम बो रहे हैं, उसकी फसल हमें काटनी है, इंच-इंच का हिसाब है।
इस जगत में कुछ भी बेहिसाब नहीं जाता है।

- आचार्य रजनीश, गीता-दर्शन-३/६०

84

84

2

12



Bollywood songs · Follow

27 Mar 2024 ·

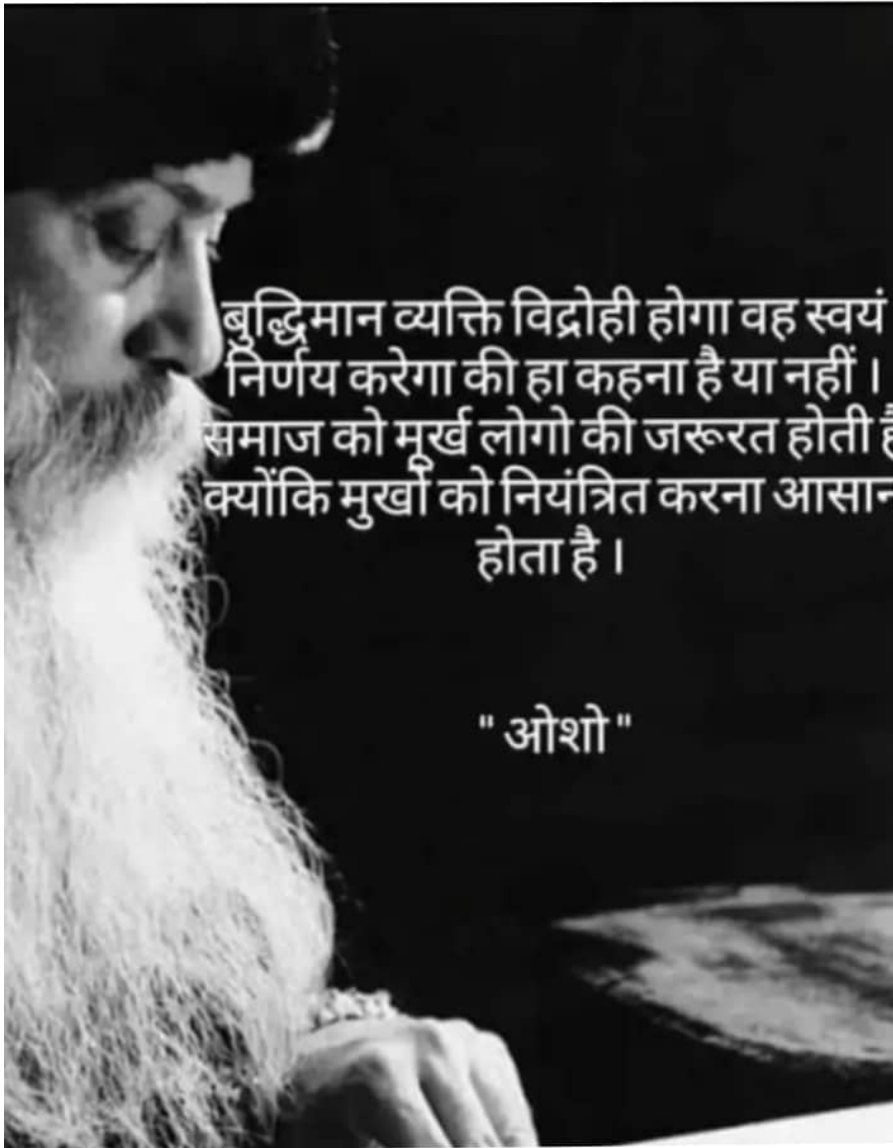
Feel this song 🎵 🎵

इस गीत को महसूस करें 🎵 🎵

Translated from English



1d ·



बुद्धिमान व्यक्ति विद्रोही होगा वह स्वयं
निर्णय करेगा की हा कहना है या नहीं ।
समाज को मुखर् लोगो की जरूरत होती है
क्योंकि मुखर् को नियंत्रित करना आसान
होता है ।

" ओशो "



Vinod Hansu Vinod Hansu and 123 others

124

14

18

**Reliance Trends - Official**

Sponsored ·

The wait is over! TRENDS Shopping Festival ...see more



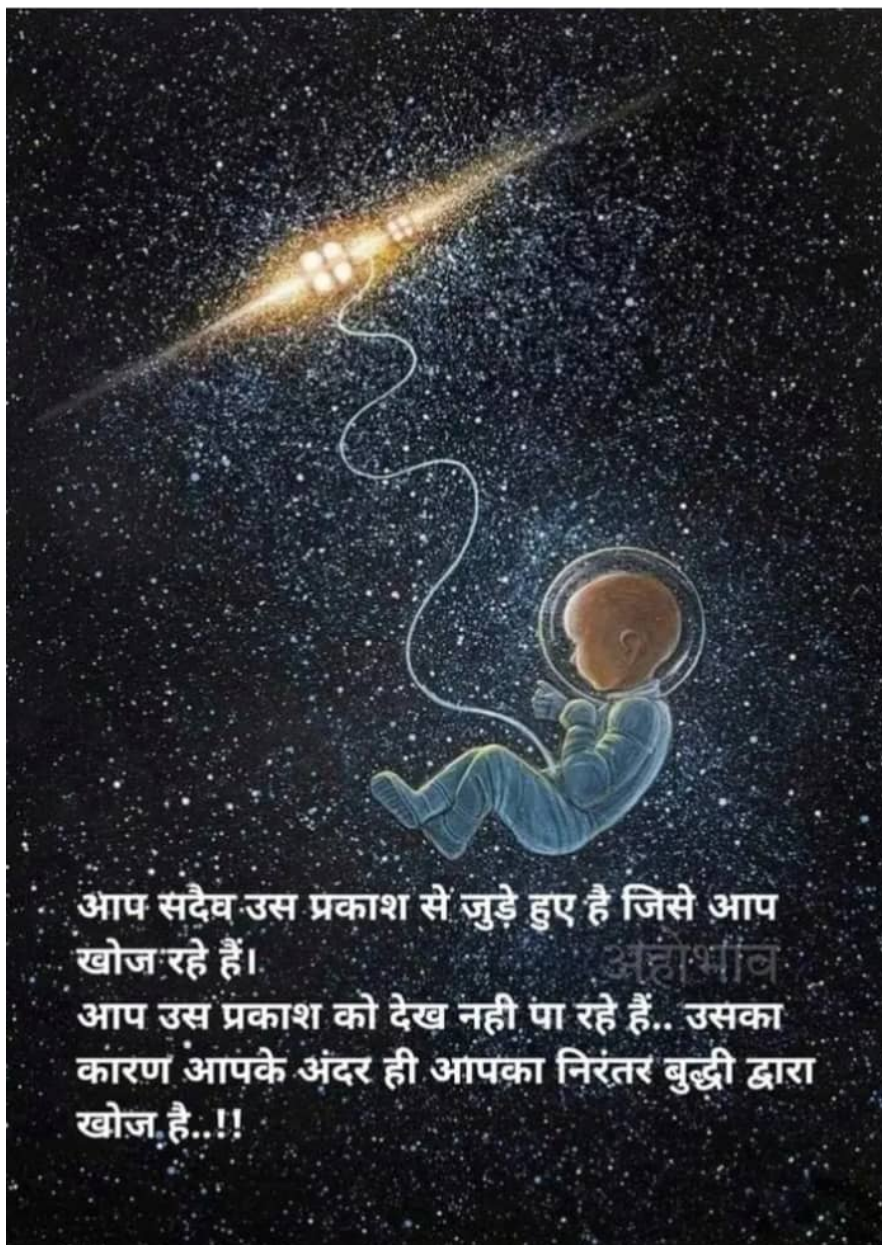


Ronu Fly Man · 12m ·

ईश्वर ने यह सृष्टि क्यों रची ?

*****x*****

...see more



आप सदैव उस प्रकाश से जुड़े हुए है जिसे आप
खोज रहे हैं।
आप उस प्रकाश को देख नहीं पा रहे हैं.. उसका
कारण आपके अंदर ही आपका निरंतर बुद्धि द्वारा
खोज है..!!



3

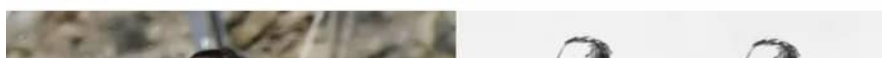


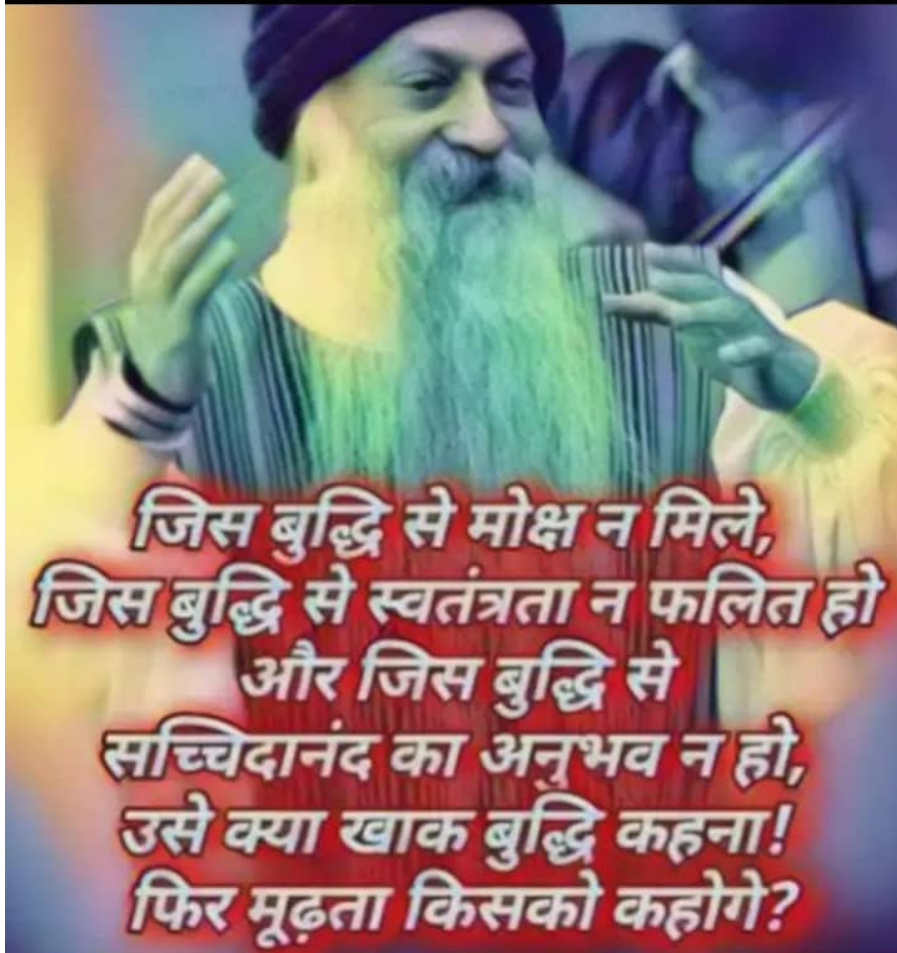
3



Warning Memes · Follow

5d ·





जिस बुद्धि से मोक्ष न मिले,
जिस बुद्धि से स्वतंत्रता न फलित हो
और जिस बुद्धि से
सच्चिदानंद का अनुभव न हो,
उसे क्या खाक बुद्धि कहना!
फिर मूढ़ता किसको कहोगे?

Osho Harpreet

2d · 🌐



👍❤️ Sanjay Chonde and 82 others

👍 83

💬 13

➦ 16


आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

Ronu Fly Man · 12m ·

ईश्वर ने यह सृष्टि क्यों रची ?

*****x*****

प्रश्न : यदि इस संसार में इतना दुःख है तो ईश्वर ने यह सृष्टि ही क्यों रची?

उत्तर : ईश्वर ने यह दुनिया बनायी इसके पीछे का कारण हमारी अर्थात् जीवात्मा की 'भोक्ता एवं नियन्ता' बनने की स्वार्थपूर्ण इच्छा थी। जिस प्रकार से एक छोटा बच्चा अपने पिता की नकल करके या उनके समान व्यवहार करके खुद को पिता के समान समझदार व बड़ा बताना चाहता है उसी प्रकार से जीवात्माएँ भी स्वयं को भोक्ता तथा नियन्ता के समान दर्शाना चाहती थीं। उनकी इन्हीं इच्छाओं को समझते हुए ईश्वर ने अपनी माया के द्वारा इस सृष्टि की रचना की।

छान्दोग्य उपनिषद् 8.12.1 का कथन है:-

अशरीरं वाव सान्तं न प्रियाप्रिये स्पृशतः।

अर्थात् शरीर - रहित आत्मा को सुख-दुख स्पर्श नहीं कर सकते।

अतः सृष्टि रचना कर के, जीवों को शरीर प्रदान करना अनिवार्य है

अन्यथा जीव सदा-सदा के लिए निष्क्रिय पड़े रहेंगे।

x-----+-----*-----+-----x

तीन अनादि सत्ताएं हैं : ईश्वर, जीव और प्रकृति। ईश्वर सर्व-अधिष्ठाता होने से , जीवात्मा और प्रकृति उस में पड़े हुए हैं।

अर्थात् सृष्टि की रचना के पहले अधिष्ठाता ईश्वर के महोदर में प्रकृति और आत्मा निवास करते थे।

जीव की तीन स्वाभाविक प्रवृत्तियां हैं :-

ज्ञातृत्व अर्थात् जानने की इच्छा, कार्य करने की इच्छा और भोक्तृत्व

अर्थात् सुख-दुख का भोग।

ये प्रवृत्तियां तभी सार्थक/ क्रियान्वित हो सकती हैं यदि सृष्टि की रचना हो।

इसी कारण ईश्वर ने सृष्टि की रचना की।

x-----+-----*-----+-----x

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शांति, शांति, शांति !!

श्रोत - [बिहदारण्यकोपनिषद्]

2:34 pm

🕒 📶 VoLTE 4G 📶 🔋 39%

x-----+-----*-----+-----x

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ शांति, शांति, शांति !!

श्रोत - [बृहदारण्यकोपनिषद्]

भावार्थ :
वह पूर्ण है और यह भी पूर्ण है ।
पूर्ण (परमात्मा) से ही पूर्ण (जीवात्मा) उत्पन्न हुआ है,
उस पूर्ण (परमात्मा) से इस पूर्ण (जीवात्मा) को निकाल देने पर भी
केवल पूर्ण ही शेष रहता है ॥
ॐ शांति शांति शांति ॥

यजुर्वेद का यह शांति श्लोक जीवात्मा का परमात्मा से सम्बन्ध बताता है
।

ॐ 🙏 🌹 ॐ शिवोहम् 🌹 🙏 ॐ



कबीर कभी - कभी निशब्द कर देते हैं...

कबीर दास बकरी पालते थे।

बकरी कभी पड़ोस के मंदिर में घुस जाती थी, तो कभी मस्जिद में... और भगवान् का मंदिर तथा अल्लाह की मस्जिद गंदा कर देती थी।

पुजारी और मौलवी ने शिकायत की.

"कबीरसाहब तुम्हारी बकरी मंदिर/मस्जिद में घुस जाती है।"

कबीर दास बोले, "महाराज, माफ कीजिए जानवर हैं, तभी घुस जाती है... मैं कभी घुसा क्या ?"

औशो





m.facebook.com



1



4



2



1

**Nitin Deshmukh** • [Follow](#)

2d •



मैं शून्य ही सही तुम्हारी जिंदगी में पर
मेरी कोशिश रहेगी कि,
तुम्हारे पीछे खड़े रहकर तुम्हारी कीमत
बढ़ा सकूँ...!



5.9K



5k



132



725

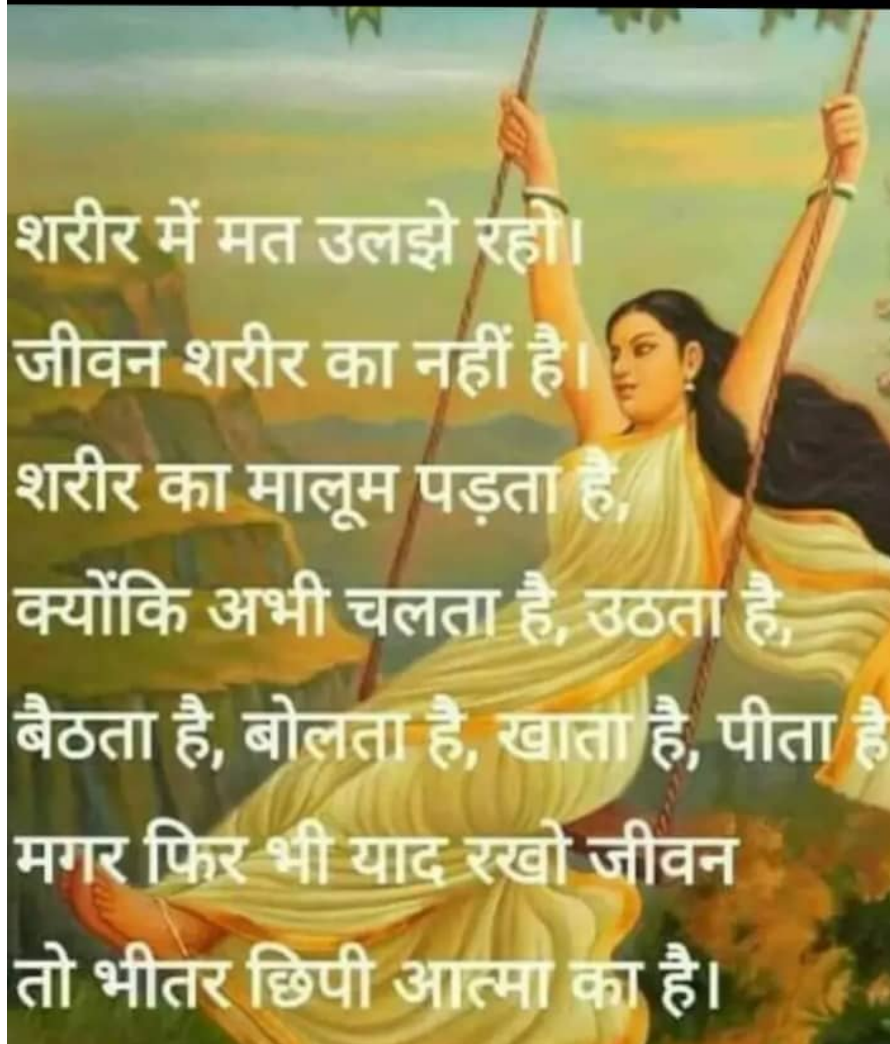
**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai • 6 May 2024 •



हरि ॐ





Parshotam Rai

6 May 2024 · 🌐

हरि ॐ 🙏

👍 Kewal Krishan Sharma and 302 others

👍 303

💬 27

🔗 87



4k



37

**Arvind Verma Ji** • Follow

3d •

💬 एक पति ने अपने गुस्सैल पत्नी से तंग आकर उसे कीलों से भरा एक थैला देते हुए कहा, "तुम्हें जितनी बार क्रोध आए तुम थैले से एक कील निकाल कर बाड़े में ठोंक देना !"

😊 पत्नी को अगले दिन जैसे ही क्रोध आया उसने एक कील बाड़े की दीवार पर ठोंक दी। यह प्रक्रिया वह लगातार करती रही।

😊 धीरे धीरे उसकी समझ में आने लगा कि कील ठोंकने की व्यर्थ मेहनत करने से अच्छा तो अपने क्रोध पर नियंत्रण करना है और क्रमशः कील ठोंकने की उसकी संख्या कम होती गई।

😊 एक दिन ऐसा भी आया कि पत्नी ने दिन में एक भी कील नहीं ठोंकी।

👤 उसने खुशी खुशी यह बात अपने पति को बताई। वे बहुत प्रसन्न हुए और कहा, "जिस दिन तुम्हें लगे कि तुम एक बार भी क्रोधित नहीं हुई, ठोंकी हुई कीलों में से एक कील निकाल लेना।"

😊 पत्नी ऐसा ही करने लगी। एक दिन ऐसा भी आया कि बाड़े में एक भी कील नहीं बची। उसने खुशी खुशी यह बात अपने पति को बताई।

पति उस पत्नी को बाड़े में लेकर गए और कीलों के छेद दिखाते हुए पूछा, "क्या तुम ये छेद भर सकती हो?"

😊 पत्नी ने कहा, "नहीं जी"

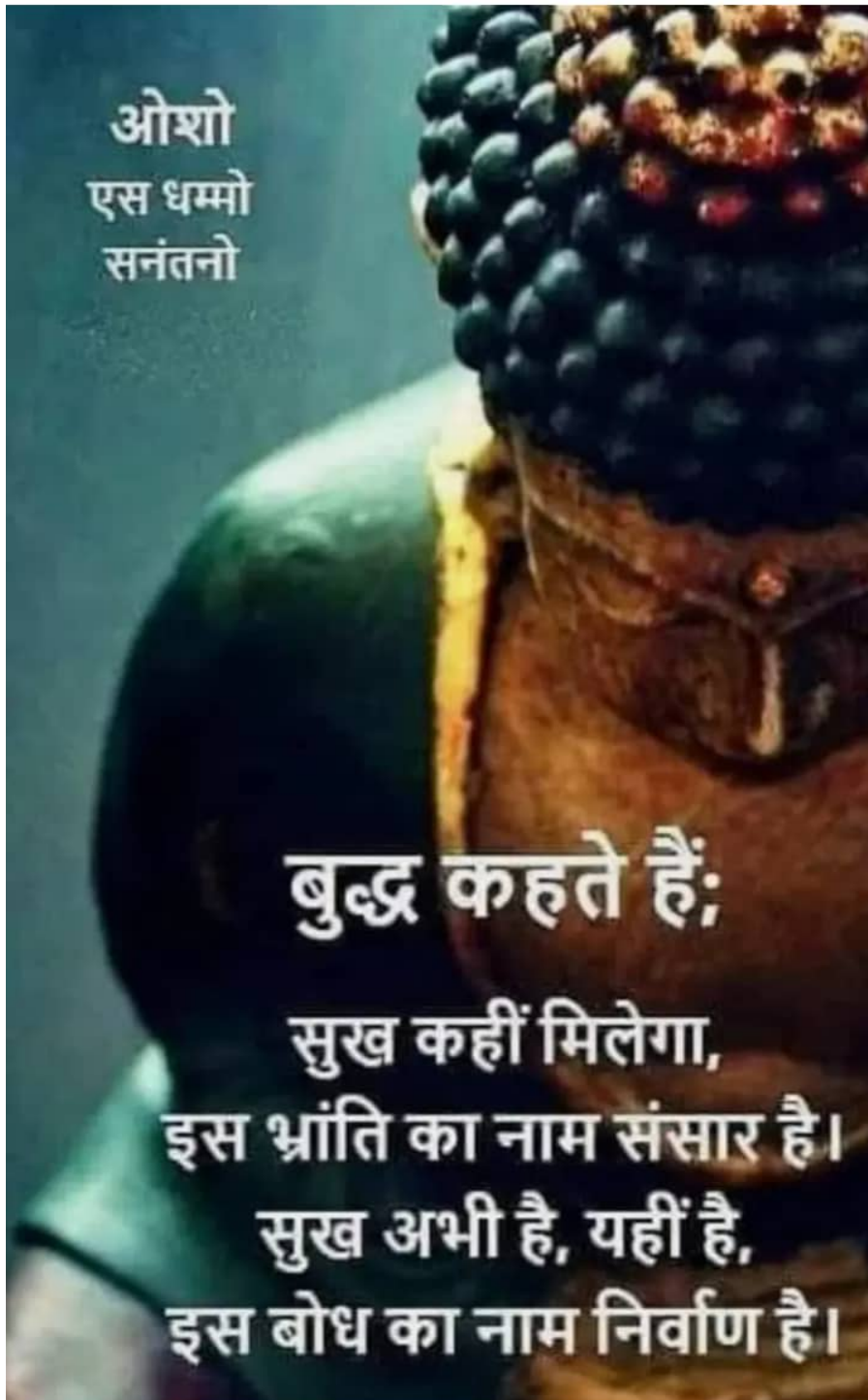
😊 पति ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "अब समझी, क्रोध में तुम्हारे द्वारा कहे गए कठोर शब्द, दूसरे के दिल में ऐसे छेद कर देते हैं, जिनकी भरपाई भविष्य में तुम कभी नहीं कर सकते !"

👉 सन्देश : जब भी आपको क्रोध आये तो सोचिएगा कि कहीं आप भी किसी के दिल में कील ठोंकने तो नहीं जा रहे 😊😊😊





Sangita Sam...



133

133

3

11





सुभाष चन्द्र सिंघल

18h •

...

इस बिछूनी द्वारा बच्चो को जन्म दिया गया और कालांतर में इससे जन्मे बच्चे इसी की पीठ पर रहकर तब तक खाते है जब तक मां का प्राण अंत न हो जाए.....क्या कामेच्छा का ये परिणाम केवल बिछू पर है.....
???? कृपया मेरे आशय को समझ अपनी टिप्पणी देने का कष्ट करे.....



.....इसलिए मैं यह सुझाव नहीं दूंगा कि आप विपश्यना को और जारी रखें, क्योंकि यदि आप इसे अधिक समय तक करते हैं तो आप तकनीक से चिपकना शुरू कर देते हैं। यह सुंदर और बहुत शांति देने वाला है - और बौद्ध मठों में हजारों भिक्षु लगभग सड़े हुए हैं। वे एक बहुत ही सुखद तकनीक में फंस गए हैं, और अब वे इसे छोड़ने में सक्षम नहीं हैं। यह एक संतुष्टि, एक लालच बन गया है।

कोई भी अनुभव, यहां तक कि आध्यात्मिक अनुभव भी, एक इच्छा, एक लालच बन सकता है। कोई इससे चिपकना शुरू कर सकता है, इसके बारे में कंजूस हो सकता है। आप इसे अधिक से अधिक खाना चाहेंगे, लेकिन फिर धीरे-धीरे आप जीवन से दूर हो जाते हैं। देर-सवेर तुम पंगु हो जाओगे, तुम केवल इसी तरह जी सकते हो - और यह अच्छा नहीं है।

... यदि आप वास्तव में एक अच्छी फिल्म बनाते हैं, तो वह असफल हो जाएगी। कुछ भी अच्छा सफल नहीं हो सकता, क्योंकि दुनिया ऐसी है कि केवल बुरा ही सफल होता है और अच्छा असफल होता है। इसलिए आपको इसे लेकर थोड़ा और सतर्क रहना होगा।

यदि आप पांच फिल्में बनाते हैं, तो सफल होने के लिए चार और असफल होने के लिए एक बनाएं। दर्शकों के लिए चार साधारण फिल्में बनाएं। उनके बारे में चिंता मत करो - बस वही बनाओ जो वे चाहते हैं; उनकी मांग की आपूर्ति की जानी है। और एक फिल्म आप अपने लिए, मेरे लिए बनाते हैं, जिसमें आप इस विचार के साथ आगे बढ़ते हैं कि यह असफल होने वाली है। तब आप यह नहीं सोचते कि यह सफल होने वाला है। यदि आप इसे सफल बनाने का प्रयास करेंगे तो यह एक गलती होगी और एक समझौता होगा।.....

तो इसे अनुपात रहने दीजिए। यदि आप एक में पैसा कमाते हैं, तो इसे दूसरे में लगाएं, और इसे असफल होने दें। और जब आप वह फिल्म बना रहे हों, तो सचेत रहें कि वह असफल होने वाली है। आप मुझे समझाते हैं? विज्ञापन दें कि यह असफल होने वाला है, और यह केवल चुने हुए लोगों के लिए है। (हँसी) कहो कि तुमने इसे वस्तु नहीं बनाया है, और फिर कोई न आये, घर खाली रहे, तो यही उसकी सफलता होगी।

<https://oshoganga.blogspot.com/2024/05/07-nothing-to-lose-but-your-head.html>

ओशो



Janiye chhahinye pahachaniye tb maniye



Ajesho Bharti

20h · 🌐

क़ानून सब के लिए बराबर है
यह दुनिया का सबसे बड़ा झूठ है,
क़ानून मकड़ी का वह जाला है..,



जिसमें कीड़े मकोड़े तो फंसते हैं मगर,
बड़े जानवर इसे फाड़ कर निकल
जाते है ।



1



1





Amrita Nath and 63 others



64

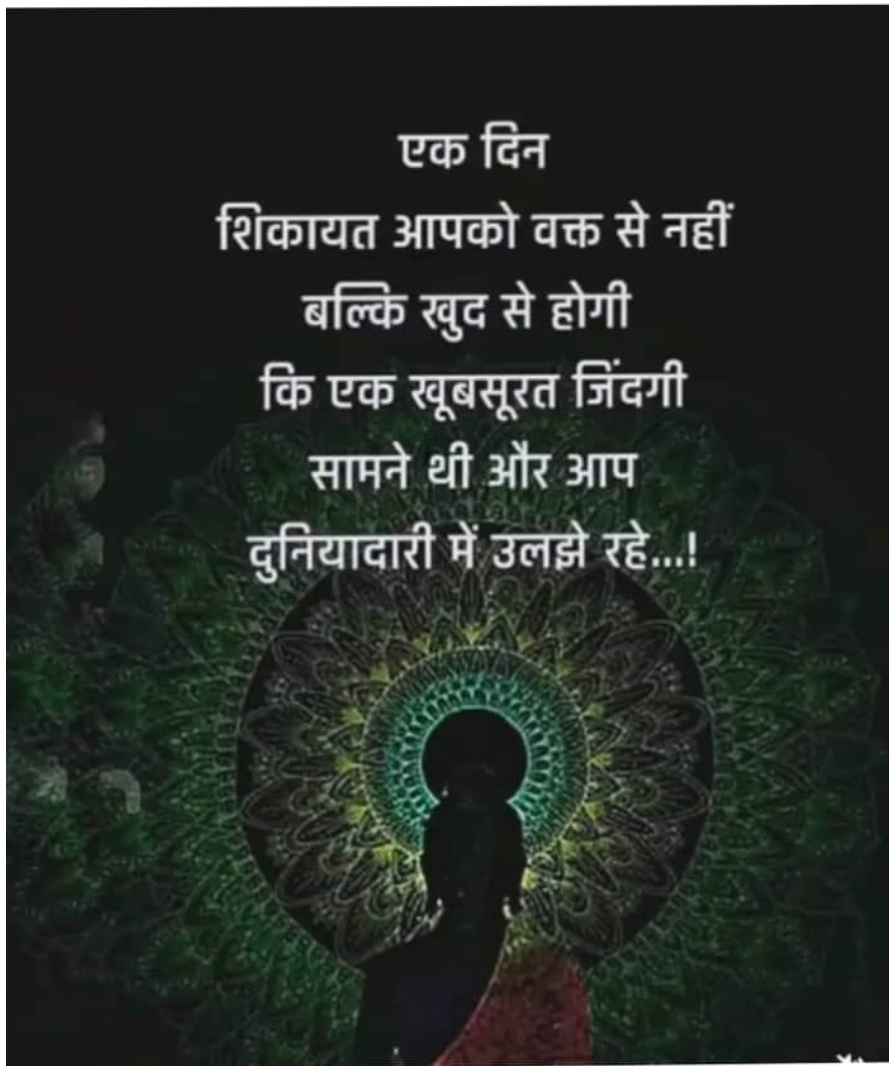


12



Anita Gupta • Follow

6d •



10K



11k



238



1k



Dharendra Shastri Diamond wor... • Follow

2d •

हीरो की फ़ोटो को तो सब लाइक करते है आज देखते है हमे कितने

29k

265

640



Sanjeev Mishra

2d · 🌐

"अपनी मुक्ति के लिए मृत्यु पर निर्भर मत रहो। मृत्यु के बाद तुम बिलकुल वैसे ही हो जैसे तुम पहले थे। कुछ भी नहीं बदलता; तुम केवल शरीर त्याग देते हो। यदि तुम मृत्यु से पहले चोर या झूठे या धोखेबाज हो, तो तुम केवल मरने से देवदूत नहीं बन जाते। यदि ऐसा संभव होता, तो हम सब अभी समुद्र में कूद जाते और तुरंत देवदूत बन जाते! तुमने अब तक अपने आप को जो बनाया है, उसके बाद भी तुम वैसे ही बनोगे। बदलने के लिए, तुम्हें प्रयास करना होगा। यह संसार ही ऐसा करने की जगह है।"

स्वामी परमहंस योगानंद



👍❤️ Sanjeev Mishra and 131 others

132

16

8



Evergreen Milestone Old Hindi ...

13 Apr 2024 · 🌐

Follow





कैलाश पर अलौकिक निवास है। करीब-करीब नियमित रूप से, नियम कैलाश का रहा है कि कम से कम पांच सौ बुद्ध-सिद्ध तो वहां रहें ही, उससे कम नहीं। पांच सौ बुद्धत्व को प्राप्त व्यक्ति कैलाश पर रहेंगे ही। और जब भी एक उनमें से विदा होगा किसी और यात्रा पर, तो दूसरा जब तक न हो तब तक विदा नहीं हो सकता। पांच सौ की संख्या वहां पूरी रहेगी ही। उनकी पांच सौ की मौजूदगी कैलाश को तीर्थ बनाती है।

ओशो

गहरे पानी पैठ - ६

रजनीश

११५, नेपियर टाउन

ओशो गहन सन्देश

जबलपुर (म.प्र.)

.....मृत्यु क्या है?

१९.२.१९६२

मैं कहता हूँ
जीवन को हम नहीं जानते हैं इसलिए मृत्यु है।

anamcara Flames
स्व-विस्मरण मृत्यु है।

अन्य था मृत्यु नहीं है केवल परिवर्तन है।

‘स्व’ को न जानने से

एक कल्पित स्व हमने निर्मित किया है।

यही है हमारा ‘मैं’ - “अहंकार”।

यह है नहीं केवल भासता है।

यह झूठी इकाई ही मृत्यु में टूटती है।

इसके टूटने से दुख होता है क्योंकि इसी से

हमने अपना तादात्म्य स्थापित किया था।

जीवन में ही इस भ्रांति को पहचान लेना मृत्यु से बच जाना है।

जीवन को जान लो और मृत्यु समाप्त हो जाती है।

जो है वह अमृत है उसे जानते ही नित्य,

शाश्वत जीवन उपलब्ध हो जाता है।

स्व-ज्ञान जीवन है

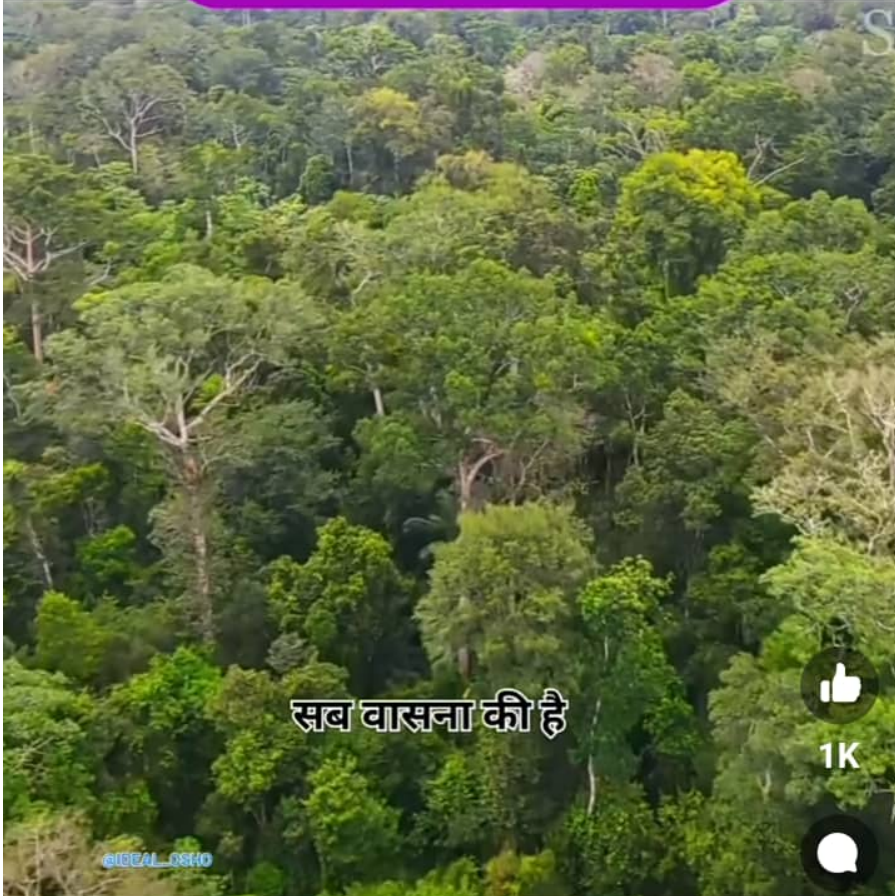
स्व-विस्मरण मृत्यु है।

रजनीश के प्रणाम





इस जीवन में जितनी हरियाली है वो
वासना के कारण ही है



सब वासना की है

@IDEAL_OSHO



1K



6



16

...



ideal_osho @

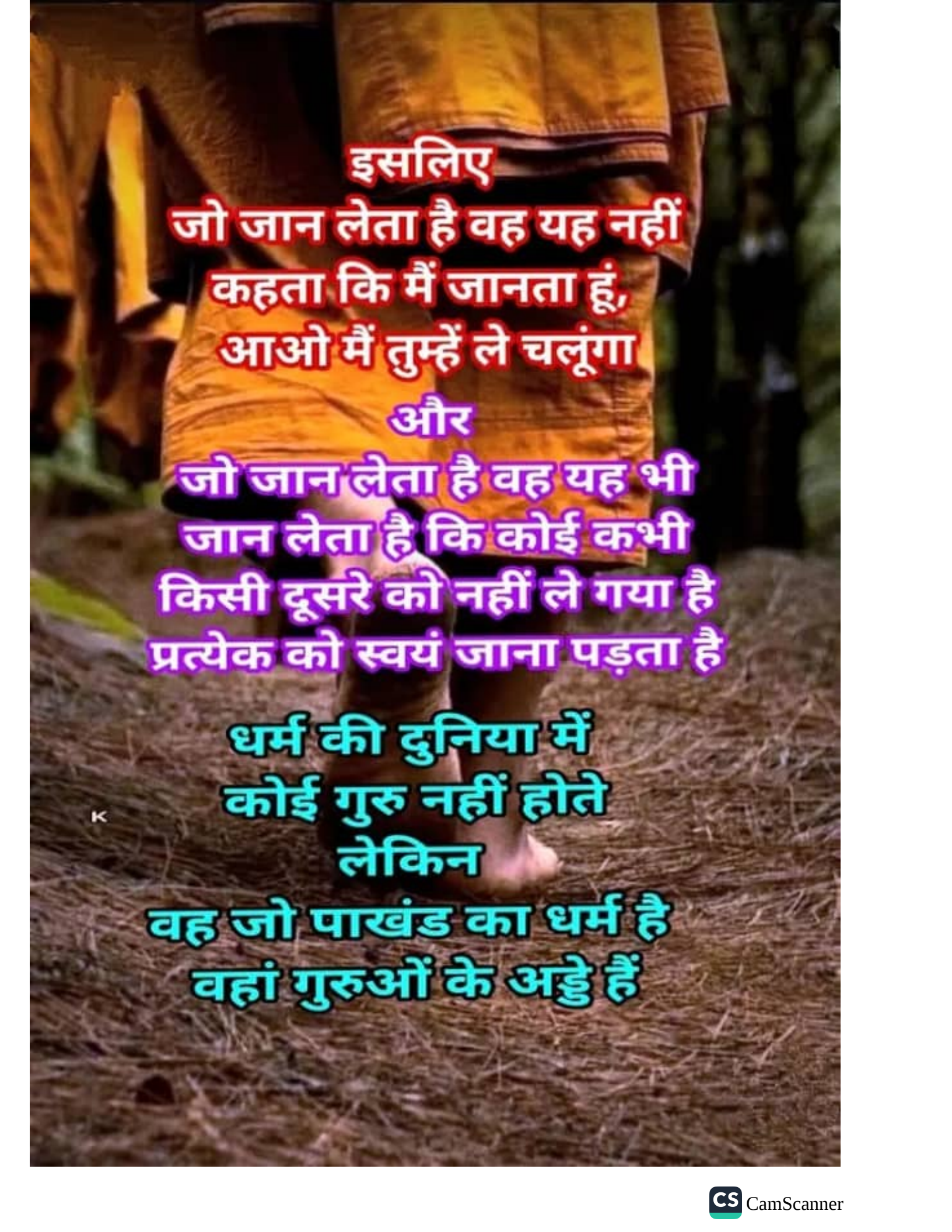
ओशो के विचारों से जुड़े शायद आपका ... [See more](#)



शायद निरीक्षण किया हा, न किया हा, तुम्हारे भीतर काइ
ऐसा तत्व है जो कभी नहीं बदलता है। कभी क्रोध आता
है, लेकिन चौबीस घंटे नहीं रहता। इसलिए क्रोध माया है।
कभी प्रेम आता है, लेकिन प्रेम चौबीस घंटे नहीं रहता,
प्रेम माया है। कभी तुम प्रसन्न होते हो, लेकिन प्रसन्नता
टिकती नहीं, माया है। कभी तुम उदास होते हो, उदासी
चौबीस घंटे नहीं रहती, सदा नहीं रहती, इसलिए माया है।
फिर क्या है तुम्हारे भीतर कुछ, जो चौबीस घंटे टिकता
है? वह साक्षी का भाव है जो चौबीस घंटे टिकता है। जो
चौबीस घंटे है। चाहे तुम जानो, चाहे न जानो। कौन
देखता है क्रोध को? कौन देखता है लोभ को? कौन
देखता है प्रेम को, घृणा को? कौन पहचानता है कि मैं
उदास हूं? कौन कहता है कि प्रसन्न हूं? कौन कहता है
बीमार हूं, स्वस्थ हूं? कौन कहता है कि रात नींद अच्छी
हुई? कौन कहता है कि रात सपने बहुत आए? कि नींद
हो ही न सकी?

चौबीस घंटे तुम्हारे भीतर एक जानने वाला है। जाग रहा
है। वही चौबीस घंटे है। बाकी सब आता है, जाता है। तुम
उसी को पकड़ो। क्योंकि उसी में थोड़ी परमात्मा की
झलक है।

ॐ ओशो ॐ



इसलिए
जो जान लेता है वह यह नहीं
कहता कि मैं जानता हूं,
आओ मैं तुम्हें ले चलूंगा
और
जो जान लेता है वह यह भी
जान लेता है कि कोई कभी
किसी दूसरे को नहीं ले गया है
प्रत्येक को स्वयं जाना पड़ता है
धर्म की दुनिया में
कोई गुरु नहीं होते
लेकिन
वह जो पाखंड का धर्म है
वहां गुरुओं के अड्डे हैं



मनुष्य को परमात्मा से रोकने वाली
जो बड़ी से बड़ी बाधा हो सकती है
वह शास्त्र है। सुन कर एकदम भरोसा
भी नहीं आता। क्योंकि हमने तो यही
सुना है बार-बार कि शास्त्र के द्वारा ही
आदमी परमात्मा तक पहुंचता है।
लेकिन मैं तुमसे कहना चाहता हूं :
शास्त्र से कोई कभी परमात्मा तक न
पहुंचा है, न पहुंच सकता है। हां, जो
परमात्मा तक पहुंच जाते हैं, उनके
सामने शास्त्र का अर्थ प्रकट हो जाता
है। लेकिन पहुंचना पहले है, शास्त्र का
अर्थ पीछे प्रकट होता है।

🧡 हरि बोलो हरि बोल, प्रवचन -3, ओशो 🧡



सुना है मैंने नारद के जीवन में एक कहानी है यह जगत माया है बड़े बड़े ज्ञानियों से नारद ने सुना है की जगत माया है फिर वे सव्यं जा के भगवन से पूछे कि 'मेरी समझ में नहीं आता जो है-उसके 'इलुजरी', माया होने का क्या मतलब है?

धूप तपती है तेज, आकाश में सूरज है, दोपहर है। भगवान ने कहा, 'मुझे बड़ी प्यास लगी है-फिर पीछे समझाऊंगा-थोड़ा पानी ले आ।'

नारद पानी लेने गए। गांव में प्रवेश किया। दोपहर है, लोग अपने घरों में सो रहे हैं, दरवाजे पर दस्तक दी। एक युवती बाहर आई। नारद भूल गए भगवान को। कोई भी भूल जाए जिसको सदा यद् किया जा सकता है उसको याद करने की इतनी जल्दी भी क्या है नारद भूल गए और जब भगवान् को ही भूल गए तब फिर प्यास का क्या सवाल रहा है। किसलिए आये थे, ये याद न रहा। उस लड़की को देखते रहे; मोहित हो गए। निवेदन किया कि मैं विवाह का प्रस्ताव लेकर आया हूँ। पिता बाहर थे। उस लड़की ने कहा, पिता को आ जाने दे, तब तक आप विश्राम करे।

विश्राम किया। पिता आये। राजी हो गए। विवाह हो गया। फिर चली कहानी। बच्चे हुए-चार-छः बच्चे पैदा हो गये। काफी वक्त लगा। पिता मर भी गया, ससुर भी मर गये। बूढ़े हो गए नारद। पत्नी भी बूढ़ी हो गयी, बच्चों की लाइन लग गयी। बाढ़ आ गयी। वर्षा के दिन है। गांव डूब गया। पत्नी और बच्चों को बचाकर किसी तरह बाढ़ पार कर रहे हैं। बूढ़े हैं, शक्ति नहीं है पास। बड़ी मुश्किल में पड़ गए हैं। पत्नी को बचाते हैं, तो पत्नी बही जाती है। बाढ़ है तेज और सबको बचाने में सब बह जाते हैं। और कोई पूछता है कि 'उठो; बड़ी देर लगा दी; सूरज ढलने के करीब हो गया और हम प्यासे बैठे हैं। पानी अभी तक नहीं लाये?'

नारद ने आँख खोली; देखा, भगवान खड़े हैं। उसने कहा, 'अरे, मैं तो भूल ही गया। मगर इस बीच तो बहुत कुछ हो गया। आप कहते हैं, अभी सिर्फ सूरज ढल रहा है।' चारों तरफ देखा नारद ने; बाढ़ का कोई पता नहीं। पूछा, 'बच्चे-पत्नी?' भगवान ने कहा, 'कैसे बच्चे, कैसी पत्नी? कोई सपना तो नहीं देखते थे? भगवान ने कहा, 'तुम पूछते थे कि वह माया कैसे हो सकता है? जो है--वह माया नहीं है, लेकिन जो है, उसे समय के माध्यम से देखने से वह सब माया बन जाता है।

और जो है, उसे समय के अतिरिक्त समय का अतिक्रमण कर देखने से वह सब सत्य हो जाता है।

संसार समय के माध्यम से देखा गया सत्य है।

सत्य, 'समय-शून्य' माध्यम से देखा गया संसार है।

ओशो गीता दर्शन से साभार



Get the best experience on the app

Get

उनके वाक्य ऐसे ही थे।कोआन की तरह। सालों मैं अर्थ ढूँढती रहती थी।

जिस दिन मैं जाग जाऊँगी मैं भी शायद कह पाऊँ "फिर मैंने छोड़ दिया।"

क्योंकि वही शायद पूर्ण मिलन होगा।

उनका अंतिम वाक्य या कोआन? जो नाशते की मेज़ पर वे मुझसे बोले थे बस ऐसे ही ,बीमार होने और अस्पताल में भर्ती होने से पहले, वह था " अभी तुझे अद्वैत नहीं घटा? अभी भी तुझे भीतर और बाहर में भेद है क्या?"

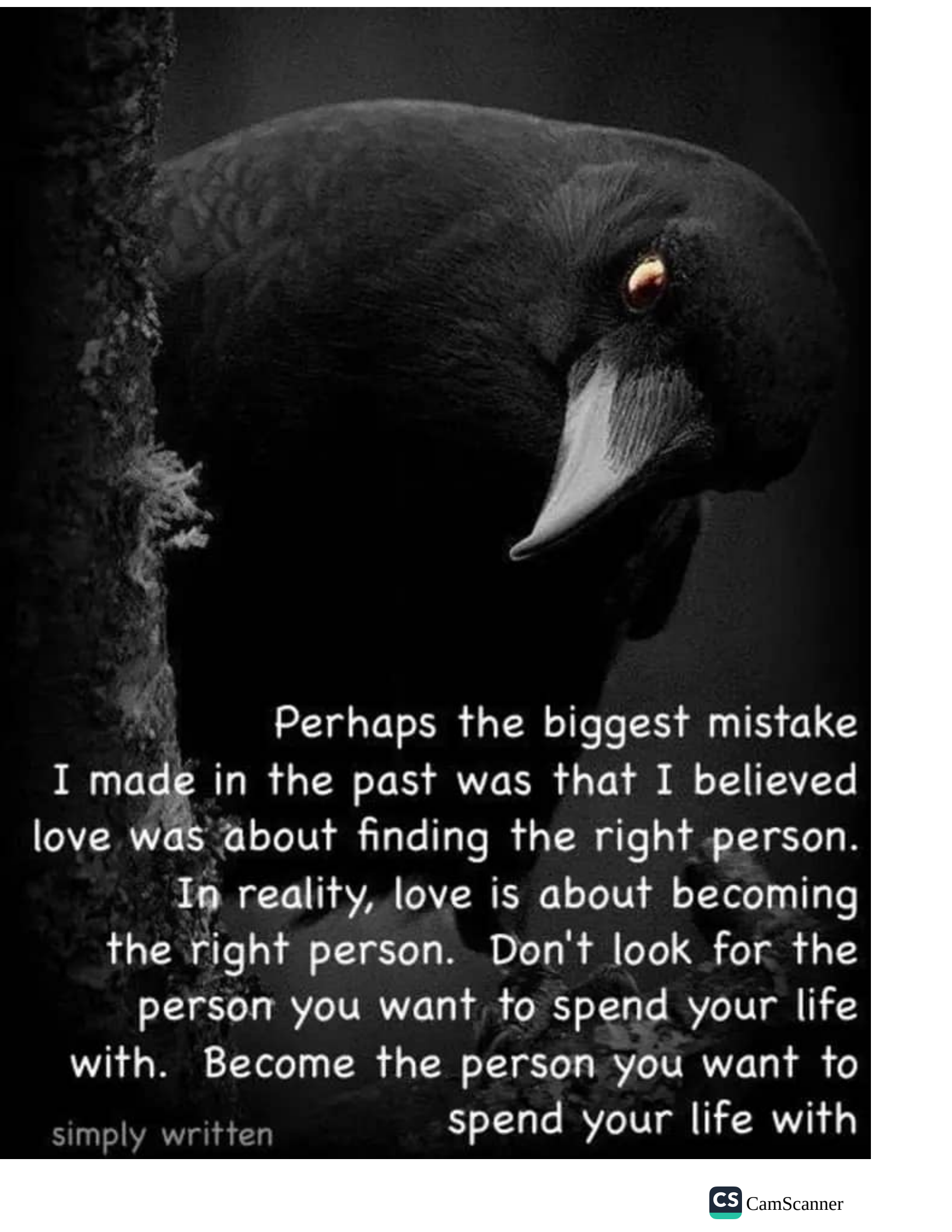
मैत्री 🍌





झेन फ़कीर जेनरेन ने कहा है-
"जब पतझड़ आये और सभी
पत्ते गिरकर नग्न हो जाएं तो
यह मत कहना कि यहाँ सब
उजाड़ है, जबकि यह तो बसंत
आने की तैयारी है।
रात जितनी अँधेरी होती है,
सुबह का सूरज उतना ही
प्यारा और जीवंत होता है।"

Osho



Perhaps the biggest mistake
I made in the past was that I believed
love was about finding the right person.

In reality, love is about becoming
the right person. Don't look for the
person you want to spend your life
with. Become the person you want to
spend your life with

simply written

एक कुम्हार माटी से चिलम बनाने जा रहा था..। उसने चिलम का आकार दिया..। थोड़ी देर में उसने चिलम को बिगाड़ दिया...

माटी ने पूछा -: अरे कुम्हार, तुमने चिलम अच्छी बनाई फिर बिगाड़ क्यों दिया?

कुम्हार ने कहा कि -: अरी माटी, पहले मैं चिलम बनाने की सोच रहा था, किन्तु मेरी मति (दिमाग) बदली और अब मैं सुराही बनाऊंगा, ये सुनकर माटी बोली -: रे कुम्हार, मुझे खुशी है, तेरी तो सिर्फ मति ही बदली, मेरी तो जिंदगी ही बदल गयी।

चिलम बनती तो स्वयं भी जलती और दूसरों को भी जलाती, अब सुराही बनूँगी तो स्वयं भी शीतल रहूँगी और दूसरों को भी शीतल रखूँगी...

"यदि जीवन में हम सभी सही फैसला लें तो हम स्वयं भी खुश रहेंगे एवं दूसरों को भी खुशियाँ दे सकेंगे।



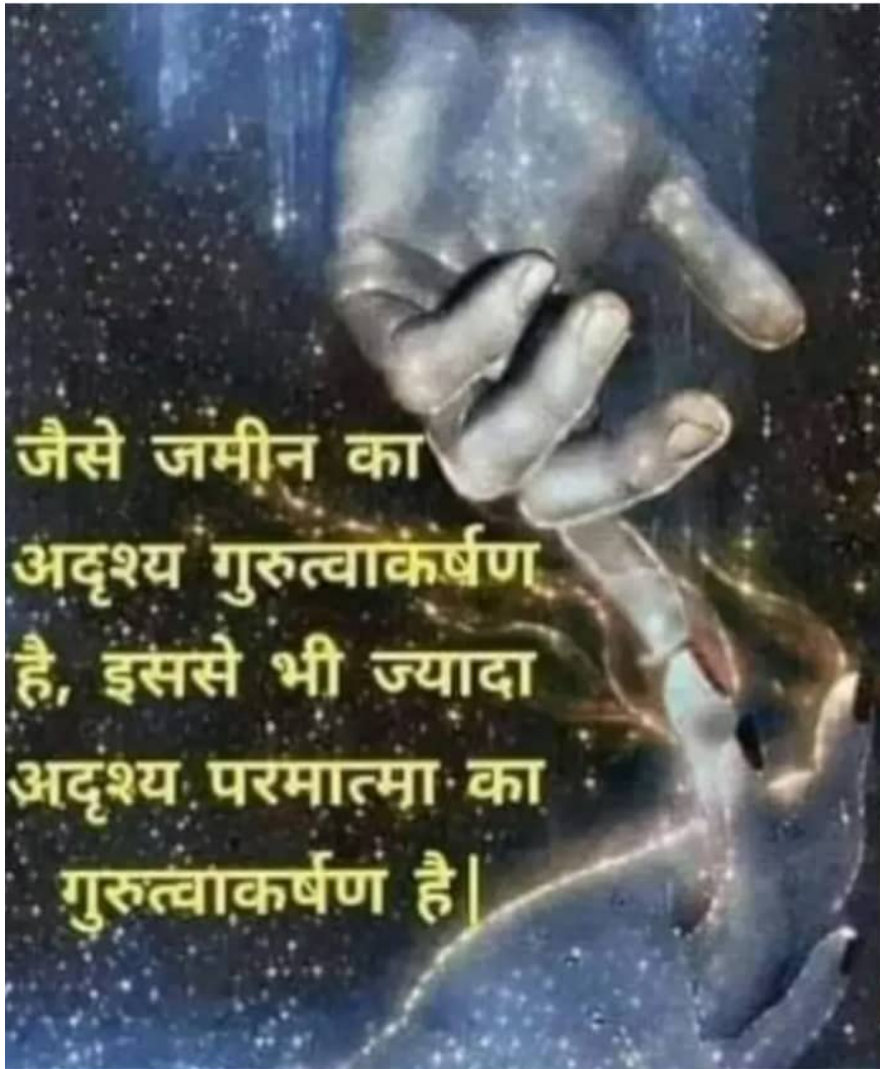
मैंने कहा है लोगों को कि
मैं जैसा बोलता हूं वैसी ही किताबें रहें,
उनमें जरा भी फर्क न किया जाए।
उनको बदला न जाए;
क्योंकि लिखने का ढंग और होता है,
बोलने का ढंग और होता है।
बोला हुआ शब्द अलग बात है,
लिखा हुआ शब्द अलग बात है।
तो मैंने कहा है कि जैसा मैं बोलता हूं,
वैसा ही लिखे में हो; ताकि अगर एक बार
तुम्हारा मुझसे तारतम्य बंध जाए
तो किताब को पढ़ते वक्त भी
किताब को नहीं पढ़ेंगे, मुझे सुनेंगे।
किताब उनसे बोलने लगेगी।
एक बार तुमने मुझे अपने हृदय में जगह दे दी,
तो फिर किताब से भी मैं तुम्हारे पास आ सकूंगा।
बिना किताब के भी आ सकूंगा।
तुमने जरा मेरी याद की तो भी पास आ जाऊंगा।
तुम पर निर्भर है।

**Kushal Sharma**

1d • 👤

**ओशो - जीवन-मृत्यु**

Paramanand Yash • 1d • 🌐



5



5

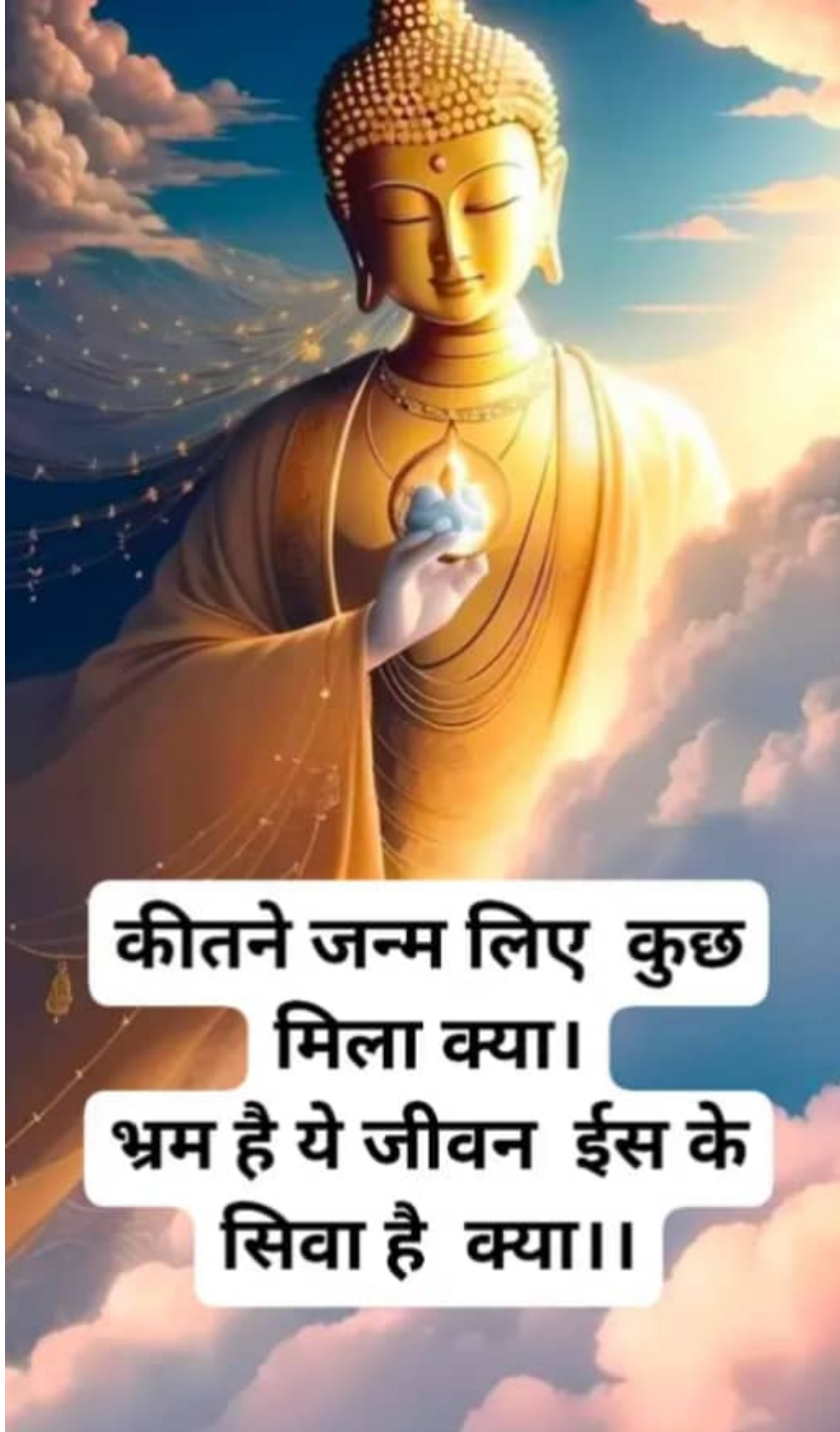
**Vijay kohli's Choice** • [Follow](#)

...



Get the best experience on the app

[Get](#)



कीतने जन्म लिए कुछ
मिला क्या।

भ्रम है ये जीवन ईस के
सिवा है क्या॥

**कुछ और नहीं तूं
इक मिट्टी के सिवा।।**





m.facebook.com/?__n=K



Yogesh Chavda and 5.6K others

5k

107

692

**John Elia - Hindi**

Haya Noor • 8m •



दुनियाँ को हकीकत मेरी पता कुछ भी नहीं..
इल्ज़ाम हज़ारों हैं और खता कुछ भी नहीं..

मेरे दिल मे क्या है ये पड़ न सकोगे..
सारे पन्ने भरे हैं और लिखा कुछ भी नहीं,,,,,, Noor



Get the best experience on the app

Get



संक्षिप्त पुनरावलोकन (Recap)

- ✓ हम बड़ी आसानी से नाड़ियों की पहचान कैसे कर सकते हैं कि कब, कौन सी नाड़ी सक्रिय है।
- ✓ नाक के छिद्रों से बाहर निकलती हुई साँस को हाथ पर स्पर्श करके महसूस करने का प्रयास कीजिए। देखिए कि नासिका के कौन से छिद्र से साँस बाहर निकलकर हाथ पर स्पर्श कर रही है।
- ✓ अगर नाक के दाहिने छिद्र से साँस बाहर निकल रही है तो यह पिंगला नाड़ी होती है। इसे 'सूर्य स्वर' भी कहते हैं। यदि साँस बाएँ छिद्र से निकल रही है तो यह इड़ा नाड़ी या 'चंद्र स्वर' होगा।
- ✓ यदि दोनों छिद्रों से समान वेग से साँस निकलता महसूस करें तो यह सुषुम्ना नाड़ी या 'शून्य स्वर' कहलाएगा।
- ✓ पिंगला पुरुष प्रधान है, जबकि इड़ा स्त्री प्रधान है।
- ✓ सूर्य और चंद्र की कलाओं में बदलाव के साथ ठीक उसी तरह नवजात बच्चों की नाड़ियों में भी बदलाव देखने को मिलता है।
- ✓ बड़े होने पर हमारी गलत दिनचर्या, खानपान, सोने-जागने आदि के बदलते समय के कारण हमारी नाड़ियों की टाइमिंग बदलती जाती है। बस यहीं से हमारे जीवन में गड़बड़ी की शुरुआत होती है।
- ✓ हम आसानी से प्रकृति के साथ अपनी नाड़ी का मिलान कर सकते हैं तथा स्वस्थ व सफल और खुशहाल जीवन जी सकते हैं।



चार दिन की जिन्दगी,
मैं किस से कतरा के चलूँ,
खाक हूँ, मैं खाक पर,
क्या खाक इतरा के चलूँ







@sahityasathi



ईश्वर छिपा नहीं है ईश्वर स्वयं को
हर जगह प्रकट करता है ।
पक्षियों में गा रहा है,
फूलों में खिल रहा है
अपनी आँखें खोलो
और तुम देखोगे
वह ठीक तुम्हारे सामने है ।"

- ओशो



5.9K





जिस दिन तुम अपने मन, शरीर और
आत्मा को अलग अलग देखने लगे उस
पूरे संसार को और उसका सच जान
जाओगे और फिर तुम्हारे पास कुछ न  2.8K
होते हुए भी सब कुछ हो जाएगा। इस 
टॉपिक पर और वीडियो देखने के लिए  81
कमेंट में पार्ट 2 लिखें।



inner_.motive 

IG | @INNER_.MOTIVE

62

अपने आप को जानने के लिए फॉलो करे... See more 

Add a comment...

जब भी जीवन में तुम्हें पहली
कड़ुवाहट आए, किसी भी कृत्य
को करते हुए, तत्क्षण समझना कि
पाप हो रहा है। कड़ुवाहट सूचक है।
कड़ुवाहट का कांटा प्रतिपल तुम्हें
बता रहा है कि कहां क्या हो रहा
है। जब भी जीवन में कोई मिठास
आए, समझना कि कोई पुण्य हुआ।
पुण्य को दोहराना, ताकि पुण्य
तुम्हारी आदत हो जाए। पाप को मत
दोहराना, ताकि पाप कहीं तुम्हारी
आदत न हो जाए। तो धीरे-धीरे तुम
पाओगे कि तुमने अपने भीतर ही
उस कल्याण-मित्र को खोज लिया,
जो तुम्हें परम आनंद की तरफ ले
जाएगा।

❤️ ओशो ❤️

👍❤️ 10

👍 10



🔗 3



Get the best experience on the app

Get

**आशा का हन्दा साहत्य**

Sulaxna Dixit Rawat · 19h ·

🍂 और लाओत्सु समाधि को उपलब्ध हुआ 🍂

लाओत्सु के जीवन में उल्लेख है : कि वर्षों तक खोज में लगा रहकर भी सत्य की कोई झलक न पा सका। सब चेष्टाएं कीं, सब प्रयास, सब उपाय, सब निष्फल गये। थककर हारा-पराजित एक दिन बैठा है--पतझड़ के दिन हैं--वृक्ष के नीचे। अब न कहीं जाना है, न कुछ पाना है। हार पूरी हो गई। आशा भी नहीं बची है। आशा का कोई तंतुजाल नहीं है जिसके सहारे भविष्य को फैलाया जा सके। अतीत व्यर्थ हुआ, भविष्य भी व्यर्थ हो गया है, यही क्षण बस काफी है। इसके पार वासना के कोई पंख नहीं कि उड़े। संसार तो व्यर्थ हुआ ही, मोक्ष, सत्य, परमात्मा भी व्यर्थ हो गये हैं।

ऐसा बैठा है चुपचाप। कुछ करने को नहीं है। कुछ करने जैसा नहीं है। और तभी एक पत्ता सूखा वृक्ष से गिरा। देखता रहा गिरते पत्ते को--धीरे-धीरे, हवा पर डोलता वृक्ष का पत्ता नीचे गिर गया। हवा का आया अंधड़, फिर उठ गया पत्ता ऊपर, फिर गिरा। पूरब गई हवा तो पूरब गया, पश्चिम गई तो पश्चिम गया।

और कहते हैं, वहीं उस सूखे पत्ते को देखकर लाओत्सु समाधि को उपलब्ध हुआ। सूखे पत्ते के व्यवहार में ज्ञान की किरण मिल गई। लाओत्सु ने कहा, बस ऐसा ही मैं भी हो रहूं। जहां ले जायें हवाएं, चला जाऊं। जो करवाये प्रकृति, कर लूं। अपनी मर्जी न रखूं। अपनी आकांक्षा न थोपूं। मेरी निजी कोई आकांक्षा ही न हो। यह जो विराट का खेल चलता, इस विराट के खेल में मैं एक तरंग मात्र की भांति सम्मिलित हो जाऊं। विराट की योजना ही मेरी योजना हो और विराट का संकल्प ही मेरा संकल्प। और जहां जाता हो यह अनंत, वहीं मैं भी चल पड़ूं; उससे अन्यथा मेरी कोई मंजिल नहीं। डुबाये तो डूबूं, उबारे तो उबरूं। डुबाये तो डूबना ही मंजिल; और जहां डुबा दे वहीं किनारा। और कहते हैं, लाओत्सु उसी क्षण परम ज्ञान को उपलब्ध हो गया।

ओशो; अष्टावक्र महागीता



Get the best experience on the app

Get





भगवान

भगवान देह धारी होते हैं,
इनका जन्म भी होता है
और मृत्यु भी होती है,
जैसे - श्री राम, श्री कृष्ण



110K





देवता

इंद्र, वायु,
अग्नि, जल
ये देव हैं
और अमर है।



110K





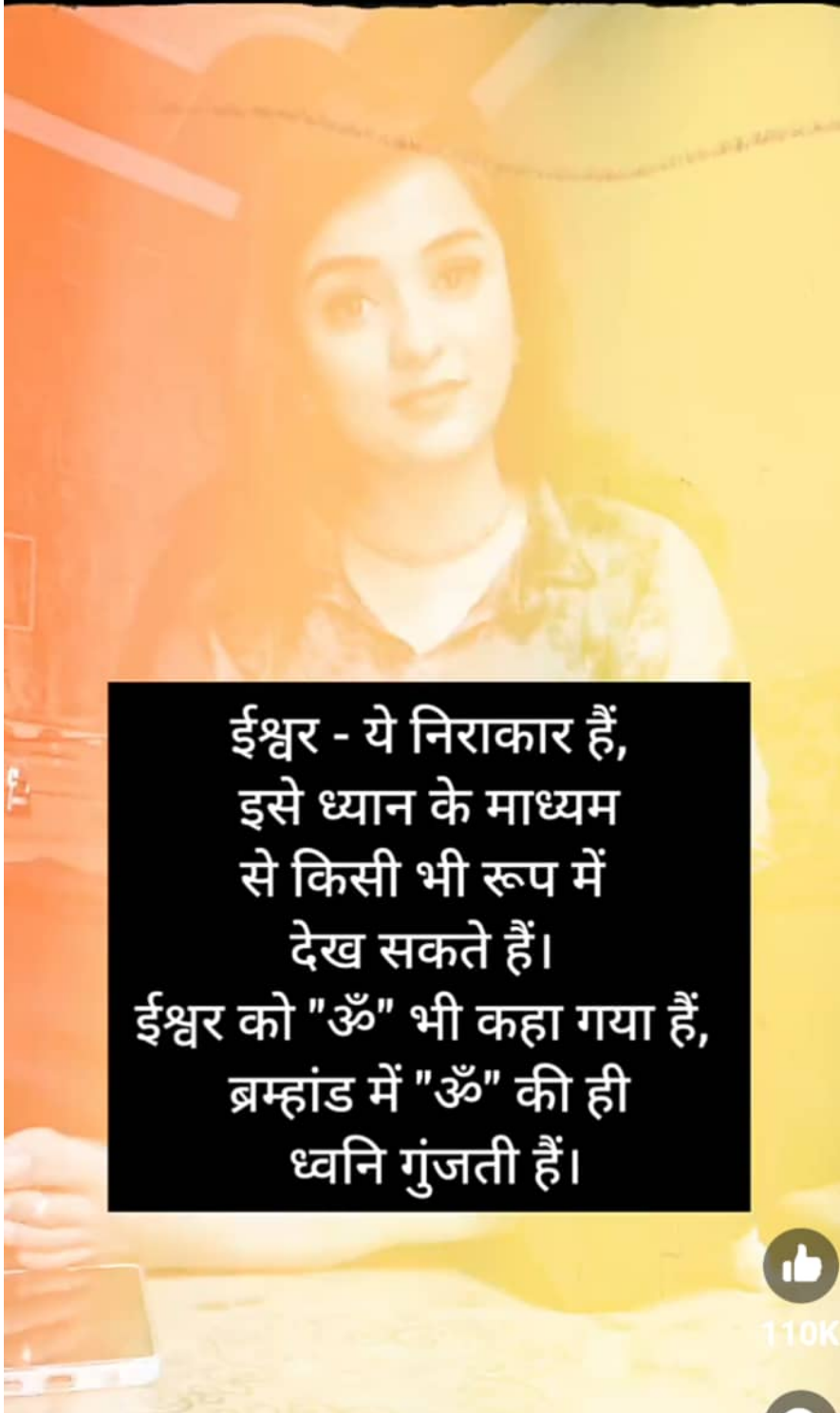
परमात्मा

इनका ना जन्म होता हैं
और ना मृत्यु होती हैं,
जैसे - ब्रह्मा, विष्णु, महेश।



110K



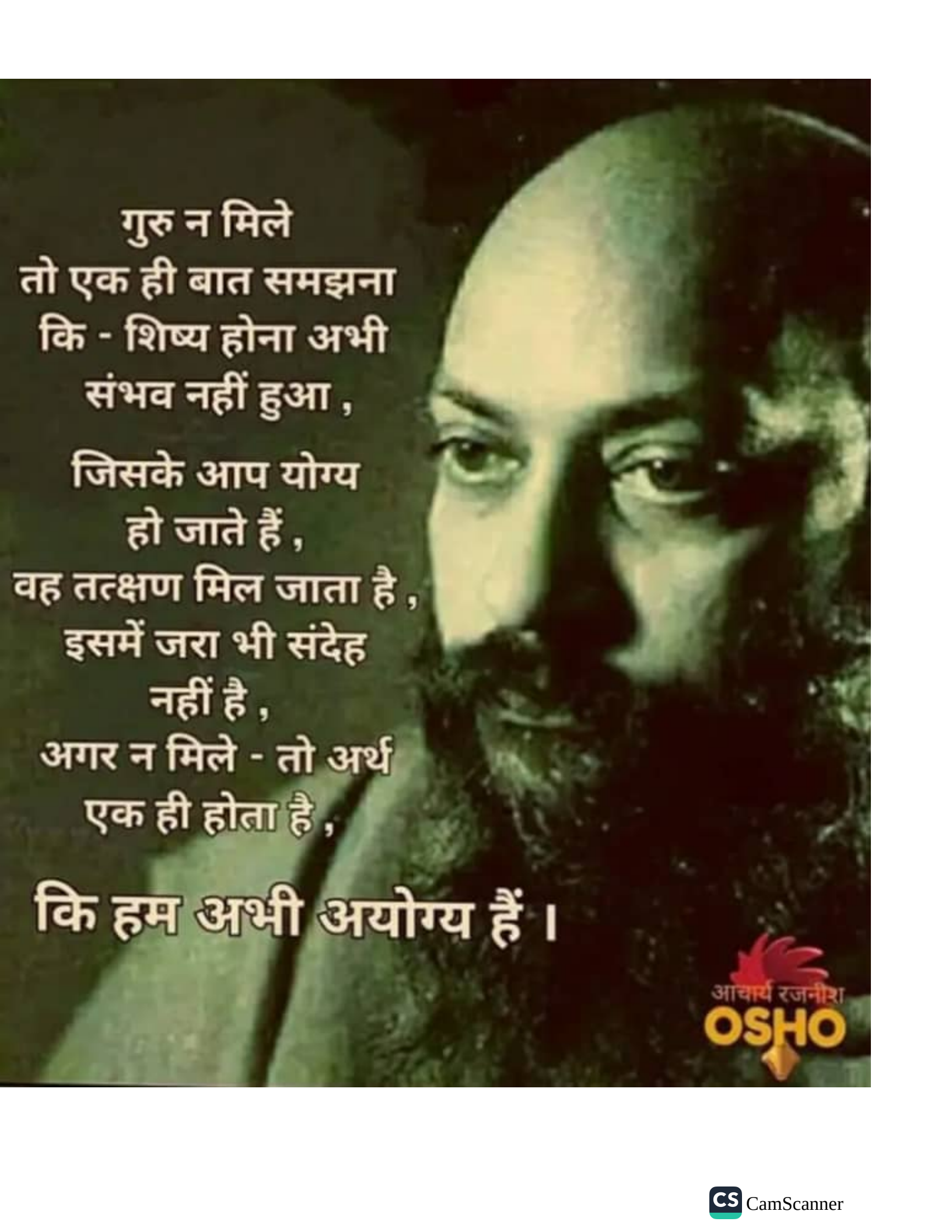


ईश्वर - ये निराकार हैं,
इसे ध्यान के माध्यम
से किसी भी रूप में
देख सकते हैं।
ईश्वर को "ॐ" भी कहा गया है,
ब्रम्हांड में "ॐ" की ही
ध्वनि गुंजती है।



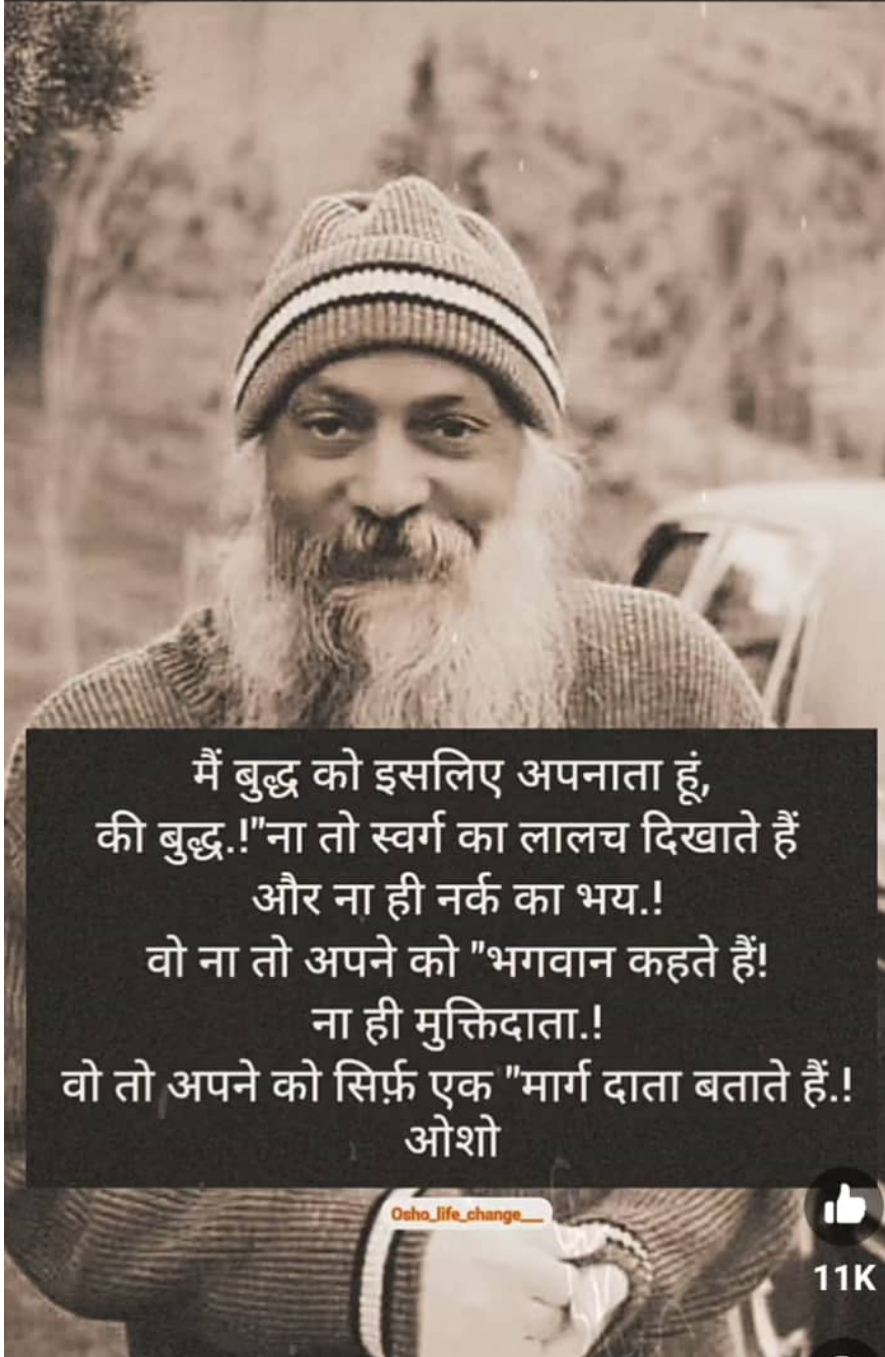
110K





गुरु न मिले
तो एक ही बात समझना
कि - शिष्य होना अभी
संभव नहीं हुआ ,
जिसके आप योग्य
हो जाते हैं ,
वह तत्क्षण मिल जाता है ,
इसमें जरा भी संदेह
नहीं है ,
अगर न मिले - तो अर्थ
एक ही होता है ,
कि हम अभी अयोग्य हैं ।





मैं बुद्ध को इसलिए अपनाता हूं,
की बुद्ध.!"ना तो स्वर्ग का लालच दिखाते हैं
और ना ही नर्क का भय.!
वो ना तो अपने को "भगवान कहते हैं!
ना ही मुक्तिदाता.!
वो तो अपने को सिर्फ़ एक "मार्ग दाता बताते हैं.!
ओशो

[Osho_life_change__](#)

11K





writer@prashant.____jetav

विज्ञान तुम्हारे कंकाल से ये पता कर
सकता है कि तुम बुढ़े थे या जवान,
गोरे थे या काले थे, नर थे या मादा,
लेकिन ये कभी पता नहीं कर सकता
कि, तुम शूद्र थे या ब्राह्मण, वैश्य थे
या क्षत्रिय, हिंदू थे या मुस्लिम, क्योंकि
तुम कभी ये सब थे ही नहीं, सिर्फ
मानते थे और मानने का कोई मुल्य
नहीं होता, बल्कि होने का होता है।



—राजनीश ओशो



1.1K



👉 दूध उपयोगी है किंतु एक ही दिन के लिए,
फिर वो खराब हो जाता है....!!

👉 दूध में एक बूंद छाछ डालने से वह दही बन
जाता है जो केवल दो और दिन टिकता है....!!

👉 दही का मंथन करने पर मक्खन बन जाती
है, यह और तीन दिन टिकता है..

👉 मक्खन को उबालकर घी बनता है, घी
कभी खराब नहीं होता..

👉 एक ही दिन में बिगड़ने वाले दूध में कभी नहीं
बिगड़ने वाला घी छिपा है..

👉 इसी तरह आपका मन भी अथाह शक्तियों
से भरा है, उसमें कुछ सकारात्मक विचार डालो
अपने आपको मथो अर्थात् चिंतन करो... अपने
जीवन को और तपाओ और तब देखना

👉 आप कभी हार नहीं मानने वाले
सदाबहार व्यक्ति बन जाओगे



भगवान कोई व्यक्ति नहीं ;
जीवन का ही दूसरा नाम
है। इसलिए जब तुम
परिपूर्ण रूप से जीवंत
होते हो और तुम्हारे अंदर
सब मौन हो जाता है, सब
शांत हो जाता है, सब
निर्विचार हो जाता है--तब
जो सुगंध उठती है, तब जो
अनुभूति होती है। उस
अनुभूति का नाम, उस
दिव्यता का नाम, उस
भगवत्ता का नाम ही
भगवान है।
ओशो



673



131



raw_insightful_talkss



Add a comment...



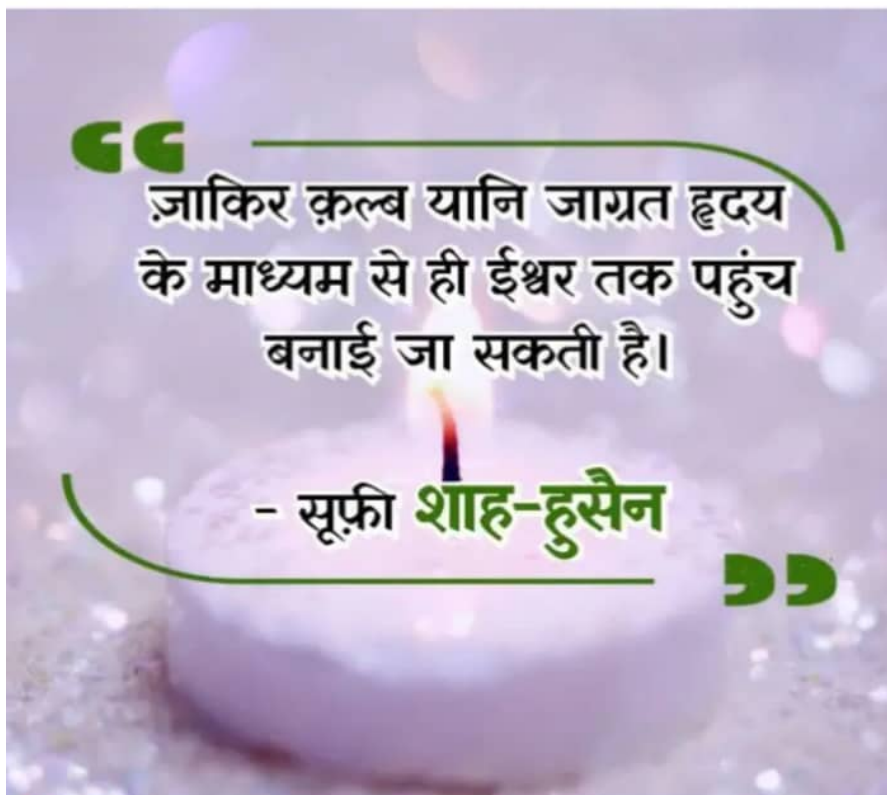
Sufi Shah Hussain

3h • 🌐

#Qalb

#Ruh

#sufi ...see more



Sufi Shah Hussain and 25 others



26



7



42

Olden Indian Cinema • [Follow](#)1d • 

This iconic photograph captures some of Bollywood's most legendary stars together, showcasing the rich heritage of Indian cinema. Balraj Sahni, kno...see more



Get the best experience on the app

Get



नौतपा का रहस्य ?

नौतपा अगर न तपे तो क्या होता है?

* दो मूसा, दो कातरा, दो तीड़ी, दो ताय।
दो की बादी जळ हरै, दो विश्वर दो वाय।।*

अर्थ:- नौतपा के पहले दो दिन लू न चली तो चूहे बहुत हो जाएंगे। अगले दो दिन न चली तो कातरा (फसल को नुकसान पहुंचाने वाला कीट) बहुत हो जाएंगे। तीसरे दिन से दो दिन लू नहीं चली तो टिट्टियों के अंडे नष्ट नहीं होंगे। चौथे दिन से दो दिन नहीं तपा तो बुखार लाने वाले जीवाणु नहीं मरेंगे। इसके बाद दो दिन लू न चली तो विश्वर यानी सांप-बिच्छू नियंत्रण से बाहर हो जाएंगे। आखिरी दो दिन भी नहीं चली तो आंधियां अधिक चलेंगी। फसलें चौपट कर देंगी। इसलिए *"लू"* से भयभीत न होवें। स्वस्थ रहें, मस्त रहें, जीवन में धर्म कार्य में व्यस्त रहें।

2

2

3



Get the best experience on the app

Get

**SK Verma**

22 May 2024 · 🌐



बिच्छू काटे का इलाज

माचिस की पाँच-सात तीलियों का मसाला पानी में घिस कर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लगाएं। इसे लगाते ही सिर्फ 2 मिनट में बिच्छू का जहर उतर जाता है। कृपया शेयर जरूर करें क्योंकि शेयर करने का कोई पैसा नहीं लगता। यह महत्वपूर्ण जानकारी जरूरतमंद के काम आजाये जिससे उसकी

**Rj Satwinder Singh Rajpal** · Follow

2d · 🌐

'रफी साहब से गवा लो गाना', राजेश खन्ना के दिल पे लगी किशोर कुमार



Get the best experience on the app

Get



28m

**Mukesh Sharma**

1d ·



1



1



1



1



जीवन का संदेश - Follow



Get the best experience on the app

Get



Get the best experience on the app

Get





m.facebook.com



1



3



3

**Hindi Sad Status** • [Follow](#)

3d •



खास होने का भ्रम ना पाले,
आपको पाकर लोग आपसे बेहतर
की तलाश मे रहते है.

Follow // Hindi Sad Status



Unname Krishan and 13K others



13k



154



3k



रिश्तो की अहमियत

Rekha Gupta • 16m •



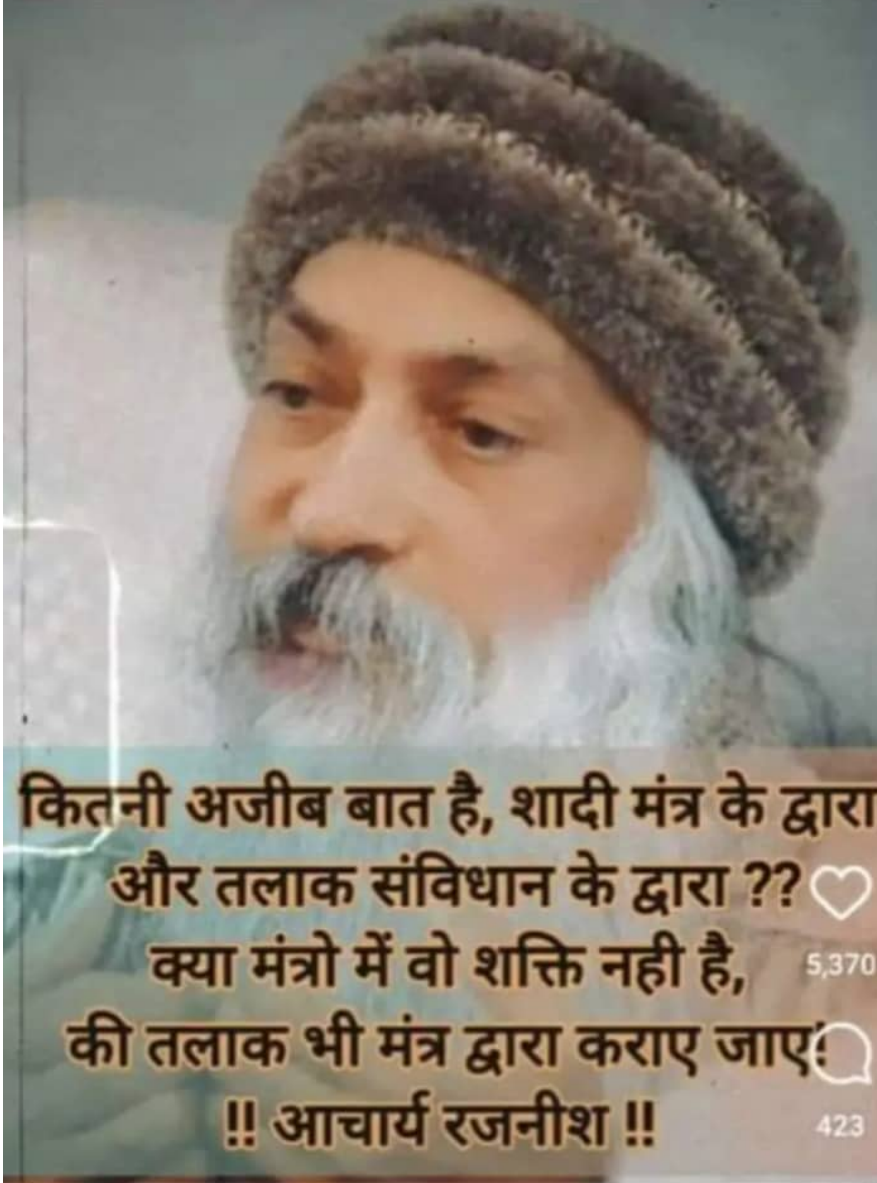
Get the best experience on the app

Get



**ओशो अंतिम मुक्ति का मार्ग**

Osho Harpreet · 3d ·



1



1



2



Get the best experience on the app

Get



मुट्टी बांधे जन्म
लिया, हाथ पसारे
जाना है



इस धरा का, इस
धरा पर, सब धरा रह
जाना है।

The GOD - भगवान सबका भला करे

2d · 🌐

👍 3.5K



3k

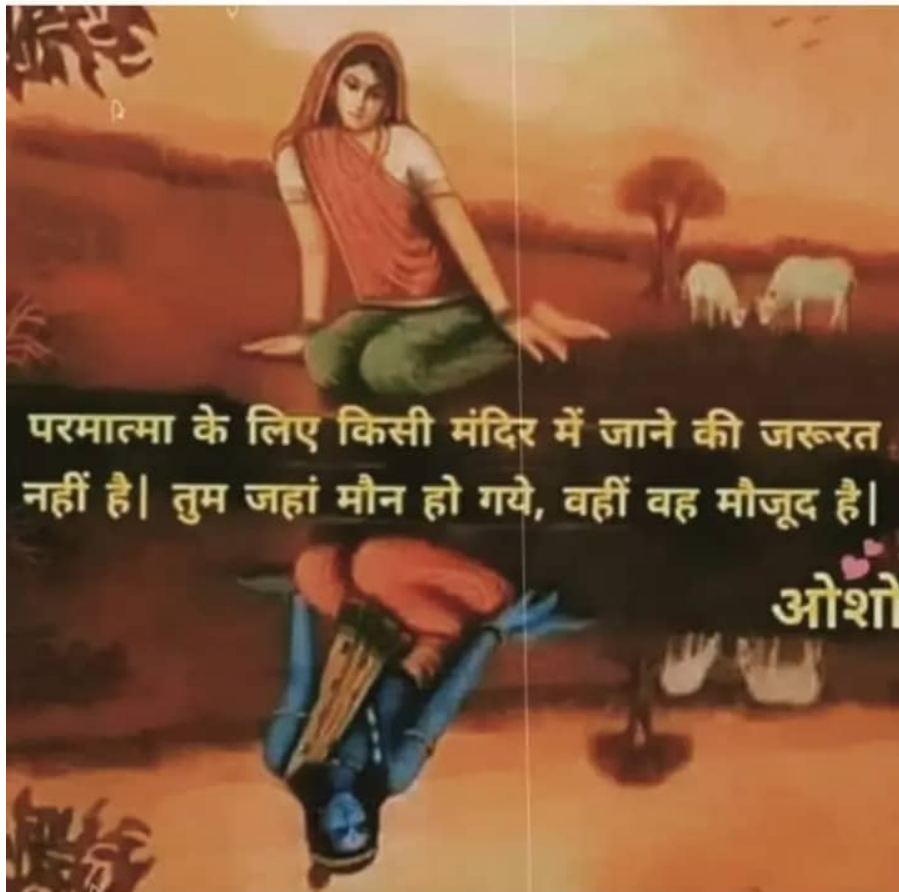


71



1k



 8.6K 8k 1k**ओशो - जीवन-मृत्यु**Bhavna Joshi · 2h ·  254 254 7 34**काम की बातें काम के नुस्के काम के ...** · [Follow](#) · 3d · 

जब मेरी शादी हुई थी तो उस समय मेरी उम्र 30 साल थी। ऐसा नहीं है की लड़के नहीं मिल रहे थे, काफी लड़के मिले लेकिन कुछ ने मुझे रिजेक्ट कर दिया और कुछ को मैंने।...see more



Get the best experience on the app

[Get](#)



जीवन एक समस्या नहीं है, अन्यथा उसका समाधान हो जाता। जीवन प्रश्न होता तो उत्तर खोजा जा सकता था। जीवन पहेली होती तो बूझ लेते। जीवन एक रहस्य है; बूझने का कोई उपाय नहीं, जीने का उपाय है, मदमस्त होने का उपाय है, पीने का उपाय है, समझने का—सूझने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए दर्शनशास्त्र हार जाता है। दर्शनशास्त्र की खोज व्यर्थ खोज है। सदियों—सदियों में आदमी ने सोचा है, खूब सोचा है; बहुत—से प्रश्न और बहुत—से उत्तर खड़े किए हैं, लेकिन न तो कोई प्रश्न जीवन की गहराई को छूता है और न कोई उत्तर जीवन की गहराई को छूता है। जीवन स्वाद की बात है। जीवन शराब है; पियोगे तो जानोगे। पियोगे, मदमस्त होओगे तो पहचानोगे।



Get the best experience on the app

Get



CamScanner

**Shree Speaks**

9h · 🌐

**Nihilism(शून्यवाद)~**

लैटिन शब्द 'निहिल' से व्युत्पन्न शून्यवाद (Nihilism) जिसका अर्थ है 'कुछ नहीं', संभवतः दर्शनशास्त्र का सबसे निराशावादी शब्द था।

यह 19वीं सदी के पूरे यूरोप में सोचने की एक व्यापक शैली थी, जिसका नेतृत्व फ्रेडरिक जैकोबी, मैक्स स्टिरनर, सोरेन कीर्केगार्ड, इवान तुर्गनेव और कुछ हद तक फ्रेडरिक नीत्शे सहित प्रमुख विचारकों ने किया था, हालांकि आंदोलन से उनका संबंध जटिल था।

शून्यवाद ने सरकार, धर्म, सत्य, मूल्यों और ज्ञान सहित सभी प्रकार के अधिकार पर सवाल उठाया, यह तर्क देते हुए कि जीवन अनिवार्य रूप से अर्थहीन है और वास्तव में यह कुछ भी मायने नहीं रखता है। लेकिन कुछ ने निर्धारित सिद्धांतों को खारिज करने के विचार को एक मुक्ति की संभावना के रूप में पाया, और शून्यवाद ने अंततः अस्तित्ववाद और बेतुकापन की बाद की, कम निराशावादी दार्शनिक शैलियों का मार्ग प्रशस्त किया।

आइए जानते हैं शून्यवाद के केंद्रीय सिद्धांतों के बारे में:
शून्यवाद के मूलभूत पहलुओं में से एक सत्ता के सभी रूपों की अस्वीकृति थी। निहिलवादियों ने सवाल किया कि एक व्यक्ति को दूसरे की अध्यक्षता करने का अधिकार क्या दिया, और पूछा कि ऐसा पदानुक्रम क्यों होना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि किसी को भी किसी और से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए, क्योंकि हम सभी एक दूसरे की तरह अर्थहीन हैं। इस विश्वास ने शून्यवाद के और अधिक खतरनाक पहलुओं में से एक को जन्म दिया है, जिससे लोगों को पुलिस या स्थानीय सरकारों के खिलाफ हिंसा और विनाश के कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है।

शून्यवाद ने धर्म पर उठाया सवाल
प्रबुद्धता के मद्देनजर, और तर्क के बाद की खोजों में, जर्मन दार्शनिक फ्रेडरिक नीत्शे ने तर्क दिया कि ईसाई धर्म अब समझ में नहीं आता है। उन्होंने तर्क दिया कि दुनिया के बारे में सभी सत्यों को समझाने वाली एक



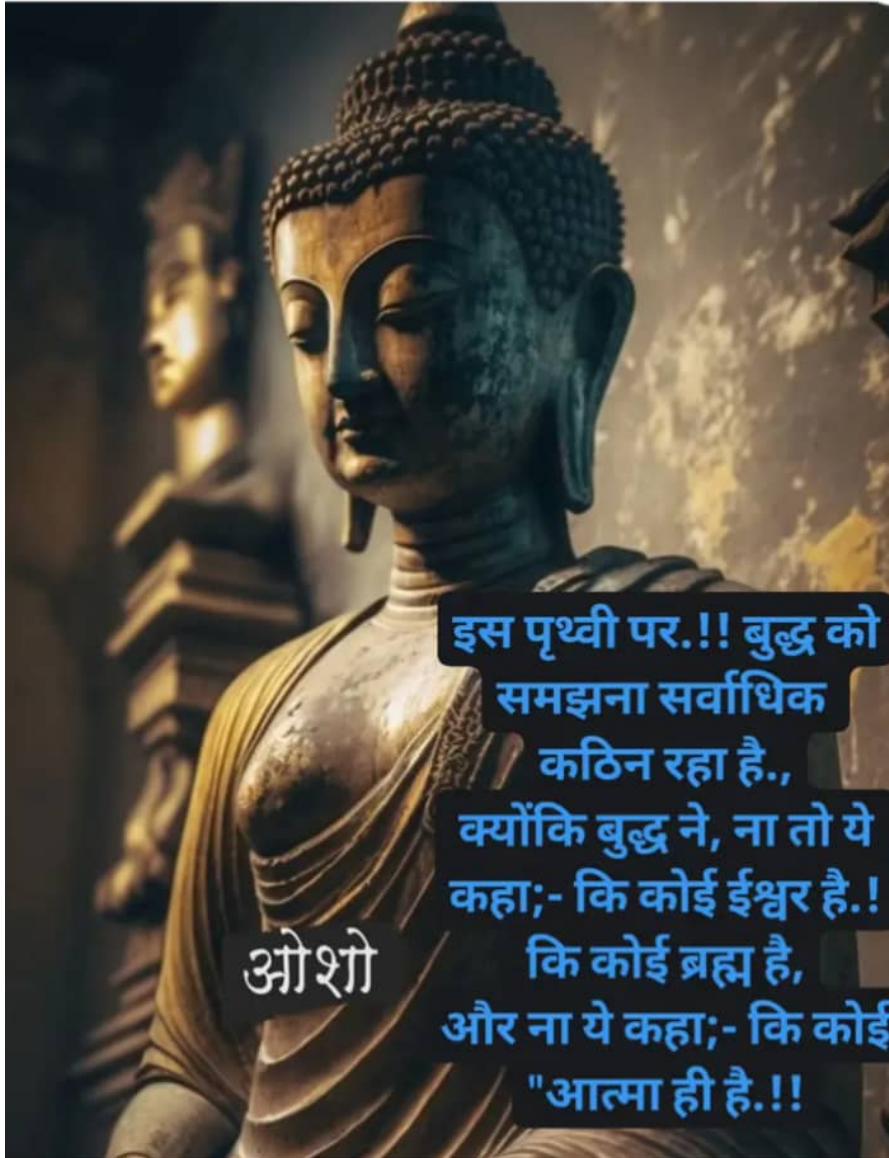
Get the best experience on the app

Get



**ओशो - जीवन-मृत्यु**

दिनेश कौशिक · 2h ·



59

59

5

5

**SKECHERS** 

Get the best experience on the app

Get



तुम्हारा होना तुम्हारी मालकियत नहीं है
तुम क्यों हो, इसका भी तुम्हें पता नहीं
है। तुम क्या हो, इसका भी तुम्हें पता
नहीं है। तो जिसने तुम्हें जन्म दिया और
जो तुम्हारे जीवन को अभी भी संभाले
हुए है, जो तुम्हारे भीतर श्वास ले रहा है
और एक दिन श्वास नहीं लेगा—वही है!
उसी पर सब छोड़ दो।
ओशो

👍 Nanji Bhai Atara and 3 others



4



4



Get the best experience on the app

Get



m.facebook.com



1



ओशो-बुध्द - वाणी

Raj Malhotra · 11h ·

"ओशो" प्रेम नमन 🙏🌸🙏



👍 नरेश ओशो धारा and 36 others

👍 37

💬 6

➦ 3



JBP Foundation · Follow

5d ·

आज का सुपर फूड मंडूवा या कोदो या रागी, सत्तर अस्सी के दशक में ब्रह्म बटनाम था। कोदो की रोटियां पहाड़ों में गरीब का भोजन माना



Get the best experience on the app

Get

**ओशो - जीवन-मृत्यु**

Yogesh Limbu · 48m ·



35

35



1

**डाकिया** · Follow

2d ·



Get the best experience on the app

Get



Raigarh - Chhattisgarh's post



Raigarh - Chhattisgarh

17 Feb 2018 · 🌐



बाबा सत्यनारायण जी का जन्म रायगढ़ जिले के कोसमनारा से 19 किलोमीटर दूर देवरी, डूमरपाली में एक 12 जुलाई 1984 को हुआ इनके पिता का नाम दयानिधि साहू और माता का नाम हंसमती साहू। इनके बचपन का नाम हलधर था। इनके पिता इन्हे सत्यम कह कर बुलाते थे। कोसमनारा में बाबा सत्यनारायण 16 फरवरी 1998 को तपस्या में लीन होगये और कठोर तप जारी है। उनके हठयोग को देख लोगो ने "बाबा सत्य नारायण" नाम दिया। इन्हे भोजन करते किसी ने नहीं देखा। लोगो ने बालक बाबा की निगरानी भी की मगर बाबा जी तपस्या में जो लीन हुए तो आज तक उसी जगह पर हठ योग में लीन है।

एक बार गांव के ही तालाब के बगल में स्थित शिव मंदिर में वो लगातार 7 दिनों तक तपस्या करते रहे। माँ बाप और गांव वालों की समझाइश पर वो घर लौटे तो जरूर मगर एक तरह से स्वयंम शिव उनके भीतर विराज चुके थे। 14 साल की उम्र में एक दिन वे स्कूल के लिए बस्ता ले कर निकले मगर स्कूल नहीं गए। बाबाजी स्कूल ड्रेस में ही रायगढ़ की ओर खाना हो गए। कोसमनारा गांव से कुछ दूर पर एक बंजर जमीन में उन्होंने कुछ पत्थरो को इकट्ठा कर शिवलिंग का रूप दिया और अपनी जीभ काट कर समर्पित कर दी।

महाशिवरात्रि की आप सभी को अनंत शुभकामनाएं !!



Write a comment...



**Osho " A thought "**

Neeraj Sachdeva · 6h ·

पुरोहित, ग्रंथी, मुल्ला, पादरी सब दलाल है,
वह बीच में खड़े है। वह कहते है: तुम्हें जो कुछ
कहना है मुझसे कहो, मैं परमात्मा से कहूंगा।
तुम सीधे मत कहो। अगर तुम सीधे ही कह देते
हो, तो उसका सारा होने का अर्थ ही खो गया।
मैं यज्ञ करवाऊंगा, मैं परमात्मा की आहुति
चढ़ाऊंगा, मैं वेद के पाठ पढ़ूंगा, मैं उसे
पुकारूंगा; तुम पुकारने का जो खर्च हो वह मुझे
दे देना। प्रार्थना मैं करूंगा, प्रार्थना के दाम तुम
चुका देना। परमात्मा से मैं बोलूंगा, तुम मुझसे
बोलो। तुम्हें क्या करना है, तुम्हें क्या चाहिए,
मुझे कह दो। तुम सीधे प्रत्यक्ष परमात्मा से
प्रार्थना मत करना। पुरोहित का मतलब
है—बिचवइया। मैं तुमसे कह रहा हूं, कोई
जरूरत नहीं है बिचवइए की। तुम सीधे ही
पुकारो। प्रार्थनाएं नौकरों से नहीं करवाई जातीं।
यह तो ऐसे ही हुआ कि तुम एक नौकर रख लो
और कहो कि जाओ मेरी पत्नी को मेरी तरफ से
प्रेम निवेदन कर दो! ❄ ओशो

Shivcon Vatica and 62 others

63

4

15



Get the best experience on the app

Get

जाते ही शमशान मे मिट गई
सब लकीर..!

पास- पास जल रहे थे, राजा
और फकीर

Mast Qalandar





ताओ की

साधना का अर्थ हुआ

सोच—विचार छोड़कर

खड़े हो जाना।

जहां कोई विचार न हो,

सिर्फ चेतना रह जाए,

सिर्फ होश रह जाए।

तो वहां से जो ठीक है

वह न केवल दिखाई पड़ेगा

बल्कि होना शुरू



Translated from English

**"वाद-विवादे विष घना,
बोले बहुत उपाध।
मौन गहे सबकी सहे,
सुमिरै नाम अगाध ।।"**

- संत कबीरदास



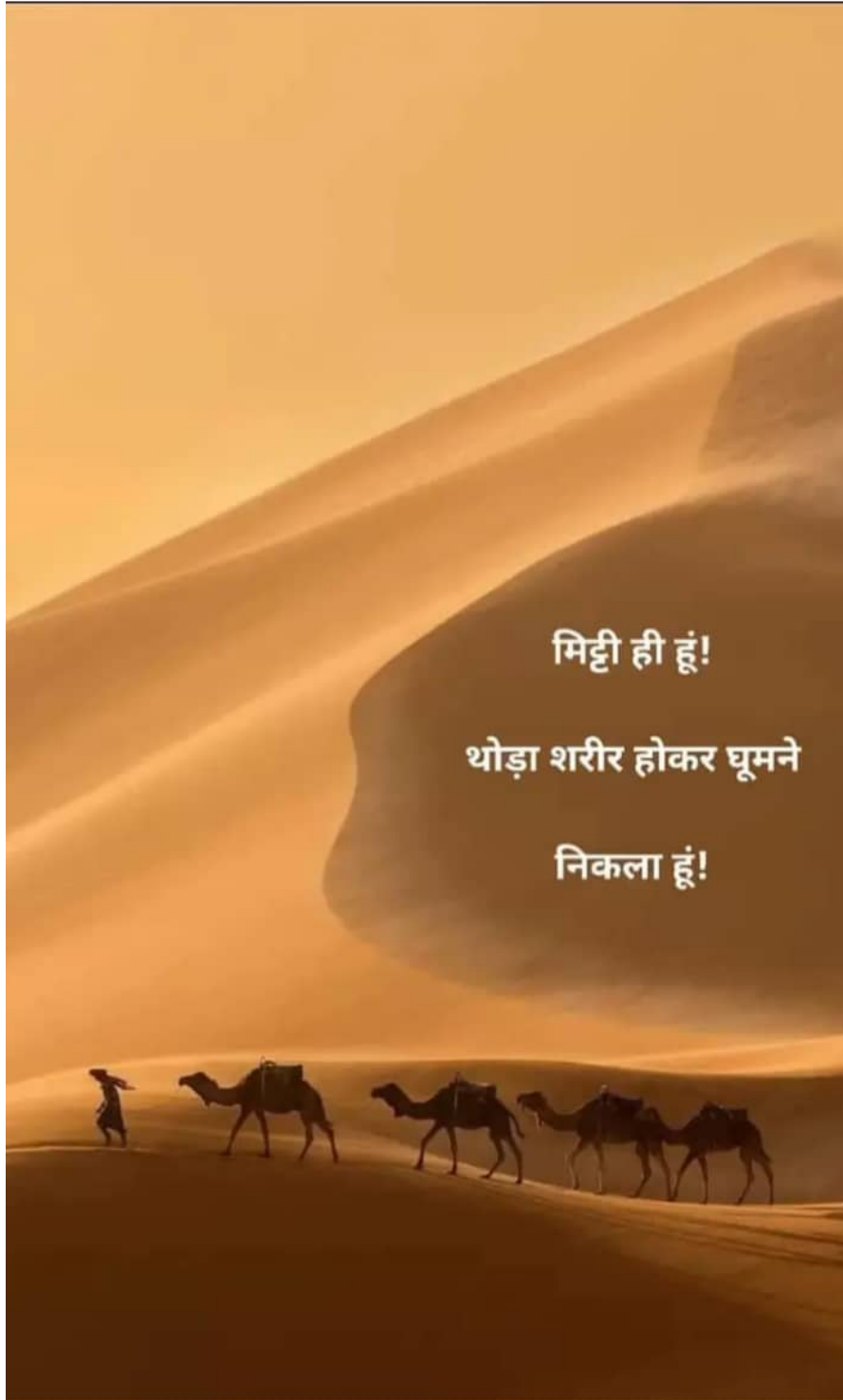
Get the best experience on the app

Get



**पुनर्जन्म**

Yash Bansal · 3h · 🧑



24

24

3



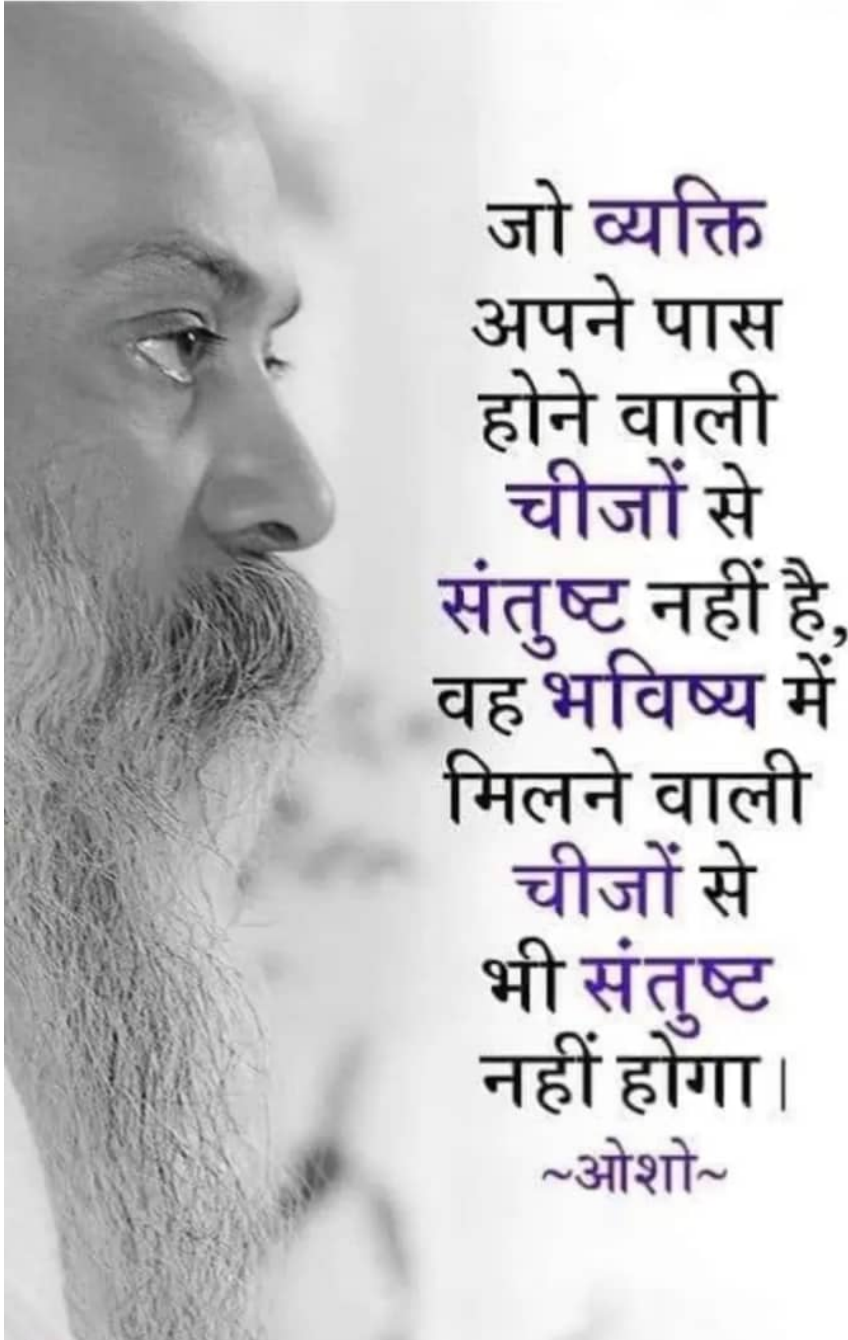
Get the best experience on the app

Get



**Osho Sahaj Anand**

1d · 🌐



Anish Yadav and 17 others



Get the best experience on the app

Get

Lyrics

Babul Ka Ye Ghar Behna / बाबुल का ये घर बहना

बाबुल का ये घर बहना कुछ दिन का ठिकाना है
बाबुल का ये घर गोरी कुछ दिन का ठिकाना है
बन के दुल्हन एक दिन तुझे पिया घर जाना है

बाबुल तेरे बगिया की मैं तो वो कली हूँ रे
छोड़ तेरी बगिया मुझे घर पिया का सजाना है

बेटी घर बाबुल के किसी और की अमानत है
दस्तूर दुनिया का हम सबको निभाना है

मैया तेरे आँचल की मैं हूँ एक गुड़िया रे
तूने मुझे जनम दिया तेरा घर क्यों बेगाना है

मैया पे क्या बीत रही बहना तू ये क्या जाने
कलेजे के टुकड़े को रो रो के भुलाना है

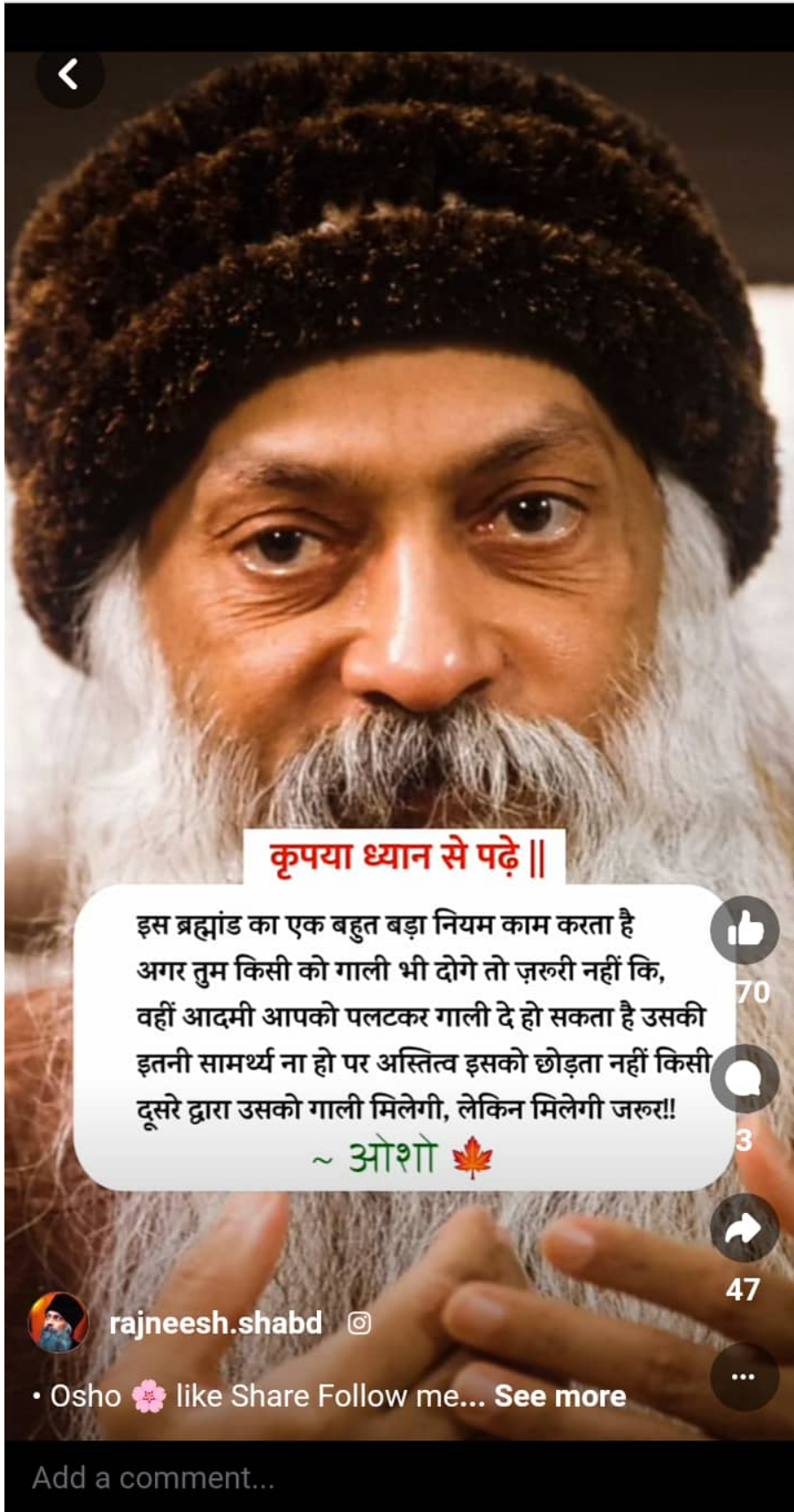
भैया तेरे अँगना की मैं हूँ ऐसी चिड़िया रे
रात भर बसेरा है सुबह उड़ जाना है

यादें तेरे बचपन की हम सबको रुलाएगी
फिर भी तेरी डोली को कांधा तो लगाना है

#MithunChakraborty #PadminiKolhapure #PallaviJoshi

Babul Ka Ye Ghar Behna Lyrics

Babul ka ye ghar bahana kuchh din ka thikaana hai



कृपया ध्यान से पढ़ें ॥

इस ब्रह्मांड का एक बहुत बड़ा नियम काम करता है
अगर तुम किसी को गाली भी दोगे तो ज़रूरी नहीं कि,
वहीं आदमी आपको पलटकर गाली दे हो सकता है उसकी
इतनी सामर्थ्य ना हो पर अस्तित्व इसको छोड़ता नहीं किसी
दूसरे द्वारा उसको गाली मिलेगी, लेकिन मिलेगी जरूर!!

~ ओशो 🍁



rajneesh.shabd



• Osho 🌸 like Share Follow me... See more

Add a comment...



कर्ज की मार, बीवी के ताने,
परिवार की चिंता, बच्चों के सपने,
फिर भी फर्ज निभाता हूँ हँसकर,
मर्द हूँ किससे कहूँ दर्द अपने...!



31K



171



2.3K



प्रसेनजीत कुमार सनातनी · Follow

मजबूरी..... See more

Add a comment...



m.facebook.com



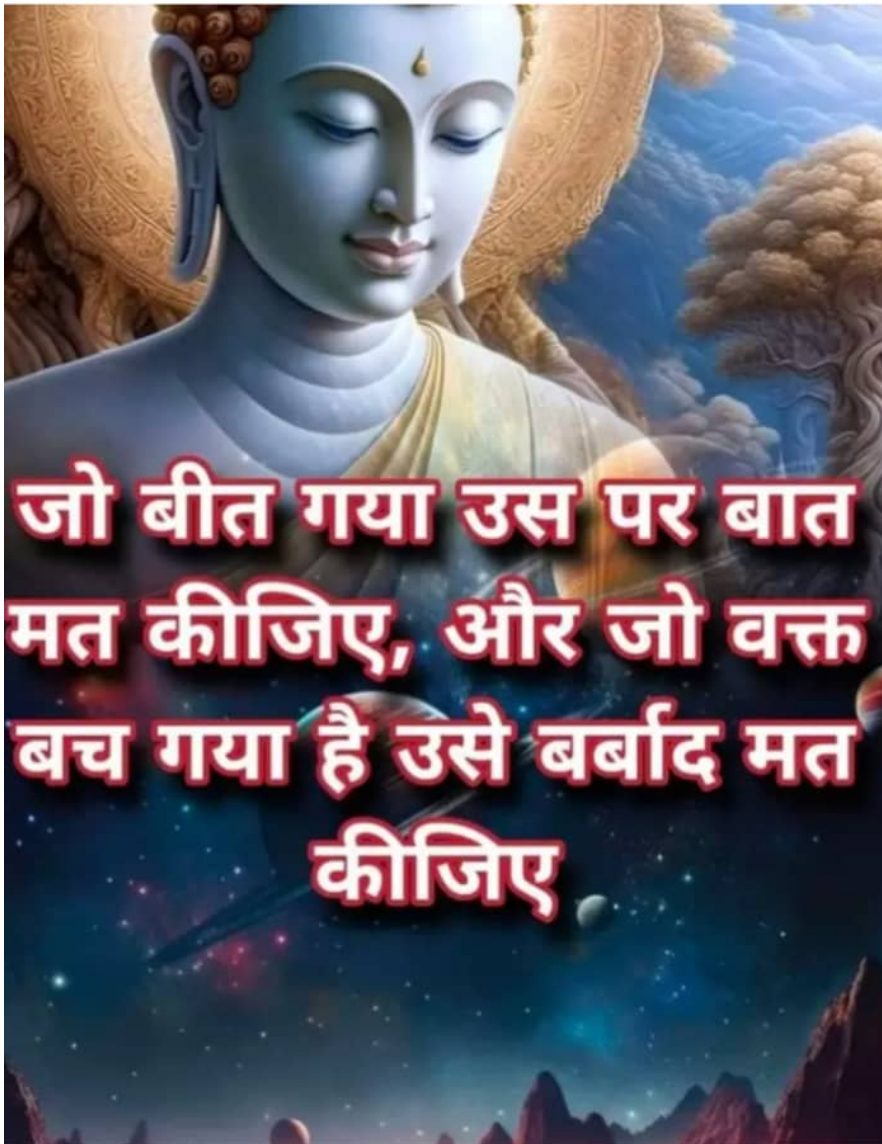
2



आशा चतन्य साधना

1h · 🌐

#osho #dhyana #viralvideoシ



WHATSAPP

औशो चैतन्य साधना

Writer



WHATSAPP

👍 Netaji Gadhire and 25 others

👍 26

💬 2

➦ 2



Get the best experience on the app

Get





m.facebook.com



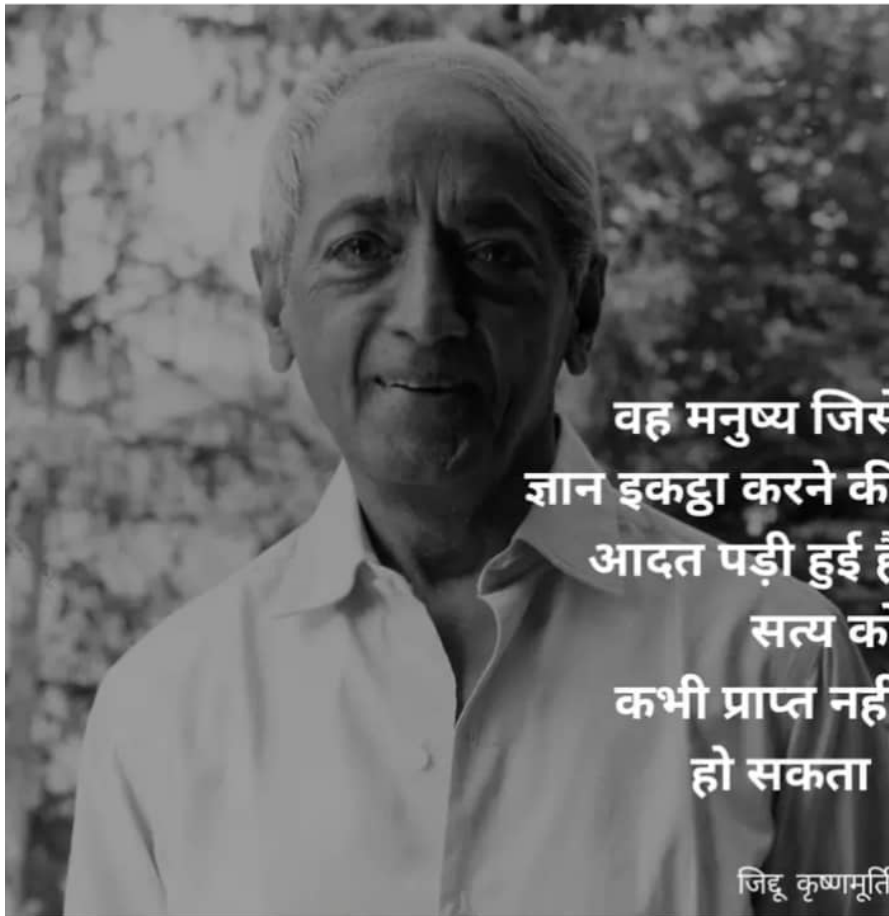
821

41

27

**Jiddu Krishnamurti** जे कृष्णमूर्ति

1h ·



38

38



5

**Hazra Purnima** · [Follow](#)

2d ·



The ancient name of Badami cave was [#Vataapi](#), the capital of the early Chalukya dynasty, which ruled much of Karnataka from the 6th to the 8th c...see more



Get the best experience on the app

Get





m.facebook.com



1



Vinod Hansu Vinod Hansu and 46K others



46k



130



824

**Jiddu Krishnamurti जे कृष्णमूर्ति**

8h •



जानने का अर्थ है नहीं जानना, यानी ज्ञान का अर्थ है अज्ञान। और यह तथ्य कि ज्ञान हमारी मानवी समस्याओं को कभी नहीं हल कर सकता—इस तथ्य की समझ ही प्रज्ञा है।

—जे० कृष्णमूर्ति

*****ओशो अर्थात एक युगांतरकारी चेतना*****

Mandarna Sareen Siwach · 5h ·



तुम्हे होश है ,
क्या कर रहे हो ?
यह सारा समय व्यर्थ गया ।
पादुका यहीं पडी रह जाएगी,
भिक्षापात्र यहीं पडे रह जाएंगे ।
जैसे महल पडे रह जाएंगे,
वैसे ही भोपडियां भी पडी रह जाएंगी,
सब यहीं पडा रह जाएगा ।
कुछ ऐसा कमाओ जो मौत के पार
तुम्हारे साथ जा सके ।

~ओशो
अनंत के यात्री

Kewal Krishan Sharma and 31 others

32

10

3

**Devraaz Patel** · [Follow](#)

4d ·

100.....काश

Get the best experience on the app

Get

**ओशो**  **जीवन प्रेम मृत्यु**Dharam Rai · 4h · 

ओशो प्रेम नमन।



8



8



Get the best experience on the app

Get

मंदिरों में तुम उन मूर्तियों का
ध्यान कर रहे हो जिनको तुमने
ही बनाया है उसका ध्यान कब
करोगे जिसने तुम्हे बनाया है।



68

13 shares



Like



Comment



Send



Share

**Shashi Shubhangee**

9h · 🌐

मृत्युकाल की सब सामग्री तैयार है, कफन भी तैयार है, नया नहीं बनाना पड़ेगा, उठाने वाले आदमी भी तैयार है, नये नहीं जन्मेंगे, जलाने की जगह भी तैयार है, नयी नहीं लेनी पड़ेगी, जलाने के लिये लकड़ी भी तैयार है, नये पेड नहीं लगाने पड़ेंगे केवल श्वास बन्द होने की देर है, श्वास बन्द होते ही यह सब सामग्री जुट जायेंगी, चेत करो, यह संसार सदा रहने के लिये नहीं है, यहाँ केवल मरने ही मरने वाले रहते है। फिर भी निश्चिन्त कैसे बैठे हो कुछ सिमरन भजन कर लो भाई, कुछ भी निश्चित नहीं है पर मरेंगे यह निश्चित है।



**मलमल धोए शरीर को धूले न
मन का मैल नहाए गंगा गोमती
रहे.. बैल के बैल..**



खिड़की खोलते ही
प्रकाश स्वतः अंदर आ जाता है,
लाना या बुलाना नहीं पड़ता.

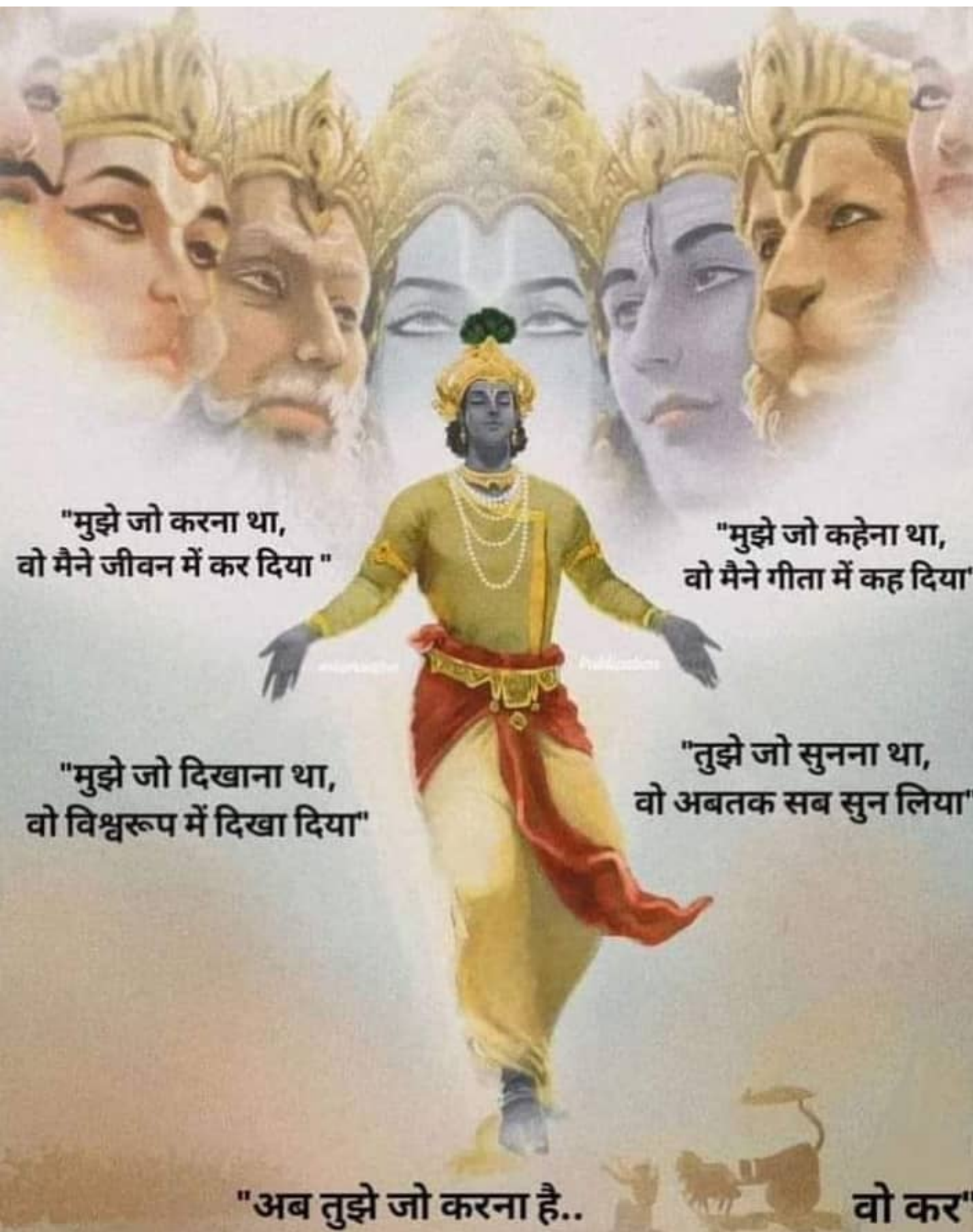


उसी तरह



भगवान का ध्यान करते ही
सदाचार स्वतः हृदय में आने लगते हैं,
उन्हें भी पकड़ कर लाना नहीं पड़ता.

—❀★卐ॐ卐★❀—



"मुझे जो करना था,
वो मैंने जीवन में कर दिया "

"मुझे जो कहेना था,
वो मैंने गीता में कह दिया"

"मुझे जो दिखाना था,
वो विश्वरूप में दिखा दिया"

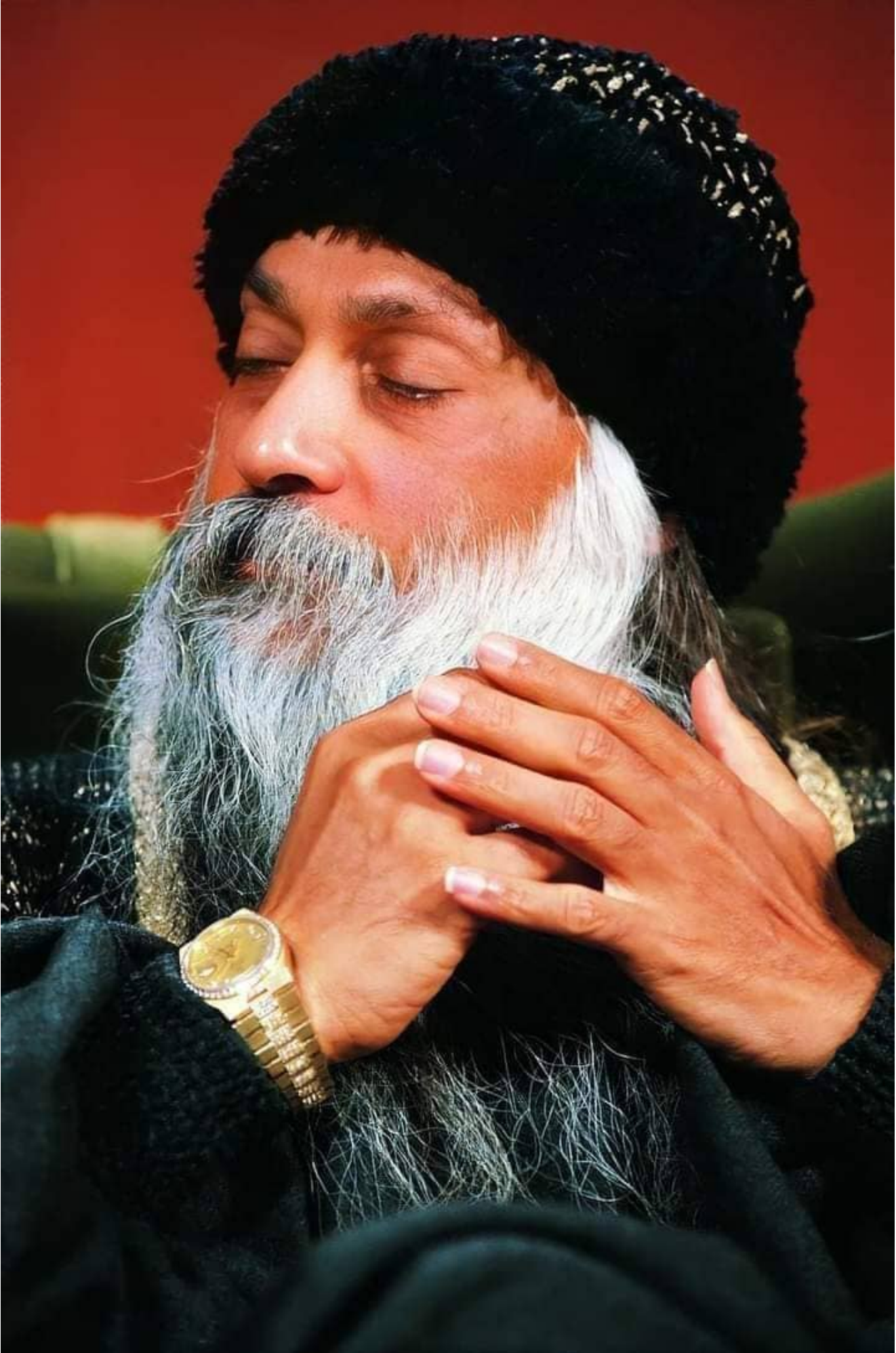
"तुझे जो सुनना था,
वो अबतक सब सुन लिया"

"अब तुझे जो करना है..

वो कर"

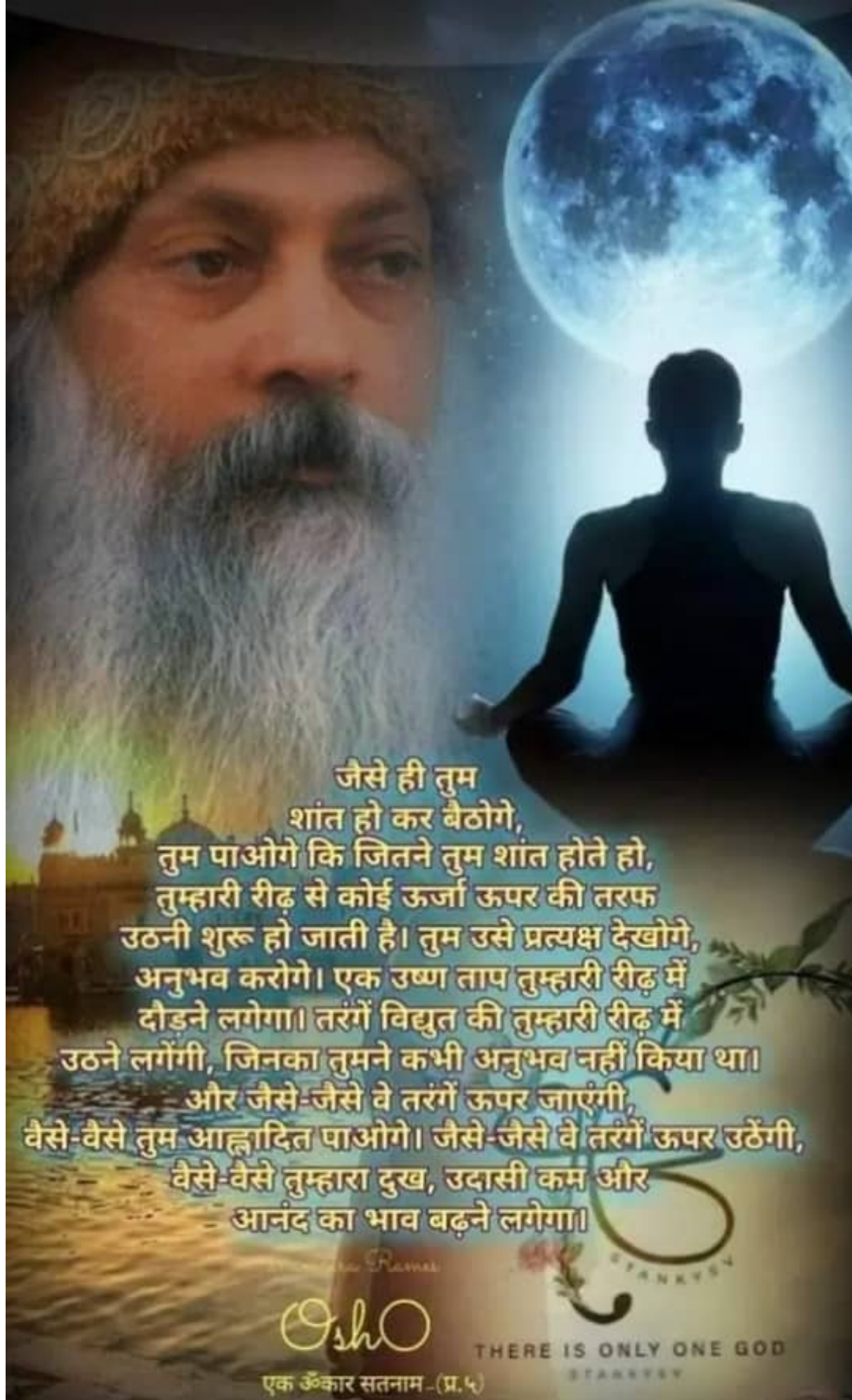
चुप रहिए या फिर
ऐसे शब्द बोलिए
जो मौन से ज्यादा कीमती हो।

- ओशो





मृत्यु से बड़ी घटना नहीं है,
पर मृत्यु एक ही बार घटेगी।
इसका मतलब यह नहीं है कि आप
और पहले नहीं मरे हैं। नहीं,
वह बहुत बार घटी है। लेकिन
एक जिंदगी में एक ही बार घटती है।
और एक जिंदगी में अगर आप
सोए—सोए जीए,
तो वह नींद में ही घट जाती है।
फिर दूसरी जिंदगी में
वह नयी होती है।
फिर एक ही बार घटती है।



जैसे ही तुम
शांत हो कर बैठोगे,
तुम पाओगे कि जितने तुम शांत होते हो,
तुम्हारी रीढ़ से कोई ऊर्जा ऊपर की तरफ
उठनी शुरू हो जाती है। तुम उसे प्रत्यक्ष देखोगे,
अनुभव करोगे। एक उष्ण ताप तुम्हारी रीढ़ में
दौड़ने लगेगा। तरंगें विद्युत की तुम्हारी रीढ़ में
उठने लगेंगी, जिनका तुमने कभी अनुभव नहीं किया था।

और जैसे-जैसे वे तरंगें ऊपर जाएंगी,
वैसे-वैसे तुम आह्लादित पाओगे। जैसे-जैसे वे तरंगें ऊपर उठेंगी,
वैसे-वैसे तुम्हारा दुख, उदासी कम और
आनंद का भाव बढ़ने लगेगा।

Osho

एक ॐकार सतनाम - (प्र. ५)

THERE IS ONLY ONE GOD

STANKY

त्रिनेत्र तुम्हारे भौतिक शरीर का हिस्सा नहीं है, वह तुम्हारे भौतिक शरीर का अंग नहीं है। तुम्हारी दो आंखों के बीच का स्थान तुम्हारे शरीर तक ही सीमित नहीं है। वह तो वह अनंत आकाश है जो तुम्हारे भीतर प्रवेश कर गया है। और एक बार यह आकाश जान लिया जाए तो तुम फिर वही व्यक्ति नहीं रहोगे। जिस क्षण तुमने इस अंतरस्थ आकाश को जान लिया उसी क्षण तुमने अमृत को जान लाया।

जब तुम पहली बार इस आकाश को जानोगे, तुम्हारा जीवन प्रामाणिक और प्रगाढ़ हो जाएगा; तब पहली बार तुम सच में जीवंत होओगे। तब किसी सुरक्षा की जरूरत नहीं रहेगी। तब कोई भय संभव नहीं है। अब सारा ब्रह्मांड तुम्हारा है, तुम ही ब्रह्मांड हो। जिन लोगों ने इस अंतरस्थ आकाश को जाना है उन्होंने ही आनंदमग्न होकर उदघोषणा की है: अहं ब्रह्मास्मि! मैं ही ब्रह्मांड हूं, मैं ही ब्रह्म हूँ।



तंत्र-सूत्र, 11, ओशो



👍❤️ Rahul Kumar Ojha and 33 others



Get the best experience on the app

Get

🍁 "त्रिनेत्र" क्या है? 🍁

🍁 अगर सिर के सभी द्वार बंद कर दिए जाएं तो तुम बाहर गति नहीं कर सकते, क्योंकि तुम सदा इन्हीं द्वारों से बाहर जाते हो। तब तुम भीतर थिर हो जाते हो। और थिर होना, एकाग्र होना इन दो आंखों, साधारण आंखों के बीच घटित होता है। चेतना इन दो आंखों के बीच के स्थान पर केंद्रित हो जाता है। उस स्थान को ही त्रिनेत्र कहते हैं।

इस स्थान में सब सम्मिलित है, सारा अस्तित्व समाया है। अगर तुम इस स्थान को अनुभव कर लो तो तुमने सब को अनुभव कर लिया। एक बार तुम्हें इन दो आंखों के बीच के आकाश की प्रतीति हो गई तो तुमने पूरे अस्तित्व को जान लिया, उसकी समग्रता को जान लिया। क्योंकि यह आंतरिक आकाश सर्वग्राही है, सर्वव्यापक है; कुछ भी उसके बाहर नहीं है।

ये दो आंखें तो सीमित ही देख सकती हैं; तीसरी आंख असीम को देखती है। ये दो आंखें तो पदार्थ को ही देख सकती हैं; तीसरी आंख अपदार्थ को, अध्यात्म को देखती है। इन दो आंखों से तुम कभी ऊर्जा की प्रतीति नहीं कर सकते, ऊर्जा को नहीं देख सकते, सिर्फ पदार्थ को देख सकते हो। लेकिन तीसरी आंख से स्वयं ऊर्जा देखी जाती है।

द्वारों का बंद किया जाना केंद्रित होने का उपाय है। क्योंकि एक बार जब चेतना के प्रभाव का बाहर जाना रूक जाता है, वह अपने उदगम पर थिर हो जाता है। और चेतना का यह उदगम ही त्रिनेत्र है। अगर तुम इस त्रिनेत्र पर केंद्रित हो जाओ तो बहुत चीजें घटीत होती हैं। पहली चीज तो यह पता चलता है कि सारा संसार तुम्हारे भीतर है।

स्वामी राम कहा करते थे कि सूर्य मेरे भीतर चलता है, तारे मेरे भीतर चलता हैं, चांद मेरे भीतर उदित होता है; सारा ब्रह्मांड मेरे भीतर है। जब उन्होंने पहली बार यह कहा तो उनके शिष्यों ने सोचा कि वे पागल हो गए हैं। रामतीर्थ के भीतर सितारे कैसे हो सकते हैं?

त्रिनेत्र तुम्हारे भौतिक शरीर का हिस्सा नहीं है, वह तुम्हारे भौतिक शरीर का अंग नहीं है। तुम्हारी दो आंखों के बीच का स्थान तुम्हारे शरीर तक ही सीमित नहीं है। वह तो वह अनंत आकाश है जो तुम्हारे भीतर प्रवेश कर गया है। और एक बार यह आकाश जान लिया जाए तो तूम फिर वही



Get the best experience on the app

Get



← ओशो का हिन्दी साहित्य



करा दिया है और उस जादूगार ने दस्तखत किए।

और वे ब्रह्मयोगी दस मिनट के बाद वापस जिंदा हो गए। श्वास फिर चलने लगी, हृदय फिर धड़कने लगा, खून फिर बहने लगा, नाड़ी फिर वापस लौट आई। और उन्होंने कहा, फिर सर्टिफिकेट लिखें कि इस आदमी के बाबत क्या खयाल है! उन डाक्टरों ने कहा, हम बड़ी मुश्किल में पड़ गए। आप हम पर कोई अदालत में मुकदमा तो न चलाएंगे? क्योंकि मेडिकल साइंस जो कह सकती थी, हमने कह दिया। तो ब्रह्मयोगी ने कहा, मुझे यह भी लिखकर दें कि अब तक जितने लोगों को आपने मरने के सर्टिफिकेट दिए हैं, वे संदिग्ध हो गए हैं।

असल में जिसे हम मृत्यु कह रहे हैं, वह जीवन का शरीर से सरक जाना है। जैसे कोई दीया अपनी किरणों को सिकोड़ ले वापस, ऐसे जीवन का फैलाव वापस विकुड़ जाता है, बीज में वापस लौट जाता है। फिर नई यात्रा पर निकल जाता है। लेकिन बाहर से इस सिकुड़ने को हम मृत्यु समझ लेते हैं।

बटन दबा दी हमने, बिजली का बल्व जलता था, किरणें समाप्त हो गईं। बल्व से अंधकार झरने लगा। क्या बिजली मर गई? सिर्फ अभिव्यक्ति खो गई। सिर्फ मैनिफेस्टेशन बंद हो गया। फिर बटन दबाते हैं, फिर किरणें बिजली की वापस बहने लगीं। क्या बिजली पुनरुज्जीवित हो गई? क्योंकि जो मरी नहीं थी, उसको पुनरुज्जीवित कहने का कोई अर्थ नहीं है। बिजली पूरे समय वहीं थी, सिर्फ अभिव्यक्ति खो गई थी।

जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह प्रकट का फिर पुनः अप्रकट हो जाना है। जिसे हम जन्म कहते हैं, वह अप्रकट का पुनः प्रकट हो जाना है।

कृष्ण कहते हैं, न ही शरीर को मारने से आत्मा मरती है, न ही शरीर को बचाने से आत्मा बचती है। आत्मा न मरती है, न बचती है। असल में जो मरने और बचने के पार है, वही आत्मा है, वही अस्तित्व है।

ओशो; गीता-दर्शन--भाग एक



Get the best experience on the app

Get



Write something...



Photo

From notifications

**Sulaxna Dixit Rawat**

...

3h · 🌐

दक्षिण में एक योगी थे कुछ वर्षों पहले, ब्रह्मयोगी। उन्होंने आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी में, और कलकत्ता और रंगन युनिवर्सिटी में--तीन जगह मरने का प्रयोग करके दिखाया। वह बहुत कीमती प्रयोग था। वह दस मिनट के लिए मर जाते थे।

जब आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी में उनका प्रयोग हुआ तो डाक्टर्स मौजूद थे। और उन्होंने कहा कि इस दस मिनट में आप मेरी जांच-पड़ताल करके लिख दें सर्टिफिकेट कि यह आदमी मर गया कि जिंदा है। फिर उनकी श्वास खो गई। फिर उनकी नाड़ी बंद हो गई। फिर हृदय ने धड़कना बंद कर दिया। फिर खून की चाल सब शांत हो गई। और दस डाक्टरों ने--आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के मेडिकल कालेज के--सर्टिफिकेट लिखा कि यह आदमी मर गया है। और मरने के सारे सिम्पम्स इस आदमी ने पूरे कर दिए हैं। और दस आदमियों ने दस्तखत किए।

और वे ब्रह्मयोगी दस मिनट के बाद वापस जिंदा हो गए। श्वास फिर चलने लगी, हृदय फिर धड़कने लगा, खून फिर बहने लगा, नाड़ी फिर वापस लौट आई। और उन्होंने कहा, फिर सर्टिफिकेट लिखें कि इस आदमी के बाबत क्या खयाल है! उन डाक्टरों ने कहा, हम बड़ी मुश्किल में पड़ गए। आप हम पर कोई अदालत में मुकदमा तो न चलाएंगे? क्योंकि मेडिकल साइंस जो कह सकती थी, हमने कह दिया। तो ब्रह्मयोगी ने कहा, मुझे यह भी लिखकर दें कि अब तक जितने लोगों को आपने मरने के सर्टिफिकेट दिए हैं, वे संदिग्ध हो गए हैं।

असल में जिसे हम मृत्यु कह रहे हैं, वह जीवन का शरीर से सरक जाना है। जैसे कोई दीया अपनी किरणों को सिकोड़ ले वापस, ऐसे जीवन का फैलाव वापस क्विउडु जाता है, बीज में वापस लौट जाता है। फिर नई यात्रा पर निकल जाता है। लेकिन बाहर से इस सिकुड़ने को हम मृत्यु समझ लेते हैं।



Get the best experience on the app

Get

**Reena Rani**

3h · 🧑🏻

**ओशो सहज-जीवन**

Padmini Peer · 1d · 🌐

ओशो

Raj Malhotra

"नानक" कहते हैं-सब कुछ उस पर छोड़ दो,
कोई प्रार्थना नहीं, कोई मंत्र नहीं, कोई तपस्या नहीं,
कोई ध्यान नहीं, कोई संकल्प नहीं,
एक ही साधना है-उसकी इच्छा।
जैसे ही यह विचार आपके भीतर गहराई से पोषित
हो जाता है कि सब कुछ उसके आदेश पर होता है,
एक गहन शांति, एक हल्की बौछार आपके अंदर
सारा तनाव, सारी चिंता दूर कर देती है।।



Umesh Ga likes this

**Artprice**

Sponsored

The World Leader in Art Market information with
700,000 artists and 30 million auction results and
indices since 1700



Get the best experience on the app

Get



ओशो

Raj Malhotra

मुश्किल ये नहीं कि कोई गैर
तुम्हें नहीं पहचानता,
मुश्किल तो ये है कि तुम स्वयं
को नहीं पहचानते!!

१० सहें नहीं, स्वीकारें

बचपन से ही हमें सहना सिखाया जाता है। सहने को एक अच्छा गुण कहा जाता है। बरसों से यही दोहराया जाता रहा है कि यदि हर कोई सहनशील हो जाए तो न केवल व्यक्तिगत तौर पर बल्कि वैश्विक तौर पर धरती पर शांति हो सकती है, लेकिन आज परिणाम सामने है। ओशो बोध के पक्ष में हैं।

११ जीवन ही है प्रभु

ओशो कहते हैं कि आदमी बहुत अजीब है, वह इंसान की बनाई चीजों को तो मानता व पूजता है लेकिन स्वयं को, ईश्वर की बनाई सृष्टि और उसमें मौजूद प्रकृति की तरफ कभी भी आंख उठाकर नहीं देखता। सच यह है कि परमात्मा को मानने का मतलब ही हर चीज के लिए 'हां', पूर्ण स्वीकार भाव और यह जन्म जीवन उसका जीता-जागता सबूत है।



 Dhairyashil Nalawaday and 28 others

 29

 4

 8



Get the best experience on the app

Get



18



10

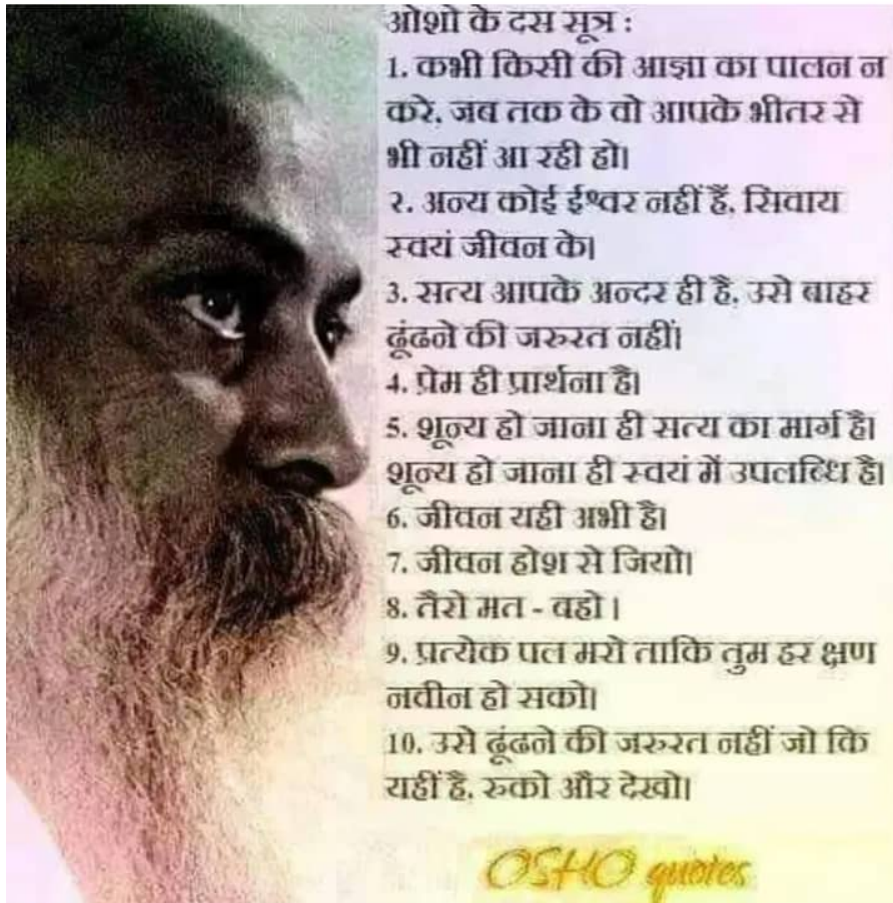


1



Sanjeev Mishra

1d · 🌐



👍❤ Shivcon Vatica and 97 others



98



8



9



Maitreyi Nivi

17h · 🌐



Get the best experience on the app

Get

**Osho The Master**

Ma Prem Parvani · 6h · 🌐



👍❤️😂 Jagabandhu Nath and 6 others

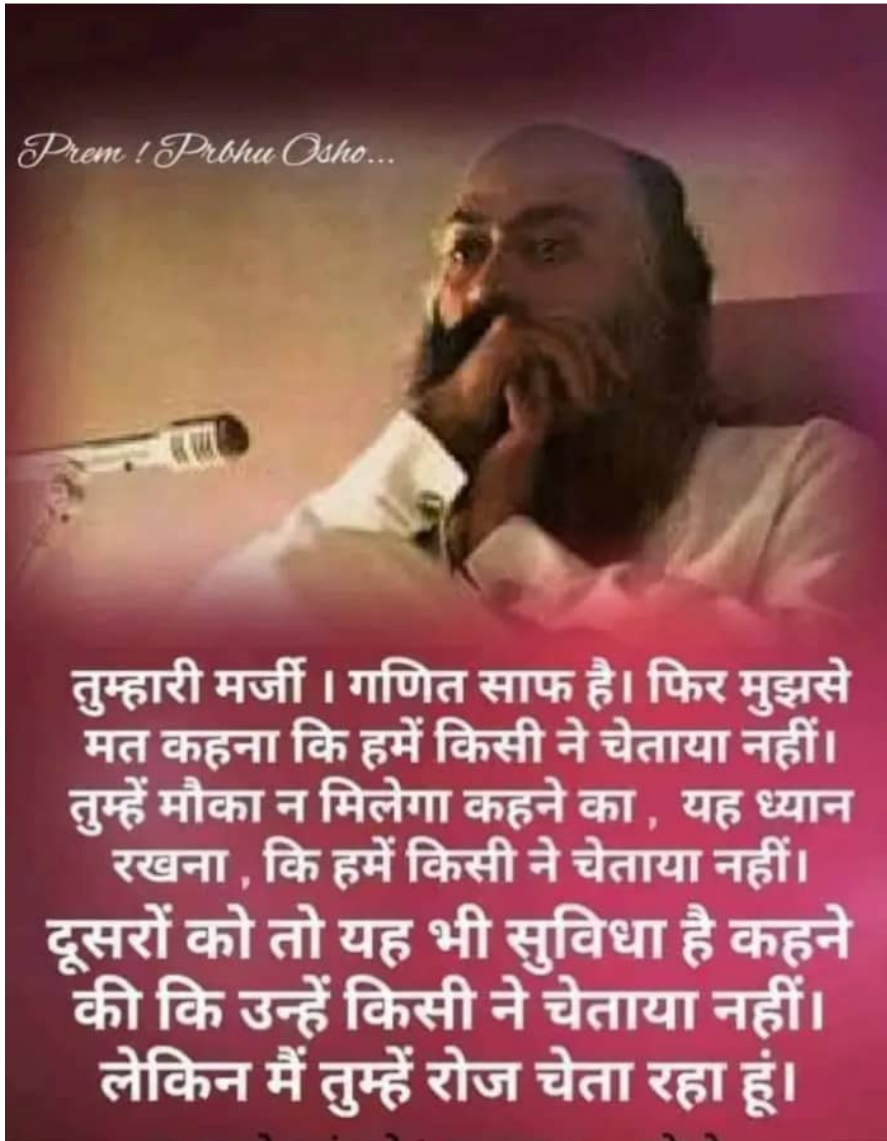
👍 7

**John Elia - Hindi**

Get the best experience on the app

Get

जिस दिन तुम्हें सब ठीक होते हुए भी असार का बोध होता है, उस दिन तुम बुद्धपुरुषों के पास जाते हो पूछने, कि ऐसे सब ठीक है-धन है, पत्नी है, बच्चा है, मकान है, सब ठीक है-कहीं कोई अड़चन न...see more



👍 Naye bharat ke khoj and 84 others

👍 85

💬 6

➦ 13



गीता प्रेस गोरखपुर के संतों की मार्मिक (रहस्यमयी) बाते। ...

Shri Vipul Dhuliya · 1d · 🌐

गीता प्रेस मुर्छित अवस्था से निकल कर आज स्वयं के पैर पर फिर से खड़ा हो गया 🔥 7.5 करोड़ श्रीमद्भागवत और 7 करोड़



Get the best experience on the app

Get

**Osho The Master**

Ma Prem Parvani · 6h · 🧑🏻



👍 2



2



Get the best experience on the app

Get



1



Album Osho

**Swami Yogesh Nishabad**

1h · 🌐



ओशो कैप लेते हुए।

#early #time #period #black #and #white #ooo
#memoirs

May 17 · 🌐

Osho's first meditation camp was held near Muchala Mahavir Mandir in Ghanerao, near Ranakpur from 3rd June to 8th June 1964. This place is 130 Kms from Udaipur, Rajasthan (India). This camp was held in the open fields.

The tree under which Osho sat, stands magnificently.

<https://www.youtube.com/watch?v=jq19QintMXY&t=54s>



11



11

**Osho The Master**

Ma Prem Parvani · 6h · 👤



Get the best experience on the app

Get



**Osho Sahaj Anand**

23h · 🌐

नानक ने सिर्फ गाया। और गा कर ही
पा लिया। लेकिन गाया उन्होंने इतने
पूरे प्राण से कि गीत ही ध्यान हो गया,
गीत ही योग बन गया, गीत ही तप हो गया



जब भी कोई समग्र प्राण से
किसी भी कृत्य को करता है,
वही कृत्य मार्ग बन जाता है।

ओशो

Kushal Sharma and 12 others



Get the best experience on the app

Get



m.facebook.com

**Anish Yadav**

7h · 🧑



Anish Yadav and 1 other



2



1

**Sanjeev Mishra**

3h · 🌐

**पैसे और ताक़त को सभ्यता का**

Get the best experience on the app

Get





" इक साधे सब सधे " – वही एक ध्यान ।
भीतर निर्विचार होने लगे ,
भीतर धीरे-धीरे साक्षी भाव को आने दो ,
भीतर देखो न तुम देह हो, न तुम मन हो, न तुम विचार , न वासना
और धीरे-धीरे एक बात तुम्हारे सामने साफ हो जाए ;
कि तुम सिर्फ साक्षी हो – कि सन्यास फलित हुआ ।
सन्यास उस दिन नहीं होता , जिस दिन तुम सन्यास लेते हो !
उस दिन तो केवल औपचारिक रुप से शुरुआत होती है ?
सन्यास उस दिन फलित होता है ,
जिस दिन तुम साक्षी का अनुभव कर लेते हो ।

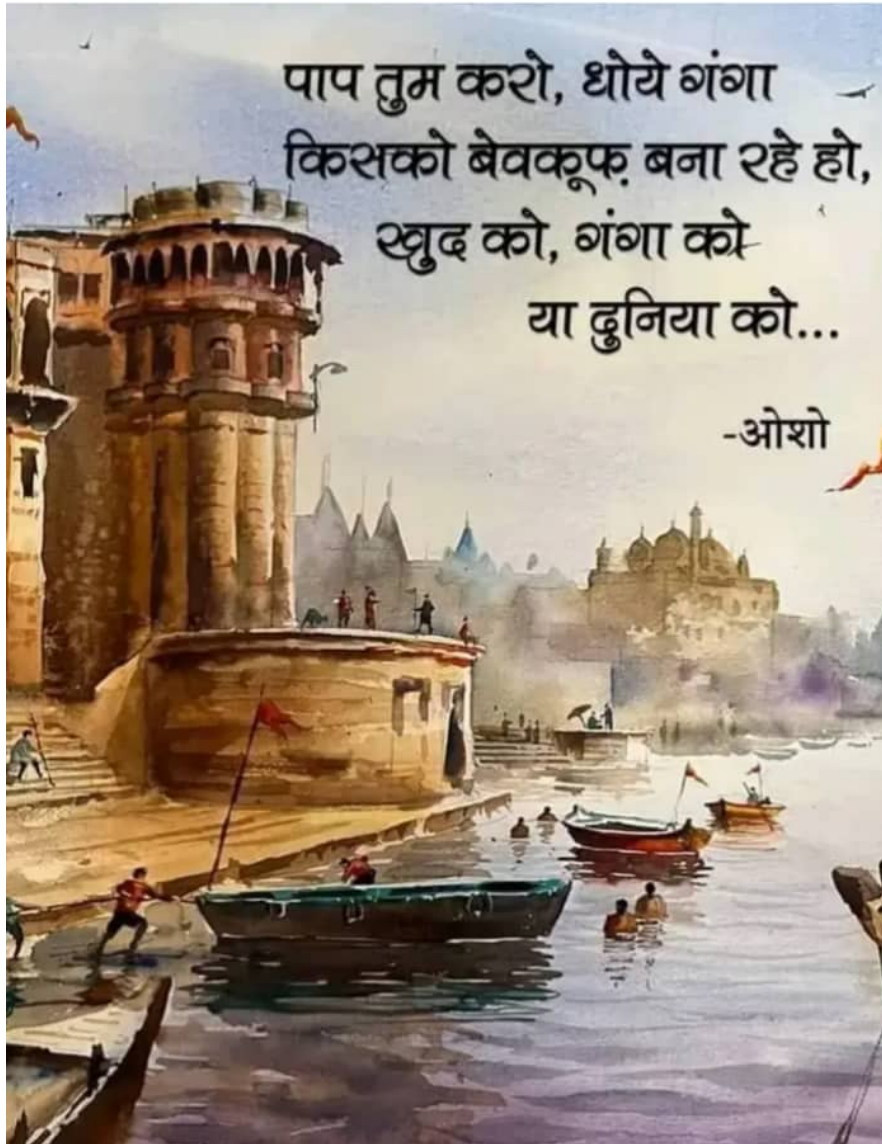
**** ओशो ****

झरत दसहुं दिस मोती - दसवां प्रवचन
सार-असार की कसौटी ध्यान है से संकलित ।



Get the best experience on the app

Get

 17 17 1**Ajit Keshri** updated his cover photo.2h · **Vijay Raval**22h · 

Get the best experience on the app

Get



6



1

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 7h ·



हरि ॐ 🙏



17



17



2



1

**ब्रह्मांड ज्ञान**

28m ·



यह एक ऐसी प्राचीन किताब की पन्ना है जिसके ऊपर लिखे हुए लिपि को साइंस के इतना डेवलपमेंट के बाद भी इसे कभी नहीं पढ़ा जा सका!?!...see more



Get the best experience on the app

Get





ओशो-रूमी

20h · 🌐



11



11



2



2



Osho The Master

Ma Prem Parvani · 5h · 👥



Get the best experience on the app

Get



**Osho Uttarakhand**

1d · 🌐



ज़रूरत है.. कुछ नए नफ़रत
करने वालों की पुराने तो..
अब मुझे चाहने लगे हैं !

Ashok Thapa and 54 others



55



2



9

**Edu Spark SWATI**

2h · 🌐



आंख फड़कना

#reels #viral #trending #trendingreels

आंख फड़कना

Get the best experience on the app

Get



'O'
S
H
O
'A'

प्रश्न - वैज्ञानिक पूरी पृथ्वी को मरघट क्यों कहते हैं..?



4.5K



👍 Rahul Kumar Ojha and 146 others

👍 147

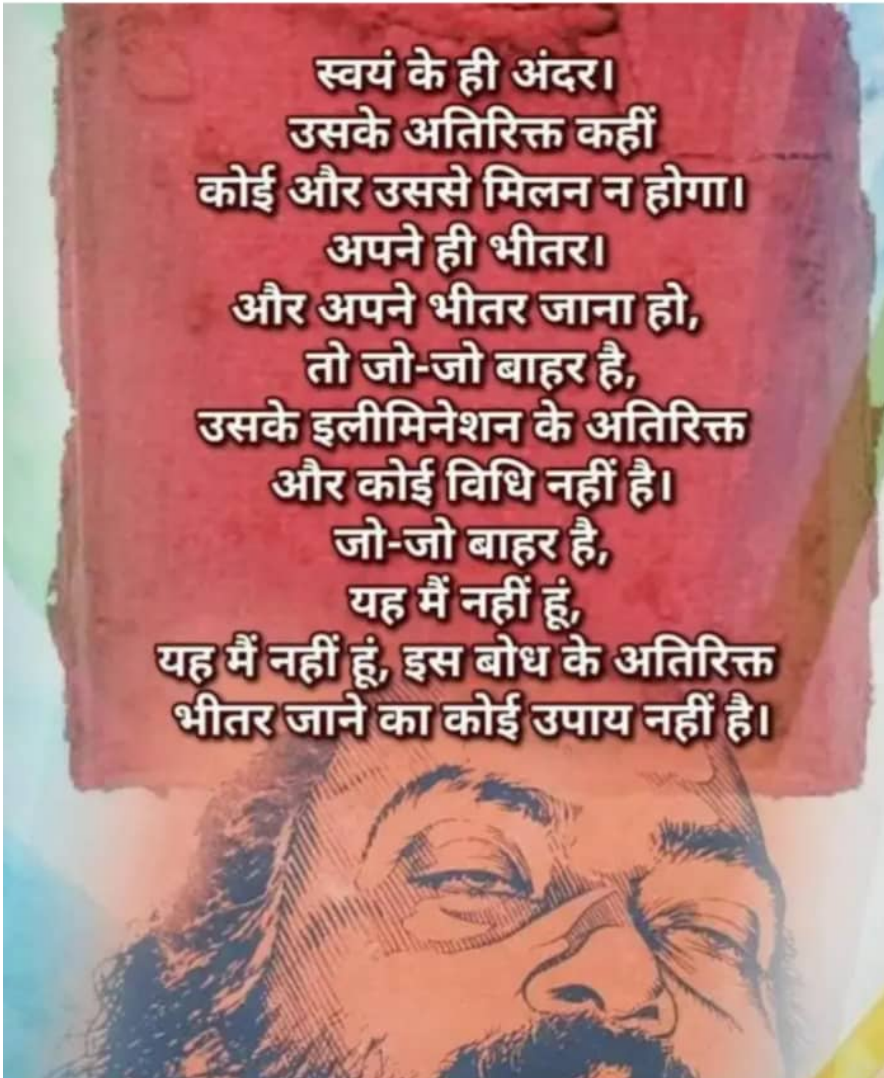
💬 12

➦ 4



Ganesh Poddar

19h · 🌐



स्वयं के ही अंदर।
उसके अतिरिक्त कहीं
कोई और उससे मिलन न होगा।
अपने ही भीतर।
और अपने भीतर जाना हो,
तो जो-जो बाहर है,
उसके इलीमिनेशन के अतिरिक्त
और कोई विधि नहीं है।
जो-जो बाहर है,
यह मैं नहीं हूँ,
यह मैं नहीं हूँ, इस बोध के अतिरिक्त
भीतर जाने का कोई उपाय नहीं है।

👍 Rakesh Monga and 12 others

👍 13

💬 2

➦ 3



Sanjeev Mishra

15h · 🌐



**Sanjeev Mishra**

19h · 🌐

...

बोकोजू झेन फकीर हुआ; वह जब अपने गुरु के पास था, छोटा बच्चा था, उसका काम था गुरु का कमरा साफ करना। कमरा साफ कर रहा था कि गुरु के पास एक बड़ी बहुमूल्य मूर्ति थी, बड़ी बहुमूल्य मूर्ति थी बुद्ध की, वह गिर गई। वह चकनाचूर हो गई। वह बहुत घबड़ाया।

गुरु को उस मूर्ति से बड़ा लगाव है। वह रोज दो फूल उस मूर्ति के चरणों में चढ़ा जाता है। और सदियों पुरानी मूर्ति है। गुरु के गुरु के पास थी, और गुरु के गुरु के पास थी। और पीढ़ी दर पीढ़ी वसीयत की तरह मिली है। यह क्या हो गया?

वह घबड़ा ही रहा था कि तभी गुरु कमरे में आ गया। तो उसने मूर्ति अपने दोनों हाथों के पीछे छिपा ली और उसने गुरु से कहा, एक बात पूछनी है--- जब कोई आदमी मरता है तो क्यों मरता है? तो उसके गुरु ने कहा---उसका समय आ गया। तो उसने कहा कि यह आपकी मूर्ति का समय आ गया था।

गुरु हंसा और उसने कहा, जो तू मुझे समझा रहा है, अपने जीवन में याद रखना। क्योंकि तेरे जीवन में बहुत मूर्तियों का समय आएगा। जब टूटे तो याद रखना, समय आ गया था।

और बोकोजू कहता है, वही बात उसके जीवन को बदलनेवाली बन गई।

जो चीज टूट गई, उसने सोचा, समय आ गया था।

जो साथी छूट गए। उसने सोचा, समय आ गया था।

जो प्रियजन चल बसे, उसने सोचा, समय आ गया था। कोई नाराज हो गया तो उसने समझा, समय आ गया था।

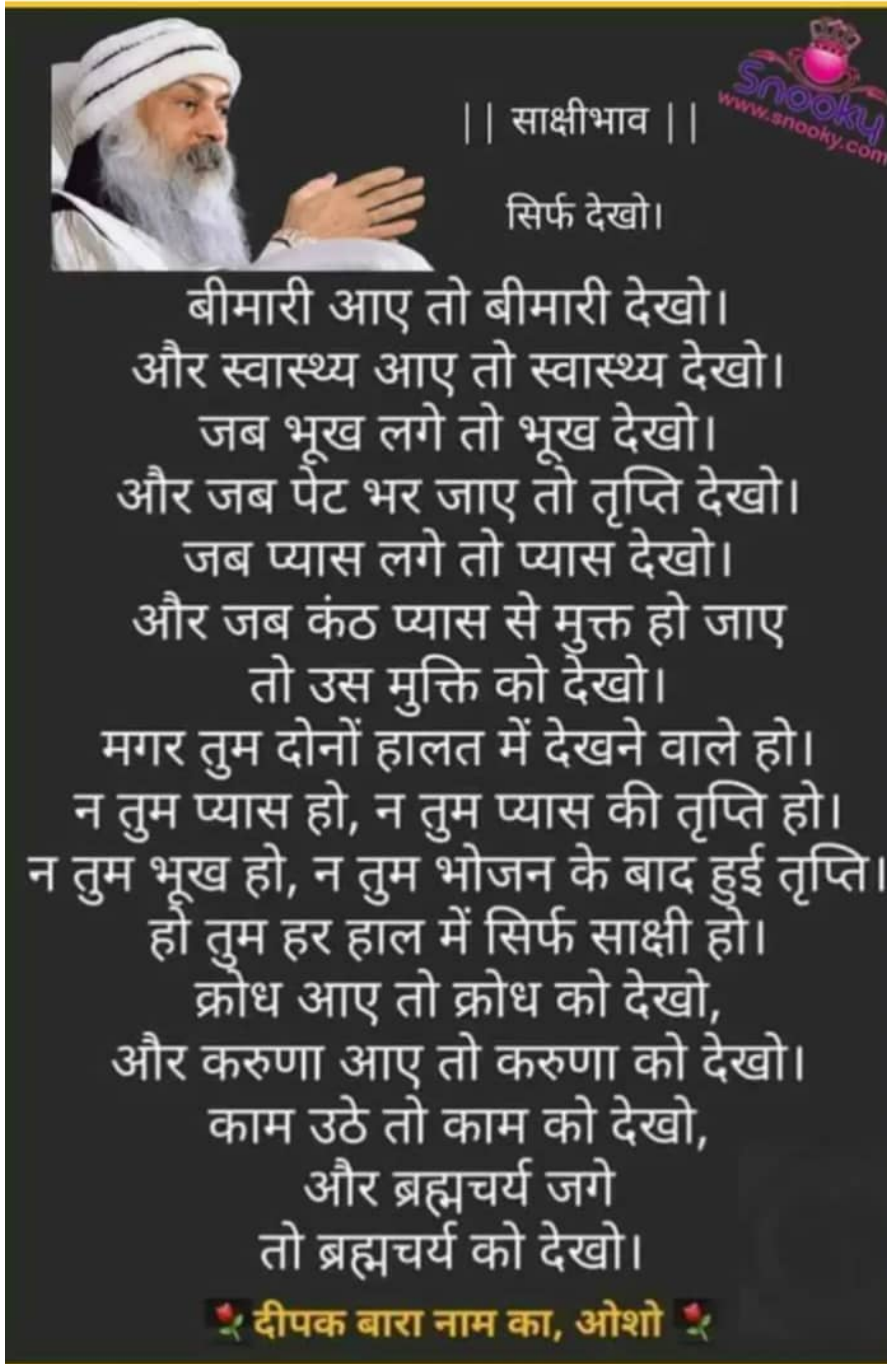
बोकोजू ने कहा कि यह बात मेरे लिए सूत्र बन गई। यह अहर्निश मेरे मन में रहने लगा कि वही होता है, जिसका समय आ गया था। धीरे-धीरे-धीरे कोई भी चीज फिर शोकाकुल न करती।

ओशो



**Osho The Master**

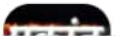
Ma Prem Parvani · 8m ·



👍 श्रीसामिप्रेमवेदात and 3 others



4



...



m.facebook.com



- 🌞 OG 🌞

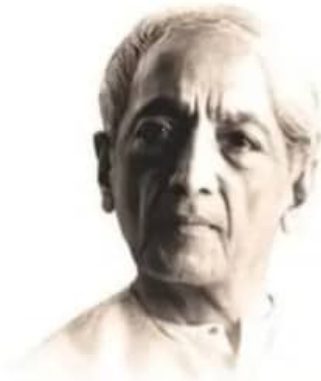
**Ma Prem Asima**

2d · 🌐



एक हाथी m.और एक कुत्ता m.एक ही समय में गर्भवती हुए। तीन महीने बाद कुत्ते ने छह पिल्लों को जन्म दिया। छह महीने बाद कुत्ता फिर से गर्भवती हुआ और नौ महीने बाद उसने एक दर्जन पिल्लों को जन्म दिया। यह सिलसिला जारी रहा। अठारहवें महीने में कुत्ते ने हाथी से पूछा, "क्या तुम सच में गर्भवती हो? हम एक ही दिन गर्भवती हुए, मैंने तीन बार एक दर्जन पिल्लों को जन्म दिया और वे अब बड़े कुत्ते बन गए हैं, फिर भी तुम अभी भी गर्भवती हो। क्या हो रहा है?" हाथी ने जवाब दिया, "मैं तुम्हें कुछ समझाना चाहता हूँ। मैं जो ले जा रहा हूँ वह पिल्ला नहीं बल्कि एक हाथी है। मैं दो साल में केवल एक को जन्म देता हूँ। जब मेरा बच्चा ज़मीन पर गिरता है, तो धरती उसे महसूस करती है। जब मेरा बच्चा सड़क पार करता है, तो मनुष्य रुक जाते हैं और प्रशंसा में देखते हैं, मैं जो ले जा रहा हूँ वह ध्यान आकर्षित करता है। इसलिए मैं जो ले जा रहा हूँ वह शक्तिशाली और महान है।" जब आप दूसरों को उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर प्राप्त करते हुए देखते हैं तो विश्वास न खोएँ। दूसरों की गवाही से ईर्ष्या न करें। अगर आपको अपना आशीर्वाद नहीं मिला है, तो निराश न हों। अपने आप से कहें "मेरा समय आ रहा है, और जब यह धरती की सतह पर आएगा, तो लोग प्रशंसा में झुक जाएँगे। सब कुछ समय पर होता है।

Ma Prem Asima



**Why do we live this
meaningless life,
working for forty years,
breeding a few children,
educating them in absurd ways,
and then dying?**

~ J Krishnamurti

जो सत्य स्वयं नहीं जाना है,

वह सत्य नहीं हो सकता।

मेरा जाना हुआ मेरा है।

मैं तुम्हें कहूं, तुम सुन भी लो, शब्द से,

बुद्धि से समझ भी लो

फिर भी तुम्हारे लिए सत्य नहीं होगा।

तुम्हारे लिए तो शब्द मात्र होंगे।

ओशो

पद घुंघरू बांध





1



1



1

**Sanjeev Mishra**

1d · 🌐

...

ये एक बात समझने में रात हो गई है
मैं उस से जीत गया हूँ कि मात हो गई है

तहज़ीब हाफ़ी



126



126



11



5

**O'SHO FRIENDS (ओ'शो मित्र)**

Sulaxna Dixit Rawat · 1d · 🌐

...





कविताएँ और साहित्य

126

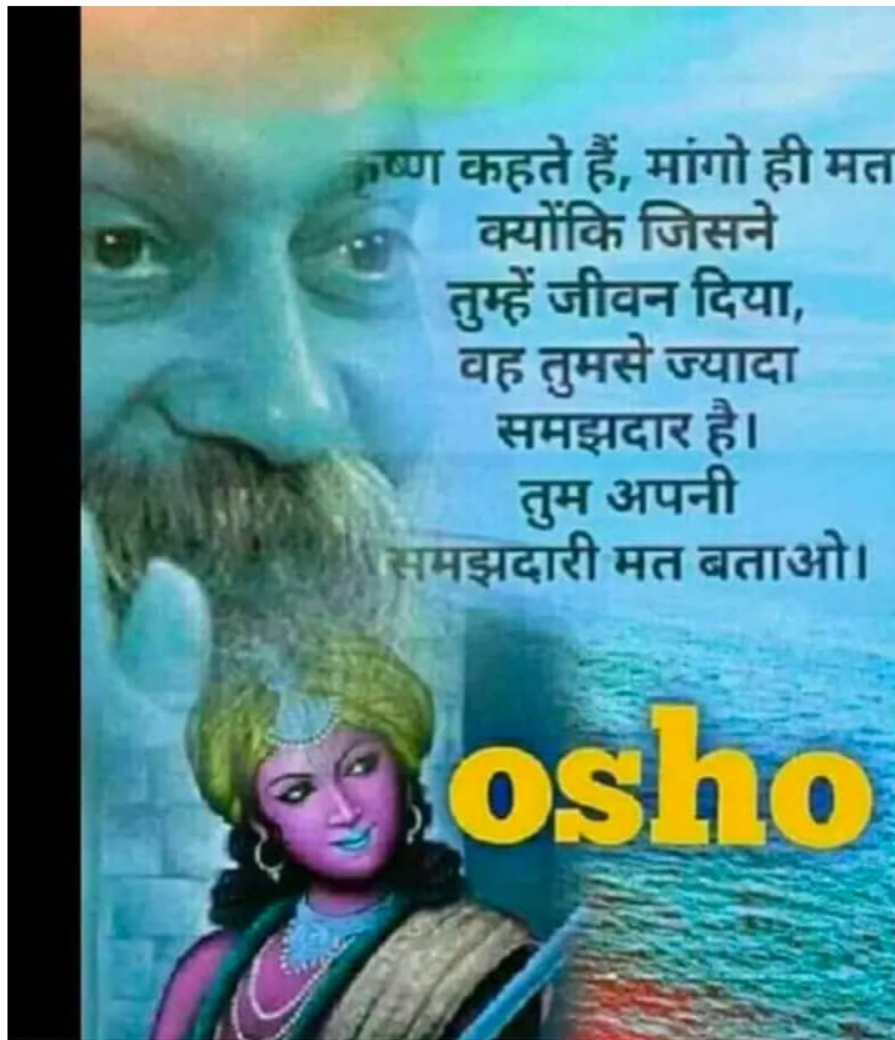
126

11

5

**O'SHO FRIENDS (ओ'शो मित्र)**

Sulaxna Dixit Rawat · 1d ·



22

22

4

4



रिश्तो की अहमियत



Pinki Shakya · 1d ·





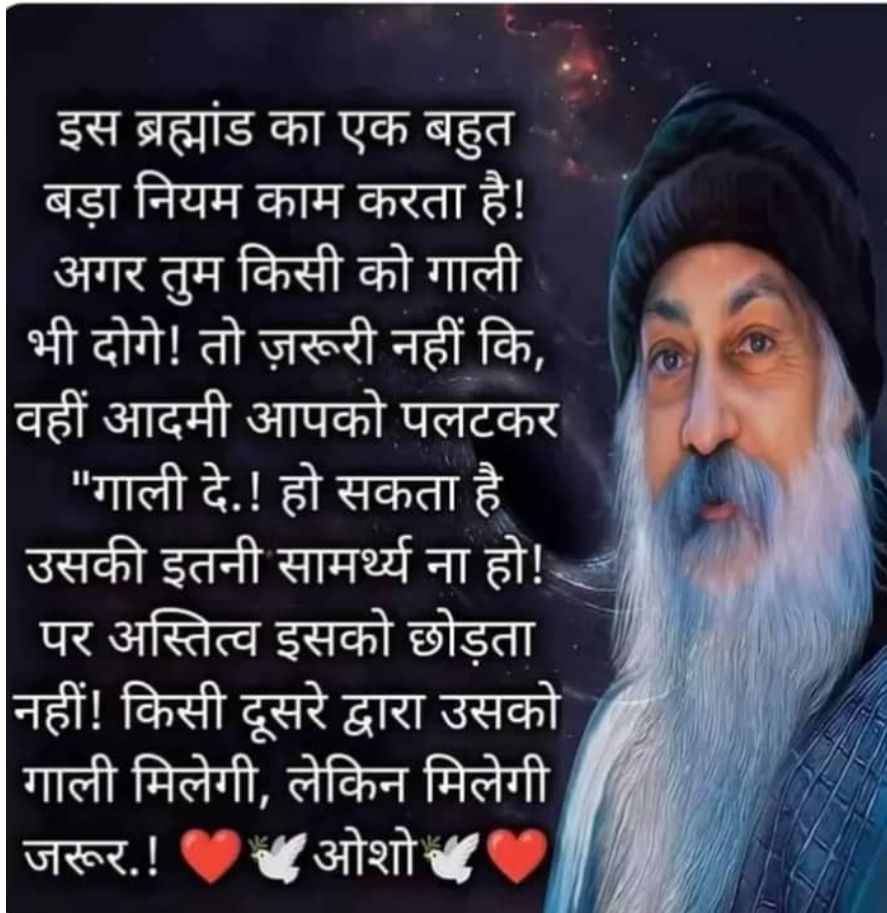
Naye bharat ke khoj

36m · 🌐



दि इंपासिबल डिज़ायर

*मैं गाली दूं और दूसरा मुझे आदर दे जाये, ऐसी ही असम्भ...see more



👍 41

👍 41

💬 4

🔗 12



एकांत

Albela Gaurav Arora · 1d · 👤



ग्रुप में जिस लडकी के चेहरे पर तिल होगा

**ओशो अंतिम मुक्ति का मार्ग**

Dharam Rai · 1h · 🌐



ओशो प्रेम नमन।



बाहर के जगत में तो हर चीज का कार्य-कारण है।
भीतर के जगत में सभी कुछ अकारण है।
जिस दिन तुम अकारण में प्रवेश करोगें, उसी दिन
तुम परमात्मा में प्रवेश करोगें!!!



9



9



3

**Ashwin Makwana**

3h · 🌐

**ब्रह्मपाल नाला**

9h · 🌐





15



1

**Osho Harpreet**

2d · 🌐



ज्ञानी वही है जिसने जागकर देखा
कि पाने को यहाँ कुछ भी नहीं है।
जिसे हम पाने चले हैं वह पाया हुआ है।
फिर आश्रय की भी क्या खोज!
फिर आदमी निराश्रय,
निरालंब होने को तत्पर हो जाता है।
उस निरालंब दशा का नाम संन्यास है।
ओशो अष्टावक्र: महागीता



Rakesh Monga and 87 others



88



9



48

**इन दिनों मेरी किताब**

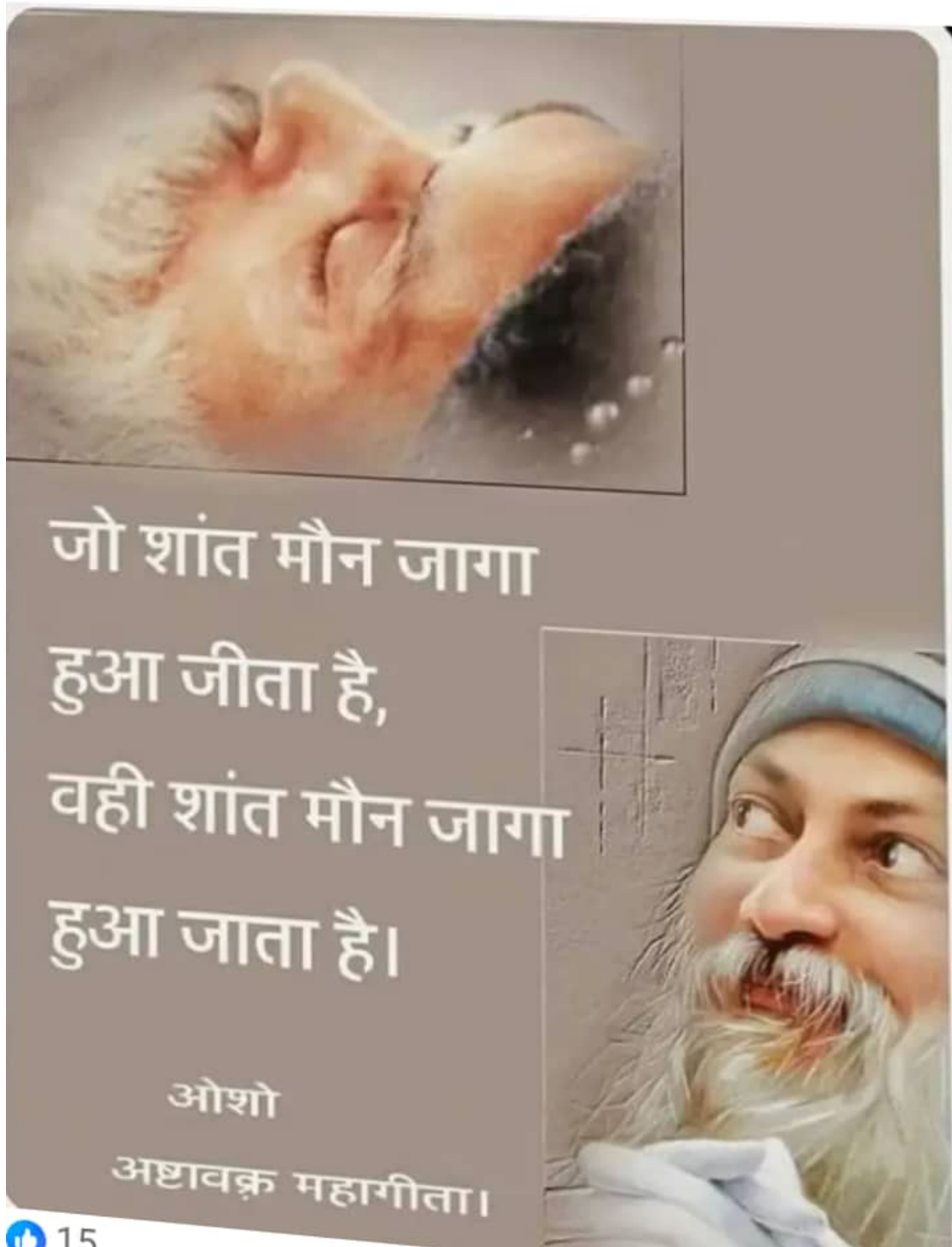
Awanish Kumar Sonu · 44m · 🌐



 49 49 4 1**ओशो अंतिम मुक्ति का मार्ग**Dharam Rai · 1h · 

...

ओशो प्रेम नमन।

 15

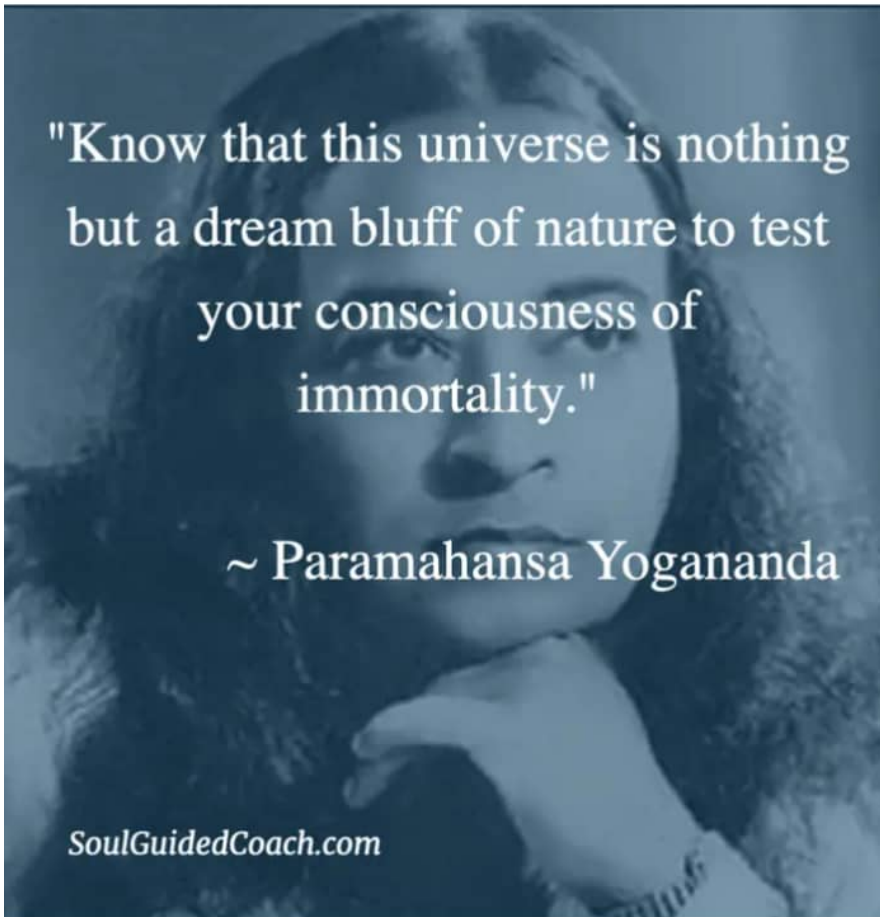


1



Paramahansa Yogananda's Teachings

Sai Sapna Anmolsingh · 1h ·



34



34



1



6



Shree Speaks

17h ·



12

12

9

**Rekhta**

Vinod Kumar · 3h ·

वक्त तुम्हारे भी हुस्न पर झुर्रियाँ डाल देगा एक रोज़
तुम अकेले नहीं हो जो खुद को चाँद समझा करते हो

-nnknnnn



34

34

27

**OSHO Hindi Speech**

Suminder Singh Dhanjal · 9h ·





4

**Reena Rani**

2h • 👥

**Shanta Chauhan** updated her profile picture.

2d • 🌐

चाह नहीं मेरी की
पूरा पथ जान सकूं
देना प्रकाश इतना देवा
की अगला हर कदम पहचान सकूं 🙏🙏🙏



1



1

**Osho The Master**

...



**बेटा इस रहस्यमई चित्र को
इग्नोर किया तो तेरा खेल खत्म**





OSHO's Aura

एक दूसरे जड़ काटी जाती है।
यहां दुश्मन तो दुश्मन है ही
यहां मित्र भी दुश्मन है।



**कबीर साहेब जी महाराज**

Shyam Rohilla · 17h ·

**आत्म ज्ञान बिना नर भटके**

Kamal Lilhare · 1d ·

साधो यह मुरदों का गाँव ॥

पीर मरे पैगम्बर मर गये, मर गये जिन्दा योगी ।
राजा मरीहे, परजा मरिहैं, मरिहैं वैद्य औ रोगी ॥१॥

चन्दो मरिहैं, सुरजो मरिहैं, मरिहैं धरनि आकाशा ।
चौदह भुवन के चौधरि मरिहैं, इनहूँ की क्या आशा ॥२॥

नौ भी मर गये दस भी मर गये, मर गये सहस अठासी ।
तैतिस कोटि देवता मर गये, पड़ी काल की फांसी ॥३॥

नाम अनाम रहत है नित ही, दूजा तत्त्व न होई ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, भटक मरो मत कोई ॥४॥

..... कबीर साहब 🙏

👍 89

👍 89

💬 1

➦ 7

**Osho Disciple** 😊 feeling positive in India. ...

4m ·

Today's Best Photo...!! ❤️

[#photography](#)...see more

आज की सबसे अच्छी फोटो...!! ❤️



5



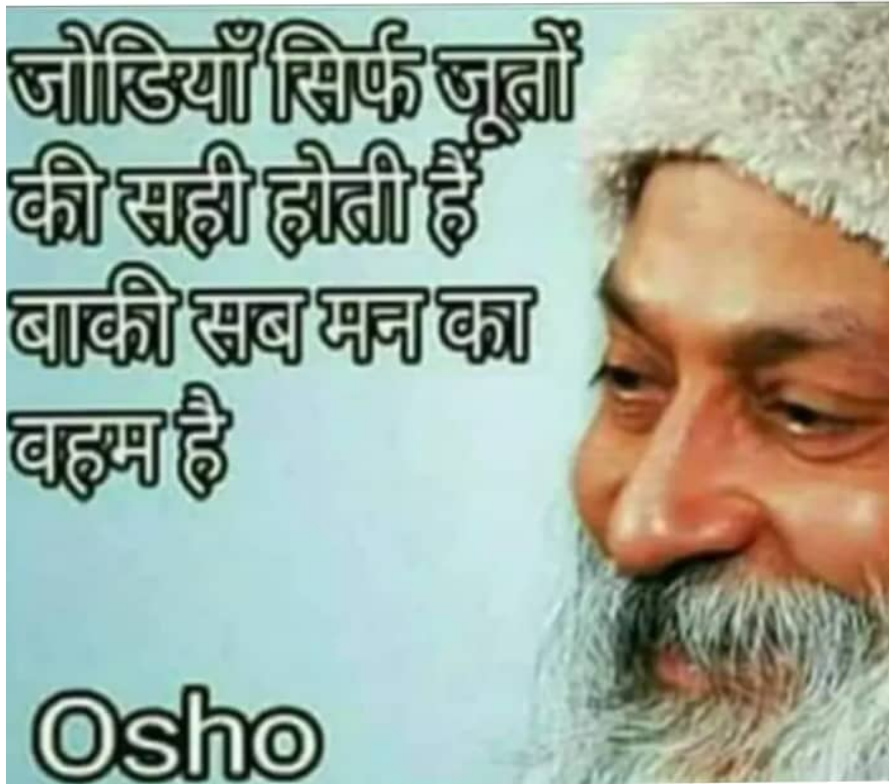
5



2

**ओशो - जीवन-मृत्यु**

Om Dutt Sharma · 52m ·



40



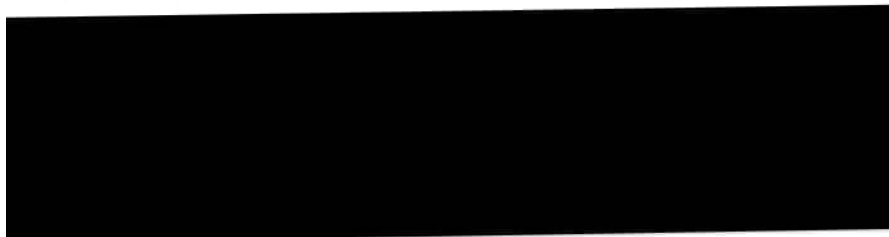
40



5

**Shree Speaks**

1h ·





मृत्युबोध

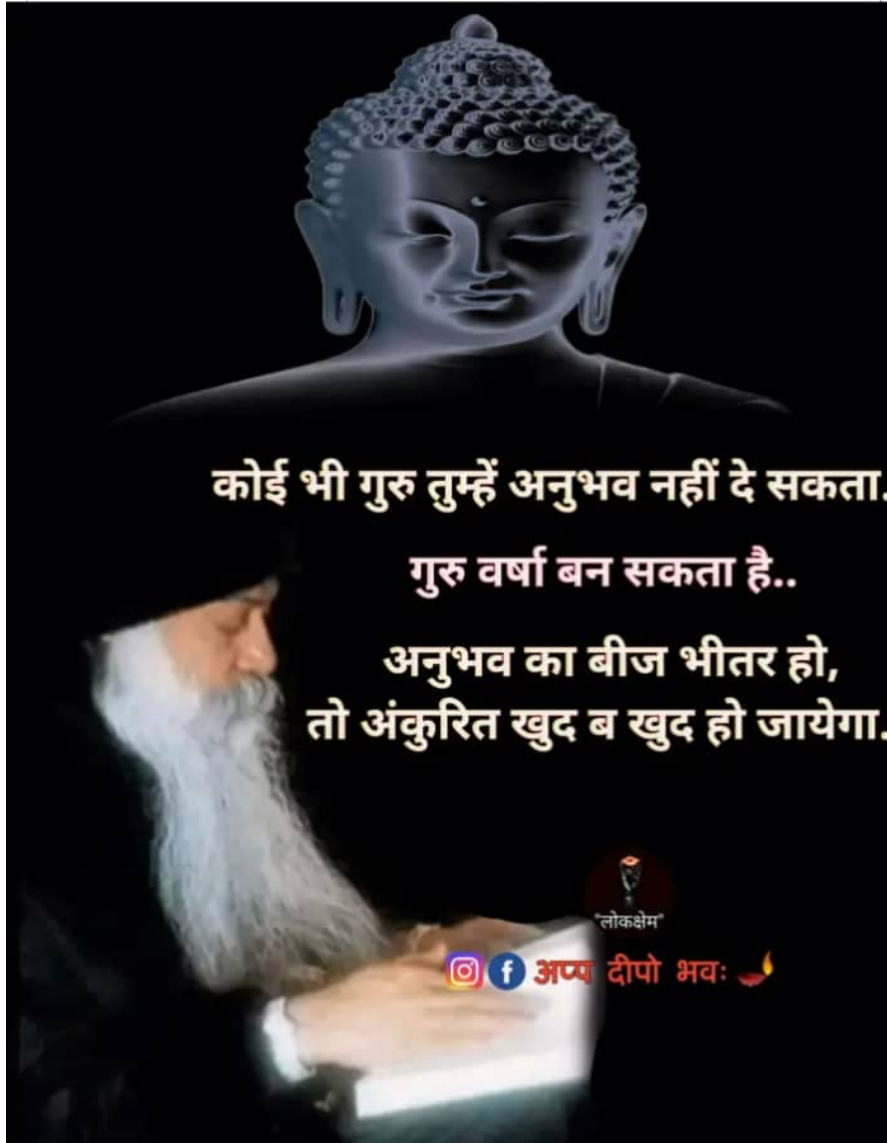
Vicky Singh Rathore · 48m ·



अण्ड दीपो भव:

2h ·

॥ अण्ड दीपो भव: ॥ ... 🙏🙏❤️



5



5



2



ओशो - जीवन-मृत्यु

Om Dutt Sharma · 52m ·



"वेद, कतेब झूठे नहीं भाई,
झूठे हैं जो समझे नहीं॥"

भावार्थ :- चारों पवित्र वेदों (ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेबों (कुआर्न शरीफ, जबूर, तौरात, इंजिल) का ज्ञान गलत नहीं है। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

Niraja Nirved

48m · 🌐



6



6



2



1



शरीर से बाहर आके देखा जा सकता है



1.2K



13



156



Radhe Radhe · [Follow](#)

मैं अलग और शरीर अलग है। #oshohi... [See more](#)

Add a comment...



“

prenatmak vichar kendra Dev

**बहुत सुन्दर शब्द जो एक मंदिर
के दरवाजे पर लिखा था -**

**‘ठोकरे खा कर भी ना संभले तो
मुसाफ़िर का नसीब,
वरना पत्थरों ने तो अपना फर्ज
निभा ही दिया।**

-ओशो

”



Sergio's post

**John Elia - Hindi**

Sergio Marquina · 12m ·



खुलकर कुछ कहा ही नहीं
धोखा भी उसने धोखे से दिया...!!
🙏😞 #jef_hellozindagi

10

10

12



All comments ▾

**Abdul Qyum**

right.

13 mins

Like

Reply

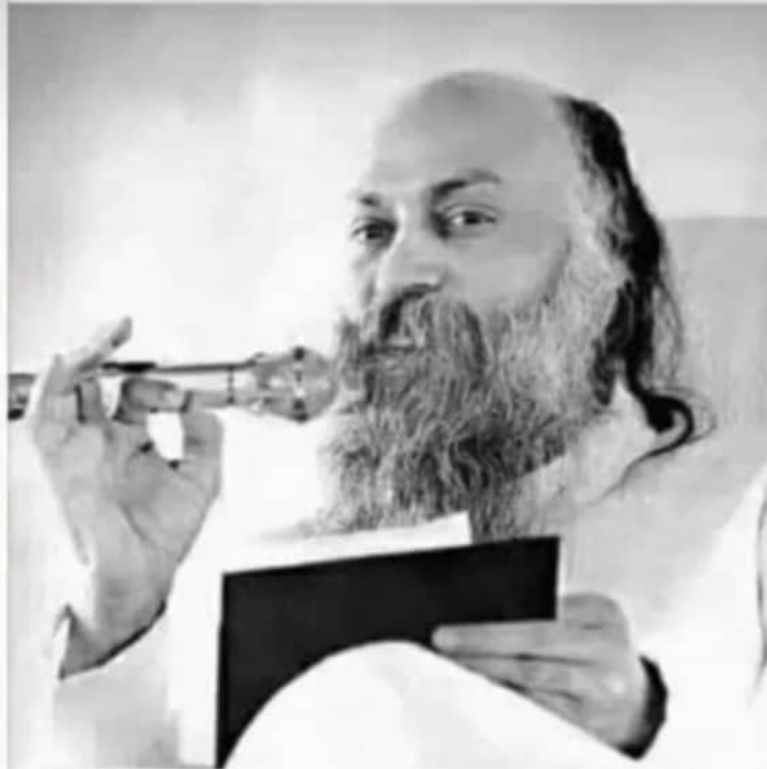


1



Write a public comment...





जीवन एक अवसर है परम जीवन को पाने के लिए। मृत्यु पर जीवन का अंत नहीं है। और अगर मृत्यु पर जीवन का अंत हो तो समझ लेना कि तुम ठीक से जिए ही नहीं। वही मरता है जो ठीक से जीता नहीं। जो ठीक से जीता है उसके लिए मृत्यु तो और बड़े जीवन का द्वार बन जाती है। जन्म और मृत्यु के बीच अगर परमात्मा न घटे तो समझ लेना कि व्यर्थ ही जिए; अकारथ जिए। जिए ही नहीं। नाम ही था जीने का। कहने भर की बात थी।

● ओशो ●

श्रीसामिप्रेमवेदात and 4 others



5



2





(ओशो) के प्रेमी

Amubhai Vaghela · 4m ·  · 



Rajendran V

12h · 



ज्यादातर महिलाएं तीन बार
शॉपिंग करने जाती है

एक बार देखने जाएँगी,
दूसरी बार खरीदने

जाएँगी और तीसरी
बार बदलने जाएँगी,

मगर
गोल गप्पे तीनों बार खाएंगी.!!



Hindi Joke

Follow

#hindijokes #hindimemes #m... more

263

14

Send





स्मरण रहे, परमात्मा, मंदिरों और मस्जिदों में छिपा हुआ नहीं बैठा है। परमात्मा प्रगट है, निर्वस्त्र है, चारों तरफ मौजूद है। झांको तो तुम्हारे भीतर मौजूद है और ऐसे दौड़ते रहो काबा और काशी और कैलाश..तुम्हारी मर्जी! लोग सस्ता पाना चाहते हैं कि चले तीर्थयात्रा को चले हज—यात्रा को। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो सब हाजियों को मिल जाए—हाजी मस्तान को भी मिल जाए। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो हर तीर्थयात्री को मिल जाए। और कुछ लोग तो तीर्थों में अड्डा जमाकर ही बैठे हैं, उन्हें तो पक्का मिल जाए। लेकिन बाहर नहीं है जब भी मिलेगा भीतर मिलेगा।

Osho



2



2

**OSHO Tapobhumi**

8m · 🌐



OSHO Tapobhumi and 22 others



23



2



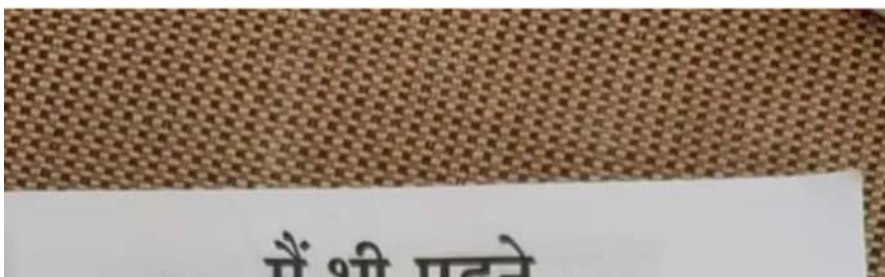
2

**Sankalp_SBS**

28m · 🌐



ज्ञान भारती pdfs प्राप्त करने के लिए लिंक कॉमेंट बॉक्स मे...





See translation

Anand Harideva and 2 others



3



3

**Osho The Master**

Krishan Lal Ahuja · 32m ·



सारा संसार नियम से चलता है,
नियम के विपरित ना कभी कुछ हुआ
है ना कभी हो सकता है।
ओशो



2



2

**OSHO Tapobhumi**

8m ·





यहां पंडित हैं, पुरोहित हैं और प्रवचन दिये जा रहे हैं और धर्मशास्त्र समझाए जा रहे हैं, रामायण पढ़ी जा रही है, गीता पढ़ी जा रही है, कुरान समझाए जा रहे हैं। किससे तुम समझ रहे हो? समझानेवाला छाती पर हाथ रखकर कह सकता है कि उसने जाना है? जरा उसकी आंखों में झांको। उसकी आंखें उतनी ही अंधी है जितनी तुम्हारी; शायद थोड़ी ज्यादा हों, कम तो नहीं। क्योंकि उसकी आंखों पर शब्दों का और शास्त्रों का बोझ तुमसे ज्यादा है। जरा उसके जीवन में तलाशो। और न तो तुम्हें सुगंध मिलेगी सत्य की और न तुम्हें आलोक मिलेगा आत्मा का। जरा उसके पास बैठो। न तो आनंद का झरना फूटता हुआ मालूम पड़ेगा, न शांति की हवाएं, बहती हुई मालूम होंगी। हां, रामायण शायद तुम्हें वह ठीक से समझाए और गीता के शब्द-शब्द का विश्लेषण करे। मगर यह सब बाल की खाल निकालना है। इसका कोई भी मूल्य नहीं है।

OSHO

**"PEACE, COMPASSION, LOVE & MEDITATION."**

Lavi Tyagi · 40m ·

सोये—सोये देखा गया परमात्मा। मूर्छित अवस्था
में देखा गया परमात्मा। मन के माध्यम से देखा
गया परमात्मा संसार है।

**OSHO**

मन से हटो। मन से मुक्त हो जाओ। अ—मन की
दशा खोजो। नो माइंड। उस अ—मन की दशा में
मुक्ति है, मोक्ष है, ब्रह्म है। और फिर से तुम्हें दोहरा दूं
कि संसार और परमात्मा दो नहीं हैं। एक ही हैं।
लेकिन परमात्मा को ही मन के द्वारा देखने से संसार
की भ्रांति पैदा होती है। और बिना मन के देखने से
सारी भ्रांतिया मिट जाती हैं। सत्य का अनुभव हो
जाता है। सत्य का साक्षात्कार हो जाता है।



2



2



2



1

**एकांत**

Ayush Pandit · 56m ·



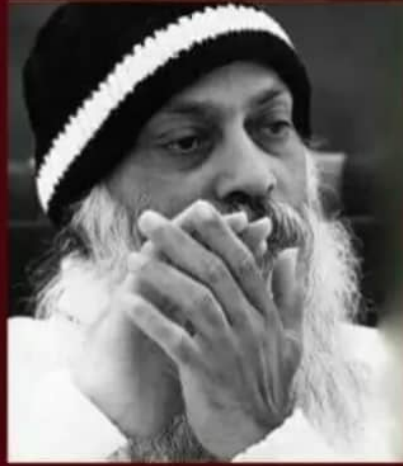


निवेदक : अशेष

गुरु
मृत्यु है

वह शिष्य
को वहां
पहुंचा देता
है
जहां
गुरु भी
नहीं बचता

ऐसा हुआ कि काशी नरेश को पता चला कि लोग जाते हैं, कबीर को भेंट करते हैं तो कबीर तो कह देते थे रुपए-पैसे का हम क्या करेंगे-जैसा साधु-संत को कहन चाहिए-कि हम क्या करेंगे? चले जाओ। उ...see more



एक ही पुण्य है इस जगत में
और वह पुण्य है:
यह जानना कि मैं कर्ता नहीं हूं,
परमात्मा कर्ता है।
और एक ही पाप है इस जगत में-
यह जानना कि मैंने किया
और परमात्मा कर्ता नहीं है,
कर्ता मैं हूं।

🌹 कन थोरे कांकर घने, ओशो 🌹



👍❤️👉 14

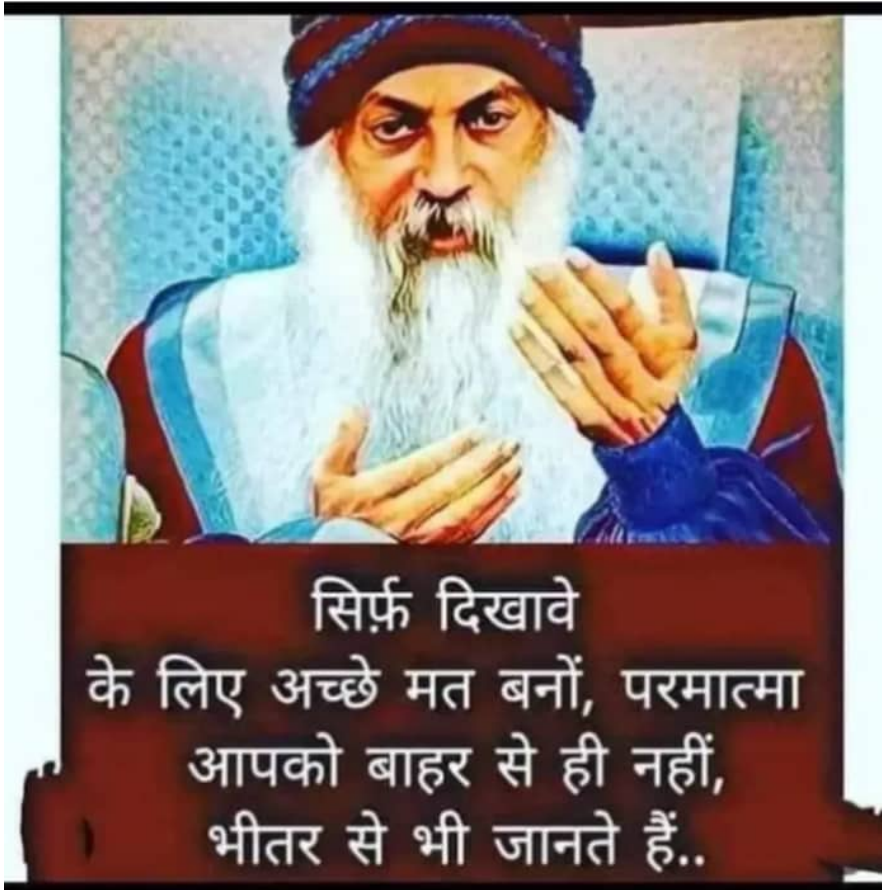
👍 14

💬 1

💬

**Zorba The Zen Buddha is in Delhi.**

3d · 🌐



37

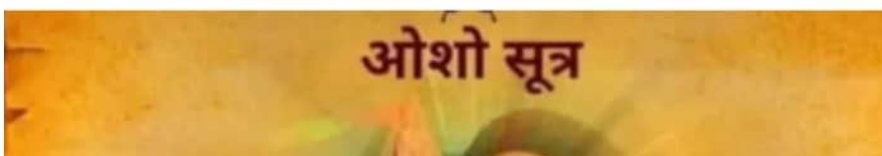
37

2

15

**Osho The Master**

Ma Prem Parvani · 3h · 🧑🏻‍🦱





संसार छोड़ने की बात जानियों ने कही है, उसका अर्थ है--सपने छोड़ो, तृष्णाएं छोड़ो, वासनाएं छोड़ो। मगर लोग संसार छोड़कर भाग गए। बैठ गए हिमालय पर जाकर। सोचने लगे कि हिमालय संसार के बाहर है। पागल हो गए हो! हिमालय उतना ही संसार का हिस्सा है। जितनी यह जमीन, उतनी कोई और जमीन। जितना यह घर, उतना कोई और घर। जितनी तुम्हारी पत्नी संसार है, तुम्हारे पुत्र संसार हैं, तुम्हारे मित्र संसार हैं--उतना ही कोई आश्रम भी संसार का हिस्सा है। गुफा में भी बैठ जाओगे, तो गुफा भी संसार का हिस्सा है।



तुमसे कहता हूं
गुरु नहीं पहुंचाता, श्रद्धा पहुंचाती है।
इसलिए मैं तुमसे कहता हूं श्रद्धा ही गुरु है।
और जहा तुम्हारी श्रद्धा की आंख पड़ जाए
वहीं गुरु पैदा हो जाए।
परमात्मा नहीं पहुंचाता, प्रार्थना पहुंचाती है।
और जहां हृदयपूर्वक प्रार्थना हो जाए वहीं
परमात्मा मौजूद हो जाता है।
मंदिर नहीं पहुंचाते, भाव पहुंचाते हैं।
जहां भाव है वहां मंदिर है।
चलने की हिम्मत हो, साथ हो जाओ।
चलने की हिम्मत न हो, नाहक समय खराब मत करो,
भाग खड़े होओ। ऐसे आदमी के पास नहीं रहना चाहि
जिस पर भरोसा न हो

z7win.xyz

z7 Game - Apps on Google Play

PLAY GAME

91



91



88



ओशो - जीवन-मृत्यु

Paramanand Yash · 7h ·

जब मेरे मरने का समय आएगा तो मुझे ही मरना होगा, इसलिए मुझे अपना जीवन वैसे जीने दो जैसे मैं जीना चाहता हूँ।

- जिमी हैंड्रिक्स



269



269



4



23



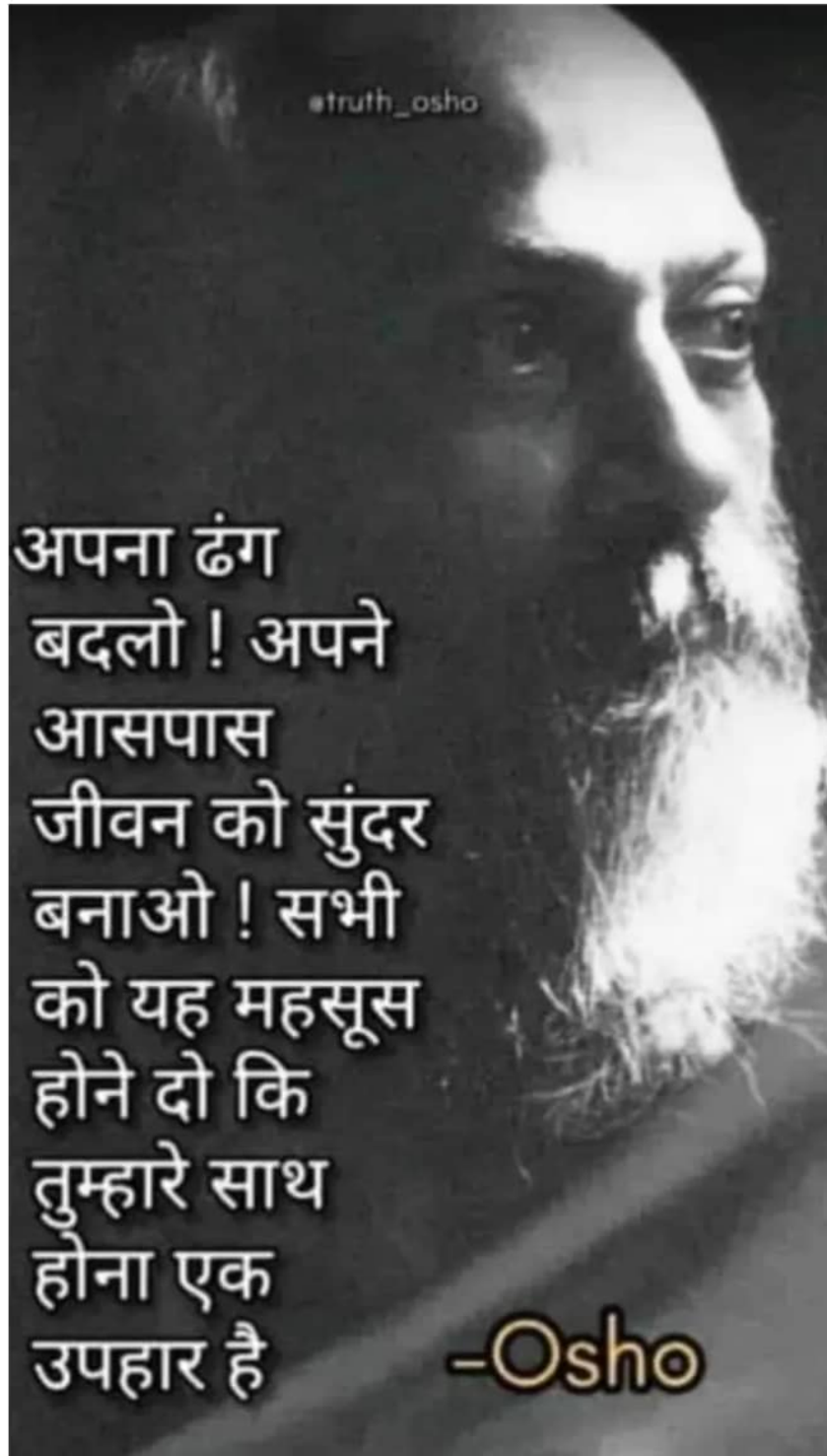
रिश्तो की अहमियत

Rkumar Jain · 1h ·

जिनके पति रात को जल्दी सोते हैं उन्हें सैंया कहते हैं 😊



ओशो प्रेम नमन।



👍 123

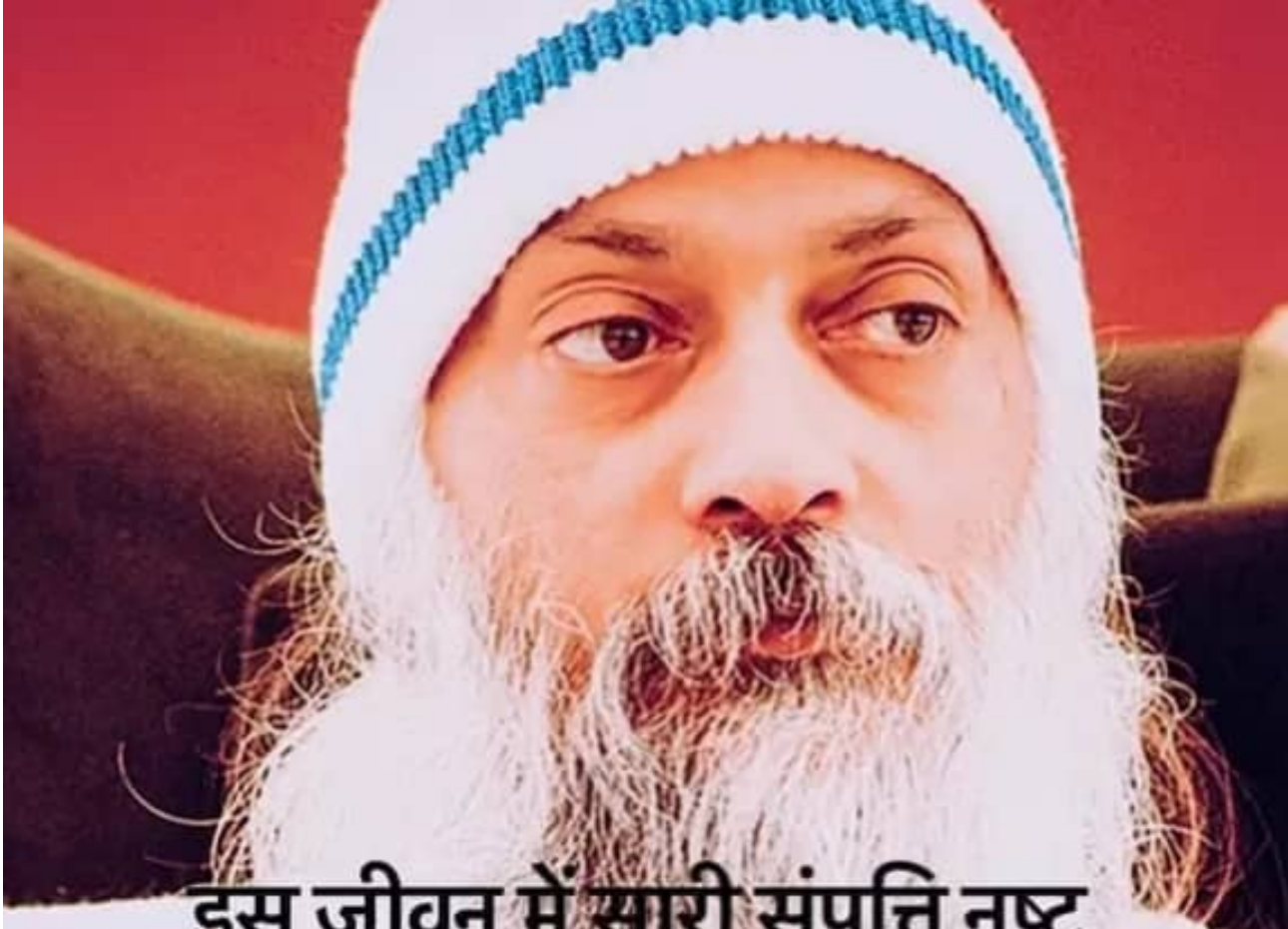
👍 123

💬 4

🔗 13



आध्यात्मिक यात्रा [spiritual journey]



इस जीवन में सारी संपत्ति नष्ट
हो जाती केवल योग से जो
संपत्ति अर्जित की जाती है
वही अगले जन्म में साथ
जाती है लेकिन जो गहरे में
किए हुए कर्म हैं, जो योग के
पक्ष में किए गए हैं वो संपत्ति
बन जाएगी और जो योग के
विपक्ष में किए गये कर्म हैं वो विपत्ति बन
जाएगा 🙏



QUOTE MAKER



▶ 419K

**Osho The Master**

Amrit Parmar · 1h · 🧑🏻

...

प्रेणात्मक विचार केंद्र देव

LIKE
SHARE
SUBSCRIBE

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है ।
पुनः-पुनः स्मरण रखना !
परमात्मा केवल आनंद की अनुभूति का नाम है ।
अमृत का साक्षात्कार है ।
चैतन्य की प्रतीति है ।
परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है ।
परमात्मा केवल शक्ति है , ऊर्जा है ।
और ऊर्जा का ही तो सारा खेल है ।
कहीं वही शक्ति हरी होकर वृक्ष हो गयी है , लाल होकर फूल हो
गयी है , कहीं वही शक्ति सूरज बनी है , कहीं वही शक्ति तारे ;
वही शक्ति तुम्हारे भीतर सुन रही है अभी ,
वही शक्ति मेरे भीतर बोल रही है अभी ।
नहीं उससे कुछ भिन्न है ! हम सब उसमें एक हैं , अभिन्न हैं ।

**** ओशो ****

झरत दसहुं दिस मोती - पहला प्रवचन से संकलित अंश

👍 3

👍 3

**Neelam Surbhi**

32m · 🧑🏻

...

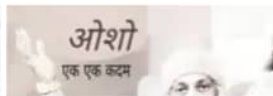


तुम जैसा जगत को स्वीकार कर
लोगे, वैसा ही हो जाता है। यह जगत
तुम्हारी स्वीकृति से निर्मित है। यह
जगत तुम्हारी दृष्टि का फैलाव है।

- ओशो

उनमें स्वयं गिरना पड़ता है। फिर
तुमने चाहे गड़बड़ जानकर छोड़े हों
चाहे अनजाने छोड़े हों। जो कांटे

तुम्हारे दुख के कारण तुम हो,
तुम्हारे सुख के कारण तुम हो।
और दूसरो को दख देने से तम



1



1



Osho The Sadguru 🌸🌸🌸

Rajinder Singh Manhas · 32m · 🌐



3



3



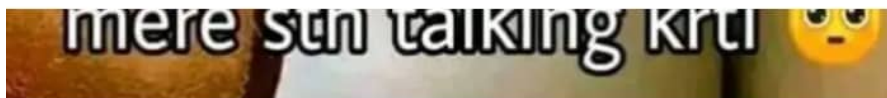
Shiva Italiya

4d · 👤

Very good morning

शुभ प्रभात

Translated from English



11

11

4

**Osho विचार धारा**

Subhash Hooda · 12h ·



182

182

14

19

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Sulaxna Dixit Rawat · 2h ·

एक झेन कथा

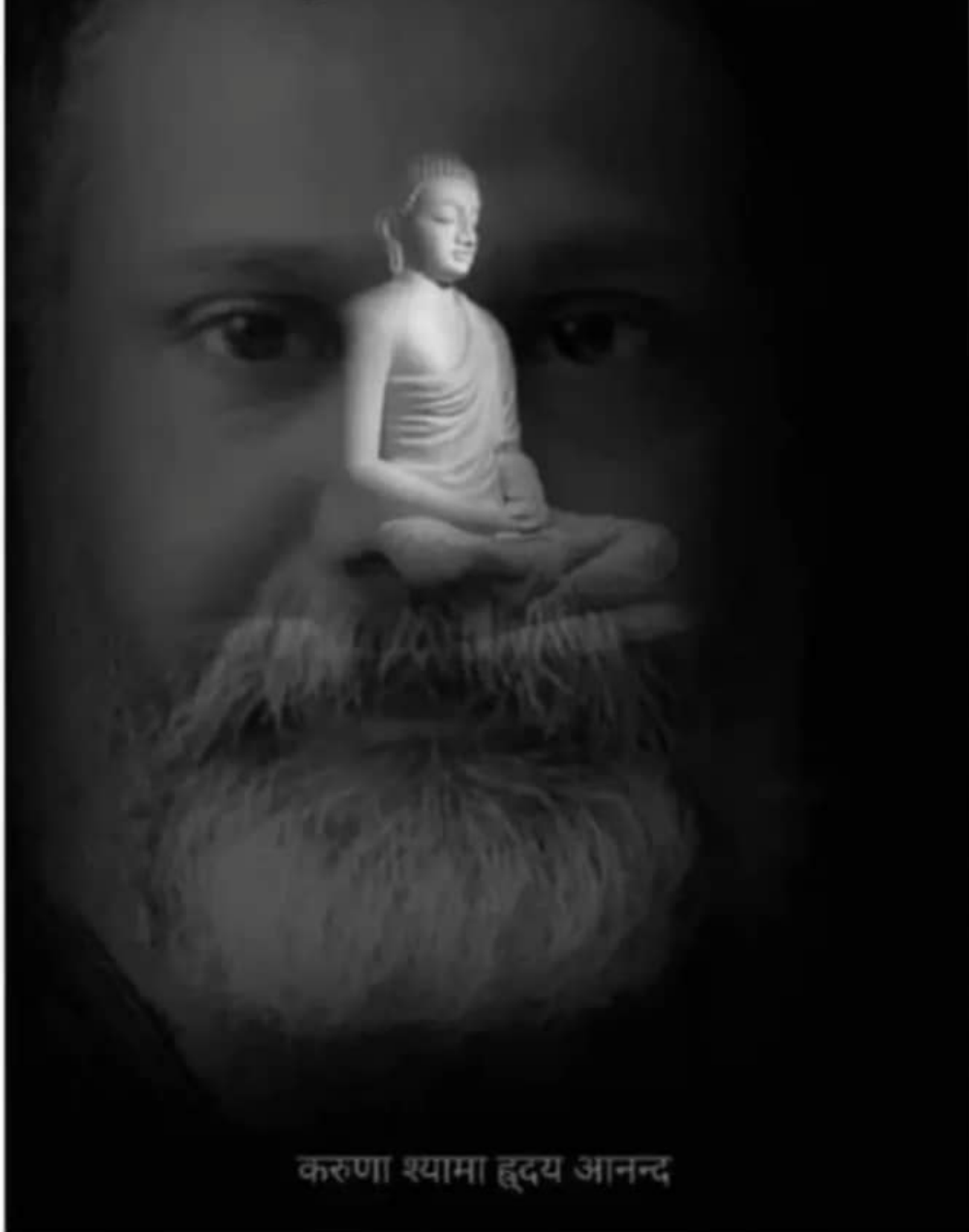


आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

Paramanand Yash · 1d · 🌐

...

जिन चमत्कारों को तुम बाहर खोजते हो।
ध्यान में उतर कर देखोगे तो तुम स्वयं
पाओगे कि वह सभी चमत्कार करने की
क्षमता तुम्हारे अंदर ही व्याप्त है।



करुणा श्यामा हृदय आनन्द

👍 172



तुमने कभी खयाल किया?
जहां भी मांग आती है वहीं तुम
छोटे हो जाते हो; जहां मांग नहीं
होती, सिर्फ दान होता है, वहां तुम
भी विराट होते हो। जब तुम्हारे मन
में कोई मांगने का भाव ही नहीं
उठता, तब तुममें और परमात्मा में
क्या फासला है? इसलिए तो
बुद्धपुरुषों ने निर्वासना को सूत्र
माना, कि जब तुम्हारी कोई वासना
न होगी, तब परमात्मा तुममें
अवतरित हो जाएगा।

ओशो



3

3

1



OSHO Tapobhumi

15h · 🌐



Priyansu Raj and 416 others

417

27

138



गीता प्रेस गोरखपुर के संतों की मार्मिक (रहस्यमयी) बातें।

Shri Vipul Dhuliya · 12m · 🌐



18



1



50

**RAJNEESH MY BELOVED**

Meena Trivedi · 1m ·



1



1

**JK's Teachings and daily life**

Chandra Shekhar Nayak · 8m ·





दूसरे को दुख देने का मतलब
खुद को दुख देना-ओशो



6K



9



1K



prof_ramesh_ingle



...

Add a comment...

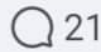




m.facebook.com



1k



21



74

**ओशो अंतिम मुक्ति का मार्ग**

Dharam Rai · 2d ·

ओशो प्रेम नमन।



श्रीसामिप्रेमवेदात and 11 others



12



1

**Singh Dinesh Behniwal** · [Follow](#)

4d ·

जब से इंटरनेट पर पॉपुलेशन जेनेटिक डेटा आने लगे है।

- कॉक्सस पर्वतमाला में रहने वाले "लाक" अपने आपको ...see mor





1.9K



2k



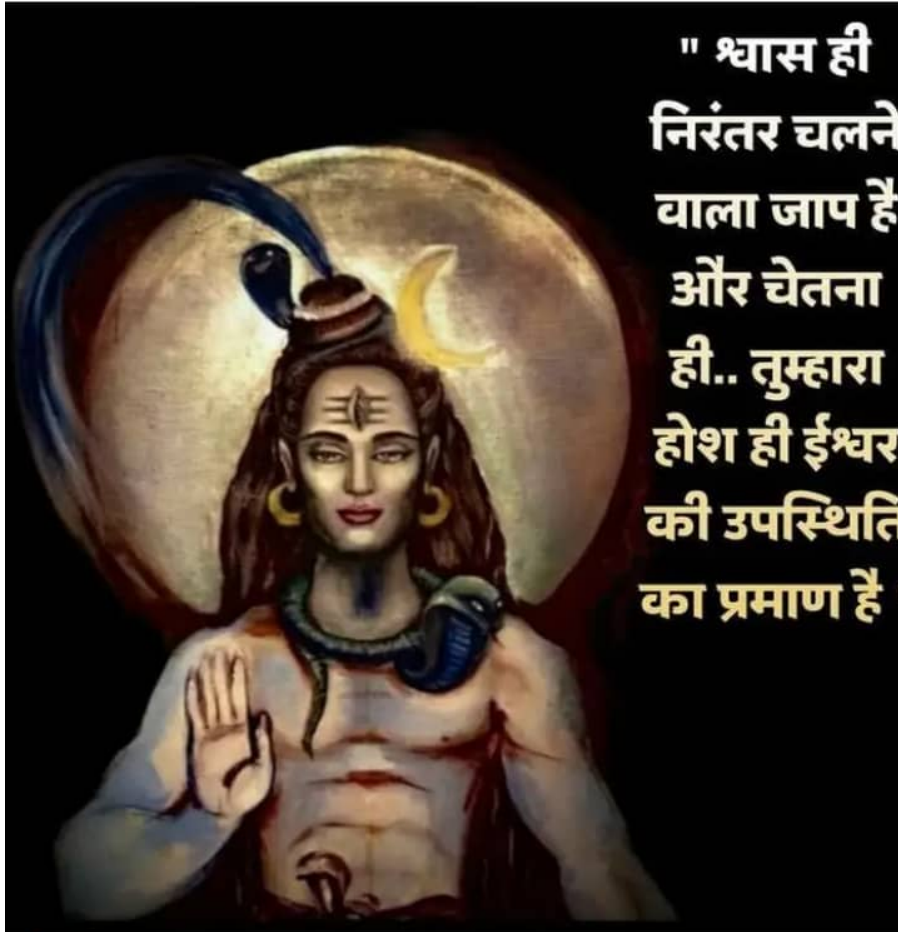
177



324

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**

Ronu Fly Man · 5h ·



" श्वास ही
निरंतर चलने
वाला जाप है
और चेतना
ही.. तुम्हारा
होश ही ईश्वर
की उपस्थिति
का प्रमाण है "

53



53



6

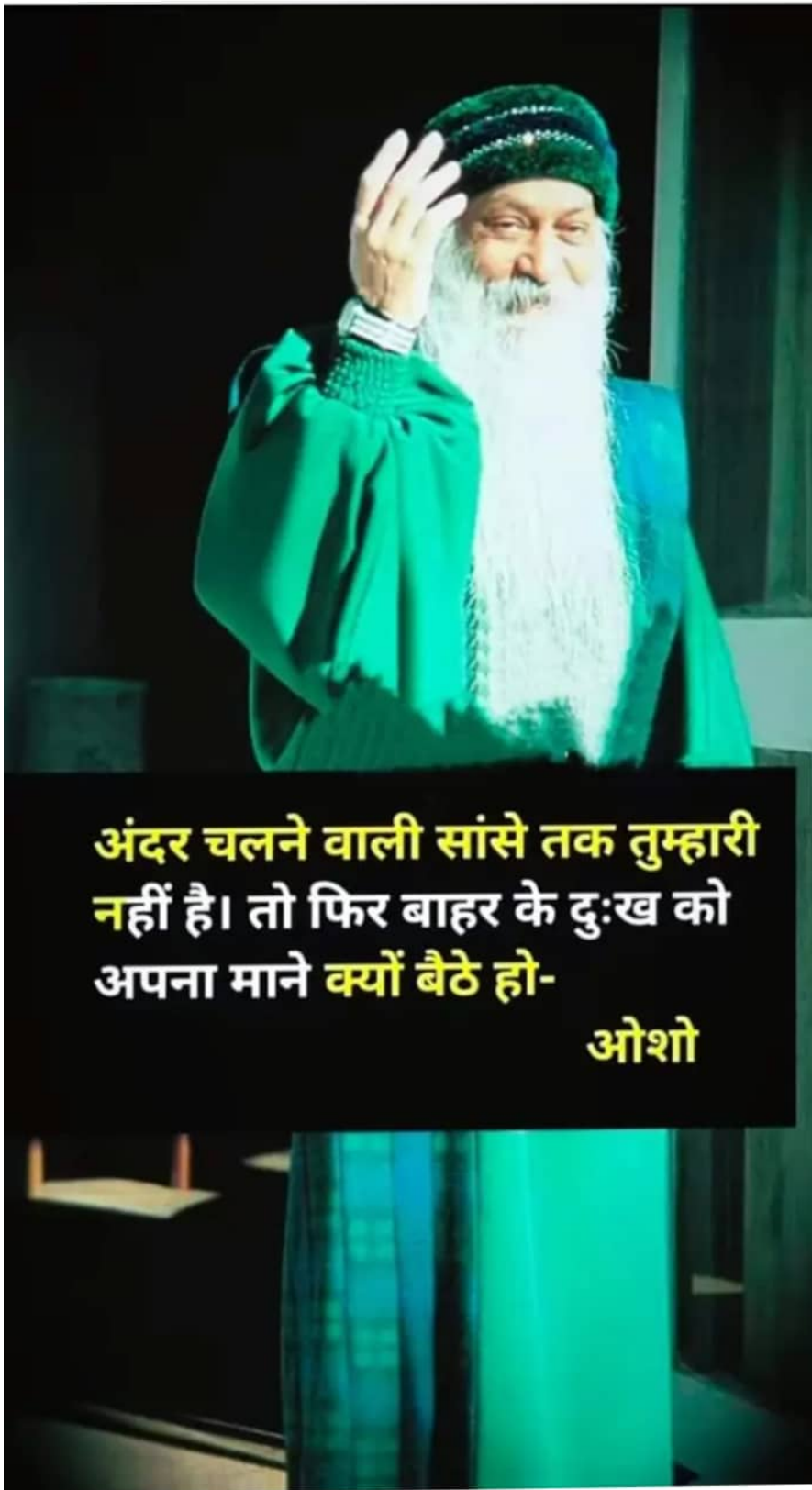


4

**Pradeep Aanand** · [Follow](#)

21h ·





अंदर चलने वाली सांसे तक तुम्हारी
नहीं है। तो फिर बाहर के दुःख को
अपना माने क्यों बैठे हो-
ओशो

Chandrashekhar Yadav and 3 others



4



1

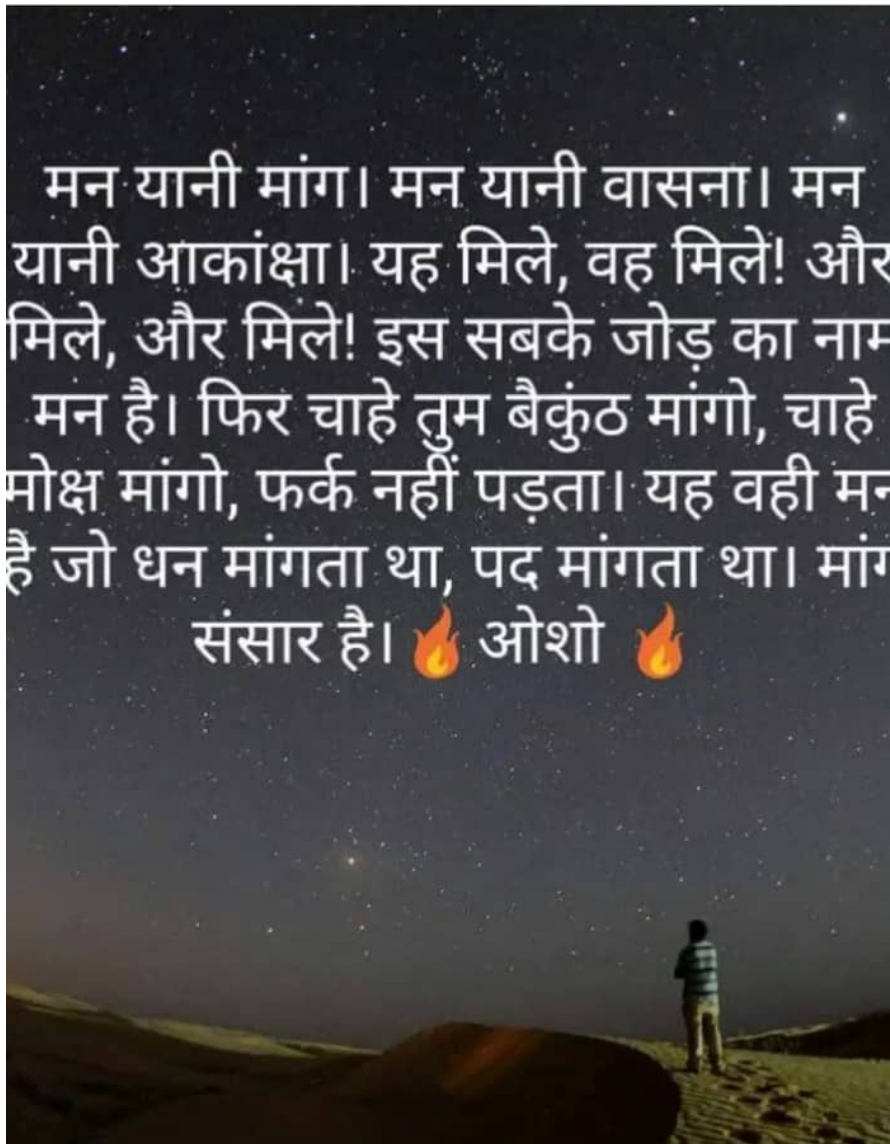


**Naye bharat ke khoj**

8h · 🌐

कैसे मन मारें? क्या अर्थ है मन को मारने का? कहां है तलवार जिससे मन मारें?

...see more



👍 Naye bharat ke khoj and 34 others

👍 35

💬 1

➦ 8

**Md Aftab Alam** · Follow

2d · 🌐

निशब्द हूं, लड़के अपने जीवन के लिए सब कुछ त्याग देते हैं अपने घर परिवार के लिए, मैं बस एक बात बोलूंगा "जय हिन्द" जय बिहार"



👍 Yogesh Chavda and 11K others

👍 11k

💬 239

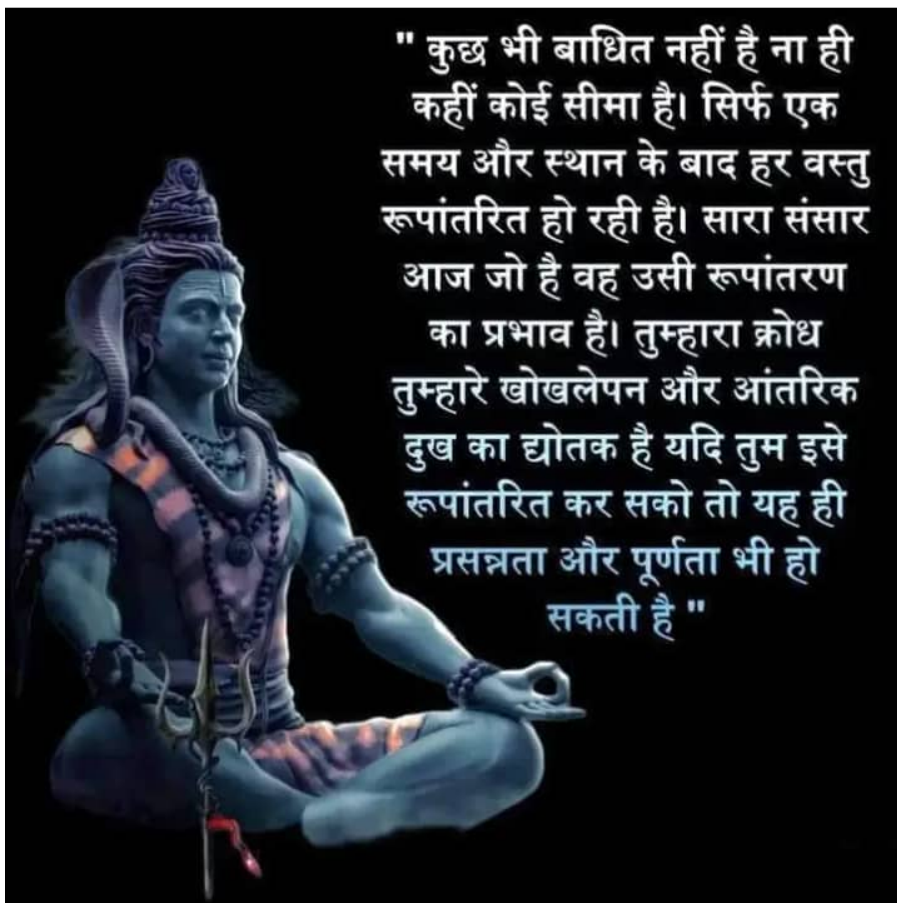
🔗 422



अध्यात्मिक ज्ञान, अनुभव एवम आत्म दर्शन

☆Group by Nikita Jain☆

Srishti Sharma · 44m · 🧑



" कुछ भी बाधित नहीं है ना ही
कहीं कोई सीमा है। सिर्फ एक
समय और स्थान के बाद हर वस्तु
रूपांतरित हो रही है। सारा संसार
आज जो है वह उसी रूपांतरण
का प्रभाव है। तुम्हारा क्रोध
तुम्हारे खोखलेपन और आंतरिक
दुख का द्योतक है यदि तुम इसे
रूपांतरित कर सको तो यह ही
प्रसन्नता और पूर्णता भी हो
सकती है "

👍❤️ 6

👍 6

💬

🗨️



Way Of Shiksha · Follow

28 May 2024 · 🌐

लड़कियों को फ्रीडम चाहिए

Jai shree krishna 🙏🏻 700 ✨...



m.facebook.com



1



2

**आपणो राईका रबारी समाज राजस्थान** • [Follow](#) ...

6d •

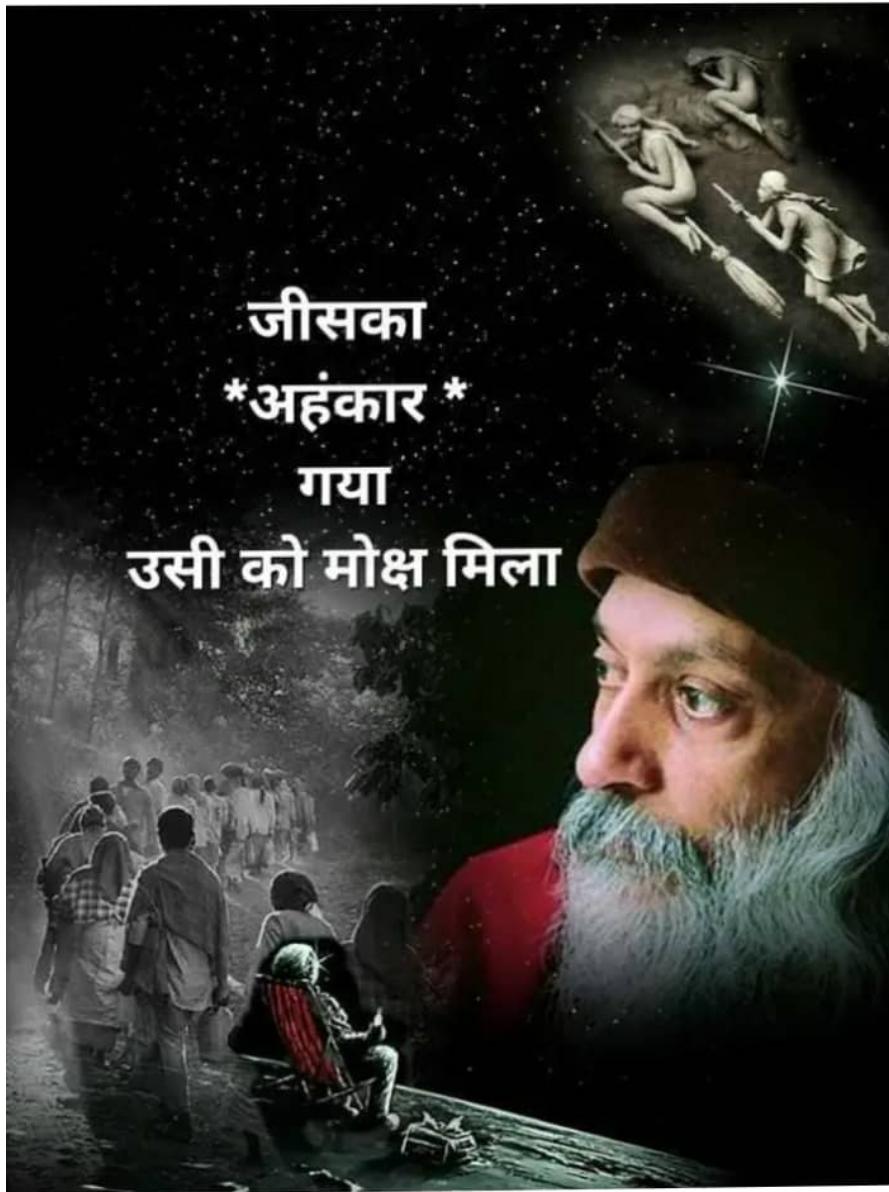
“सदा न संग सहेलियाँ, सदा न राजा देश।
सदा न जुग में जीवणा, सदा न काला केश।
सदा न फूलै केतकी, सदा न सावन होय।
सदा न विपदा रह सके, सदा न सुख भी होय।
सदा न मौज बसन्त री, सदा न ग्रीष्म भाण।
सदा न जोवन थिर रहे, सदा न संपत माण।
सदा न काहू की रही, गल प्रीतम की बांह।
ढलते ढलते ढल गई, तरवर की सी छाँह।”

Guman chelawas



**THE WAY OF SPIRITUAL JOURNEY-
"PEACE, COMPASSION, LOVE &
MEDITATION."**

Lavi Tyagi · 1h ·



5



5

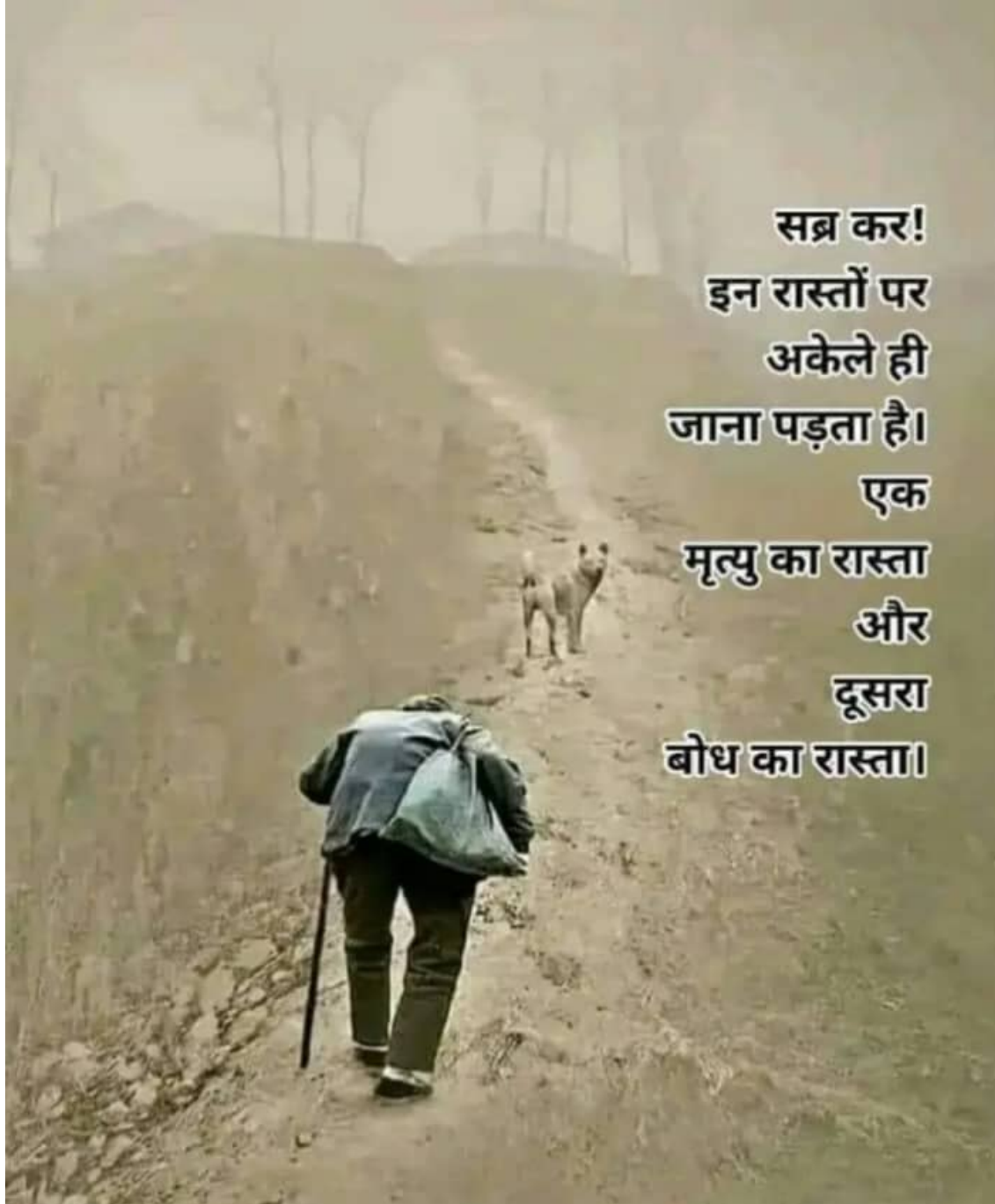


3



DTALE Modern

Sponsored ·



सब्र कर!
इन रास्तों पर
अकेले ही
जाना पड़ता है।
एक
मृत्यु का रास्ता
और
दूसरा
बोध का रास्ता।

4



4



Connects U 2 World • [Follow](#)

2d •

1000 years old long braid, perfectly chiseled - Bharatiya woman Hair style on a statue at Sri Bhuvараहा Swamy

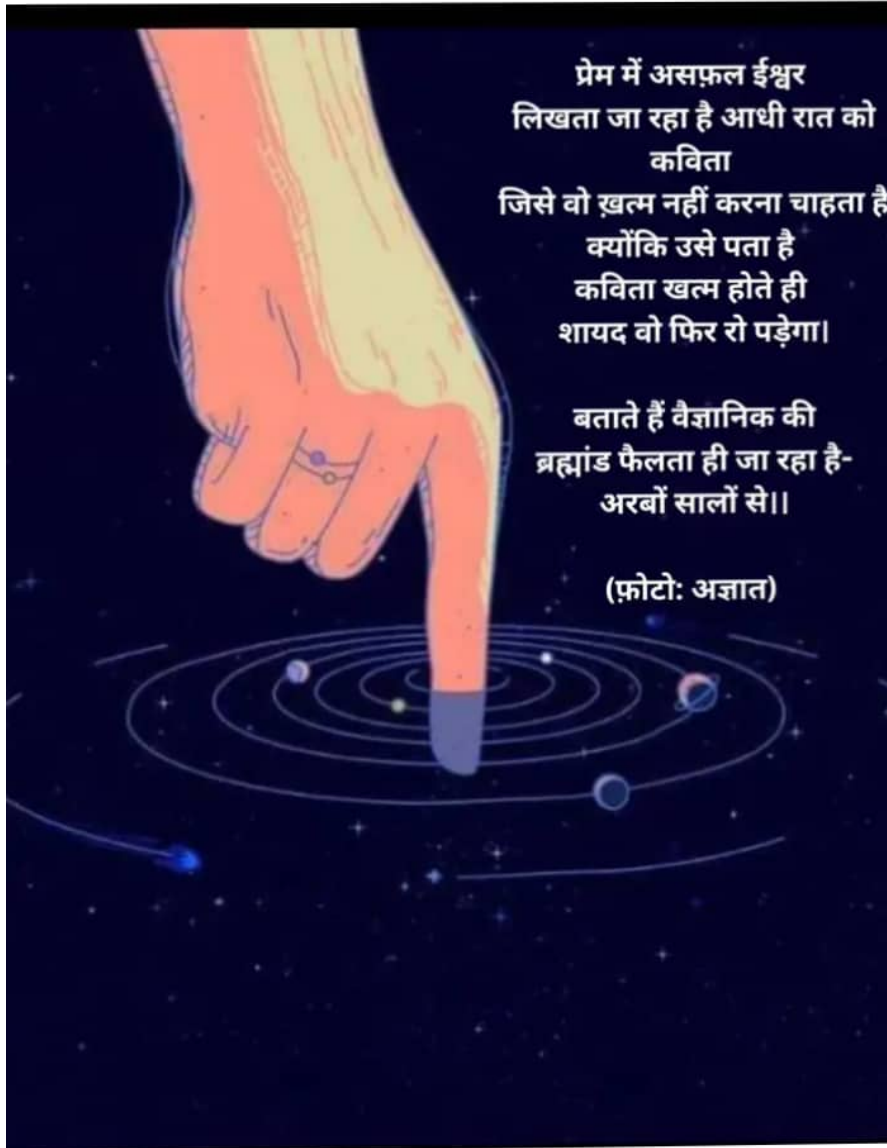
185

175

**Kitabganj** • Follow

3d •

प्रेम में असफल ईश्वर
लिखता जा रहा है आधी रात को
कविता ...see more



257

257

8

15

**Indie press**

Sponsored •



1k



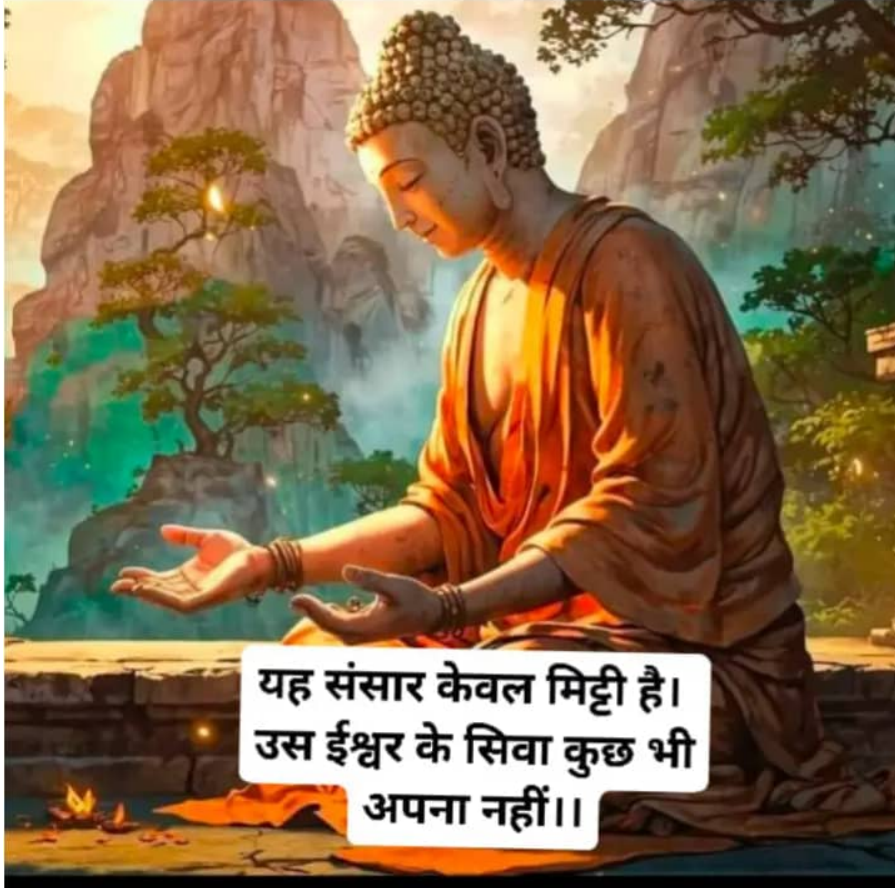
176



250

**औशो चैतन्य साधना**

2d · 🌐



यह संसार केवल मिट्टी है।
उस ईश्वर के सिवा कुछ भी
अपना नहीं।।

Bejender Khatri and 93 others



94



9



8

**Ancient road** · [Follow](#)

4d · 🌐



Ellora Caves, India







m.facebook.com



1



1k



38



453

**Maneesh Chandra** • Follow

6d •



172



172



6



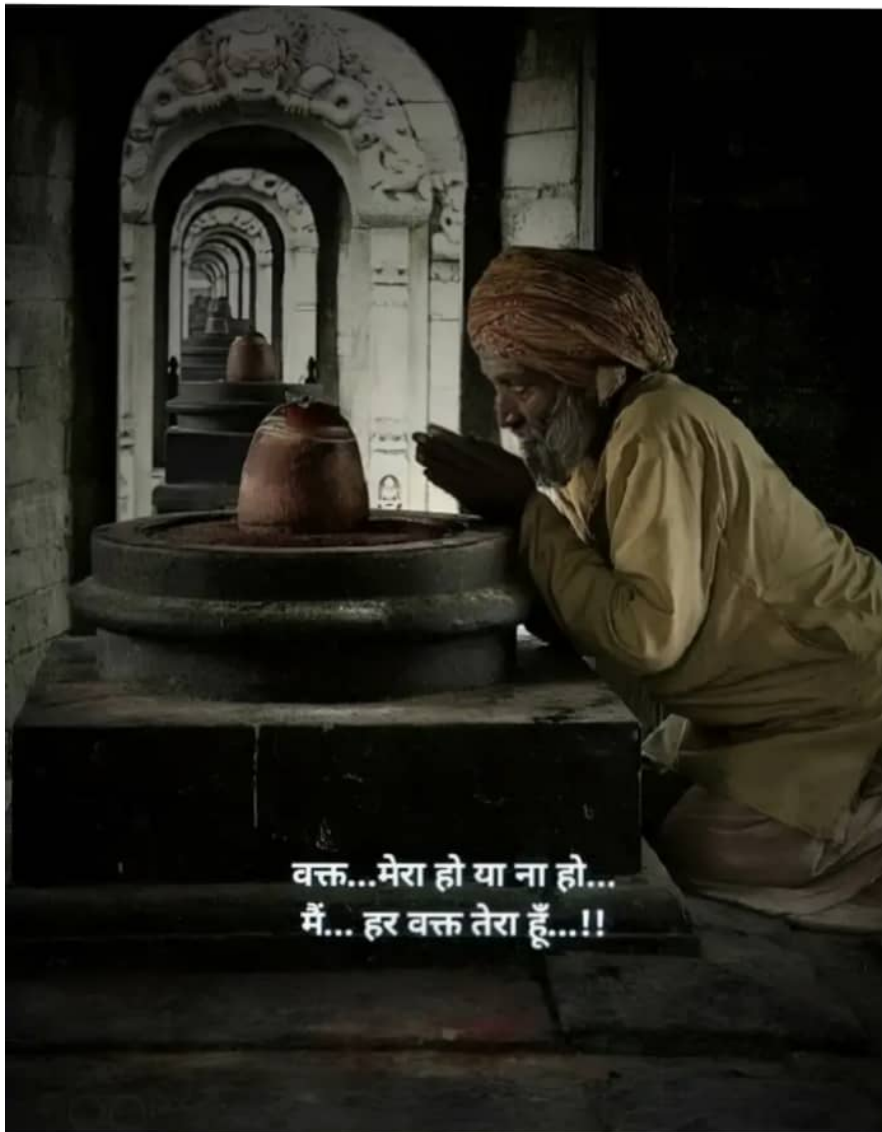
48

**SONU VLOGS** • Follow

3d •

एक्टर अनुपम खेर ने अपनी मां दुलारी खेर के साथ एक खूबसूरत

See translation



आपको ऐसी पोस्ट ज़्यादा देखनी हैं या कम? · Do you want to see more or less posts like this in Feed?

ज्यादा · Show more

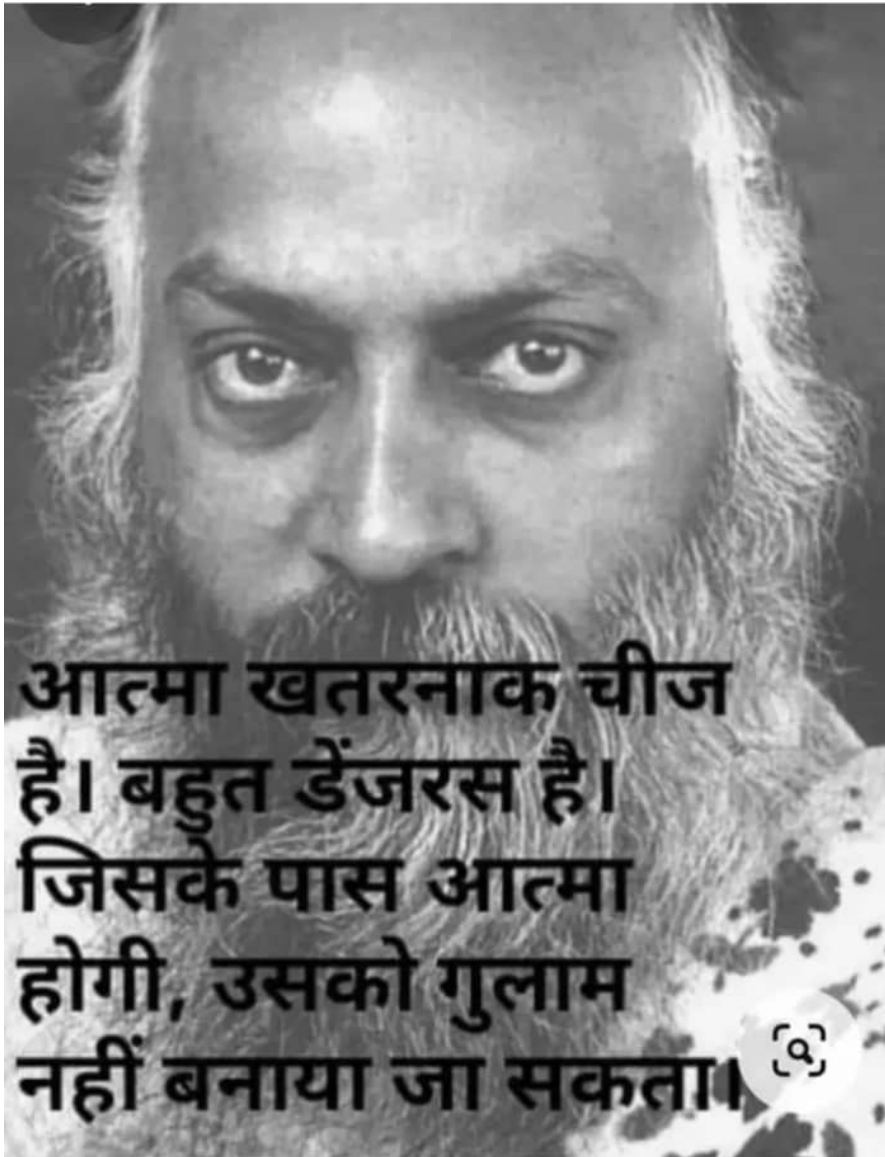
कम · Show less

80K



Osho The Master

Amrit Parmar · 28m · 3



3



3



Babita Narang · [Follow](#)

23h · 1





m.facebook.com



1



Babita Narang • Follow

23h •

today best photo ❤️❤️



...see more



👍❤️ 3.5K

👍 3k

🔗 85



Osho-Universal

Sulaxna Dixit Rawat • 3h •





734

749

755

**The truth of Life**

Raj Malhotra · 36m · 🧑🏻

"ओशो" प्रेम नमन 🙏🌹🙏



2

2

**Vedic Himalaya** · [Follow](#)

3d · 🌐

12:26 pm

VoLTE 4G 70%

@ 12000 प्रात व्याक्त बस द्वारा

दिन 1: काठमांडू से बिरतमोध

*सुबह-सुबह अपने स्थान से सिंधुली बीपी हाईवे के माध्यम से प्रस्थान करें।

* रास्ते में दोपहर का भोजन करें।... See more

Translated from English

ये मन का मन से युद्ध है
जो समझ गया वो बुद्ध है!!



👍 6.2K

👍 6K

💬 139

🔗 385



Ravi Prajapati • Follow

2d • 🌐

...



दिन 1: काठमांडू से बिरतमोध

*सुबह-सुबह अपने स्थान से सिंधुली बीपी हाईवे के माध्यम से प्रस्थान करें।

* रास्ते में दोपहर का भोजन करें।... See more

Translated from English



जिसे बाहर ढूंढ रहे हो,
वो तुम खुद हो,
जरा अपने अंदर झांको तो,
तुम भी तो बुद्ध हो

4.5K

4K

151

228



बॉलीवुड सुल्तान · Follow

2d ·

बॉलीवुड सुल्तान



***ओशो अर्थात एक युगांतरकारी चेतना ***

Sunil Kumar · 32m ·

...



श्री रमण के मृत्यु के समय जब उनसे पूछा गया कि भगवान, आप विदा हो रहे हैं। आप कहां जाएंगे? उन्होंने कहा, पागल हुए हो! कहां जाऊंगा? जहां हूं- वहीं रहूंगा। जैसा हूं-वहीं रहूंगा। यहीं के यहीं रहूंगा। जो अपने साक्षी भाव में बैठ गया, उसको न अब कहीं आना है, न कहीं जाना है। वह शाश्वत का अंग हो गया; वह अनंत का हिस्सेदार हो गया; वह परमात्मा का रूप हो गया; वह परमात्मामय हो गया। भगवत्ता का अर्थ ही है : जिसने अपने स्वरूप को पहचान लिया।

Osho
Universal

Dhaval
Parmar

ओशो : ज्यूं था त्यूं ठहराया



ओशो - जीवन-मृत्यु

Bhavna Joshi · 23h ·



Dharmendra Kumar and 309 others

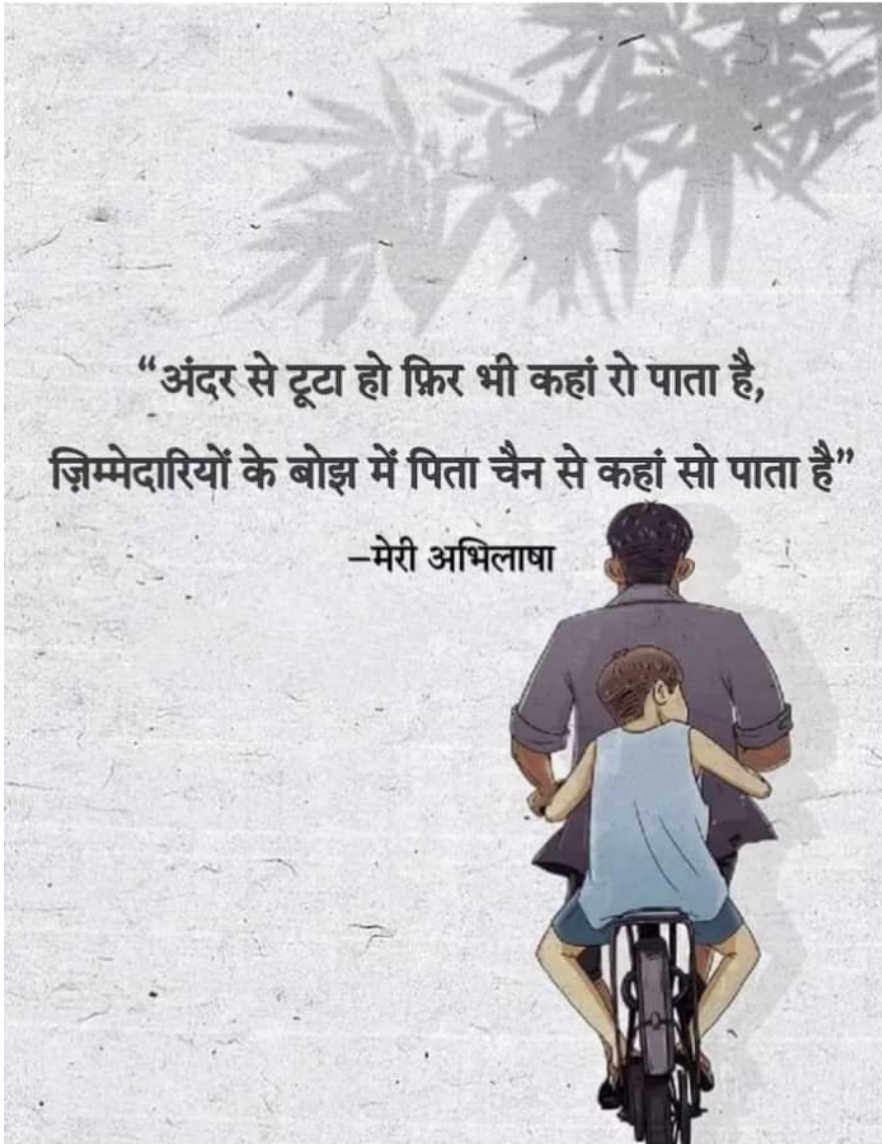
310

9

7

**Basant Lal Tiwari** • Follow

23h •



“अंदर से टूटा हो फिर भी कहां रो पाता है,
ज़िम्मेदारियों के बोझ में पिता चैन से कहां सो पाता है”
—मेरी अभिलाषा

25

25

1

9

**Indore Junction** • Follow

4d •

लंदन में 1920 से लेकर आज तक के बदलाव वाकई में अद्भुत और आश्चर्यजनक हैं। यहां कुछ मुख्य अंतर हैं जो उस समय और अब के बीच देखे जा सकते हैं:



तो क्या होगा? ग्लास से
पानी छलक जाएगा और

8:40 pm

🕒 VoLTE 4G 📶 🔋 12%

...see more

"आप 84 खनिज, 23 तत्वों और 8 गैलन पानी से बने हैं जो 38 अरब कोशिकाओं से विभाजित हैं।"

आप पृथ्वी के स्पेयर पार्ट्स द्वारा कुछ भी नहीं से निर्मित किए गए थे, एक डबल हेलिक्स में छिपे निर्देशों के एक सेट के अनुसार जो एक शुक्राणु सेल द्वारा ले जाया जा सकता है।

आप पुनर्नवीनीकरण तितलियों, पौधों, चट्टानों, धाराएं, जलाऊ लकड़ी, भेड़िये की खाल और शार्क के दांतों से बने हैं जो उनके सबसे छोटे भागों में टूट गए हैं और हमारे ग्रह पर सबसे जटिल जीवित चीजों में फिर से बने हैं

तुम धरती पर ही नहीं रह रहे हो... तुम धरती हो! "

तो, कृपया, पृथ्वी माता को प्यार, सम्मान, देखभाल और सम्मान करें।
<3

@motherearth_365 द्वारा चित्रित

Translated from English



m.facebook.com



1



32k

1k

12k

**Anita Gupta** • [Follow](#)

1d •



Arawat Kumar and 3.4K others

3k

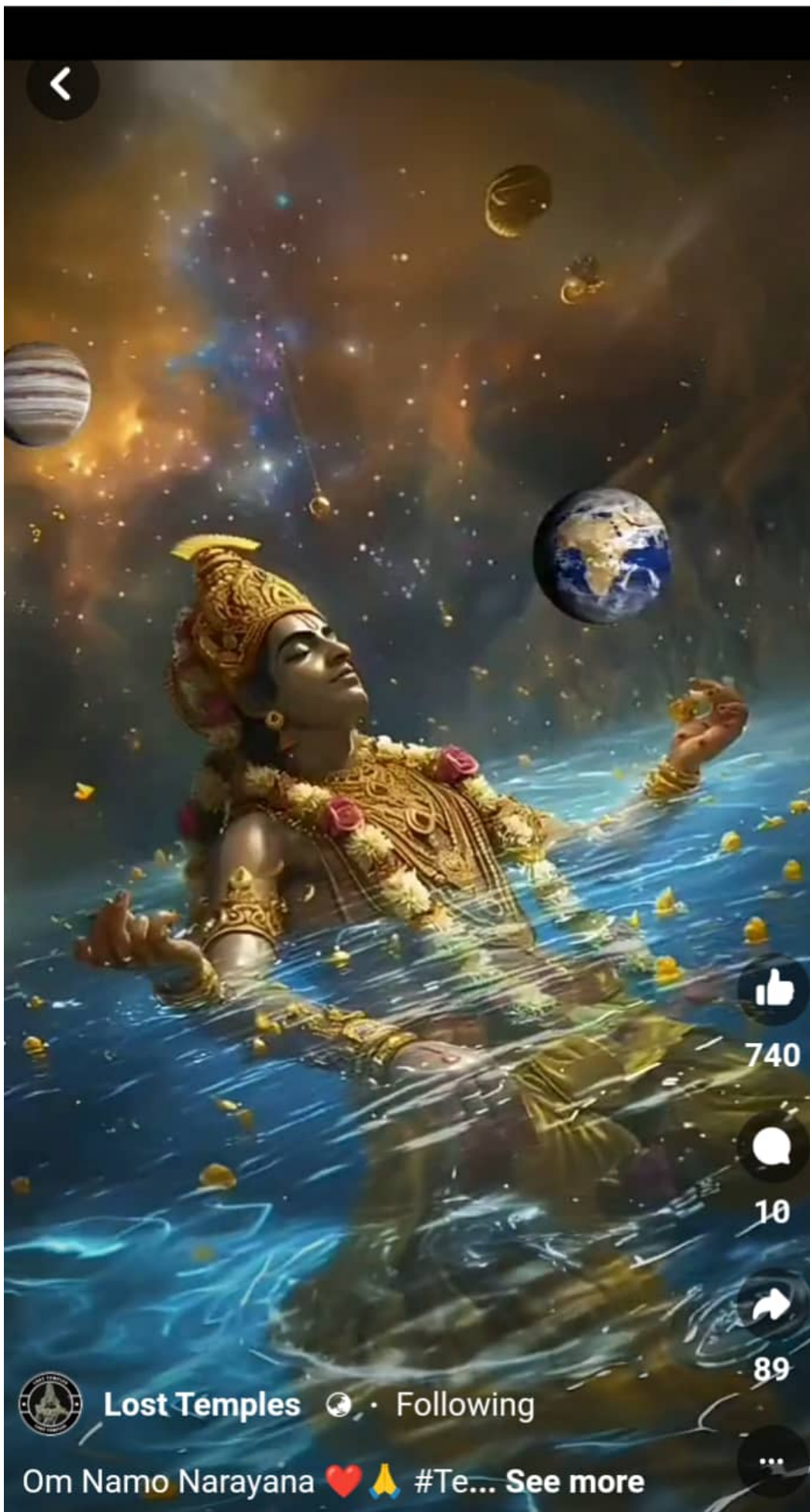
97

484

**Osho Lovers**

Raj Panwar osho • 3h •

मेरे ओशो प्रेमी मुझे बताएंगे कि आप लोगों
के किन-किन के जीवन में आचार्य रजनीश



Lost Temples · Following

Om Namo Narayana ❤️ 🙏 #Te... See more



740



10



89





बीस वर्ष की आयु में व्यक्ति
का जो चेहरा रहता है, वह
प्रकृति की देन है, तीस वर्ष की
आयु का चेहरा जीवन के
उतार-चढ़ाव की देन है,
लेकिन पच्चास वर्ष की आयु
का चेहरा व्यक्ति की अपनी
कमाई है।

- अष्टावक्र

insta : @aggyatlekhak



Ashish Kumar · Follow

Quoteshindi.net... See more

Add a comment...



27K



41



797





m.facebook.com



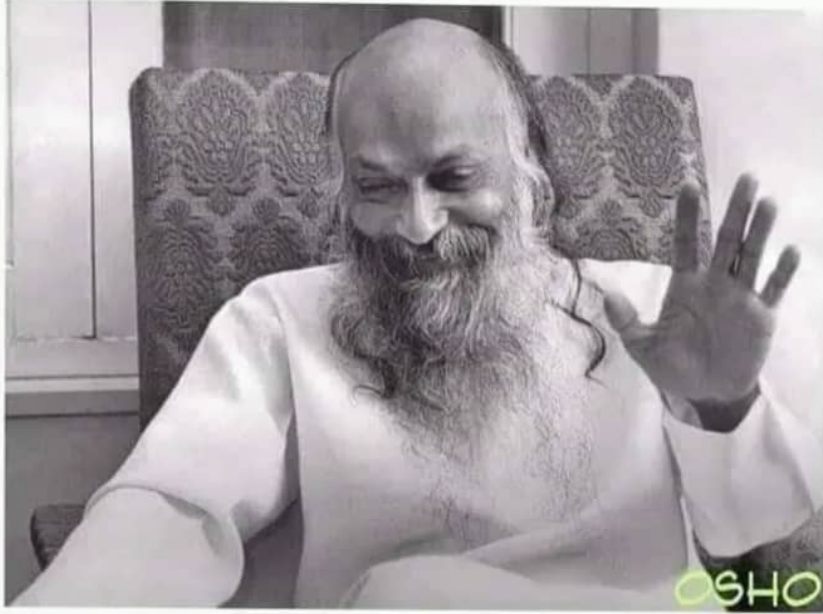
1



1

**ओशो ध्यान दर्शन**

Virendra Kumar · 2d · 🌐



जो व्यक्ति अपने साथ रहना सीख गया, उसकी ज्योति जग गई। अब वह किसी की तलाश में नहीं है।
कोई न आये तो मजे में है, कोई आये तो मजे में है।
अकेला हो तो उतने ही मजे में है, जितना पूरे संसार में हो तो मजे में है।

- आचार्य रजनीश, बिन धन परत फुहार-५



38



38



3

**ओ शो का हिन्दी साहित्य**

Sulaxna Dixit Rawat · 19h · 🌐

इस विज्ञान भैरव तंत्र का अंग्रेजी अनुवाद पाल रेप्स ने किया था। उसने एक सुंदर किताब लिखी है जिसका नाम है 'झेन फ्लेश, झेन बोन्स' और उसके परिशिष्ट के रूप में उसने इस 'विज्ञान भैरव तं... See more

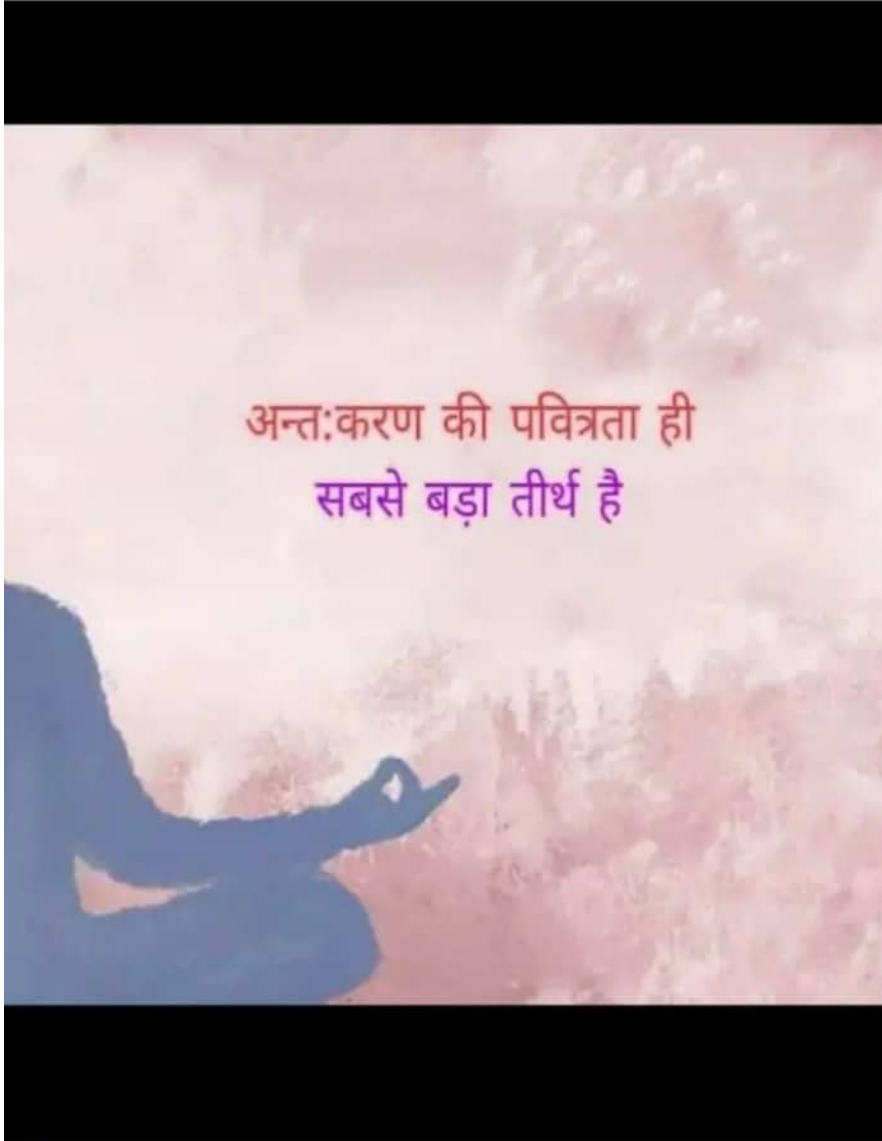




2d · 🌐

ध्यान का अर्थ होता है अखंड हो जाओ; एक चैतन्य हो जाओ। और उस एक चैतन्य के लिए जरूरी है कि तुम अपने जीवन से यांत्रिकता छोड़ो !

... See more



👍 Netaji Gadhire and 7 others



8



2



ओशो - जीवन-मृत्यु

Bhavna Joshi · 3h · 🌐





गाड़ी के पीछे. जय महाकाल,
लिखाकर चलने वालों की रूह कांप जाती हैं
जब एक फीट की बिल्ली रास्ता काट जाती हैं
यही अंधविश्वास हैं..

127

Osho world x

3



40



OSHO WORLD X · Following

यही तो अंधविश्वास है ... [See more](#)

Add a comment...





Anand Amitesh

11h •

~ कबीर साहिब के जन्मदिन की शुभकामनाएँ ~

जोगिया का अर्थ होता है: चले तो थे आत्मा खोजने, उलझ गए शरीर में। चले तो थे यात्रा को, नक्शे में ही उलझ गए! नक्शे में ही बैठ रहे! सोचा था-परलोक जाएंगे, और इसी लोक की शुद्धि करने में लग गए और यहीं समाप्त हो गए। तो जब कबीर 'जोगिया' कहें, तो समझ लेना कि वे मखौल उड़ा रहे हैं, वे मजाक उड़ा रहे हैं।

फिर कभी-कभी कबीर 'साधु' कहते-और कभी-कभी- संत। जब कबीर साधु कहते हैं या संत, तो अपने शिष्यों को संबोधन करते हैं। साधु का अर्थ है: जो चल पड़ा संत होने की ओर। और संत का अर्थ है: जो पहुंच गया। तो जब अपने किसी पहुंचे हुए शिष्य को उदबोधन करते हैं, तो संत कहते हैं। और जब अपने नये-नये शिष्यों को, जो प्रशिक्षित हो रहे हैं, जिन्होंने यात्रा की अभी पहल शुरू की, प्रस्थान किया है, उनको 'साधु' कहते हैं।

और कभी-कभी ऐसी भी बात कबीर कहते हैं, जब वे अपने को ही संबोधन करते हैं। जब कबीर अपने को संबोधन करते हैं, तब वे बड़ी अपूर्व बात कहते हैं। तब वे यह कहते हैं कि यह बात कुछ ऐसी है कि एक बुद्ध दूसरे बुद्ध से कहे। यह बात किसी और से नहीं कही जा सकती। अब कोई दूसरा बुद्ध मौजूद नहीं, इसलिए कबीर कबीर से ही कह लेते हैं। ध्यान रखना कबीर क्या संबोधन करते हैं, उस पर बहुत कुछ निर्भर करेगा।

'साधो, सब्द साधना कीजै

साधुओं को संबोधन कर रहे हैं

तीन शब्द-साधक, साधु, संत

साधक का अर्थ है: जिसने अभी-अभी चलना शुरू किया; जो अभी बाराखड़ी सीख रहा है; अभी तुतलाता है; गिर-गिर जाता है; भटक-भटक जाता है। दो कदम ठीक चलता है, तो एक कदम गलत पड़ जाता है। जिससे अभी बड़ी भूल-चूक होती है। जो अभी लौट-लौट संसार में उतर जाता है।

पुकार तो आ गई है परमात्मा की, लेकिन अभी साहस नहीं जुटा पाता। एक दिन प्रार्थना करता है, एक दिन भूल जाता है। दो दिन सद्गुरु के सत्संग में बैठता है तीसरे दिन झपकी खाने लगता है। दो-चार दिन बड़ी उमंग से चलता है, फिर थक जाता है। और कहता है: क्या धरा है! और फिर अपनी पुरानी आदतों में उलझ जाता है।

साधक: कुछ-कुछ किरण उतरनी शुरू हुई है। लेकिन अभी किरण इतनी सघन नहीं कि जीवन को पूरा बदल दे। हां, बदलाहट के छीटे आने लगे हैं। बंटबंटनी होने लगी। साधक का अर्थ है: गिर तो गया, थक भटकता

साधक: कुछ-कुछ किरण उतरनी शुरू हुई है। लेकिन अभी किरण इतनी सघन नहीं कि जीवन को पूरा बदल दे। हां, बदलाहट के छीटे आने लगे हैं; बूँदाबांदी होने लगी। साधु का अर्थ है: थिर हो गया; अब भटकता नहीं; अब भूल-चूक नहीं होती। अब साधना अविच्छिन्न हो गई; अखंड हो गई। अब बूँदाबांदी ही नहीं है, मेघमल्हार कर रहे हैं। और खूब वर्षा हो रही है। झड़ी लगी है; भींग रहा है। आनंदमग्न हो रहा है।

लेकिन अभी भी यात्रा के मध्य में है। वहां नहीं पहुंच गया है, जहां पहुंच कर फिर और कहीं पहुंचने को नहीं बचता। अभी चल रहा है। अभी खोज जारी है। खोज व्यवस्थित हो गई है। साधक जैसी नहीं रही। तारतम्य बैठ गया। अनुशासन आ गया। दिशा मिल गई। राह साफ हो गई। कहां जाना है, कैसे जाना है—सब स्पष्ट हो गया। और दूर दिखाई पड़ता हुआ मंजिल का चमकता तारा भी साफ है। अब भटकने का कोई उपाय नहीं। लेकिन अभी पहुंचना है। वह जो गौरी-शंकर का हिमाच्छादित शिखर सुबह के सूरज में सोने जैसा चमकता दिखाई पड़ रहा है, यद्यपि पास मालूम होता है, पर दूर है; अभी यात्रा करनी है—साधु। और जो गौरीशंकर पर विराजमान हो गया, वह संत या सिद्ध। ये तीन शब्द। साधु मध्य में है। साधक—साधु—संत।

ये वचन साधु के लिए उच्चारित हैं। तो साधु का अर्थ ठीक-ठीक ख्याल में ले लें। साधु का शाब्दिक अर्थ होता है: सरल, सीधा, सादगीपूर्ण, विनम्र, विनीत, निष्कपट, श्रद्धापूरित; श्रद्धा से भरा हुआ अर्थात् साधु। बुद्धि के जाल, तर्क के फैलाव, कपट और चालबाजियां, कूटनीति और राजनीतियां—सब छोड़ दी। बच्चे की भांति जो हो रहा। गुरु का हाथ ऐसे पकड़ ले, जैसे छोटा बच्चा अपने पिता का हाथ पकड़ लेता है, तब साधु।

साधक को समझाना पड़ता है: भूल मत करो। साधक को समझाना पड़ता है बार-बार—कि भूल से बचो। साधु को समझाना पड़ता है कि ठीक कैसे करो। साधक को बताना पड़ता है: गलत से कैसे बचो; और साधु को बताना पड़ता है: ठीक कैसे करो। साधक को लाना पड़ता है बार-बार...। क्योंकि वह भटक-भटक जाता है। और साधु को... कहीं भटकता नहीं है, लेकिन ठीक मार्ग पर—और कैसे गति बढ़े, जिस दिशा में चल पड़ा है, उस दिशा में और कैसे त्वरा आए, तीव्रता आए; धीमाधीमापन न रहे, कुनकुनापन न रहे, सौ डिग्री पर पानी उबले, ताकि एक दिन संतत्व की घटना घटे—सिद्धावस्था घटे।

साधो, सब्द साधना कीजै।'

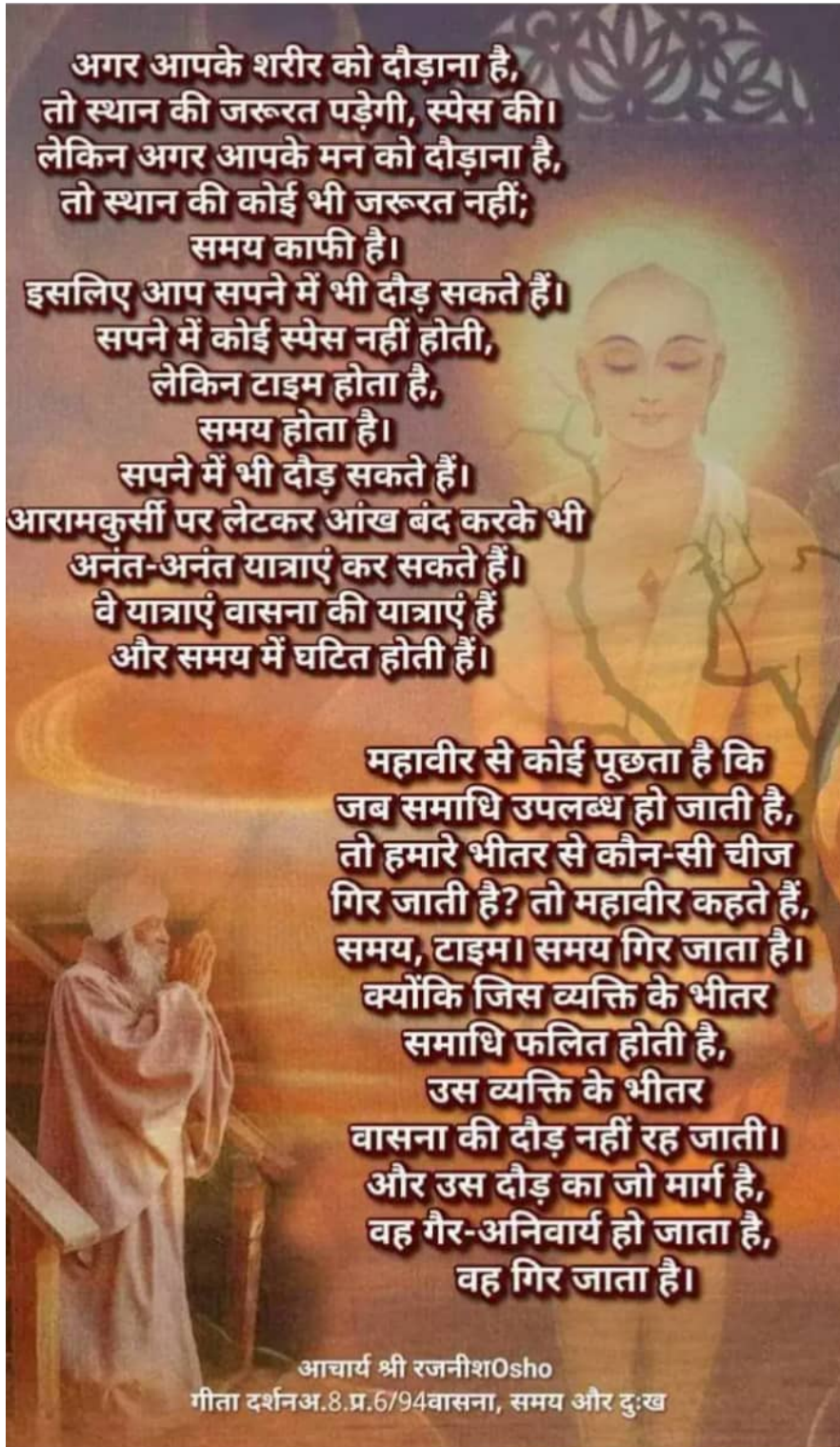
साधक से तो कहना होता है: सत्संग करो। साधु से कहना होता है: अपने भीतर जाओ। सत्संग अब पर्याप्त नहीं है। सत्संग ने काम कर दिया; तुम रम गए। तुम्हें राम में प्यार जग गया, प्रीति लग गई; अब अपने भीतर जाओ; अंतर्यात्रा पर लगो~ओशो





OSHO जीवन मृत्यु

Virendra Kumar · 1h ·



4



4





ज़िंदगी बदल जाएगी!

🛏 थका हुआ महसूस करते हो - जल्दी सोया करो

🏃 शरीर में दम नहीं है - Exercise किया करो

👤 सब मुश्किल लगता है - छोटी शुरुआत करो

💰 पैसा नहीं है - ढूंढो कैसे कमा सकते हैं

📖 Knowledge नहीं है - Books पढ़ा करो

👤 फॉलो कर लो, ज़िंदगी बदल दूंगा



37K



99



440



23life · Follow

BUSINESS सीखने के लिए हमें फॉलो ... See more

Add a comment...





ओ शो का हिन्दी साहित्य

Nandita Das · 24m ·

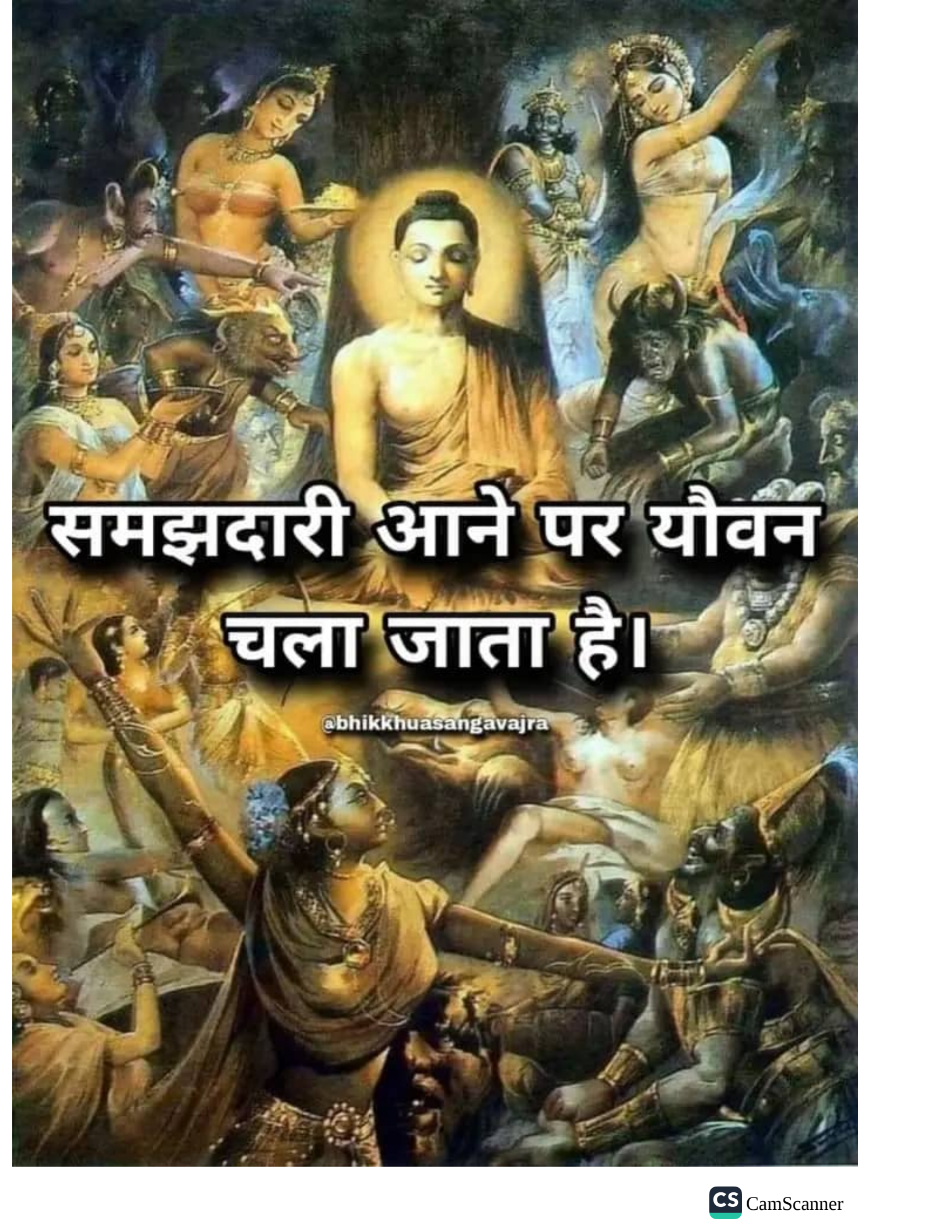
बुद्ध ने बत्तीस कुरूपताएं शरीर में गिनायी हैं।
इन बत्तीस कुरूपताओं का स्मरण रखने का नाम
कायगता—स्मृति है।

पहली तो बात, यह शरीर मरेगा। इस शरीर में मौत लगेगी। यह पैदा ही
बड़ी गंदगी से हुआ है। मां के गर्भ में तुम कहां थे, तुम्हें पता है?
मल—मूत्र से घिरे पड़े थे। उसी मल—मूत्र में नौ महीने बड़े
हुए। उसी मल—मूत्र से तुम्हारा शरीर धीरे—
धीरे निर्मित हुआ। फिर बुद्ध कहते हैं कि अपने
शरीर में इन विषयों की स्मृति रखे—केश,
रोम, नख, दांत, त्वक्, मांस, स्नायु, अस्थि,
अस्थिमज्जा, यकृत, क्लोमक, प्लीहा,
फुस्फुस, आत, उदरस्थ मल—मूत्र, पित्त, कफ,
रक्त, पसीना, चर्बी, लार आदि।
इन सब चीजों से भरा हुआ यह शरीर है, इसमें सौंदर्य हो कैसे सकता है!
सौंदर्य तो सिर्फ चेतना का होता है।
देह तो मल—मूत्र का घर है। देह तो धोखा है। देह के
धोखे में मत पड़ना, बुद्ध कहते हैं।
इस बात को स्मरण रखना कि इसको तुम कितने ही इत्र से छिड़को इस
पर, तो भी इसकी दुर्गंध नहीं जाती। और तुम इसे
कितने ही सुंदर वस्त्रों में ढांको, तो भी इसका असौंदर्य नहीं ढकता है।
और तुम चाहे कितने ही सोने के आभूषण पहनो, हीरे—जवाहरात
सजाओ, तो भी तुम्हारे भीतर की मांस—मज्जा वैसी की वैसी है।
जिस दिन चेतना का पक्षी उड़ जाएगा,
तुम्हारी देह को कोई दो पैसे में खरीदने को राजी न होगा।

जल्दी से लोग ले जाएंगे, मरघट पर जला जाएंगे। जल्दी समाप्त करेंगे।
घड़ी दो घड़ी रुक जाएगी देह तो बदबू आएगी। यह तो रोज नहाओ,
धोओ, साफ करो, तब किसी तरह तुम बदबू को छिपा पाते हो। लेकिन
बदबू बह रही है।

ओशो





**समझदारी आने पर यौवन
चला जाता है।**

@bhikkhuasangavajra

बुद्ध मात्र ऐसे व्यक्ति है जिन्होंने कहा था

-मेरी पूजा मत करना ।

- मुझसे कोई उम्मीद मत रखना।

-मैं कोई चमत्कार नहीं करूंगा।

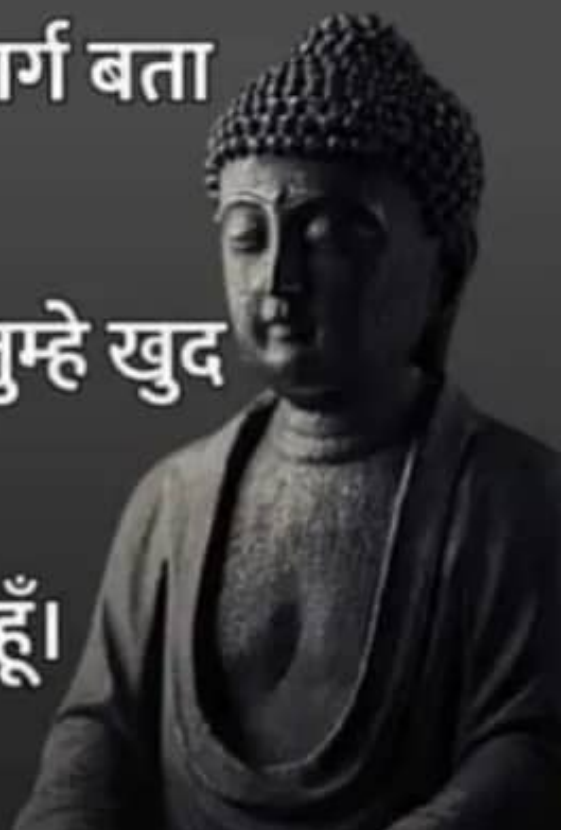
-दुःख तुमने पैदा किया है तुम्हे ही उसे
दूर करना होगा।

-मैं जिस मार्ग पर चला हूँ वो मार्ग बता
सकता हूँ।

-लेकिन उस रास्ते पर चलना तुम्हे खुद
होगा ।

- मैं मुक्तिदाता नहीं, मार्गदाता हूँ।

-अपना प्रकाश स्वयं बनो।





मिलते ही सब व्यर्थ हो जाता है



42K



100



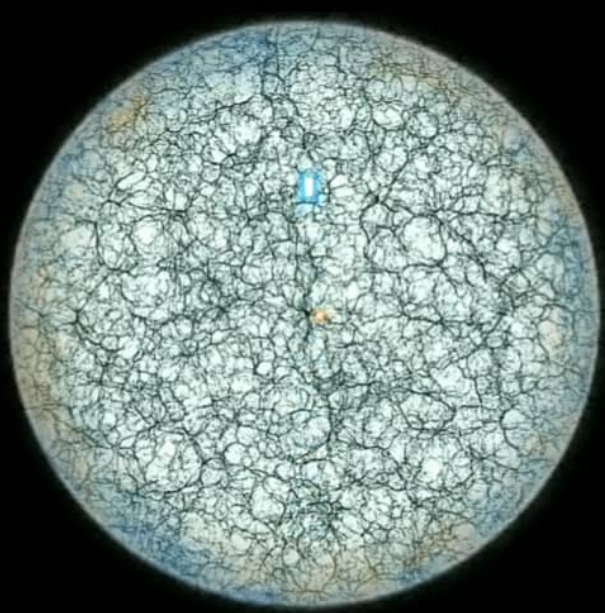
283



motivation_280821 @

मिलते ही सब व्यर्थ हो जाता है, तुम जो पा... **See more**

Add a comment...



93 billion light years



1.5K





साइंस

के अनुसार शुगर को जड़ से खत्म कैसे करें
1 किलो करेले को चाकू से बारीक काट कर
हमामदस्ते में कुटाई कर ले अब इसको पानी
में अच्छे से मिक्स करें अब इसको किसी बड़े
बर्तन में डालकर दोनों पांव रखें और पांवो को
जब तक रखे रखना है जब तक मुंह में करेले
का खारापन ना आ जाए



25K

पाँच मिनट का ध्यान, कभी-भी, कहीं-भी

आप दिन में कभी-भी ध्यान कर सकते हैं, जब थोड़ा-सा समय मिल जाए, तभी। ध्यान की प्रक्रिया को बहुत जटिल नहीं बनाना चाहिए। यह आसान है। इसके लिए आपका केवल पाँच मिनट का समय चाहिए। एक टाइमर सेट करें, अपनी पीठ सीधी करके बैठें, आँखें धीरे से बंद करें और अपनी साँस को आते-जाते हुए महसूस करें। इसी के साथ अपने विचारों को भी आने और जाने दें। उन्हें रोकने की कोशिश मत कीजिए। अपने आप पर ध्यान लगाने का प्रयास करें। प्रैक्टिस, और प्रैक्टिस करें। और तब तक प्रैक्टिस करें जब तक आप इसमें निपुण न हो जाएँ। अगर सुबह उठते ही और बिस्तर पर, सोने से पहले इस ध्यान को किया जाए तो विशेष रूप से यह तब प्रभावी होता है।

SAMAY
PATRIKA

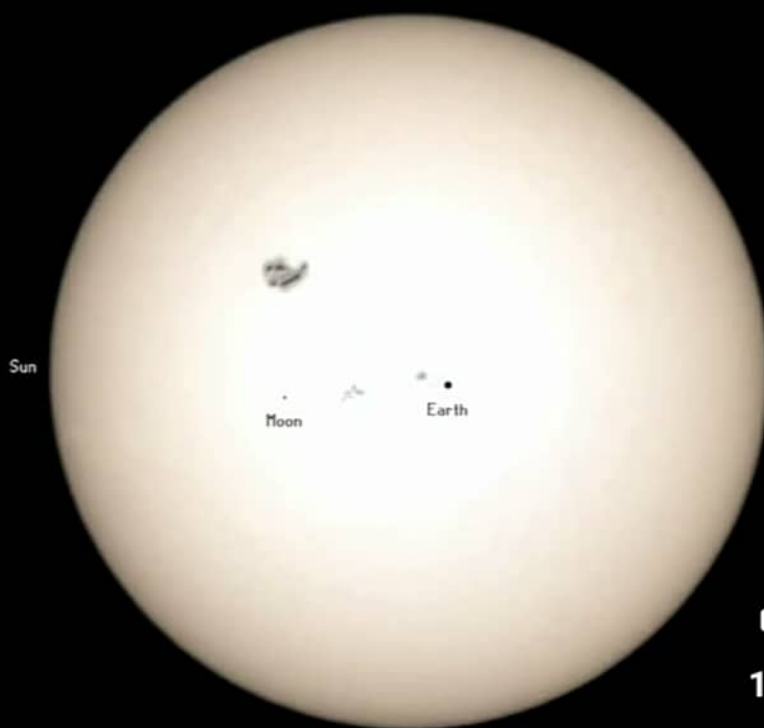


O
S
H
O

आज कुछ नहीं है मेरे शब्दों
के गुलदस्ते में...,
कभी-कभी मेरी खामोशियाँ
भी पढ़ लिया करो....!!!



Earth and the Moon passing in front of the Sun



118



9



cosmology_kerala

Size comparison 🤔... See more

Add a comment...



Free Chat
sanjay Kumar

संत कबीर-इस माटी के महल में,
क्यों मगन भया मनमूढ़ ? कर साहेब
कि वंदगी और उस साई को ढूँढ।

जैसे तिलों में तेल हैं ज्यों
चकमक में आग
तैसे तेरा साई तुझ में है तू जगा
सके तो जाग

मौको कहां ढूँढे रे बन्दे मैं तो तेरे
पास में, खोजी होये तो तुरंत मिल
जाऊं पल भर की तलाश में।

हर घट भीतर मेरा सांइयां सुनी
सेज ना कोये, बलिहारी उस घट
के जा घट साहेब प्रगट होये

भेष फ़क़ीरी जो करे मन नहीं आवे हाथ
दिल फ़क़ीरी जो करे साहेब हर पल सा

तेरा साई तुझमें है, ज्यों पहूपन में बास
कस्तुरी हिरण ज्यों फिर फिर ढूँढे घास।

कस्तुरी कुण्डल बसे, मृग ढूँढे बन माही
मेरा साहिब मुझमें बसे ये दुनिया जाने नाही
ज्यों नैनन में पुतली त्यों मालिक घर माही
मुख लोग ना जानिए, बाहर ढूँढन जाहि ।

प्रेम छिपाय ना छिपे, जा घट प्रगट होये
जो पाये मुख बोले नहीं नैन देते हैं रोये।

प्रेम-प्रेम सब कोई कहे, प्रेम ना जाने कोये?
जा मार्ग साहिब मिले, प्रेम(ध्यान) कहावे सोये।

"परमेश्वर 'आत्मा' रूप में तूम में मौजूद है"।
सप्रेम साहिब वंदगी साहिब



Moon

Diameter: 3476 km

Ratio : 1

Example : sago



Earth

12756 km

4

glass marble



Sun

1392000 km

400

basketball

The Sun & the Moon appear **about the same size** in the sky, but they are **not perfectly the same size** and their **sizes are not constant** because the orbits are **not perfectly circular**.

	 Sun	 Moon
Diameter	1.3927 million km	3474.2 km
Minimum distance	147.1 million km	356400 km
Maximum distance	152.1 million km	406700 km
Minimum angular size	0.525°	0.489°
Maximum angular size	0.542°	0.559°

Flat-Earthers claim it is too much of a **coincidence** that the Sun is perfectly 400× larger than the Moon & perfectly 400× farther, making them appear exactly the same size. In reality, the Sun & Moon are **not perfectly the same size** in the sky.

 **FlatEarth.ws/sun-moon-size**
Debunking Flat Earth Misconceptions



Moon

Diameter: 3476 km

Ratio : 1

Example : sago



Earth

Diameter: 12756 km

Ratio : 4

Example : glass marble

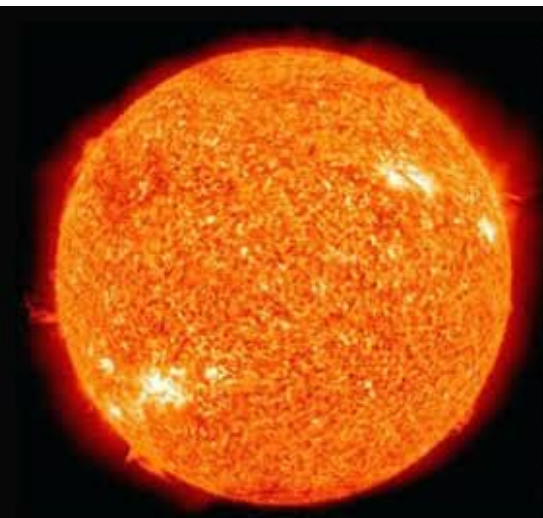


Sun

Diameter: 1392000 km

Ratio : 400

Example : basketball



**Sun's diameter is 864,000
miles $\times 108 = 93,312,000$
miles from earth**



**Moon's diameter is 2,160
miles $\times 108 = 233,280$ miles
from earth (average)**



**Earth's diameter is 7,926
miles $\times 109 =$ sun's diameter
of 864,000 miles**



890

890

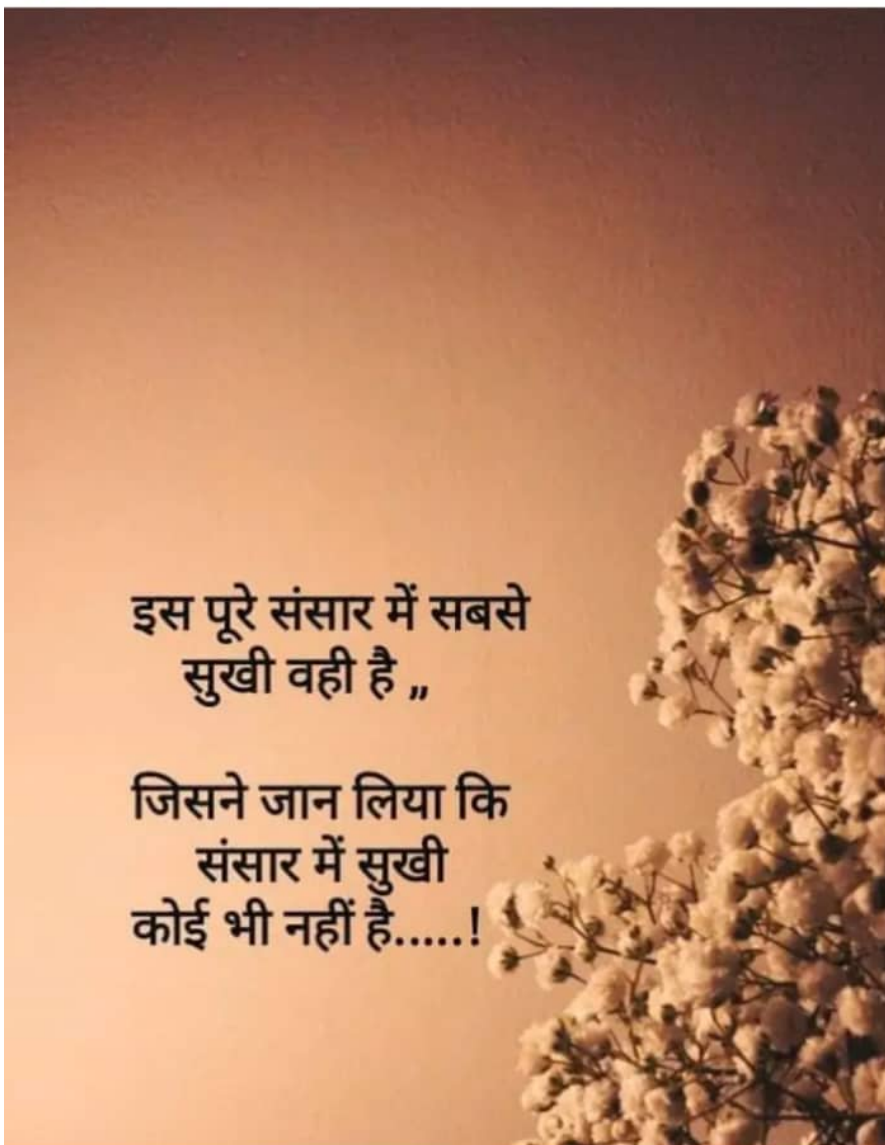
9

9



OSHO Tapobhumi • Follow

Suggested for you • 3d •



30K

30k

296

3k



Sonu Sharma • Follow

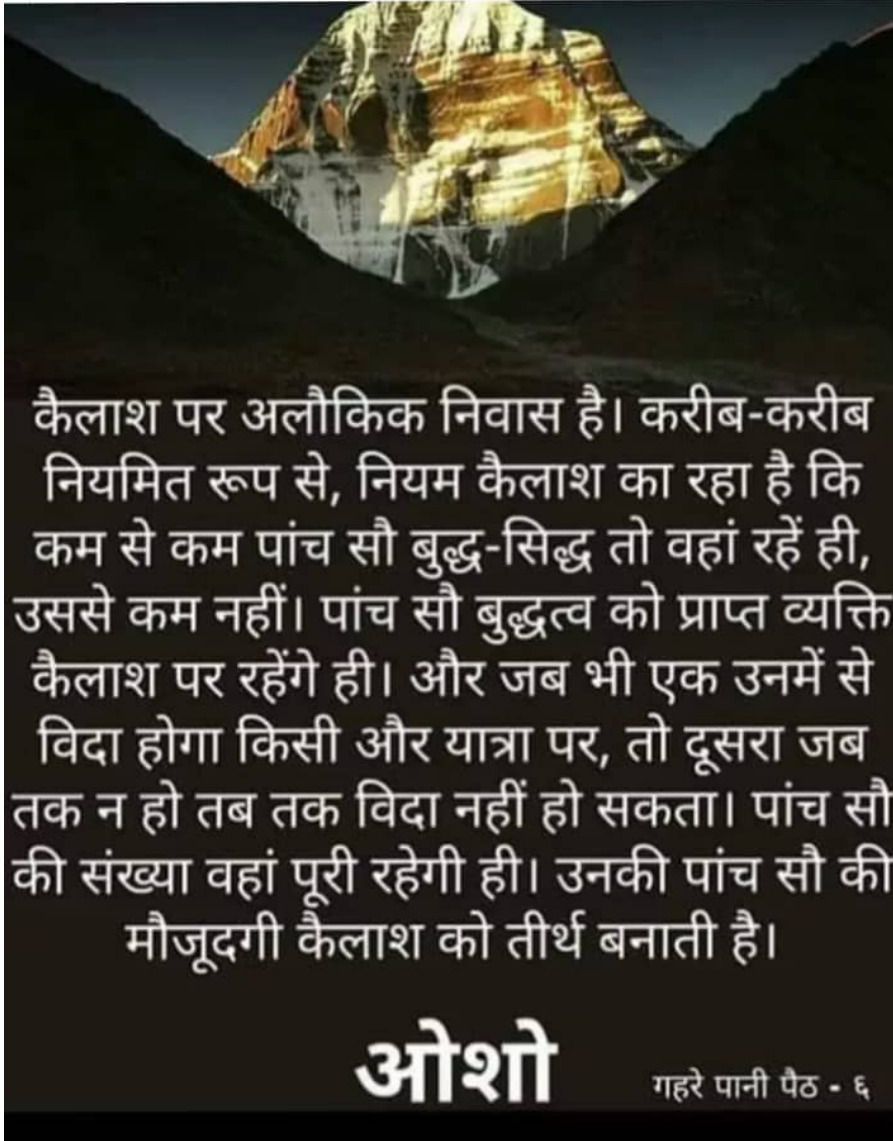
28 May 2024 •

कर्म का फल तो भोगना पड़ेगा | A Motivational video by Sonu

**स्वामी आनन्द देव**

5d · 🌐

परंतु यह निवास शारीरिक रूप से नहीं है।



👍 Osho Nitin Shah and 9 others



10



1

**Mansukh Abhangi**

2h · 🌐



मिट्टी का जिस्म लेकर पानी के
घर में हूं,
मंज़िल है मौत मेरी हर पल सफ़र
में हूं,



होना है क़त्ल मेरा ये मालूम है
मुझे,
लेकिन ख़बर नहीं कि किसकी
नज़र में हूं मैं,

वो दौर गया जब मर्द
की कामयाबी के पीछे
औरत का हाथ होता
था 😞

अब औरत हाथ ही
कामयाब मर्द पर
डालती है 😂😂😂



4k

816

**Mansukh Abhangi**

10h · 🌐

...

यदि आप
ओशो को पढ़ते हैं
तो आप निस्संदेह
कृष्ण, पतंजलि, गोरख,
बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस,
मोजेज़, लाओत्से, चवांतजु, बोधिधर्मा,
रामकृष्ण, कबीर, सहजोबाई, मीरा,
नारद, शंकराचार्य, रामकृष्ण, अष्टावक्र,
शंकर, कृष्णमूर्ति –
अनेक नाम हैं
जिनके प्रेम में पड़ सकते हैं ।

ओशो को पढ़ने पर
आप किसी धर्म के नहीं रह पाएंगे ।
आपका धर्म विलीन हो जाएगा
और फिर एक महाधर्म का उदय होगा ।

आपके अंदर होगा वास्तविक धर्म का आविर्भाव ।
फिर आपके मन में किसी के प्रति घृणा नहीं होगी,
सभी से प्रेम होगा, प्रेम का अदभूत उदभव होगा ।

ओशो की किसी
एक किताब को पढ़ते ही या किसी एक प्रवचन को सुनते ही
आप पूरी तरह से विद्रोही हो जाएंगे,
रूपांतरित हो जाएंगे
और यदि ध्यान घटा तो
आप शरीर में
रहते हुए मृत्यु के पार चले जाएंगे ।

साक्षी बने और ओशो को पढ़िए।
आप देखेंगे आपके जीवन में आनंद की वर्षा होगी ।

Indresh Yadav and others



3





कन्फ्यूशियस की प्रमुख सूक्तियाँ

- हर एक चीज में खूबसूरती होती है, लेकिन हर कोई उसे देख नहीं पाता।
- एक शेर से ज्यादा एक दमनकारी सरकार से डरना चाहिए।
- मैं सुनता हूँ और भूल जाता हूँ। मैं देखता हूँ और याद रखता हूँ। मैं करता हूँ और समझ जाता हूँ।
- जो आप खुद पसंद नहीं करते, उसे दूसरों पर मत थोपिए।
- बुराई को देखना और सुनना ही बुराई की शुरुआत है।
- सफलता पहले से ही कई तैयारी पर निर्भर है और बिना ऐसी तैयारी के असफलता निश्चित है।
- महानता कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।
- नफरत करना आसान है, प्रेम करना मुश्किल। चीजें इसी तरह काम करती हैं। सारी अच्छी चीजों को पाना मुश्किल होता है और बुरी चीजें बहुत आसानी से मिल जाती हैं।
- हम तीन तरीकों से ज्ञान अर्जित कर सकते हैं—पहला—चिंतन करके, जो कि सबसे सही तरीका है; दूसरा—अनुसरण करके, जो कि सबसे आसान है और तीसरा—अनुभव से, जो कि सबसे कष्टकारी है।
- यह बात मायने नहीं रखती कि आप कितने धीमे चल रहे हैं, जब तक कि आप रुकें नहीं।
- बुद्धि, करुणा और साहस व्यक्ति के लिए तीन सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त नैतिक गुण हैं।
- किसी कमी के साथ एक हीरा बिना किसी कमी के पत्थर से बेहतर है।
- उस काम का चयन कीजिए, जिसे आप पसंद करते हों। फिर आप पूरी जिंदगी एक दिन भी काम नहीं छोड़ेंगे।
- गलतियों से डरना नहीं चाहिए।

**OSHO जीवन मृत्यु**

Manoj T K · 6h ·



ये पिछले जन्मों के दुख नहीं हैं। अभी जो कर रहे हो, उसी का परिणाम है। परमात्मा उधारी में भरोंसा नहीं करता। अभी आग में हाथ डालोगे, अभी जलेगा, अगले जन्म में नहीं। और अभी किसी को दुख दोगे तो अभी दुख पाओगे, अगले जन्म में नहीं।



Swami Aadhar and 21 others



22



3



3

**Maneesh Chandra** · [Follow](#)

4d ·



या तन भीतर और ना कोई,
मन अरु जीव रहे घर दोई।

मानव तन के अंदर मन और जीव दोनों रहते हैं, शरीर तो माया है, और मन इसकी आड़ लेकर आत्म देव को भ्रम में डाल रहा है कि तुम शरीर और मन हो, और जब से आत्म देव ने खुद को शरीर और मन माना तब से यह शरीर की जरूरतों और मन की इच्छाओं को पूरा करने में लगी हुई है, और इस तरह आत्मा मन और माया के बंधन में आ गई है, इस बंधन से मुक्त होने का एक ही तरीका है और वह है 'आत्मज्ञान' प्राप्त कर लेना।



بزم موسیقی • Follow

20 Jun 2024 •

Ye_Dil_Aur_Unki_Nigaahon_Ke_Saaye____Prem_Parbat_1973 🌹🌹



सुप्रभात

11

11

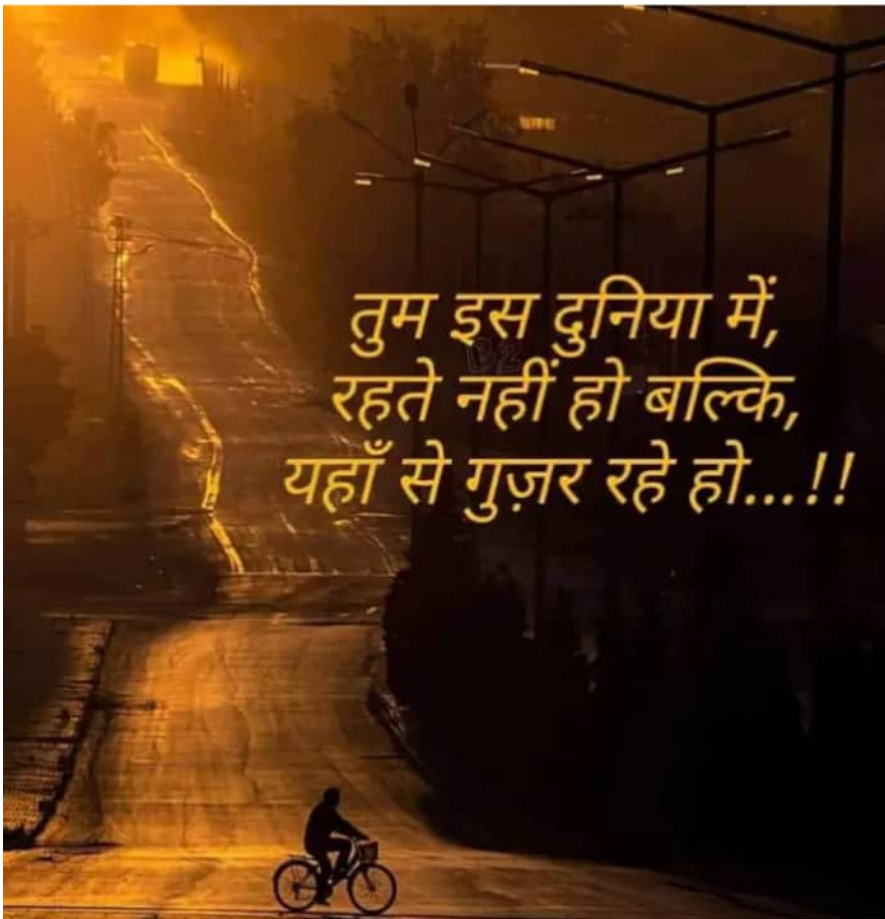


1



मैं मृत्यु सिखाता हूँ....

Brijmohan Sarda · 32m ·



3

3



Osho Line

16m ·



4



4



1



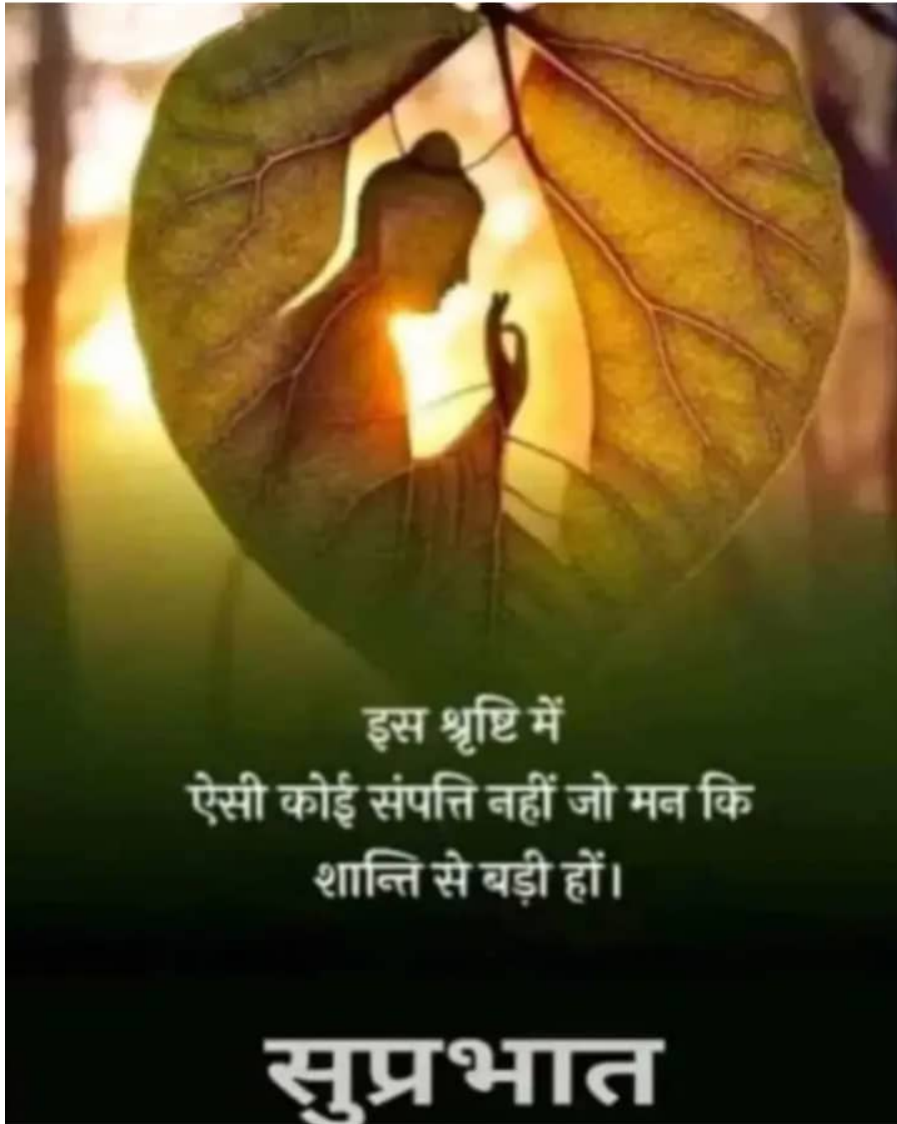
1



ओशो-रूमी

9h · 🌐

...



11



11



1



मैं मृत्यु सिखाता हूं....

Brijmohan Sarda · 32m · 🌐

...





6

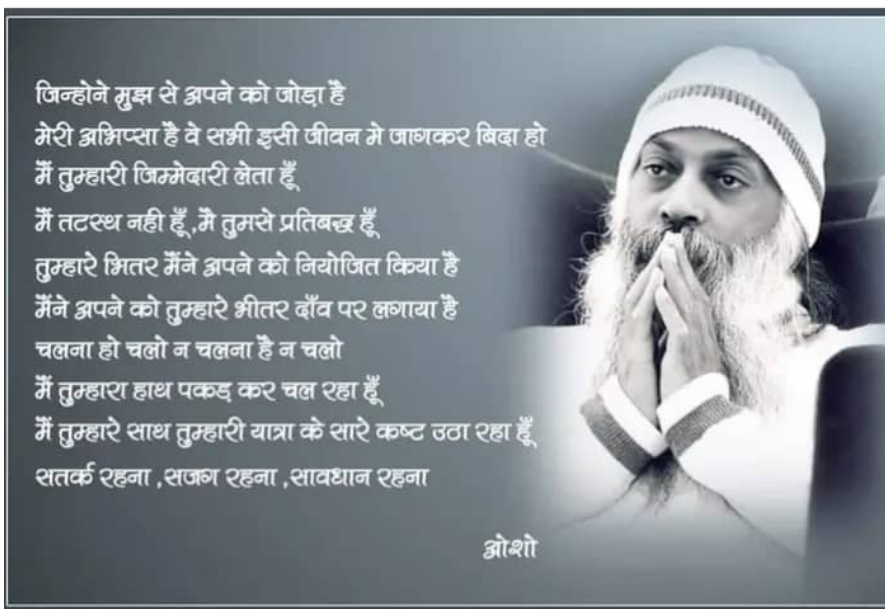


6

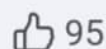
**Nilesch Sagar**

5d · 🌐

जिन्होंने मुझ से अपने को जोड़ा है
मेरी अभिप्सा है वे सभी इसी जीवन में जाग कर विदा हो
में तुम्हारी जिम्मेदारी लेता हूँ
में तटस्थ नहीं हूँ मैं तुमसे प्रतिबद्ध हूँ
तुम्हारे भीतर मैंने अपने को नियोजित किया है
मैंने अपने को तुम्हारे भीतर दांव पर लगाया है
चलना है चलो, न चलना है न चलो,
मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर चल रहा हूँ
मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी यात्रा के सारे कष्ट उठा रहा हूँ
सतर्क रहना, सजग रहना, सावधान रहना। -ओशो



Rajkumar Sahu Sahu Sahu and 94 others



95



9



10

**(ओशो) के प्रेमी**

Govind Verma · 1h · 👤



- राहुल सांकृत्यायन

Premchand Rai and 23K others



23k



3k



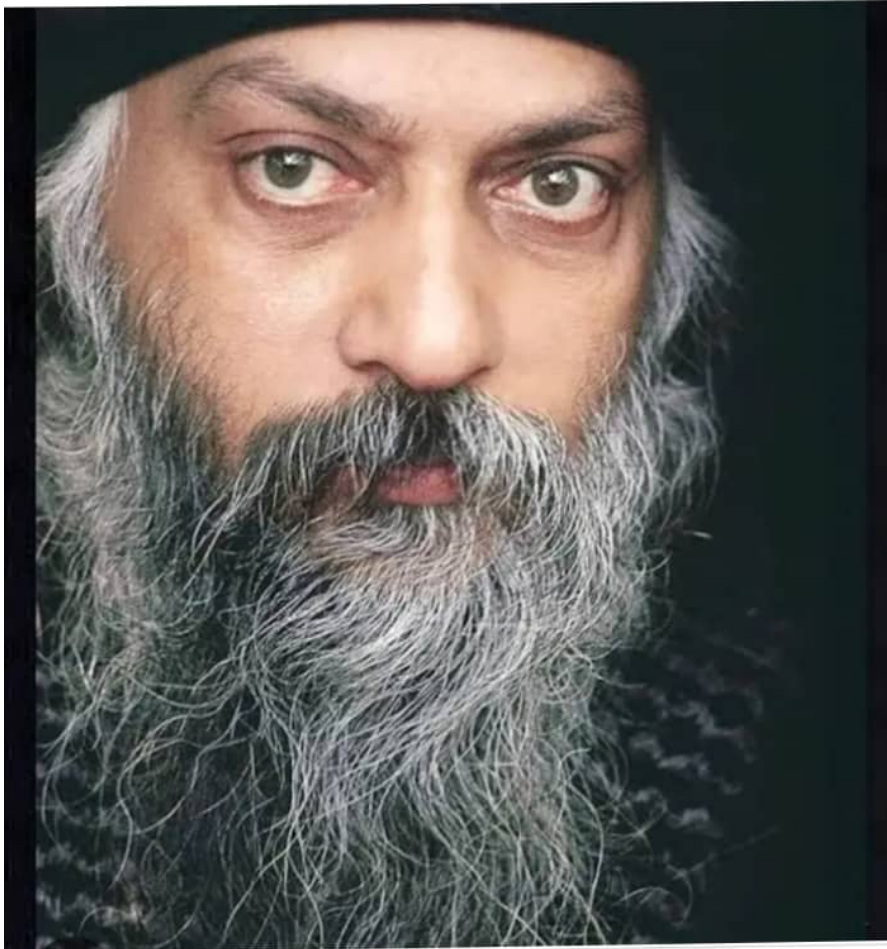
3k



Raje Ram ▶ ओशो के विचार - O'sho friends

4h ·

छू के हिस्सा रूह का कोई,
मेरा ज़िस्म तुमने मिट्टी कर दिया.....!!

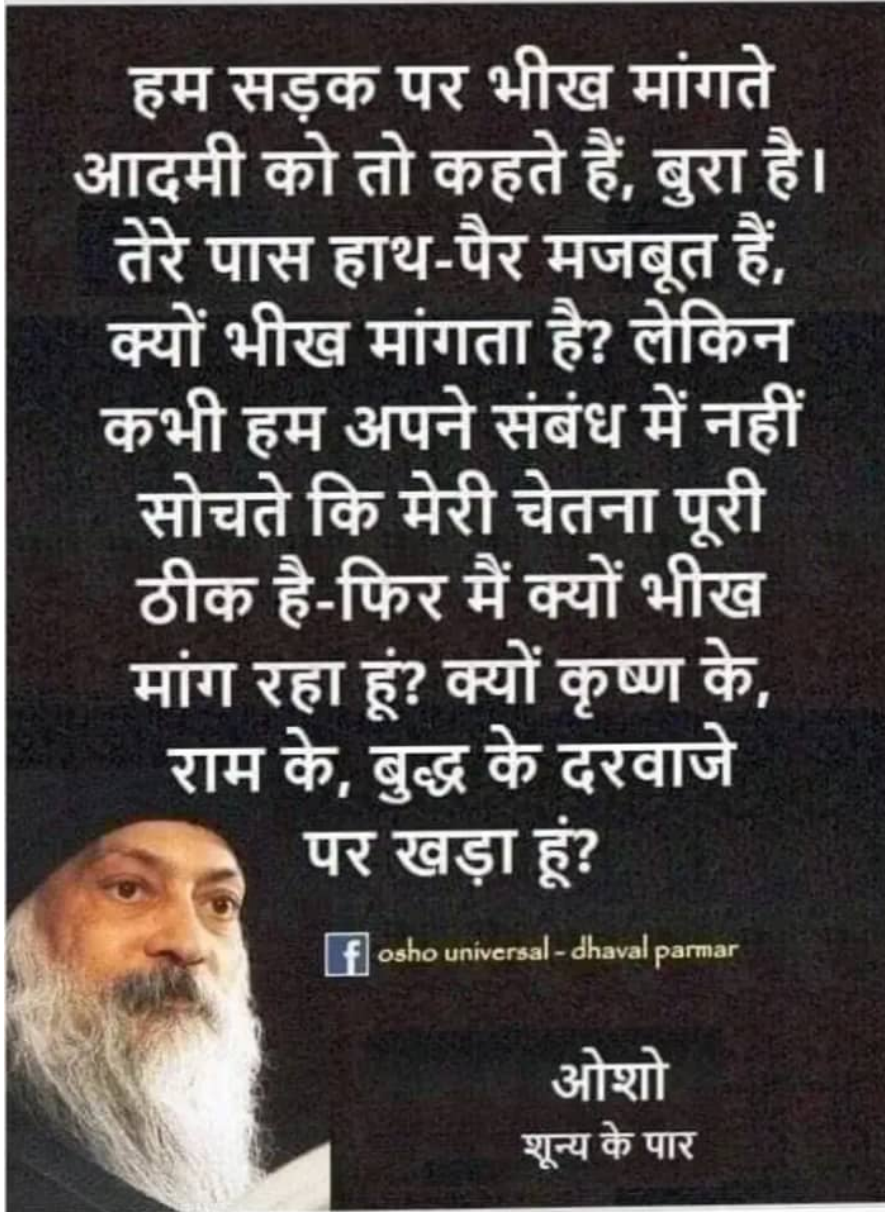


**Osho Nitin Shah**

1d · 🌐

**Prem ki Mehk**

Pushpa · 4d · 🌐



Osho Nitin Shah and 5 others

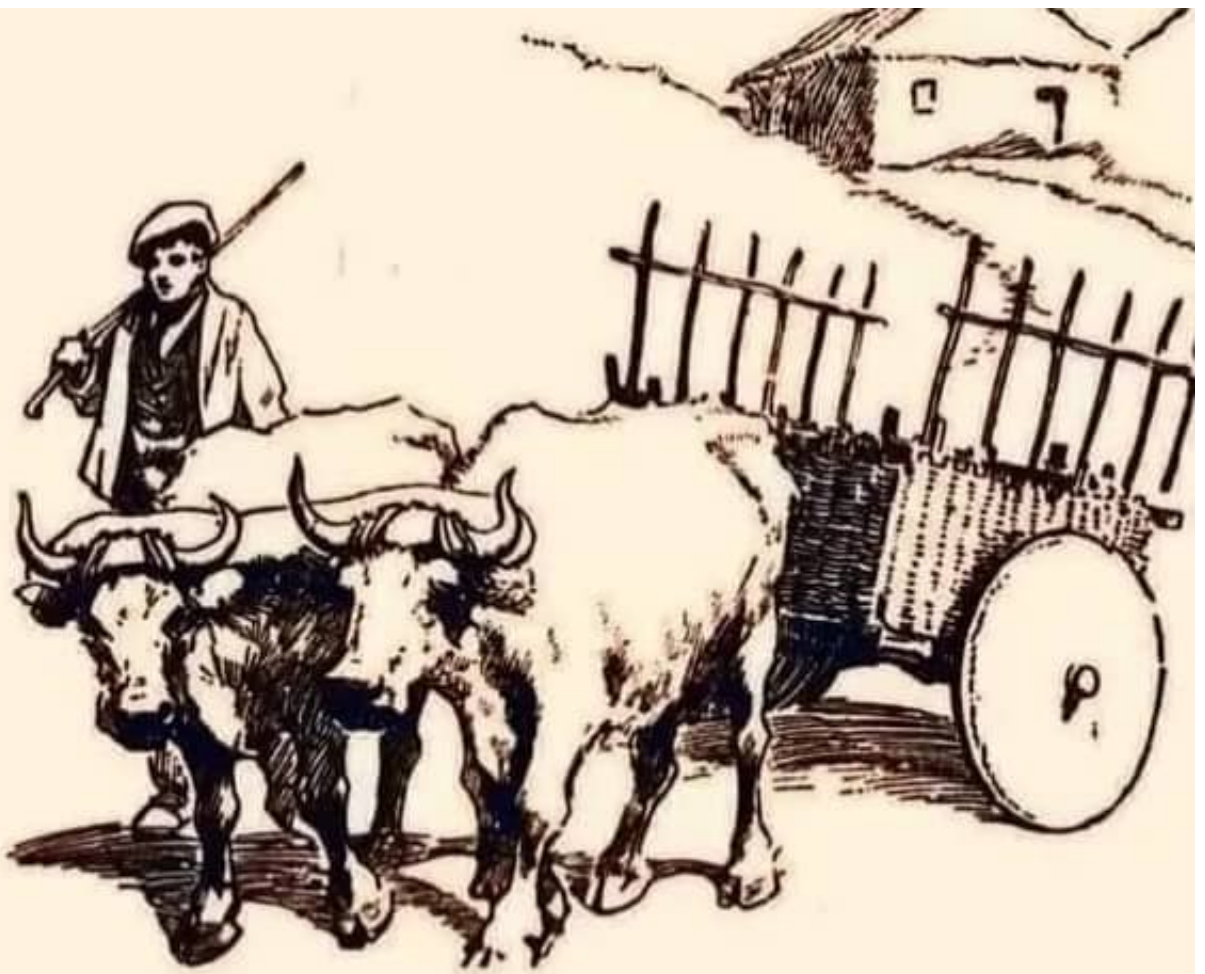


6



1





‘ दृश्य ’ से द्रष्टा की और चलना है

दृश्य है रूप , क्रिया , सत्ता ।

द्रष्टा है अरूप , अक्रिया , शून्य

‘ दृश्य ’ है पर , अनित्य , संसार

बंधन , अमुक्ति , आवागमन ।

‘ द्रष्टा ’ है स्व , नित्य ब्रह्म ,

मुक्ति , मोक्ष , निर्वाण ।

देखो - जो देखता है ,

उसे देखो ।

यही समस्त योग है ।



ओशो
क्रांतिबीज

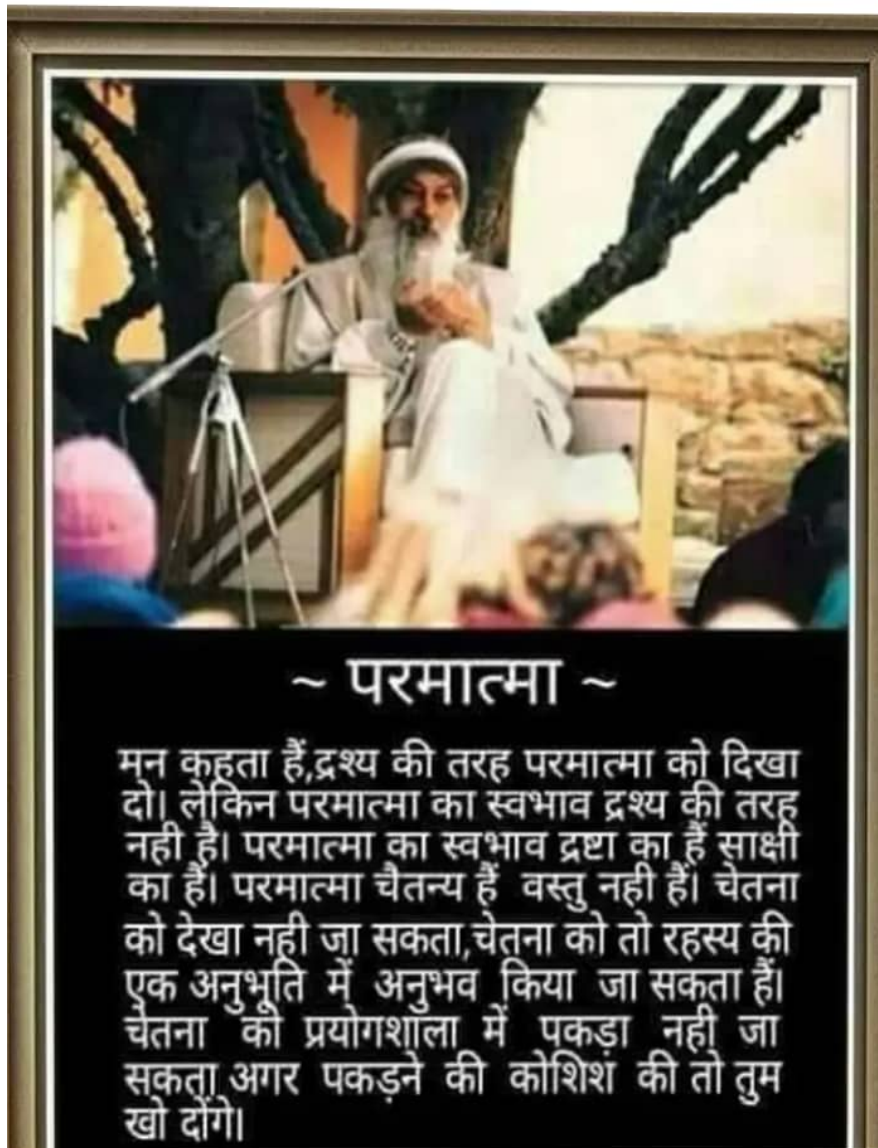


परमात्मा तुम्हारी सुगंध है,
जैसे गुलाब की सुगंध।
परमात्मा कोई वस्तु नहीं है
जिसे तुम खोजने जाते हो,
परमात्मा तुम्हारी सुगंध है।

Osho
अष्टावक्र महागीता-९०
सरलतम घटना: परमात्मा

तुम ईश्वर को
कहीं आकाश में बैठा!
मुकुट लगाएं,
या गले में सांप डालें मत
समझ लेना!
यह संपूर्ण अस्तित्व ही
ईश्वर है, जो तुम्हारे भीतर
भी विराजमान है!
उसे अगर पहचान लो
तो तुम ही ईश्वर हो!

हमेशा मुस्कराते रहो 🙏😊
मार्ग --- #स्वयंकीओर 🙏👣ॐ



👍 5



5



Fans Of Mohammad Rafi · [Follow](#)

7h ·



अभिमान और स्वाभिमान में क्या भिन्नता है?

स्वाभिमान अभिमान नहीं है। भिन्नता ही नहीं है, विरोध है।...see more



_*तुम अकेले नहीं हो! परमात्मा सदा तुम्हारे साथ
साथ ही चल रहा!!*_

अकेला कोई भी नहीं चल रहा है।
तुम्हारे साथ परमात्मा चल ही रहा है।
तुम्हारे भीतर ही बैठा है,
साथ चल रहा है यह कहना भी ठीक नहीं है।
अकेले तो तुम चल भी न सकोगे
अकेले तो तुम्हारा होना भी नहीं है।
अकेले तो श्वास भी न ले सकोगे,
हृदय भी न धड़केगा।
उसके सहारे धड़क रहा है,
वही धड़का रहा है। वही धड़कन है।
वही श्वास ले रहा है, वही श्वास है।
नाम उसे कुछ भी दो।
परमात्मा दो, आत्मा दो,
या जो चाहो कहना, कहो।
लेकिन तुम्हारे भीतर मौजूद है।

ओशो **Osho wisdom**

👍❤️ Nanji Bhai Atara and 24 others

👍 25

💬 1

🔗 4

115 views



Munabai Makvana · 1h ·

🍀 यहूदियों में एक कथा है कि जब कोई बच्चा पैदा होता है, तो देवता आते हैं और उस बच्चे के सिर पर हाथ फेरते हैं, ताकि वह भूल जाए उस सुख को जो सुख परमात्मा के घर उसने जाना था, नहीं तो जिंदगी बड़ी कठिन हो जाएगी—दयावश ऐसा करते हैं वे, नहीं तो जिंदगी बड़ी कठिन हो जाएगी। अगर वह सुख याद रहे, तो बड़ी कठिन हो जाएगी, तुलना में। तुम फिर कुछ भी करो, व्यर्थ मालूम पड़ेगा। धन कमाओ, पद कमाओ, सुंदर से सुंदर पत्नी और पति ले आओ, अच्छे से अच्छे बच्चे हों, बड़ा मकान हो, कार हो, कुछ भी सार न मालूम पड़ेगा, अगर वह सुख याद रहे।

तो यहूदी कथा कहती है कि एक देवता उतरता है करुणावश और हर बच्चे के माथे पर सिर्फ हाथ फेर देता है। उस हाथ के फेरते ही पर्दा बंद हो जाता है, उसे भूल जाता है परमात्मा। सुख भूल गया, फिर यह जीवन के दुखों में ही सोचने लगता है, सुख होगा।

उस पर्दे को फिर से खोलना है, जो देवताओं ने बंद कर दिया है। मुझे तो नहीं लगता कि कोई देवता बंद करते हैं। देवता ऐसी मूढ़ता नहीं कर सकते। लेकिन समाज बंद कर देता है। शायद कहानी उसी की सूचना दे रही है। परिवार, समाज, स्कूल बंद कर देते हैं, पर्दे को डाल देते हैं। ऐसा डाल देते हैं कि तुम भूल ही जाते हो कि यह द्वार है, तुम समझने लगते हो दीवार है। ध्यान का अर्थ है, इस पर्दे को हटाना।

और इसे अनायास होने दो, इसे कभी—कभी तुम्हें पकड़ लेने दो—और जब तुम्हें यह तरंग पकड़े तो लाख काम छोड़कर बैठ जाना। क्योंकि इससे बहुमूल्य कोई और काम ही नहीं है। रात हो कि दिन, सुबह हो कि साझ, फिर मत देखना। कुछ चूकोगे नहीं तुम, कुछ खोएगा नहीं। और अपूर्व होगी तुम्हारी संपदा फिर। और यह संपदा तुम्हारे भीतर पड़ी है, बस पर्दा हटाने की बात है।

‘ध्यान क्या है?’

ध्यान भीतर पड़े पर्दे को हटाना है।

🌟 OshO 🌟



प्रश्न : आपका मूल संदेश क्या है ?

वही जो सभी बुद्धों का रहा है : अप्प दीपो भव ! अपने दीये खुद बनो ! अपने मांझी स्वयं बनो ! किसी ओर के कंधे का सहारा न लेना। खुद खाओगे तो तुम्हारी भूख मिटेगी। खुद पीओगे तो तुम्हारी प्यास मिटेगी। सत्य को स्वयं जानोगे, तो ही, केवल तो ही संतोष की वीणा की वीणा तुम्हारे भीतर बजेगी। मेरा जाना हुआ सत्य तुम्हारे किसी काम का नहीं।

मैं तुम्हें सत्य नहीं दे सकता। मैं तो सिर्फ तुम्हारे भीतर सत्य को पाने की अभीप्सा को प्रज्वलित कर सकता हूँ। मैं तुम्हें सत्य नहीं दे सकता, लेकिन सत्य की ऐसी आग तुम्हारे भीतर पैदा कर सकता हूँ कि तुम पतिंगे बन जाओ, कि तुम सत्य की ज्योति में जल मिटने को तत्पर हो जाओ। **ओशो** (Dr Sohan Lal Narang)

4:11 pm    40%
सा बाज पहा खायता ह जा खायना पाहता ह, जार सब पडा रह, पर
उसे छूता भी नहीं। गुलाब गुलाब बन जाता है, चमेली चमेली बन जाती
है। पास में ही चमेली बन गई है चमेली, पास में ही गुलाब गुलाब बन
गया है। एक ही मिट्टी से दोनों ने ताकत खींची है। गुलाब की सुगंध अलग
है, चमेली की सुगंध अलग है, रंग-ढंग सब कुछ अलग है।

जिंदगी में अनंत संभावनाएं हैं। लेकिन हम वही बन जाते हैं जो हम उन
संभावनाओं में से अपने भीतर खींच लेते हैं। अनंत विचारों का विस्तार है,
अनंत विचारों की तरंगें हैं चारों तरफ। लेकिन हम उन्हीं विचारों को अपने
पास खींच लेते हैं, जिन विचारों को खींचने की क्षमता, मैग्नेट, जिन
विचारों को खींचने की रिसेप्टिविटी हमारे भीतर होती है।

इसी दुनिया में एक आदमी बुद्ध हो जाता है। इसी दुनिया में एक आदमी
जीसस हो जाता है। इसी दुनिया में एक आदमी कृष्ण हो जाता है। और
इसी दुनिया में हम कुछ भी नहीं होते और ना-कुछ होकर मिट जाते हैं
और खतम हो जाते हैं। और जिस दुनिया से खींची जाती हैं सारी चीजें,
वह बिलकुल एक है—वह आकाश एक, वह जमीन एक, वह चारों तरफ
की हवाएं एक, वे सूरज-चांदतारे एक—वह सब एक, और हर आदमी
अलग-अलग कैसे हो जाता है? और हमारी शक्ल-सूरत भी एक सी
मालूम पड़ती है, हमारे शरीर भी एक से मालूम पड़ते हैं, हमारी हड्डी-
मांस-मज्जा भी एक सी मालूम पड़ती है। फर्क कहां पड़ जाता है?
आदमी के व्यक्तित्व अलग-अलग कहां हो जाते हैं? कोई आदमी बुद्ध
कैसे हो जाता है? कोई आदमी अंधकार में कैसे खड़ा रह जाता है? कोई
आदमी प्रकाश में कैसे उठ जाता है?

वह जो मैंने कल कहा उस बात को समझ लेना जरूरी है। मैंने कल कहा
कि मनुष्य के व्यक्तित्व में सात केंद्र हैं, सात चक्र हैं। और जो केंद्र सक्रिय
होता है वह अपने अनुकूल चारों तरफ से सब कुछ खींच लेता है। केंद्र
एक रिसेप्टिविटी बन जाता है, एक ग्राहकता बन जाता है। अगर क्रोध
का केंद्र सक्रिय है, तो वह आदमी अपने चारों तरफ से क्रोध की सारी
लहरों को समाविष्ट कर लेगा। अगर प्रेम का केंद्र सक्रिय है, तो चारों
तरफ से प्रेम की धाराएं उस आदमी की तरफ दौड़ने लगेंगी। अगर काम
का केंद्र सक्रिय है, तो सारे चारों तरफ से कामवासना उसकी तरफ दौड़ने
लगेगी। वह एक खड्ड की तरह बन जाएगा और चारों तरफ की धाराएं,
जो उसने मांगा है उसकी तरफ आनी शुरू हो जाएंगी।

तृष्णा गई एक बूँद से ~
प्रवचन नं-3 ~

ओशो

**J S Vikram**

4d · 🌐

...

कोई आदमी बुद्ध कैसे हो जाता है...

एक बगीचे में मैं गया था। एक ही जमीन थी उस बगीचे की। एक ही आसमान था उस बगीचे के ऊपर। एक ही सूरज की किरणें बरसती थीं। एक सी हवाएं बहती थीं। एक ही माली था। एक सा पानी गिरता था। लेकिन उस बगीचे में फूल सब अलग-अलग खिले हुए थे। मैं बहुत सोच में पड़ गया। हो सकता है कभी किसी बगीचे में जाकर आपको भी यह सोच पैदा हुआ हो।

जमीन एक है, आकाश एक है, सूरज की किरणें एक हैं, हवाएं एक हैं, पानी एक है, माली एक है। लेकिन गुलाब पर गुलाबी फूल हैं, चमेली पर सफेद फूल हैं। सुगंध अलग है। एक ही जमीन और एक ही आकाश से और एक ही सूरज की किरणों से ये अलग-अलग फूल, अलग-अलग रंग, अलग-अलग सुगंध, अलग-अलग ढंग कैसे खींच लेते हैं?

मैं उस माली को पूछने लगा। उसने कहा, सब एक है, लेकिन खींचने वाले बीज अलग-अलग हैं।

छोटा सा बीज लेकिन क्या खींच लेता होगा?

जरा सा बीज, इतने बड़े आकाश और इतनी बड़ी जमीन और इतने बड़े सूरज और इतनी हवाओं को, इन सबको एक तरफ फेंक कर अपनी ही इच्छा का रंग खींच लेता है! इतनी बड़ी दुनिया को एक तरफ हटा कर एक छोटा सा बीज अपनी ही इच्छा की सुगंध खींच लेता है! एक छोटे से बीज का संकल्प इतना बड़ा है, जितना आकाश नहीं, जितनी पृथ्वी नहीं! और एक बीज वही हो जाता है जो होना चाहता है! एक छोटे से बीज के भीतर ऐसा क्या हो सकता है?

हर बीज की अपनी इच्छा है, अपना विल, अपना संकल्प है। वह छोटा सा बीज वही खींचता है जो खींचना चाहता है, और सब पड़ा रहे, वह उसे छूता भी नहीं। गुलाब गुलाब बन जाता है, चमेली चमेली बन जाती है। पास में ही चमेली बन गई है चमेली, पास में ही गुलाब गुलाब बन गया है। एक ही मिट्टी से दोनों ने ताकत खींची है। गुलाब की सुगंध अलग है, चमेली की सुगंध अलग है, रंग-ढंग सब कुछ अलग है।

जिंदगी में अनंत संभावनाएं हैं। लेकिन हम वही बन जाते हैं जो हम उन संभावनाओं में से अपने भीतर खींच लेते हैं। अनंत विचारों का विस्तार है,





ओशो 🙏



Madhu Bala Sharma and 132 others

133

9

17



Rāhīl Dūffēr • Follow

6d • 🌐

हम 2 बहनो ने 850 पेड लगाये || हमे support और like नहीं करोगे



**Narendra Sir Ji** • Follow

5d •

**उसके प्रेम के कर्जदार रहेंगे हम !**

जिसने यह जानते हुए भी प्रेम किया
कि हम उसके हिस्से में कभी नहीं लिखे जायेंगे!!!❤

Mohan Bait and 5.2K others



5k



156



744

**All Old Indian Song Stats Nd Move**Seen ▶ **Kumar Sanu Best Songs**

7h •

Oye hoye kon hai sub se kamal ki
queen 🌹🌹🌹🌹🌹🌹 viralreelsシ #viralpost2024 #
viralshorts...see more



👍 301

👍 301

💬 12

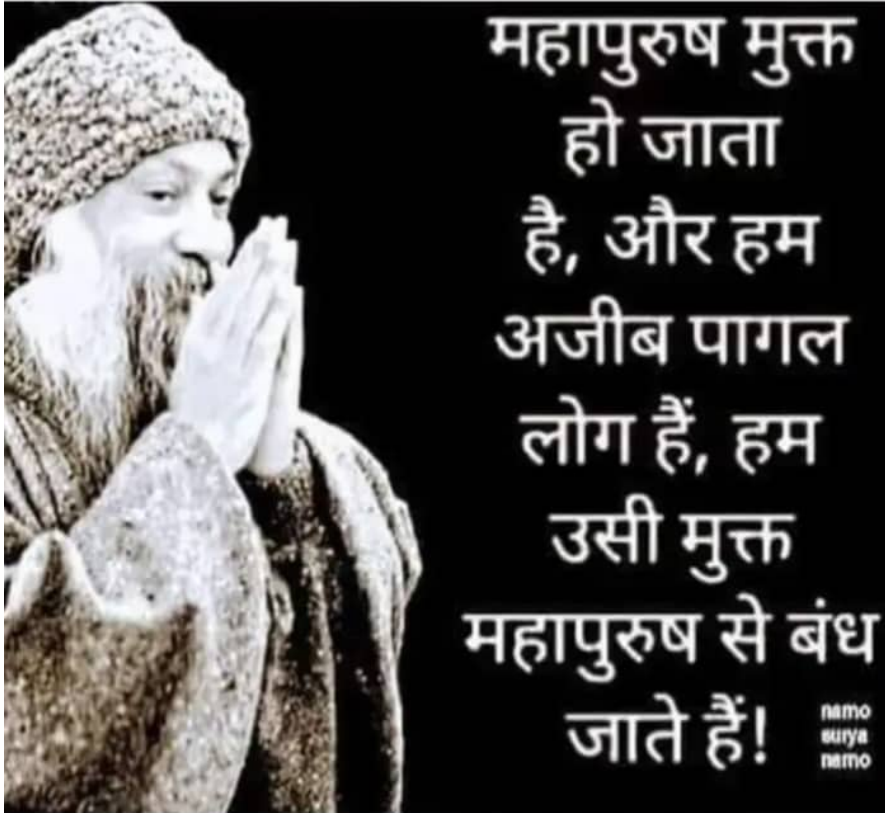
➦ 5



Osho Osho

26 Jun 2024 · 🌐

ओशो 🙏 🌹



👍❤️ Kalakar Swami and 104 others

👍 105

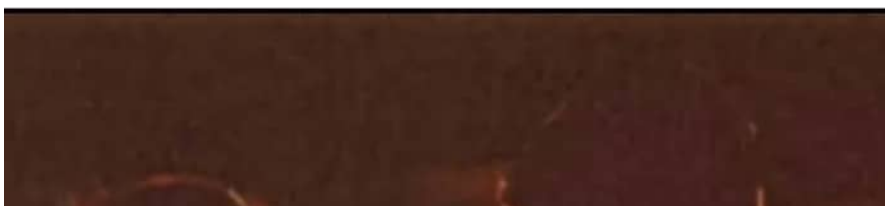
💬 5

➦ 23



Narendra Sir Ji • [Follow](#)

5d · 🌐



**ओशो रहस्यदर्शी**

Nand Kishore · 4d ·



मोह का आवरण इतना घना है कि अगर तुम धर्म की तरफ भी जाते हो तो तुम चमत्कार खोजते हो वहां भी। वहां भी अगर बुद्ध खड़े हों, तुम न पहचान सकोगे। तुम सत्य साई बाबा को पहचानोगे। अगर बुद्ध और सत्य साई बाबा दोनों खड़े हों, तो तुम सत्य साई बाबा के पास जाओगे, बुद्ध के पास नहीं। क्योंकि बुद्ध ऐसी मूढ़ता न करेंगे कि तुम्हें ताबीज दें, हाथ से राख गिराएं; बुद्ध कोई मदारी नहीं हैं।

ओशो

शिव सूत्र - ५

Osho Nitin Shah and 11 others

12



1

**BLU SMART INDIA**

Sponsored ·

Your after-flight experience should be as pre...see more



आध्यात्मिक व्यक्ति को तो सारा
जगत् पवित्र है, सब पल-छिन
सब घड़ी-दिन शुभ है। ये तो गैर-
आध्यात्मिक की झंझटें हैं। वह
सोचता है : कोई भूल-चूक न हो
जाए; ठीक समय में निकलूं; ठीक
दिन में निकलूं; ठीक दिशा में
निकलूं; महरत पूछ कर निकलूं।
अजहू चेत गवार-8

ओशो

Osho wisdom

मैं ऐसे भगवान में विश्वास नहीं
करता जो जिंदा रहते हुए तो
मुझे रोटी नहीं दे सकता
लेकिन मरने के बाद स्वर्ग देगा।

स्वामी विवेकानंद

@kavitaayein



कविताएँ और साहित्य



1.4K



1k



102



92

**Swaroop Gyan**

1d · 🌐



11



11



4



7

**Play by Love Depot**

Sponsored · 🌐



Get upto Rs.500/- off

Shop Now Only From [LOVEDEPOT.COM](https://www.lovepot.com)

Official Authorized Skore Seller...see more



SKORE

44k

2k

254

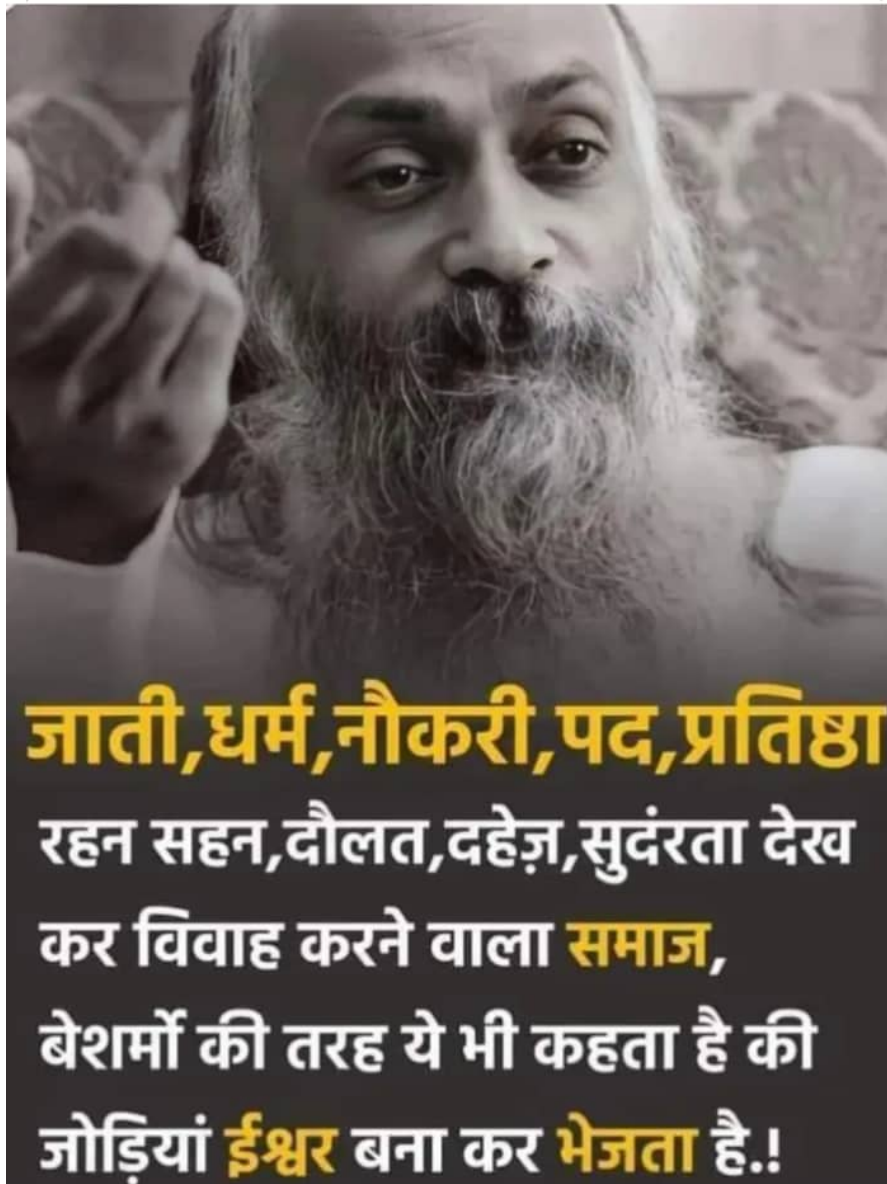
**Gian Singh**

6h • 👤

...

**Osho Sangh**

Rakesh Richharia • 5d • 🌐

[Join](#)

जाती, धर्म, नौकरी, पद, प्रतिष्ठा
रहन सहन, दौलत, दहेज़, सुंदरता देख
कर विवाह करने वाला **समाज**,
बेशर्मों की तरह ये भी कहता है की
जोड़ियां **ईश्वर** बना कर **भेजता** है.!

5

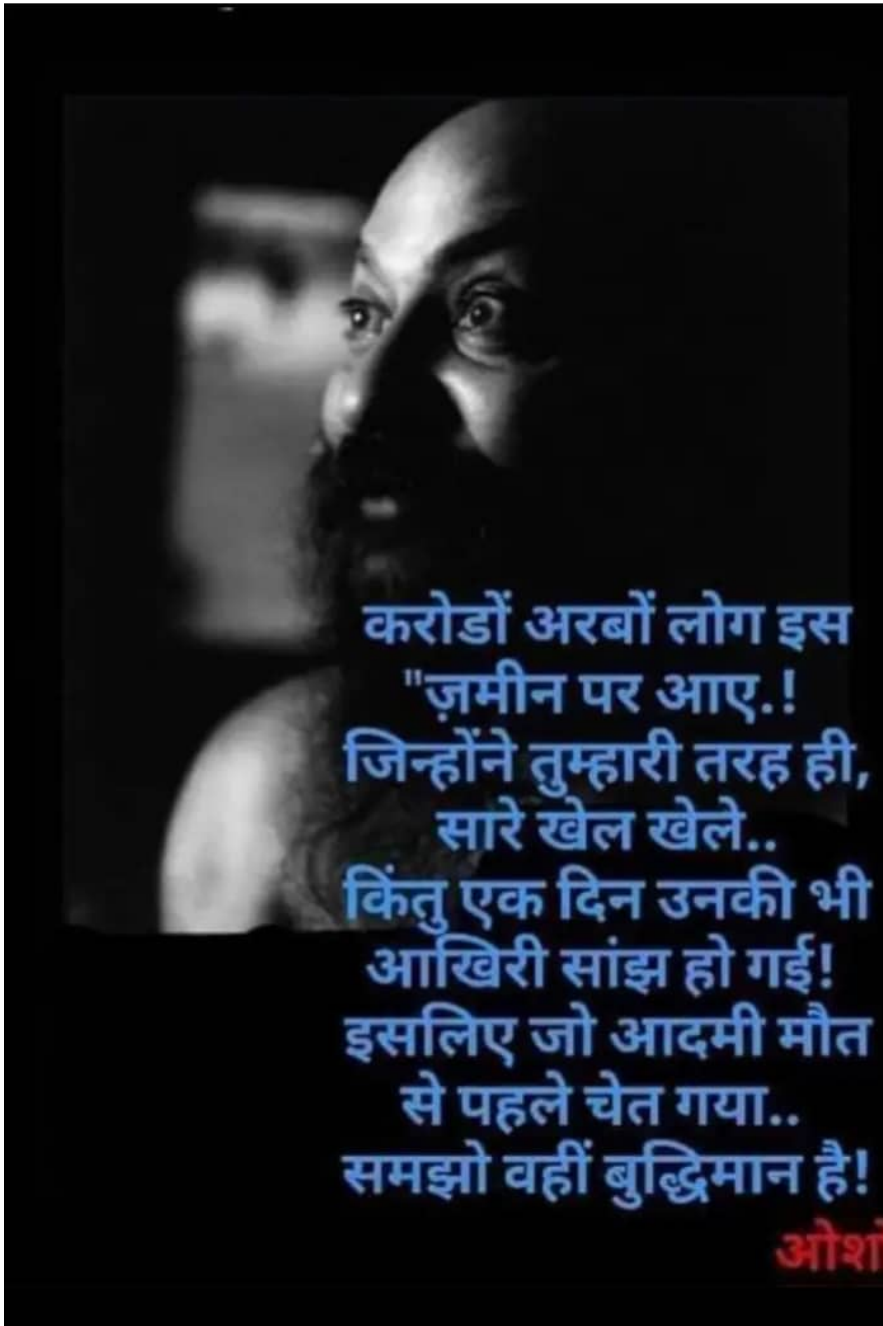
5

🗨

3

**OSHO जीवन मृत्यु**

Ravinder Singh · 4h ·



37

37

3

6

**Avia Shade**

Sponsored ·



+919856**** WON ₹31.245..

6.2K

6k

59

17

**Osho Nitin Shah**

3d · 🌐

**Osho Harpreet**

5d · 🌐



Osho Nitin Shah and 9 others

10

🗨

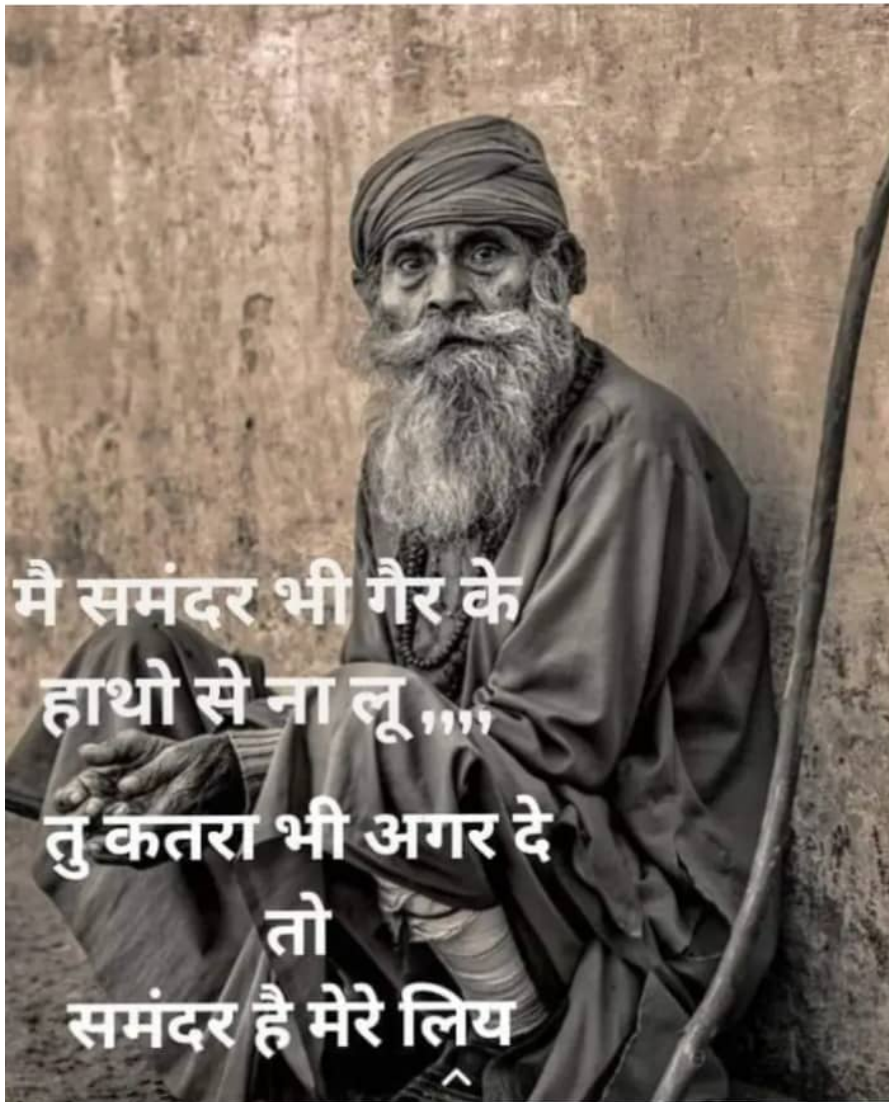
2

**Yog Agamyaa**

21h · 🌐



#oshointernational #oshomeditation #osho



Vinod Hansu Vinod Hansu and others



1



4

**शनीस आर्य**

1d · 🌐



सभी भाई इस किताब को जरूर पढ़ो। लिंक कमेंट में देखो। फ्री में ebook डाउनलोड करो।

अंडरस्टैंडिंग महम्मद" – एक पुस्तक जो इस्लाम के विचार और पैगम्बर



m.facebook.com

**ओशो संदेश**

RM Savaliya · 2d ·

Osho Naman 🙏



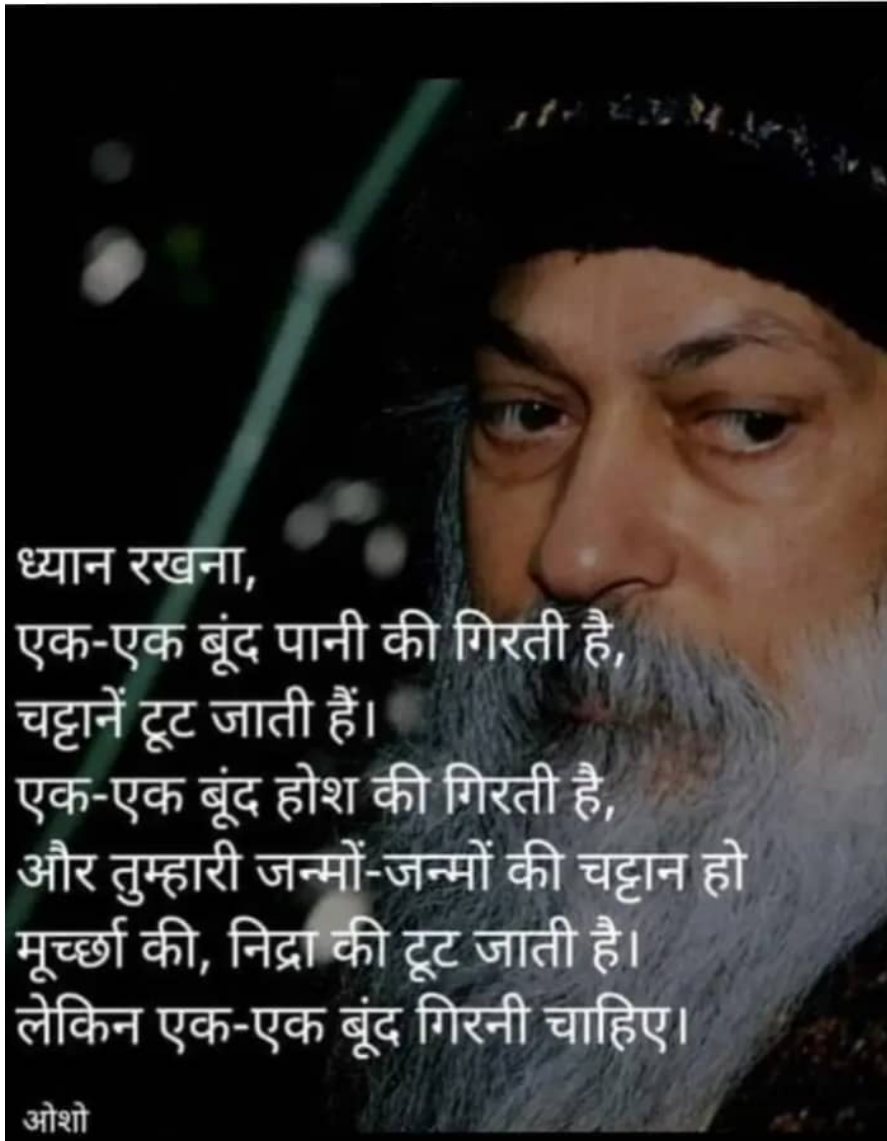
osho universal_dhaval parmar

सिद्ध तुम्हें जगाने आते हैं, लेकिन
तुम हिंदू हो जाते, मुसलमान हो
जाते, ईसाई हो जाते, जैन हो जाते,
बौद्ध हो जाते। जागते नहीं, तुम
नींद में एक नयी करवट ले लेते हो,
तुम नींद में एक नया स्वपन देखने
लगते हो! इसलिये सदियों-सदियों
में जगाने वाले लोग रहे हैं, मगर
तुम हो कि सोये ही रहे।

ओशो : सहज योग

**Swami Dhiyan Nritya Nartan**

1d · 🌐



ध्यान रखना,
एक-एक बूंद पानी की गिरती है,
चट्टानें टूट जाती हैं।
एक-एक बूंद होश की गिरती है,
और तुम्हारी जन्मों-जन्मों की चट्टान हो
मूर्च्छा की, निद्रा की टूट जाती है।
लेकिन एक-एक बूंद गिरनी चाहिए।

ओशो



Osho Harpreet and 36 others



37



2



4

**Pray For Poors** · [Follow](#)

3d · 🌐





Like



Comment



Send



Share

**Yes osho**

Rahul Kumar Ojha · 10h · 🌐



सुप्रभात 🙏🙏



सब परमात्मा पर छोड़ दो
तो फिर बचता क्या है? एक
अभिनय बचता है। और
जहां अभिनय है वहां चित्त
निर्भार हो जाता है।
ओशो



Dinesh Agrawal and 21 others

5 comments 1 share



Like



Comment



Send



Share

**Osho The Sadguru** 🌸🌸🌸

Gurmeet Singh · 7h · 🌐



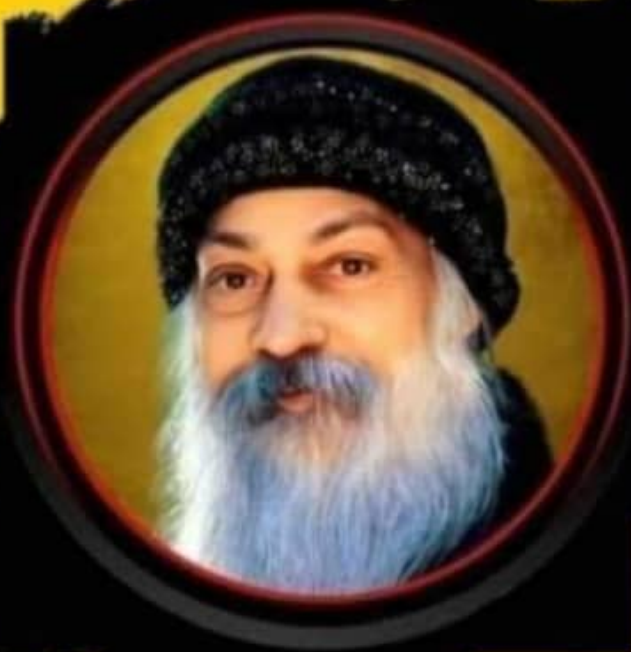


Gian Singh

8h · 🧑

Dev Dev Malik · [Follow](#)

5d · 🌐



प्रत्येक घटना कुछ न कुछ सिखाती है!

आंखे खुली हो, तो पूरा जीवन ही विद्यालय है।
और जिसे सीखने की भुख है, वह प्रत्येक व्यक्ति
और प्रत्येक घटना से सीख लेता है। और स्मरण
रहे कि जो इस भांति नहीं सीखता है, वह जीवन में
कुछ भी नहीं सीख पाता।

ओशो



ये सब नाते—रिश्ते, ये सब सगे—संबंधी, ये मित्र—प्रियजन—परिजन—कोई काम न आएंगे। इसका यह अर्थ नहीं है कि तुम भाग जाओ, छोड़ दो संसार, कि छोड़ दो पत्नी, कि छोड़ दो बच्चे। इसका इतना ही अर्थ है: रहो, यही, जैसे हो वैसे ही, मगर लगाव जाने दो, आसक्ति जाने दो, आग्रह जाने दो। पत्नी को मत छोड़ो, मगर पत्नी पर जो पकड़ है, वह छोड़ दो। बच्चों को मत छोड़ो, लेकिन मेरे हैं, ऐसा जो आग्रह है, वह छोड़ दो।

राम द्वारे जो मरे—३

46

1 comment 1 share 9.8K plays



Like



Comment



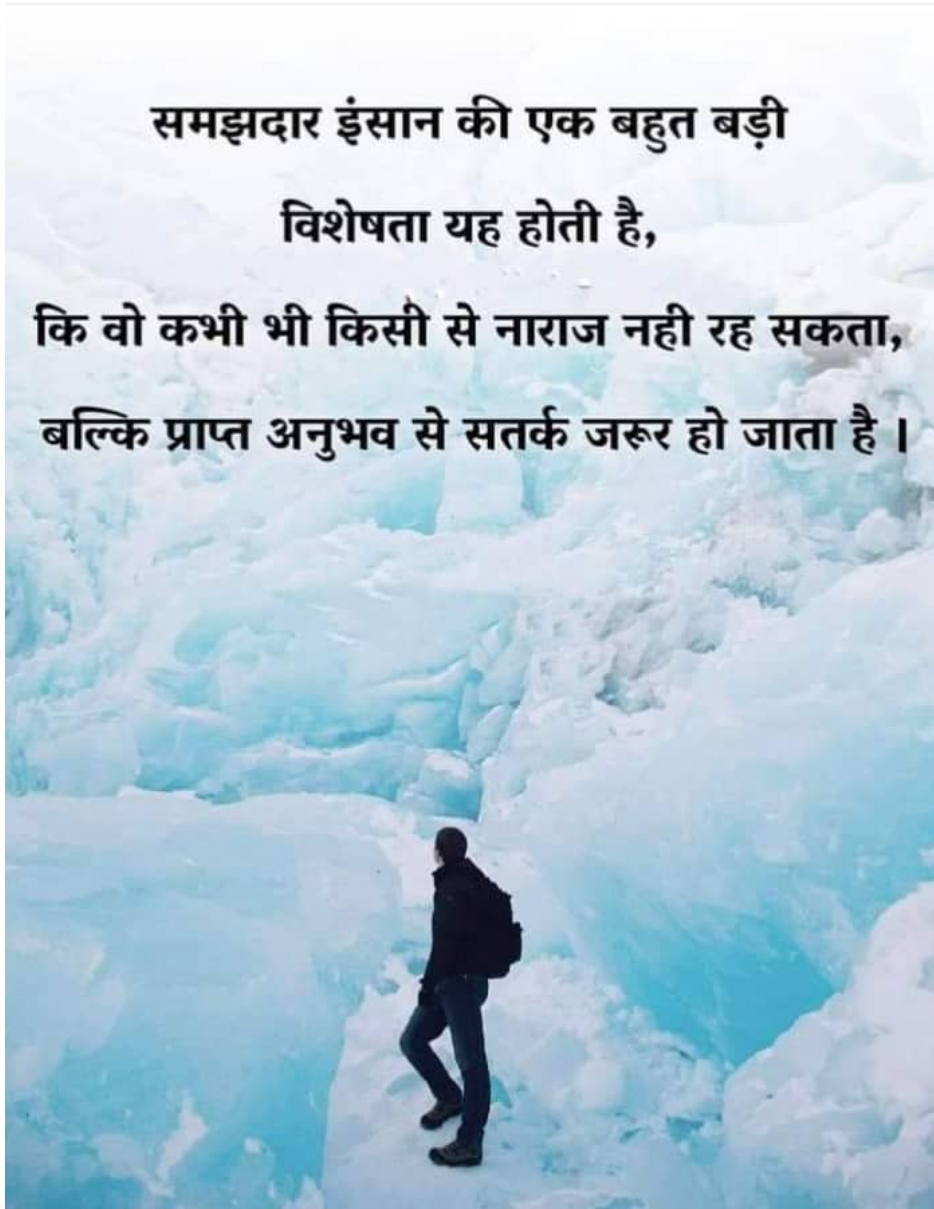
Share



Meri Paak Mohhbat · Follow



2d · 🌐



समझदार इंसान की एक बहुत बड़ी

विशेषता यह होती है,

कि वो कभी भी किसी से नाराज नहीं रह सकता,

बल्कि प्राप्त अनुभव से सतर्क जरूर हो जाता है।

5.6K

40 comments 684 shares



Like



Comment



Send



Share



Hindi Sad Status · Follow



4d · 🌐



अगर आशीर्वादों से सुख आता होता,
तो एक आदमी सभी को सुखी कर देता।
क्योंकि आशीर्वाद देने में क्या कंजूसी?
इतना आसान नहीं है। तुमने दुख बोया है,
मेरे आशीर्वाद से कैसे कटेगा? तुम मुझसे समझ
लो। आशीर्वाद मत मांगो। क्योंकि आशीर्वाद
तो बेईमानी का ढंग है। दुख तुमने दिया है न
मालूम कितने लोगों को। तुमने दुख बोया है
सब तरफ। अब तुम उसकी फसल काटने के
वक्त आशीर्वाद मांगने आ गए! और तुम्हारे ढंग
से ऐसा लगता है कि जैसे अगर तुम्हें दुख मिल
रहा है, तो मैं आशीर्वाद नहीं दे रहा हूं इसलिए
दुख मिल रहा है। किसी के आशीर्वाद से
तुम्हारा दुख न कटेगा। किसी के आशीर्वाद से
तुम्हारी समझ बढ़ जाए तो काफी। किसी के
आशीर्वाद से तुम में प्रेम का बीज आ जाए तो
काफी। पाप तो प्रेम से कटेगा। और दुख तो तुम
जब दूसरों के लिए सुख बोने लगोगे तब कटेगा।
ओशो



ब्रह्माण्ड के रहस्य

Virendra Kumar · 7h ·



46

12 comments 11 shares



Like



Comment



Send



Share



Suggested Pages for you



Suggested Pages for you





Like



Comment



Send

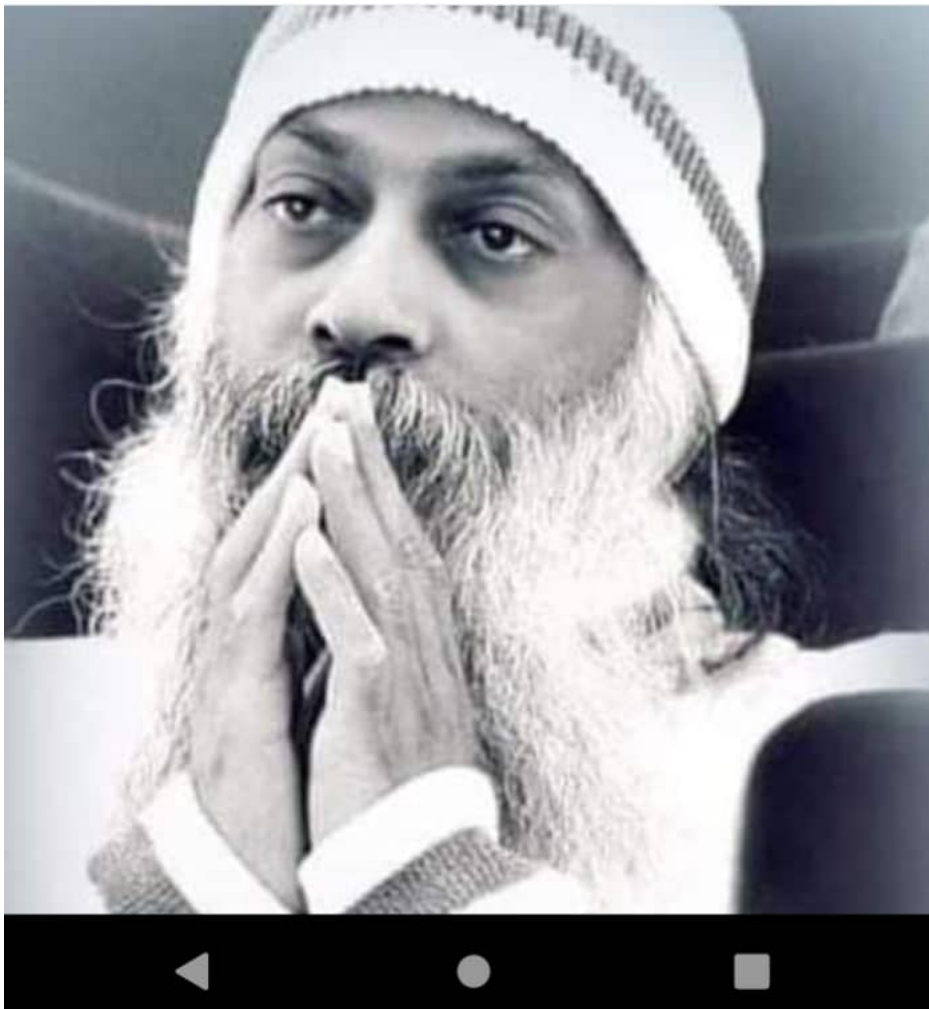
**Naye bharat ke khoj**

3d · 🌐



जिन्होंने मुझसे अपने को जोड़ा है,
मेरी अभीप्सा है वे सभी इसी जीवन में जाग कर विदा हो।
मैं तुम्हारी जिम्मेदारी लेता हूँ।
मैं तटस्थ नहीं हूँ, मैं तुमसे प्रतिबद्ध हूँ।
तुम्हारे भीतर मैंने अपने को नियोजित किया है।
मैंने अपने को तुम्हारे भीतर दांव पर लगाया है।
चलना है चलो, न चलना है न चलो, मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर चल रहा हूँ।
मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी यात्रा के सारे कष्ट उठा रहा हूँ।
सतर्क रहना, सजग रहना, सावधान रहना!

ओशो





Yes osho

Rahul Kumar Ojha · 6d · 🌐



एक अंधेरी रात। भादों की अमावस। बादलों की गड़गड़ाहट। बीच-बीच में बिजली का चमकना। वर्षा के झोंके। गांव पूरा सोया हुआ। बस, नानक के गीत की गूंज।

रात देर तक वे गाते रहे। नानक की मां डरी। आधी रात से ज्यादा बीत गई। कोई तीन बजने को हुए। नानक के कमरे का दीया जलता है। बीच-बीच में गीत की आवाज आती है। नानक के द्वार पर नानक की मां ने दस्तक दी और कहा, बेटे! अब सो भी जाओ। रात करीब-करीब जाने को हो गई।

नानक चुप हुए। और तभी रात के अंधेरे में एक पपीहे ने जोर से कहा, पियू-पियू।

नानक ने कहा, सुनो मां! अभी पपीहा भी चुप नहीं हुआ। अपने प्यारे की पुकार कर रहा है, तो मैं कैसे चुप हो जाऊं? इस पपीहे से मेरी होड़ लगी है। जब तक यह गाता रहेगा, पुकारता रहेगा, मैं भी पुकारता रहूंगा। और इसका प्यारा तो बहुत पास है, मेरा प्यारा बहुत दूर है। जन्मों-जन्मों गाता रहूं तो ही उस तक पहुंच सकूंगा। रात और दिन का हिसाब नहीं रखा जा सकता है। नानक ने फिर गाना शुरू कर दिया। ~

ओशो



किन साँसों का मैं एतबार करूँ जो अंत में मेरा
साथ छोड़ जाएगी..!!

किन रिश्तों का मैं यहाँ आज अभिमान
करूँ जो रिश्ते शमशान में पहुँचकर सारे टूट
जाएँगे..

किस धन का मैं अंहकार करूँ जो अंत में मेरे
प्राणों को बचा ही नहीं पाएगा....

किस तन पे मैं अंहकार करूँ जो अंत में मेरी
आत्मा का बोझ भी नहीं उठा पाएगा..

"परमात्मा जो करता है करने दे,
तू निमित्त हो जा.....,
जो निमित्त हो गया,
वह मालिक हो गया,



क्योंकि जो
निमित्त हो गया,
वह मालिक के साथ
एक हो गया...!!"-ओशो-



ANCIENT THOUGHTS

४४वां दिन

। कबीरदास जी ।

। दोहा ।

कबीर हमारा कोई नहीं हम काहु के नाहिं ।
पारे पहुंचे नाव ज्यों मिलिके बिछुरी जाहिं ॥

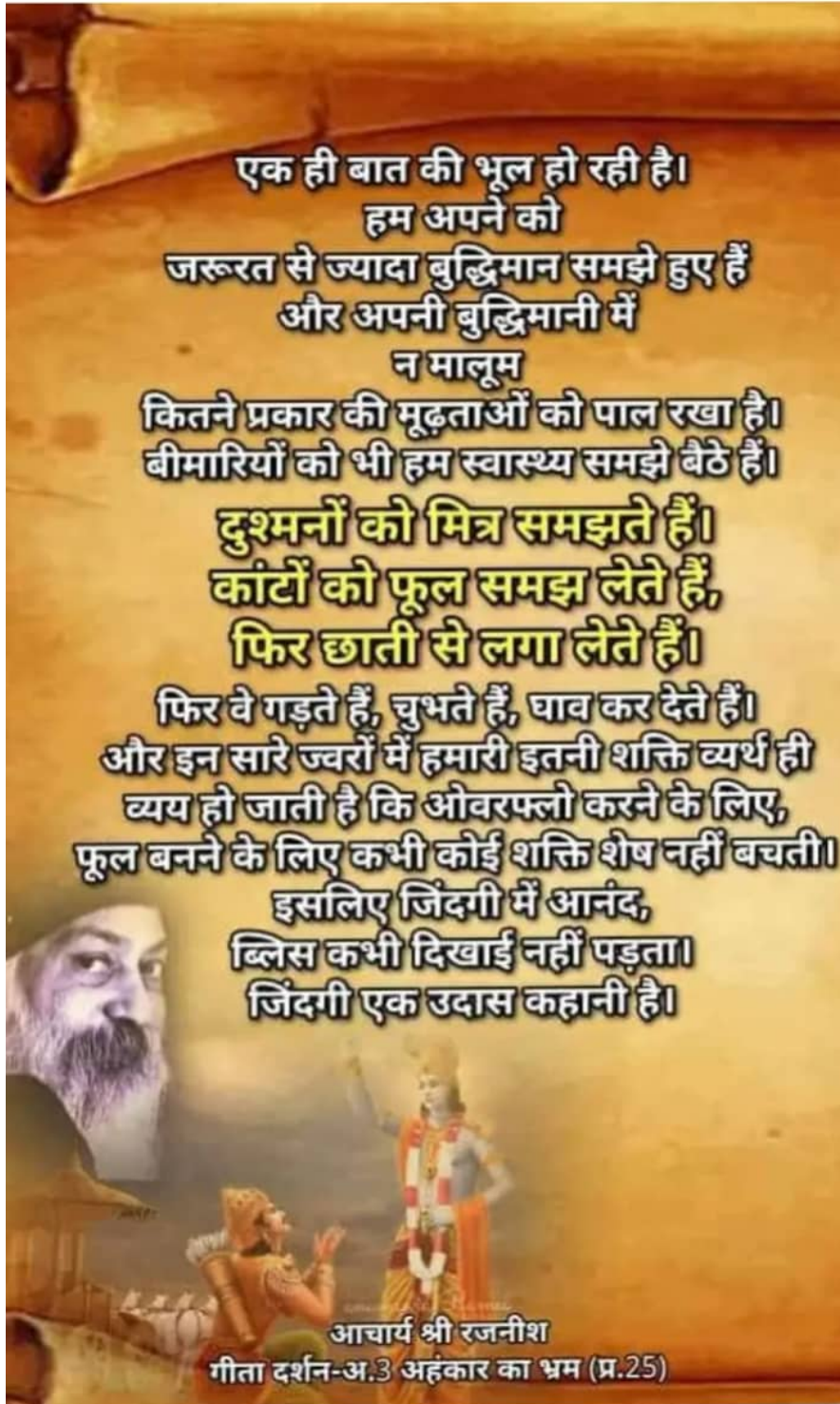
॥अर्थ॥

इस जगत में न कोई हमारा अपना है और न ही
हम किसी के! जैसे नाव के नदी पार
पहुँचने पर उसमें मिलकर बैठे
हुए सब यात्री बिछुड़ जाते हैं
वैसे ही हम सब मिलकर
बिछुड़ने वाले हैं. सब
सांसारिक सम्बन्ध
यहीं छूट जाने
वाले हैं ।



मैं मृत्यु सिखाता हूं....

Rabindra Kumar Mandal · 16m ·



एक ही बात की भूल हो रही है।

हम अपने को

जरूरत से ज्यादा बुद्धिमान समझो हुए हैं

और अपनी बुद्धिमानी में

न मालूम

कितने प्रकार की मूढ़ताओं को पाल रखा है।

बीमारियों को भी हम स्वास्थ्य समझो बैठे हैं।

दुश्मनों को मित्र समझते हैं।

कांटों को फूल समझ लेते हैं,

फिर छाती से लगा लेते हैं।

फिर वे गड़ते हैं, चुभते हैं, घाव कर देते हैं।

और इन सारे ज्वरों में हमारी इतनी शक्ति व्यर्थ ही

व्यय हो जाती है कि ओवरफ्लो करने के लिए,

फूल बनने के लिए कभी कोई शक्ति शेष नहीं बचती।

इसलिए जिंदगी में आनंद,

ब्लिस कभी दिखाई नहीं पड़ता।

जिंदगी एक उदास कहानी है।

आचार्य श्री रजनीश

गीता दर्शन-अ.3 अहंकार का भ्रम (प्र.25)



2



2



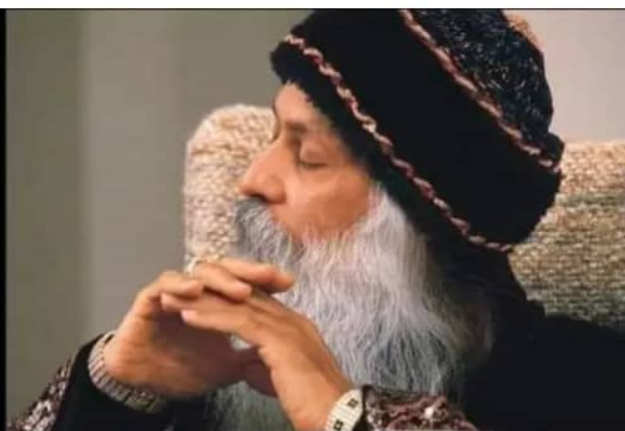


Add to
story



ओशो संदेश

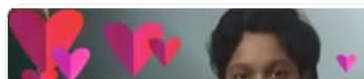
Tejsingh Jat · 1m ·

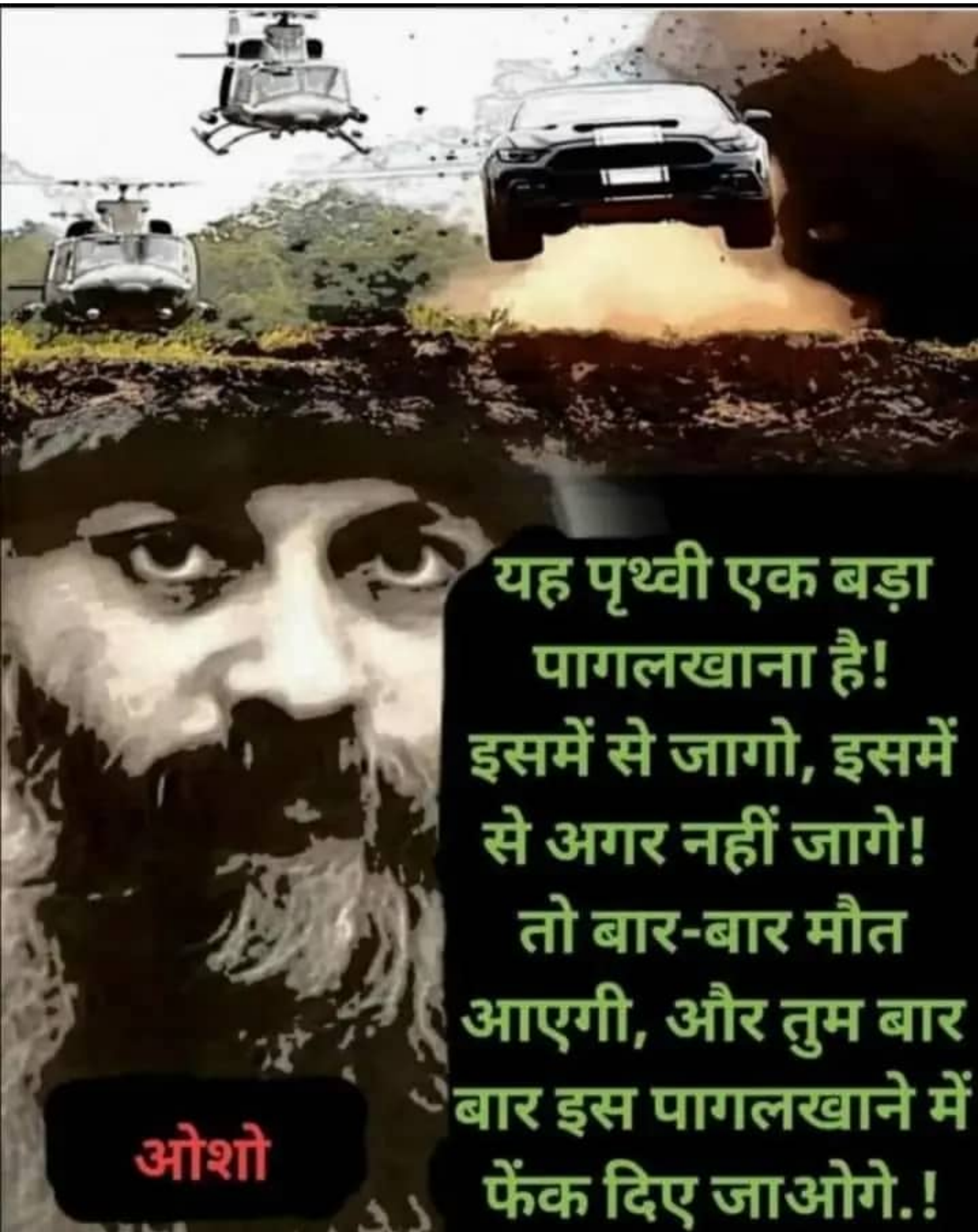


प्रभुता छोड़ो: प्रभुता मिलेगी!
अहंकार छोड़ो: आत्मा मिलेगी!
अपने को खो दो, मिट जाने दो, शून्य
हो जाओ: पूर्ण के तुम पात्र हो
जाओगे। पूर्ण तुममें उतरेगा। तुम्हारे
शून्य में ही उतर सकता है।
जिन सूत्र भाग -1 प्र-26



Suggested Pages for you



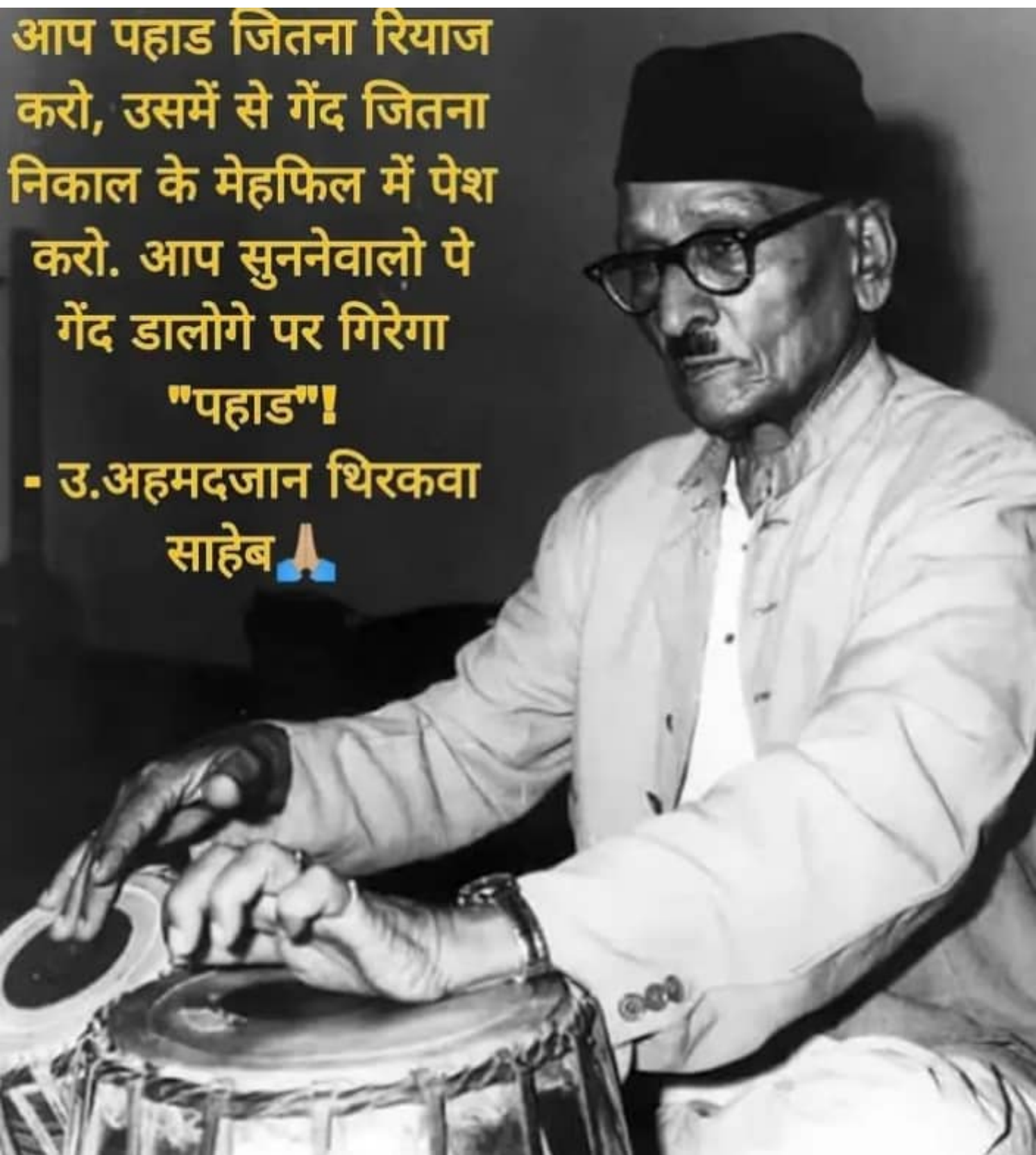


ओशो

यह पृथ्वी एक बड़ा
पागलखाना है!
इसमें से जागो, इसमें
से अगर नहीं जागे!
तो बार-बार मौत
आएगी, और तुम बार
बार इस पागलखाने में
फेंक दिए जाओगे.!

आप पहाड जितना रियाज
करो, उसमें से गेंद जितना
निकाल के मेहफिल में पेश
करो. आप सुननेवालो पे
गेंद डालोगे पर गिरेगा
"पहाड"!

- उ.अहमदजान थिरकवा
साहेब 🙏



 19K 19k 384 2k**Mansukh Abhangi**16h • 

...

चित्त सदा ही, सदा ही असंतुष्ट है। चित्त का होना ही असंतोष है। अगर ऐसा कहें तो ज्यादा ठीक होगा कि चित्त और असंतोष एक ही चीज के दो नाम हैं। ऐसा नहीं कि चित्त असंतुष्ट होता है, बल्कि ऐसा कि चित्त ही असंतोष है। क्योंकि जिस क्षण संतुष्टि आती है, उसी क्षण चित्त भी चला जाता है। असंतोष के साथ ही मन भी चला जाता है। जिनके भीतर असंतोष न रहा, उनके भीतर मन भी न रहा।

मन उसकी आकांक्षा में ही जीता है, जो नहीं मिला है। इसलिए मन के लिए जरूरी है कि जो मिला है, उससे असंतुष्ट हो; और जो नहीं मिला है, उसमें संतोष की कामना में जीए। जो नहीं मिला है, उसमें संतोष खोजे; और जो मिल जाए, उसमें असंतोष खोजे। यह हमारी चित्त-दशा है। ऐसा भी नहीं है कि जो आज हमें नहीं मिला है और लगता है कि कल मिल जाए, तो संतोष मिलेगा; तो कल मिल जाने पर संतोष मिल जाएगा। ऐसा भी नहीं है। कल मिलते ही अचानक हम पाएंगे कि हमारा असंतोष आ गया उस पर, जो मिला; और हमारा संतोष हट गया उस पर, जो अभी नहीं मिला है।

सत्य संतोष के लिए काफी है। असंतोष के लिए सपने चाहिए। यथार्थ संतोष के लिए काफी है, असंतोष के लिए कल्पना चाहिए। सारे जगत में लोग कल्पना के कारण असंतुष्ट हैं, यथार्थ के कारण नहीं। यथार्थ पर्याप्त संतोष दे सकता है। लेकिन कल्पना? कल्पना सीमा के बाहर पीड़ा देती है।

  ओशो  



नानक मक्का गए, मदीना गए। वे मक्का में सो गए काबा के पत्थर की तरफ पैर करके। पुजारी नाराज हुए। क्रोध में आकर उन्होंने नानक को कहा कि हमने तो सुना है तुम एक ज्ञानीपुरुष हो; और तुम परमात्मा के मंदिर की तरफ पैर करके सो रहे हो? नानक ने कहा कि मैं भी बड़ी चिंता में पड़ा था, जब सोने को गया। मैंने सब तरफ पैर करके देखे, पाया, सभी जगह वही है। तो तुम ऐसा करो कि तुम वहां मेरे पैर कर दो जहां वह न हो। ये पैर रहे, मैं कोई बाधा न डालूंगा; तुम पैर उठाओ और कर दो।

मैं मानता हूं कि कहानी इतनी ही है, लेकिन और थोड़ी आगे बढ़ गई है; वह कविता मालूम होती है, लेकिन अर्थपूर्ण है। कहते हैं पुजारियों ने उनके पैर जहां-जहां किए, वहीं काबा का पत्थर घूम गया। यह बात थोड़ी अतिशय हो गई है। कविता तक ठीक है। लेकिन मतलब तो सही है। मतलब इतना ही है कि कहीं भी पैर करो वहीं काबा का पत्थर है। सभी पत्थर काबा के हैं, क्योंकि सभी पत्थरों में परमात्मा है। वह जिन मूर्तियों को तुमने खोद लिया है, उनमें ही नहीं है; अनगढ़ पत्थरों में भी वही है। अभी खुदा न होगा, कभी कोई कारीगर मिल जाएगा, खोद देगा; लेकिन है तो मौजूद।

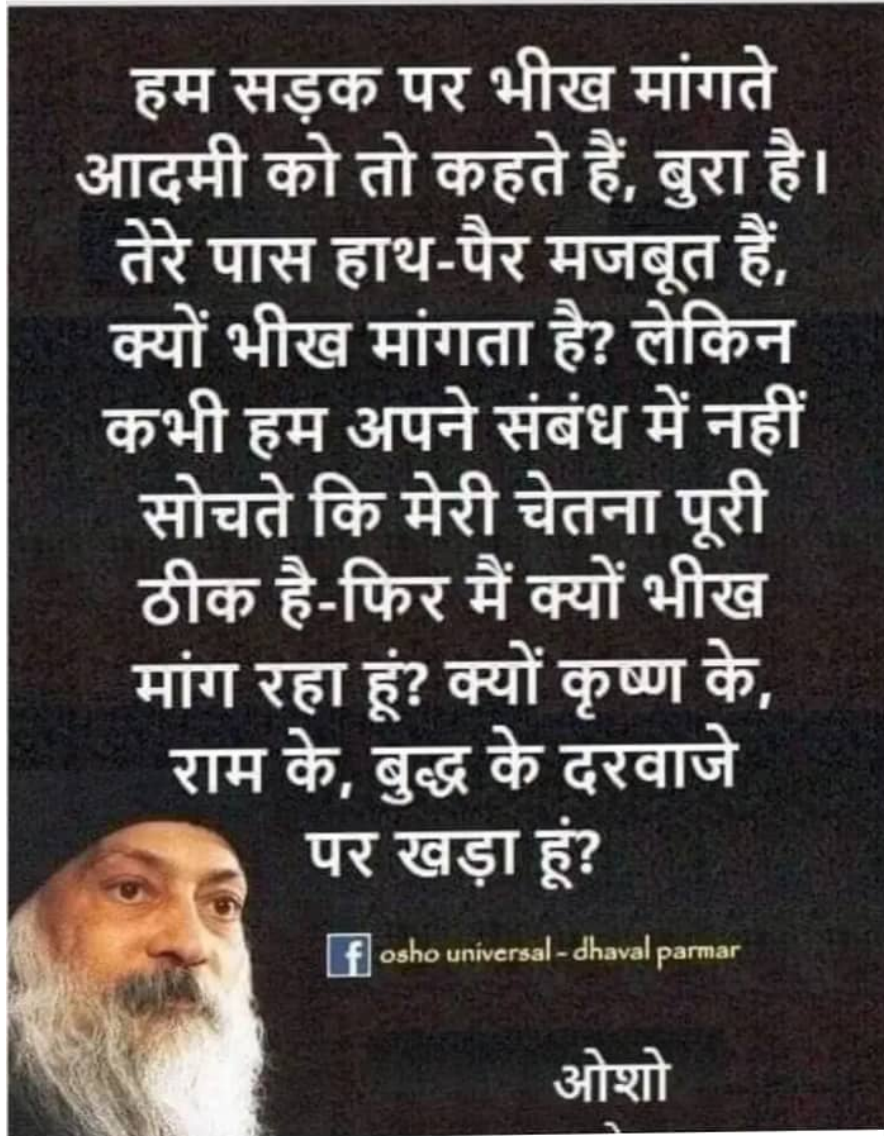
ओशो

**Gurmeet Singh**

27 Jun 2024 · 🌐

मैं तुमसे सच सच कहता हूँ

यदि आप ने ओशो की ...see more



6



6



4



कभी तन्हाईयाँ में यूँ हमारी याद आएगी • Follow

3d · 🌐

**Gurmeet Singh**

27 Jun 2024 •

मैं तुमसे सच सच कहता हूँ

यदि आप ने ओशो की शिक्षा पर अपनी पूरी प्यास के साथ अपनी जिज्ञासा को शांत किया है तो आप की समझ विकसित हो गई होगी और आप देख पा रहे होंगे कि धर्म और राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह एक व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्यों पर पूर्णतः नियंत्रण रखा जाता है और यह व्यवस्था मानव निर्मित है।

जिसको आप भगवान कहते हैं असल में वह व्यक्तिव भी कभी मानव शरीर में निर्मित था। वह समय मानव के मानसिक विकास का पिछड़ा हुआ समय था मनुष्यों का समूह पूरी तरह मानसिक रूप से राजनीतिज्ञों और धर्माधिकारियों के वश में स्वतंत्र बंदी थे। और मानवों के अलग अलग समूहों पर नियंत्रण रखने के लिए नियम, कानून और अलग अलग शिक्षा व्यवस्थाएं बनाई गई जिसके द्वारा संसार को मानव समाज के लिए अधिक सुविधाजनक और लाभदायक बनाया जा सके।

उनके द्वारा किए जाने वाले मार्गदर्शन आपके शास्त्र और पवित्र किताबें बन गई और आप मानसिक गुलामी के रोगों के शिकार कब हो गए आप को पता ही नहीं चला कि पीढ़ी दर पीढ़ी आप इन रोगों के दंश को अपनी ही संतानों के माध्यम से अभी तक सह रहे थे। जब अपनी अवशक्तियों को हमें स्वयं ही पूरा करना है और हम इसके लिए जिम्मेदार हैं तो हमें जो चाहिए उसके लिए हमें स्वयं ही संघर्ष करना होगा। हां यदि आप ने ओशो की शिक्षा को उचित मार्ग से समझा है तो आप जानते हैं कि आप को कैसा कर्म करना चाहिए आप अपना कर्म किसी को शारीरिक और मानसिक रूप से क्षति पहुंचाए बिना भी कर सकते हैं।

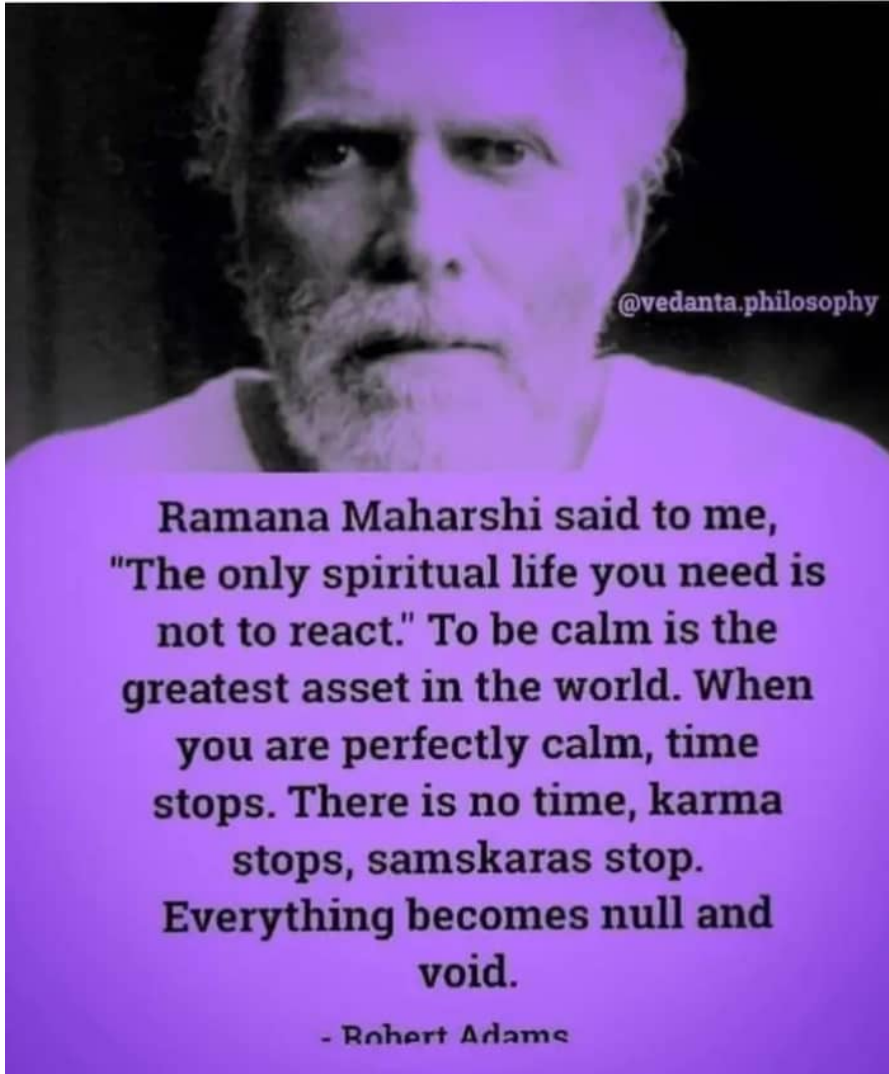
हमेशा याद रखें आप की जरूरतें आप के सिवा कोई पूरी नहीं कर सकता इसलिए खुद को तैयार करें, उस लायक बनें और खुद पर भरोसा करना सीखें। और द्वारों पे खड़े होकर स्वयं को भिक्षावृत्ति से मुक्त करें।

जिनके पास कान हों वह सुन लें कि परमात्मा आत्मा से क्या कहता है।

**हम सड़क पर भीख मांगते
आदमी को तो कहते हैं, बुरा है।**

**Paramahansa Yogananda's Teachings**

Prabhakarvarma Cherukuwada · 3d ·



410

410

13

89

**Mohd Taseen Azad** · [Follow](#)

1d ·

1960 के दशक में ईरान में फूड डिलीवरी

उस समय के डिलीवरी बॉय अपने सिर पर भारी भोजन के...see more



अज्ञानी बृजेश प्रकृति प्रेमी

3h · 🌐

...

सोचने वाली बात



Sangeeta Sharma

5 Jul 2024 · 🌐

सोचने वाली बात है**बंद गोभी नकली !! अंडे नकली !!****चावल नकली !! घी और दाल नकली !!****अब चीनी भी नकली !!****कहते है ये सब नकली है,****चाइना से आ रहा है !!****समझ नहीं आ रहा हमारी पुलिस रेत की****ट्राली दूसरा जिला नहीं पार होने देती,****ये समान सरहद पार करके चाइना से पूरे****भारत में कैसे मिल रहा है...!!**

👍😂❤️ 17

👍 17

💬 1

➦ 1

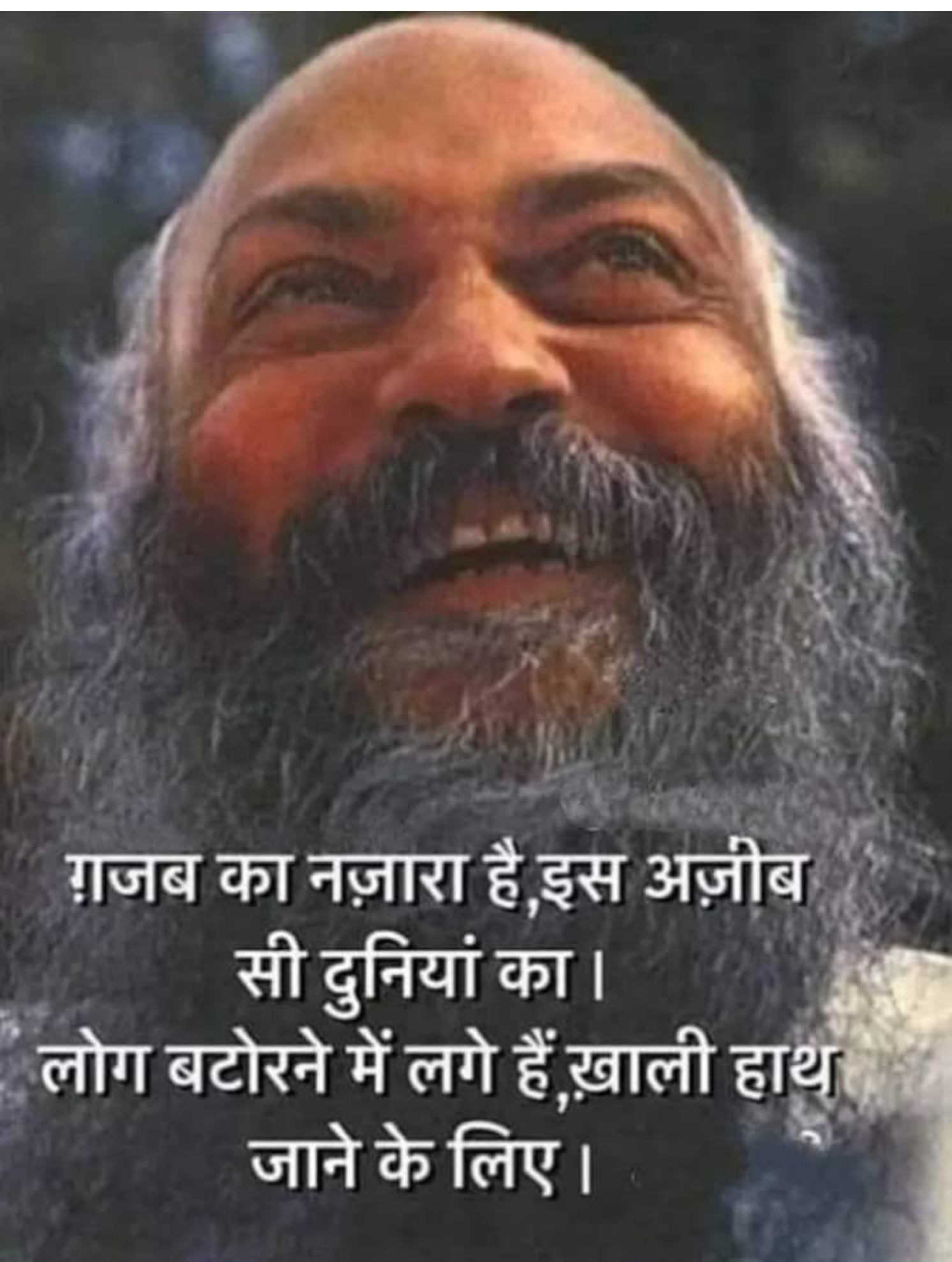
Nitesh Saxena · [Follow](#)

3d · 🌐

...

ये बीना त्रिपाठी हैं । मजबूरी की मारी हैं ।

बीना त्रिपाठी को हर मर्द की कमजोरी पता है । ...see more



ग़ज़ब का नज़ारा है, इस अज़ीब
सी दुनियां का ।
लोग बटोरने में लगे हैं, ख़ाली हाथ
जाने के लिए ।



सुख कहाँ और कैसे मिल सकता है। ...see more



संसार में दुख है, ऐसा मत
समझो, लोभ में दुख है।
लोभ के कारण संसार में
दुख है। अगर संसार में रहते
हुए भी लोभ छूट जाए तो
संसार में भी दुख नहीं है।
खयाल करना, संसार में
दुख नहीं है, लोभ में दुख है।
ओशो Osho wisdom

Manoj R and 108 others

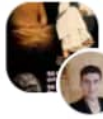
109

9

13

rairkz. here are groups you might like

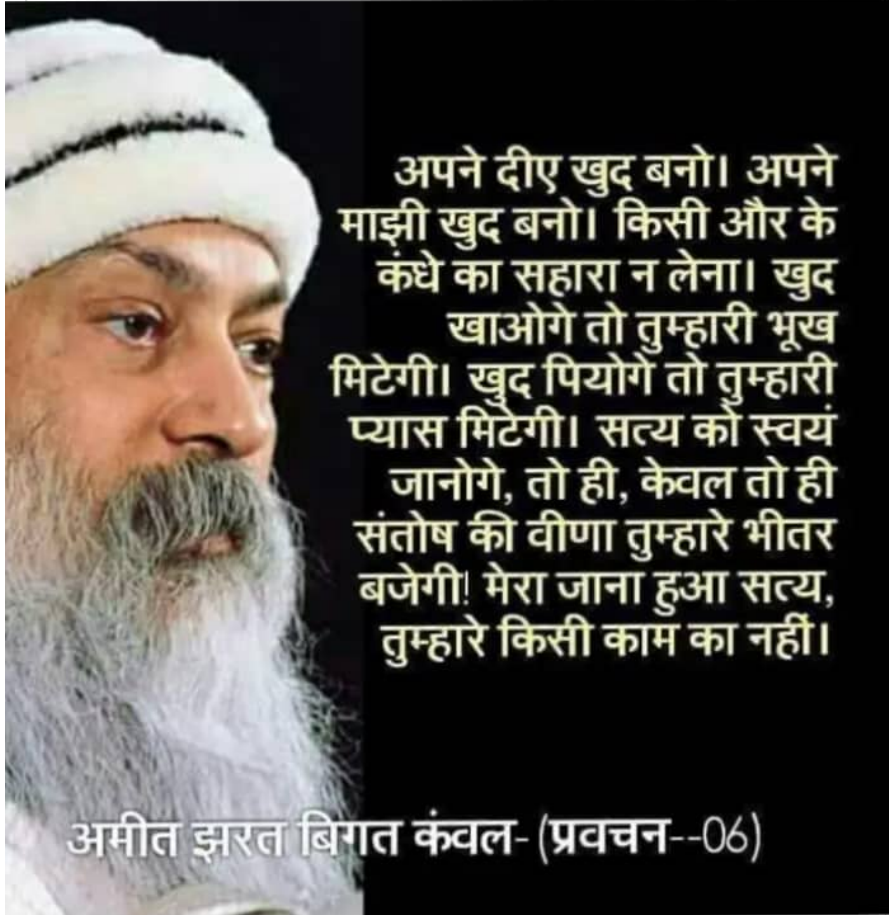


**ओशो रहस्यदर्शी**

Naye bharat ke khoj · 1d ·

अनुशासन नहीं होश

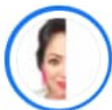
इसलिए मैं अपने संन्यासी को कोई अनुशासन नहीं दे...see more



Kalakar Swami and 10 others



11

**Bulla Ki Jaana Main Kaun** · [Follow](#)

5d ·

जापान में पेपर लीक

या अपनी जाति देखकर बड़े पदों पर नियुक्ति नहीं होती।





1d ·



जीवन-मृत्यु

Bhavna Joshi · 1d ·



4



4



1



People you may know



वास्तविक समस्याएं जलेंगी।

आप जानते हैं कि आप उन वास्तविक समस्याओं को हल नहीं कर सकते। इसलिए सबसे अच्छा तरीका है, झूठी फर्जी समस्याएं बनाएँ और उन्हें हल करना शुरू करें। यह मानव मन की सबसे बुनियादी चालों में से एक है। उदाहरण के लिए, भारत गरीबी के कारण सदियों से पीड़ित है। और मोरारजी देसाई सोचते हैं कि शराबबंदी से समस्याएँ हल हो जाएँगी। अब यह एक झूठी समस्या है। शराबबंदी का इससे कोई लेना-देना नहीं है। शराबबंदी हो या न हो, गरीबी बनी रहेगी। गरीब और भी दुखी हो जाएगा, बस इतना ही। क्योंकि शराब के ज़रिए कभी-कभी वह अपने दुख को भूल सकता है, कभी-कभी वह खुद को डूबो सकता है। एक बार शराबबंदी हो जाने पर उसके पास खुद को डूबने की भी संभावना नहीं होगी। तब उसका दुख बहुत ज़्यादा होगा। या, मोरारजी देसाई सोचते हैं कि अगर गायों की हत्या न की जाए, अगर गायों को काटा न जाए, तो सभी समस्याएँ हल हो जाएँगी। ये मन की तरकीबें हैं। और इसी तरह कोई सदियों तक खुद को बेवकूफ बना सकता है। भारत इन झूठे भविष्यवक्ताओं के कारण पीड़ित है। और झूठे भविष्यवक्ता वे हैं जो झूठी समस्याओं से निपटते हैं। पहले वे समस्या बनाते हैं, फिर उसका समाधान करना शुरू करते हैं। और वे इसके बारे में बहुत शोर मचाते हैं और वे बहुत ज़्यादा सक्रिय दिखते हैं। अगर वे असफल होते हैं, तो निश्चित रूप से कुछ हासिल नहीं होता। अगर वे सफल होते हैं, तो भी कुछ हासिल नहीं होता। लेकिन एक बात, वे असली समस्या को छिपा सकते हैं। वे आपका ध्यान किसी झूठी चीज़ पर केंद्रित कर सकते हैं, जैसे कोई खिलौना। यह एक असली समस्या लगती है, लेकिन यह है नहीं। अब इसे देखें। प्याज आपको ध्यान करने से कैसे रोक सकता है? प्याज आपको मौन होने से कैसे रोक सकता है? वहाँ कोई समस्या नहीं है। लेकिन आप आध्यात्मिक होना चाहते हैं और आप आध्यात्मिक के रूप में जाने जाना चाहते हैं, आप मूर्खतापूर्ण काम करना शुरू कर देते हैं।

अपने नए कम्यून में मैं एक बार भी बनाने जा रहा हूँ। और एक धूम्रपान कक्ष। अगर चाय एक समारोह बन सकती है तो धूम्रपान क्यों नहीं? अगर लोग चाय पी सकते हैं और इसे एक ध्यान प्रक्रिया बना सकते हैं, तो धूम्रपान भी ऐसा ही कर सकता है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम्हें धूम्रपान करना चाहिए, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि तुम्हें शराब पीनी चाहिए, लेकिन मैं यह कह रहा हूँ कि ये वे चीज़ें नहीं हैं जो तुम्हें आध्यात्मिक होने से रोकती हैं। जीसस शराब पीते थे, गुरजिएफ शराब पीते थे। इससे वे ज्ञानी होने से नहीं रुके।

स्मरण रहे, जो चीज़ तुम्हें ज्ञानी होने से रोकती है, वह है तुम्हारा ज्ञान, तुम्हारी विचार-प्रक्रिया, और कुछ नहीं। और यही असली कार्य है—विचार-प्रक्रिया को कैसे छोड़ें। और चूंकि तुम वहाँ नपुंसक महसूस करते हो, तुम छोटी-छोटी समस्याएं खड़ी कर लेते हो: कैसे दिन में केवल





बुद्धों का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 1d ·

प्रश्न - आश्रम की रसोई में बहुत से व्यंजनों में प्याज होता है। रमण महर्षि ने मिर्च, अधिक नमक, प्याज आदि से बचने के लिए कहा था, यह याद करते हुए मैं इस प्रश्न से स्तब्ध हूँ: क्या रसोई हमारे आत्मज्ञान की संभावनाओं को नष्ट कर रही है?

ओशो - यहाँ मेरा पूरा काम यही है। आपके आत्मज्ञान की सभी संभावनाओं को नष्ट करना। यदि आपके आत्मज्ञान की इच्छा को नष्ट नहीं किया जाता है तो आप कभी भी आत्मज्ञानी नहीं बन पाएँगे। लेकिन बेचारे प्याज पर गुस्सा मत होइए, वे मासूम लोग हैं। और वे भी उतने ही आध्यात्मिक हैं जितने आप हैं, और आपसे कहीं अधिक गहरे ध्यान में हैं। और मुझे विश्वास नहीं होता कि रमण महर्षि जैसी समझ रखने वाला कोई व्यक्ति ऐसा कह सकता है। लेकिन यदि उन्होंने ऐसा कहा है तो वे मजाक कर रहे होंगे।

लेकिन तथाकथित आध्यात्मिक लोग ऐसी चीजों से ग्रस्त हैं। तथाकथित आध्यात्मिक लोग नितांत बकवास से ग्रस्त हैं। अब प्याज या मिर्च या नमक आपको आत्मज्ञानी बनने से कैसे रोक सकते हैं? मूर्खतापूर्ण विचार। अपने अस्तित्व में गहराई से देखने के बजाय, और वास्तविक समस्याओं का सामना करने के बजाय, आप झूठी समस्याएं पैदा करते हैं। ये झूठी समस्याएं हैं। यह मन की एक रणनीति है, ताकि वास्तविक समस्याओं को दरकिनार किया जा सके। वास्तविक समस्या प्याज नहीं है, यह लालच है। वास्तविक समस्या मिर्च नहीं है, यह क्रोध है।

वास्तविक समस्या नमक नहीं है, यह अधिकार जताना है। वास्तविक समस्या यह नहीं है कि आपको क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए। वास्तविक समस्या यह है कि आपको क्या होना चाहिए। वास्तविक समस्याओं से

बचने के लिए हम झूठी समस्याएं पैदा करते हैं। और झूठी समस्याओं के बारे में कुछ सुंदर बात है: उन्हें हल किया जा सकता है, आसानी से हल किया जा सकता है। समस्या क्या है? आप प्याज खाना बंद कर देते हैं। और आप आध्यात्मिक हो जाते हैं और आप प्रबुद्ध हो जाते हैं क्योंकि आप प्याज नहीं खाते हैं। बहुत आसान है। लेकिन लालची न होना मुश्किल होगा, कष्टसाध्य होगा। अहंकारी न होना एक कठिन काम होगा। आपको बहुत समझ की आवश्यकता होगी। आपको बहुत जागरूकता की आवश्यकता होगी। केवल जागरूकता की आग में वास्तविक समस्याएं जलेंगी।

आप जानते हैं कि आप उन वास्तविक समस्याओं को हल नहीं कर सकते। इसलिए सबसे अच्छा तरीका है, झूठी फर्जी समस्याएं बनाएँ और उन्हें हल करना शुरू करें। यह मानव मन की सबसे बुनियादी चालों





Add to
story



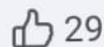
Osho Vichar

22h · 🌐



संन्यास का अर्थ होता है; अकेले होने की क्षमता। अकेला होना नहीं, अकेले होने की क्षमता। जहां भी हो, यह स्मरण बना रहे कि "मैं अकेला हूं।" तब बीच-बाजार में तुम संन्यासी हो। गृहस्थ होकर संन्यासी हो। पत्नी है, बच्चे हैं, दुकान है, बाजार है--तुम संन्यासी हो। इतनी याद बनी रहे कि "मैं अकेला हूं।"

👍 Mahesh Thakur and 28 others



29



1



3

People you may know





प्रार्थना का नाम ही
अमनी अवस्था है।
प्रार्थना का अर्थ है कि
तुम मांगने नहीं गए,
तुम धन्यवाद देने गए हो।
सारी दृष्टि बदल गयी।
जैसे ही मन को तुम हटाओगे,
तुम पाओगे कि इतना मिला है,

अब और क्या चाहिए!

मन को बीच में लाए कि
लगेगा बिलकुल कुछ नहीं मिला है,
सब चाहिए।

मन देखता है अभाव को।
मन के हटते ही दर्शन होता है
भाव का।



Osho

एक ॐकार सतनाम - (प्र. ३)



4k



34

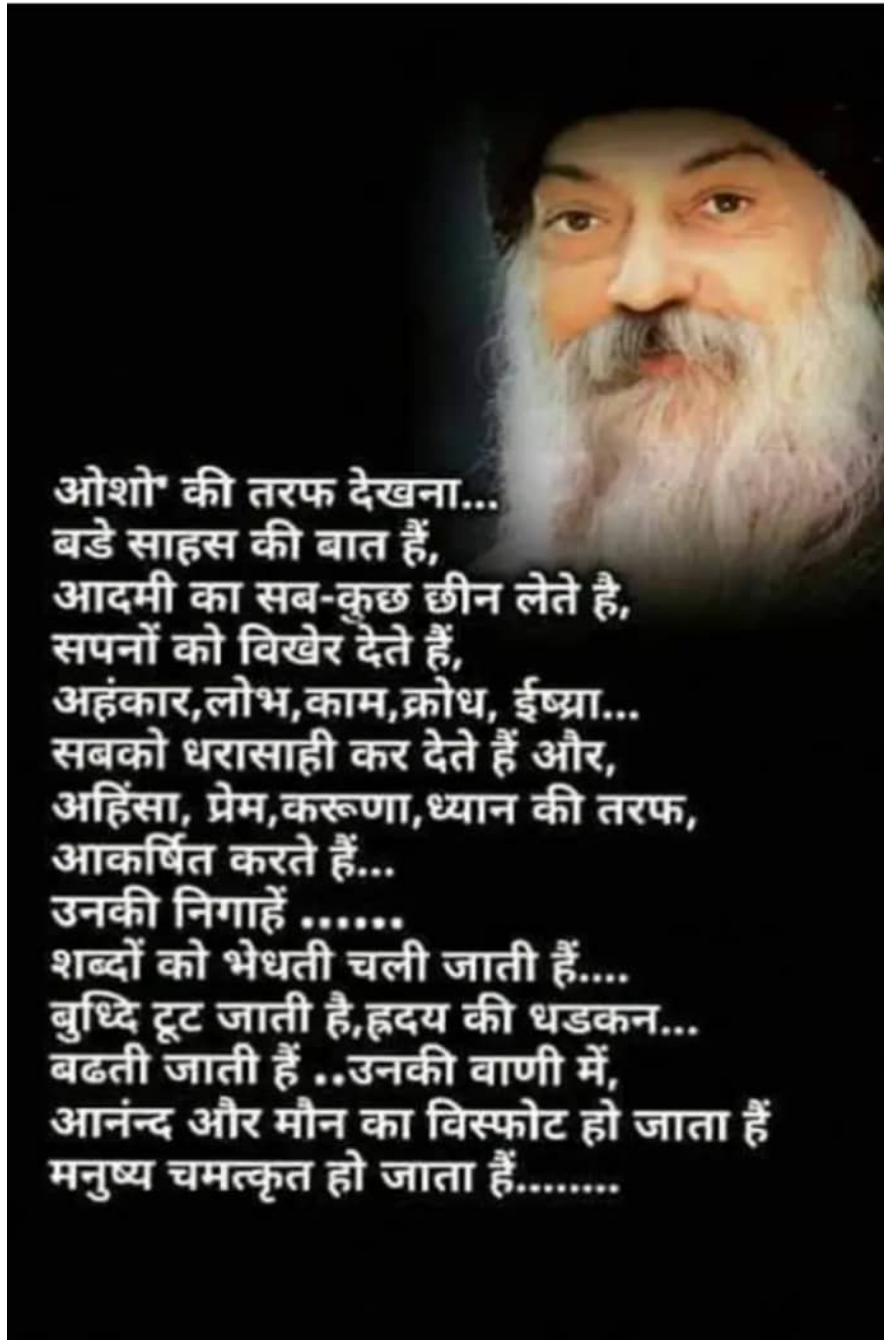


177

**ओशो अजीत**

3d · 🌐

ओशो नंगा कर देते है... शुद्ध आत्मा बना देते है
विकट साहस समझ होनी चाहिए... मुझसे नफ़रत शौक से करना ज़रा
सा भी चूके महोबबत हो जाएगी
मेरे भगवान श्री रजनीश ओशो 😊😊😊😊



👍 Jagdish Jat and 6 others

62K

62k

288

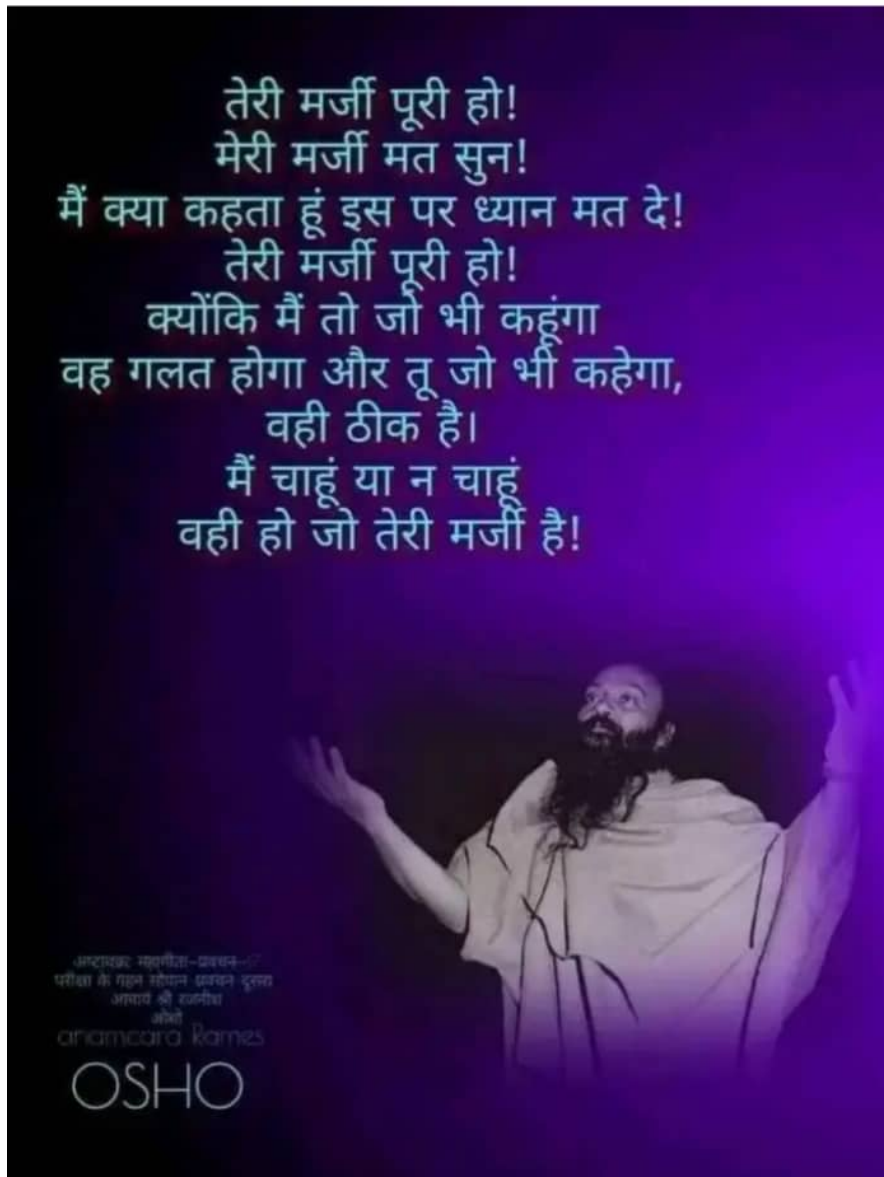
1k



बुद्धों का हिन्दी साहित्य

Vinod Singh · 4m ·

feeling blissful at शिव की नगरी काशी.



8

8



शरद गार्ग • Follow



m.facebook.com

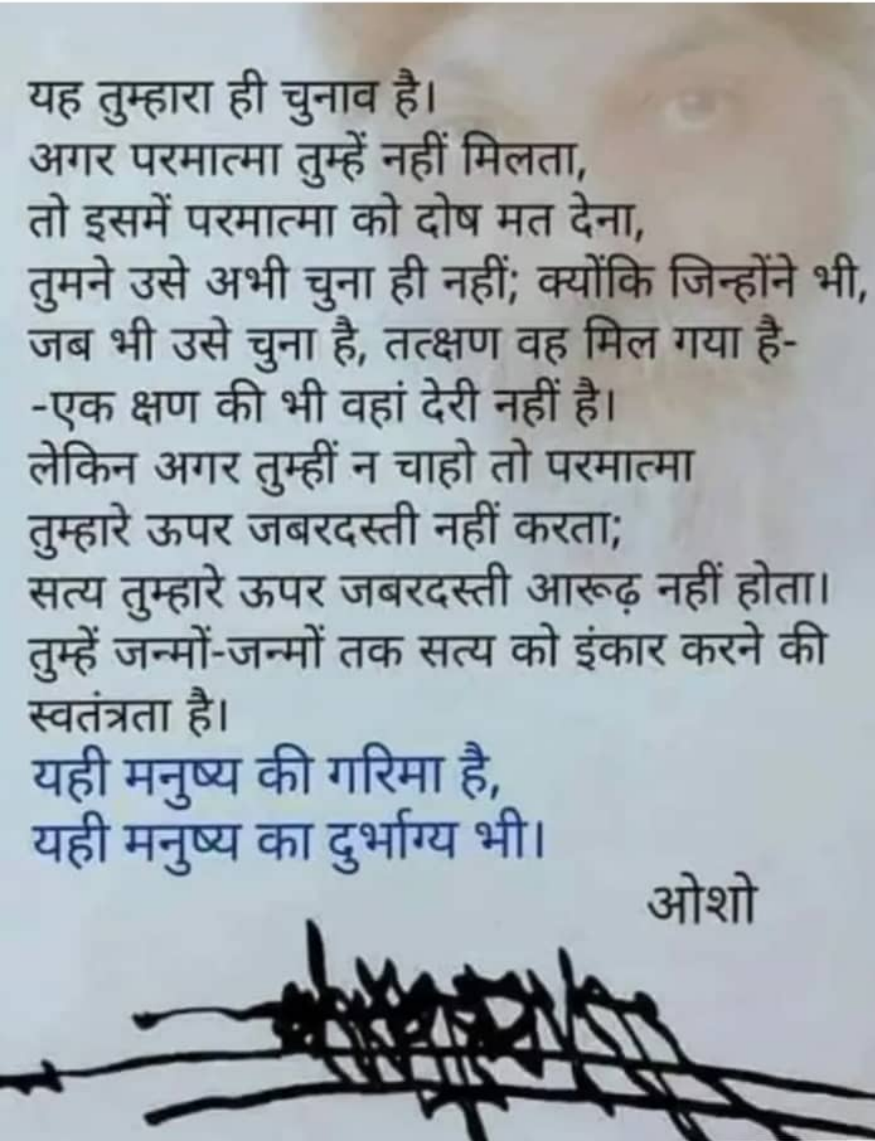


1



हुए मौसम मन को प्रभावित करते हैं। एक प्रकृति मनुष्य के बाहर हैं और एक भीतर हैं। जब बाहर प्रकृति बदलती हैं तो मन की प्रकृति को भी प्रभावित करती हैं।

...see more



Nanji Bhai Atara and 29 others

30

1

4



Movie's Lover • [Follow](#)

4d •

पहाड़ों में ड्राइवर कैसे गाड़ी चलाते हैं [#viral](#) [#fbreels](#) [#reels](#)





5k



70



423

**Osho Harpreet**

10h · 🌐



किसी का दीया काला है, किसी का गोरा है;
कोई लाल मिट्टी का बना, कोई पीली मिट्टी
का बना; कोई इस शक्ल, कोई उस शक्ल;
कोई यह नाम, कोई वह रूप; लेकिन
भीतर की ज्योति का न कोई नाम है,
न कोई रूप है। जिसने अपने को जाना,
उसने अपने को सबमें जान लिया।

**ओशो शिव सूत्र**

Ramjibhai Sankhat and 38 others



39



12



6



LS Vikram

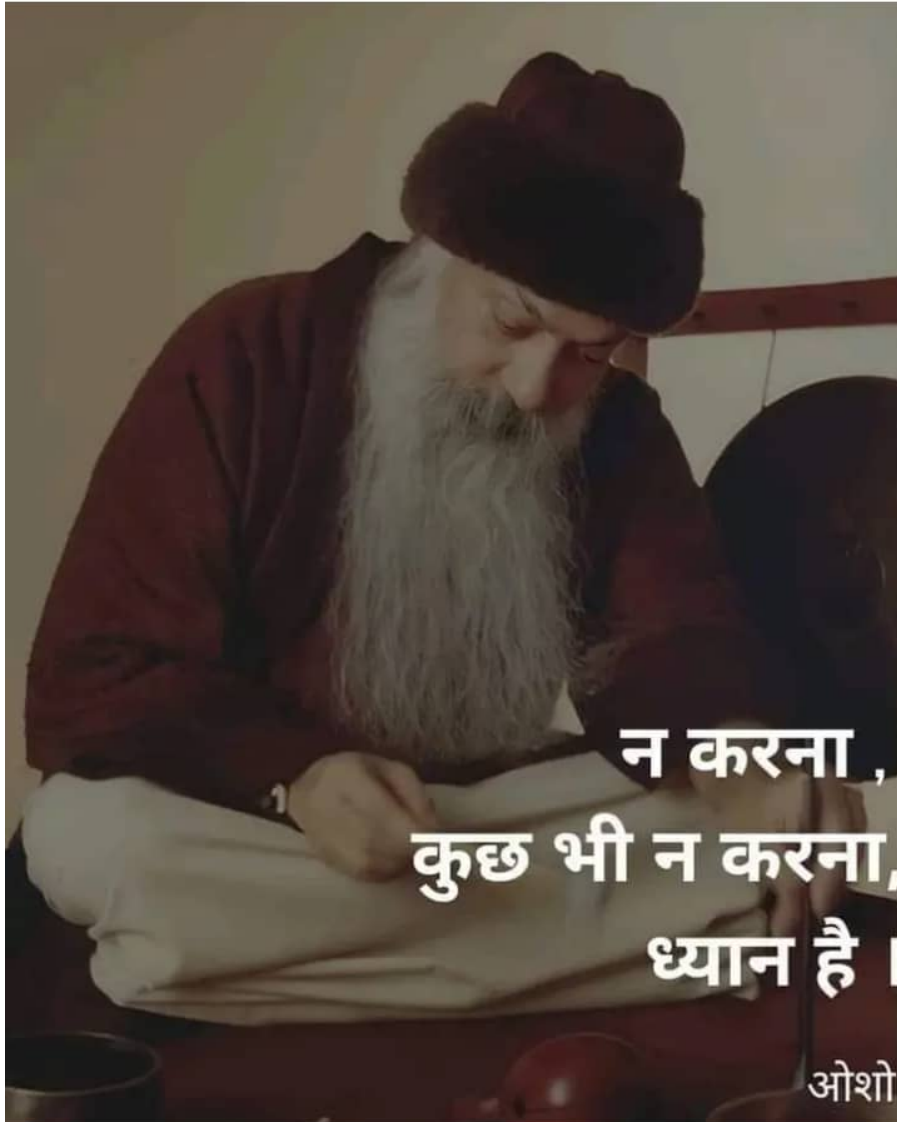
**Yog Agamyaa**

4d · 🌐

...

ध्यान 🌹 🌹

#oshointernational #oshomeditation #viralpost2024

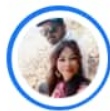


👍❤ Shivam Jha and others



4

1

**Manisha Sanjay Singh** · Follow

6d · 🌐

...

अगर आपके पास गांव में 2-4 बीघा जमीन भी है तो कभी उसे भूलकर भी मत बेचना आपकी नौकरी या सर्विस सेक्टर कितना भी अच्छा क्यों

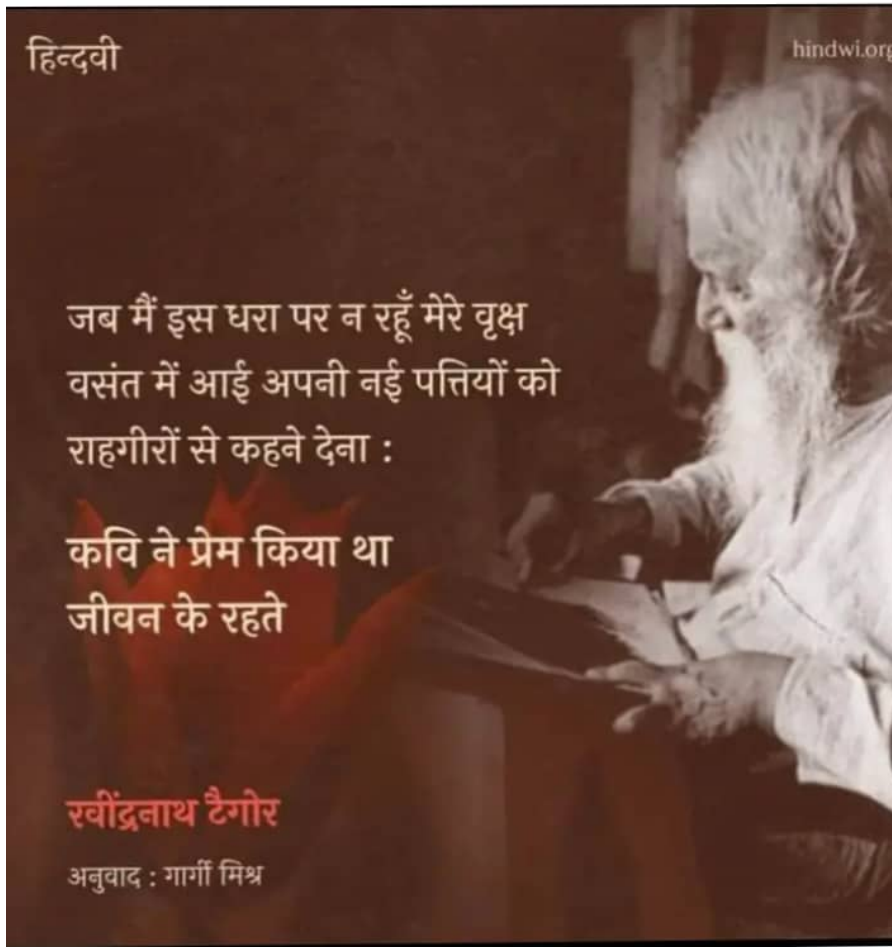
**Kapil Bhardwaj** · Follow

6d ·



गुरुदेव श्री टैगोर !

"कवि ने प्रेम किया था जीवन के रहते"



Are you interested in this post?

Interested

Not interested

Vineet Kumar Singh and 1.6K others



1k



27



97

**J S Vikram**

10h ·



**ब्रह्माण्ड के रहस्य**

Rabindra Kumar Mandal · 16m ·



‘पूछो पृथ्वी से,
वायु से,
जल से-उन रहस्यों को,
जो वे तुम्हारे लिए छिपाए हुए हैं।’

एक विशेष ध्यान की अवस्था में,
संपर्क स्थापित हो जाता है,
उत्तर मिलने शुरू हो जाते हैं।
लेकिन उसके पहले तुम्हारा हृदय
इतना शांत हो जाना चाहिए
कि तुम अपने उत्तर उसमें न डाल लो।
नहीं तो सब विकृत हो जाएगा।
तुम्हें इतना मौन हो जाना चाहिए
कि तुम्हारी तरफ से जोड़ने का
कोई उपाय न रहे।
तो ही तुम्हें पता चलेगा कि
क्या कहा जा रहा है।



7



7



6



Rajkumar Sahu Sahu Sahu

3h ·



Yog Agamyaa

1d • 

#viralpost2024 #viralreelsfacebook #o...see more



अपनी आत्मा
का अनुसरण
करो अपना
दिमाग मत
चलाओ.....
~ओशो~
विज्ञान भैरव तंत्र



Astro Talk Miracle • Follow

2d •

बॉलीवुड सिनेमा में 50 से 60 की उम्र पार कर चुकी ये एक्ट्रेस जिनकी बेटियां भी कर चुकी हैं बॉलीवुड डेब्यू, लेकिन आज भी ये एक्ट्रेस दिखती हैं काफी यंग और ब्यूटीफुल, खूबसूरती में देती है ...see more



Osho
- Be' Aware -

संन्यासी वही है, जो कहता है:
न मुझे सत्कार चाहिये न सम्मान चाहिये,
न मुझे अपमान की चिंता है।

मैं तो जैसा हूं, वैसा ही जीऊंगा।
तुम सम्मान दो तो ठीक,
तुम अपमान दो तो ठीक;
वह तुम्हारा प्रश्न है,
तुम्हारी समस्या है,
मेरा उससे कुछ लेना-देना नहीं।



**Naye bharat ke khoj**

1d · 🌐

एक प्रयोग

चौबीस घंटे में ...see more

anmolvichar.com

तुम बस इतना जान लो !
स्वयं को जानने के
अतिरिक्त !
इस पृथ्वी पर,
कुछ भी जानना व्यर्थ है !!

- Osho



1



1

**Rishto Ka Ahsaas** · Follow

3d · 🌐

जो गलती मैंने की वही गलती तुम मत करना 💔🙏 #FBVIDEO
#relationship #true #Respect #motivational

33

3

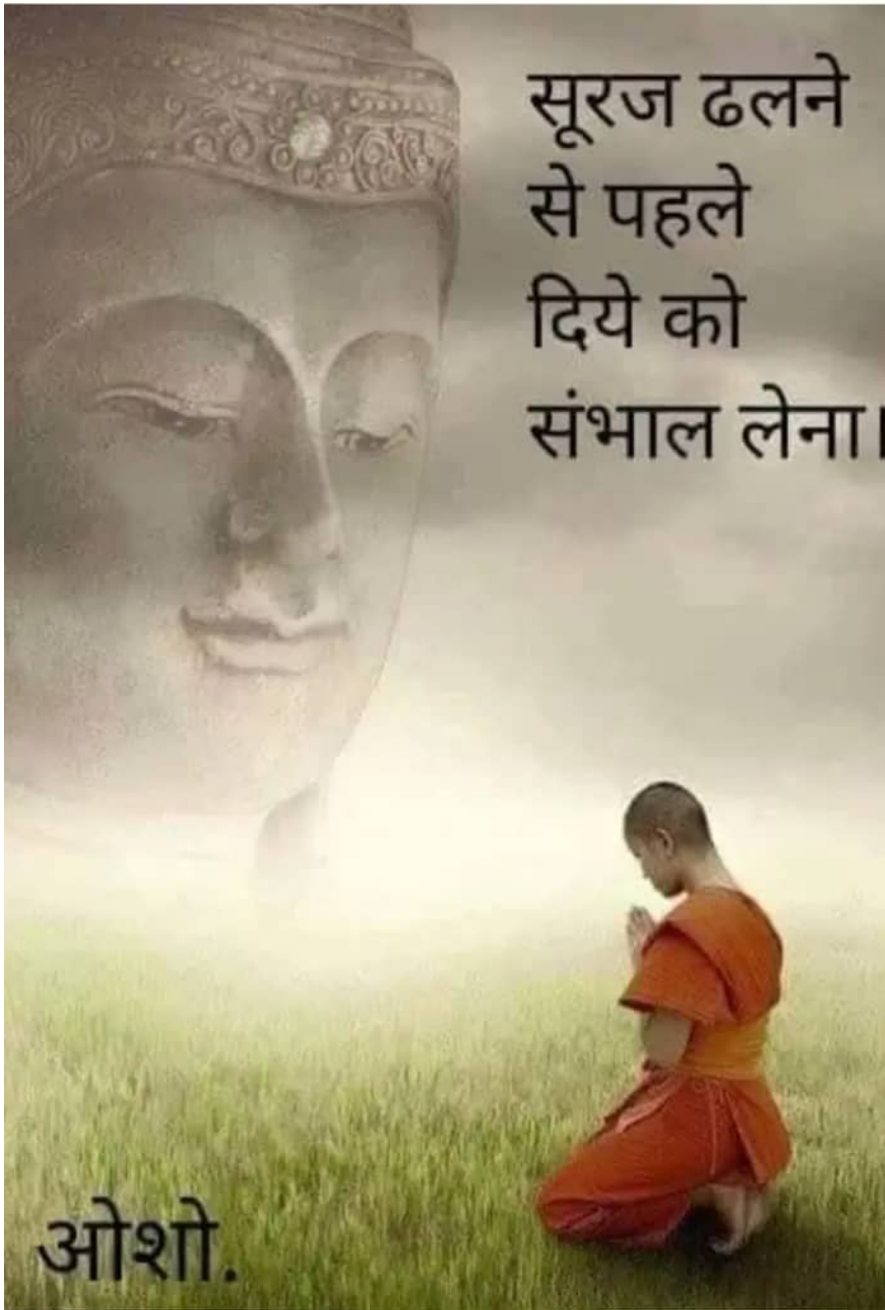
14



Osho Harpreet

23h ·

होश-सजगता-अवेयरनेस... 🌸 🙌 🙏



Kushal Sharma and 80 others

81

14

18



Preeti Adhikari · Follow



2.4K

2k

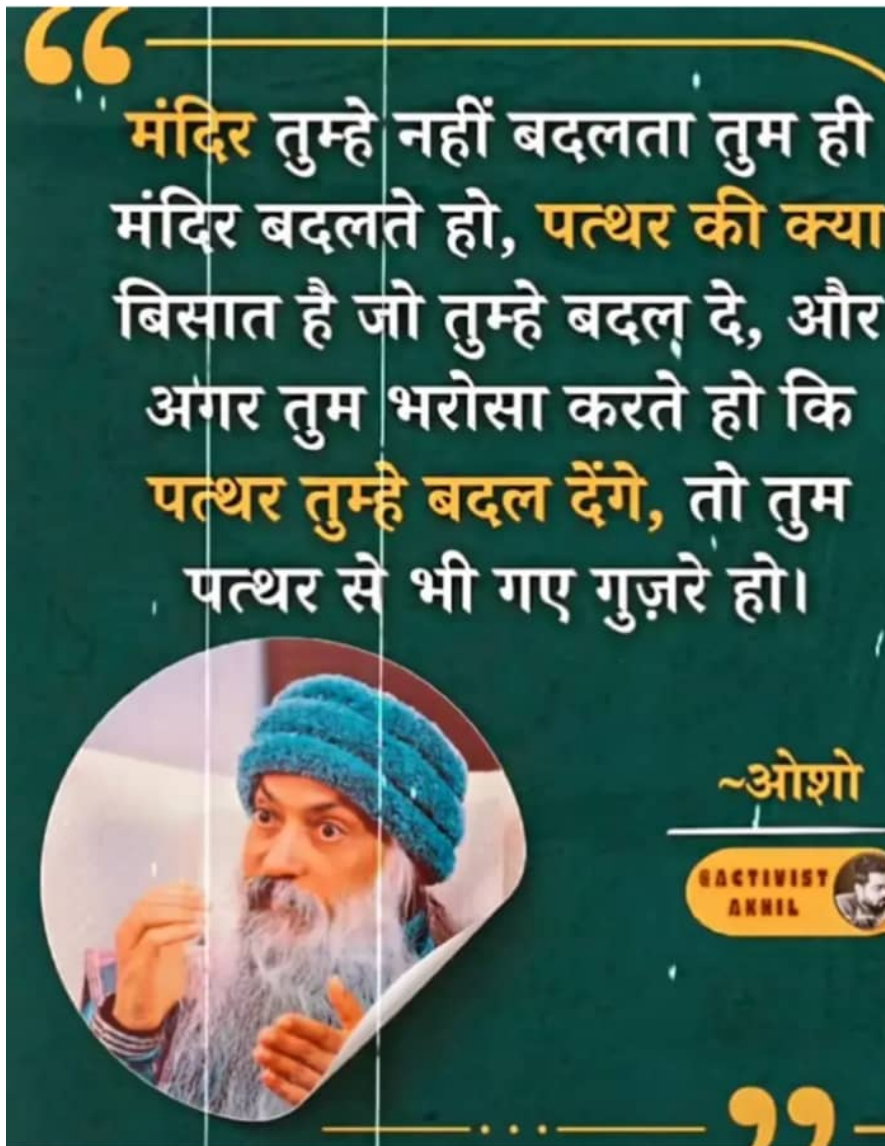
221

129



Ganesh Poddar

6d ·



Prem Adhikari and 32 others

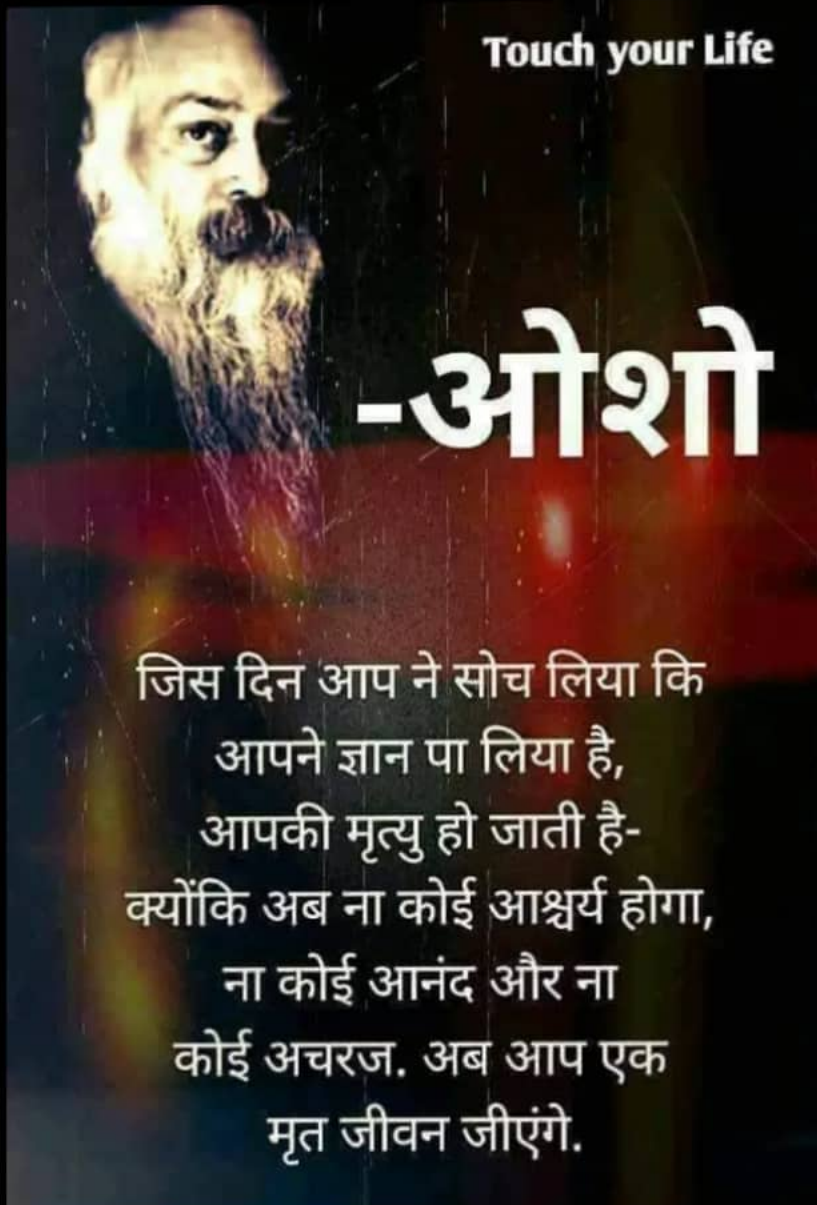
33

3

14



मेरा तो एक ही छोटा सा सूत्र है, छोटा सा संदेश है:
भीतर डुबकी मारो। जितने गहरे जा सको, जाओ-अपने में!
वहीं पाओगे जो पाने योग्य है। और उसे पाकर निश्चित ही
बांट सकोगे! पृथ्वी तुम्हारे हंसी के फूलों से भर सकती है।



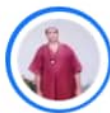
Dev Patel

4h · 🌐

👍 Sailesh Sompura and 17 others

👍 18



**Prem anand** • Follow

1d •



गुर्जिएफ ने अपनी बेटि से कहा था की...
कभी भी किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के साथ फोटो नहीं खिंचवाना ...
कभी भी किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से प्रभावित ना होना ...
क्योंकि ये कोन होता है प्रभावित होने वाला ?
प्रभावित होने वाला आपका Poor Self है
उस Poor Self के जीवित रहते
आप कुछ भी नहीं कर सकते

Are you interested in this post?

Interested

Not interested

Osho Niteen Shah and 2.2K others



2k



25



232

**DJ Prints** • Follow

23 Jun 2024 •

The Best Movies Of All Time

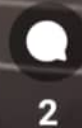


Cmo.inner.light

सब आपस मे जुड़ा है-ओशो

OSHO

संसार एक मकड़ी का जाला
हैं! 🕸️🕷️



Osho Ravi Yog · Following

संसार एक मकड़ी का जाला हैं! 🕸️🕷️..... See more

Add a comment...



तुमने कभी ख्याल किया ? जहां भी मांग आती है
वहीं तुम छोटे हो जाते हो; जहां मांग नहीं होती,
सिर्फ दान होता है, वहां तुम भी विराट होते हो ।
तुम्हारे मन में कोई मांगने का भाव ही नहीं उठता,
तब तुममें और परमात्मा में क्या फासला है?
इसलिए तो बुद्धपुरुषों ने निर्वासना को सूत्र माना
कि जब तुम्हारी कोई वासना न होगी, तब परमात्मा
तुममें अवतरित हो जाएगा।

ओशो

अकथ कहानी प्रेम कि,

प्रवचन नं - 1

**J S Vikram**

9 Jul 2024 · 🌐

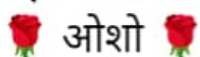


लाओत्सु के जीवन में उल्लेख है: कि वर्षों तक खोज में लगा रहकर भी सत्य की कोई झलक न पा सका। सब चेष्टाएं कीं, सब प्रयास, सब उपाय, सब निष्फल गये। थककर हारा-पराजित एक दिन बैठा है--पतझड़ के दिन हैं--वृक्ष के नीचे। अब न कहीं जाना है, न कुछ पाना है। हार पूरी हो गई। आशा भी नहीं बची है। आशा का कोई तंतुजाल नहीं है जिसके सहारे भविष्य को फैलाया जा सके। अतीत व्यर्थ हुआ, भविष्य भी व्यर्थ हो गया है, यही क्षण बस काफी है। इसके पार वासना के कोई पंख नहीं कि उड़े। संसार तो व्यर्थ हुआ ही, मोक्ष, सत्य, परमात्मा भी व्यर्थ हो गये हैं।

ऐसा बैठा है चुपचाप। कुछ करने को नहीं है। कुछ करने जैसा नहीं है। और तभी एक पत्ता सूखा वृक्ष से गिरा। देखता रहा गिरते पत्ते को--धीरे-धीरे, हवा पर डोलता वृक्ष का पत्ता नीचे गिर गया। हवा का आया अंधड़, फिर उठ गया पत्ता ऊपर, फिर गिरा। पूरब गई हवा तो पूरब गया, पश्चिम गई तो पश्चिम गया।

और कहते हैं, वहीं उस सूखे पत्ते को देखकर लाओत्सु समाधि को उपलब्ध हुआ। सूखे पत्ते के व्यवहार में ज्ञान की किरण मिल गई। लाओत्सु ने कहा, बस ऐसा ही मैं भी हो रहूं। जहां ले जायें हवाएं, चला जाऊं। जो करवाये प्रकृति, कर लूं। अपनी मर्जी न रखूं। अपनी आकांक्षा न थोपूं। मेरी निजी कोई आकांक्षा ही न हो। यह जो विराट का खेल चलता, इस विराट के खेल में मैं एक तरंग मात्र की भांति सम्मिलित हो जाऊं। विराट की योजना ही मेरी योजना हो और विराट का संकल्प ही मेरा संकल्प। और जहां जाता हो यह अनंत, वहीं मैं भी चल पड़ूं; उससे अन्यथा मेरी कोई मंजिल नहीं। डुबाये तो डूबूं, उबारे तो उबरूं। डुबाये तो डूबना ही मंजिल; और जहां डुबा दे वहीं किनारा। और कहते हैं, लाओत्सु उसी क्षण परम ज्ञान को उपलब्ध हो गया।

महा गीता ~प्रकरण -61 ~



ओशो